प्रकाशक—
चन्द्रराज भण्डारी,
संचालक—
ज्ञान-मन्दिर,
भानपुर (इन्दौर-स्टेट)

भूल सुधार

इस भाग के पृष्ठ १११६ पर डिजीटेलिस के प्रकरण में डिजीटेलिस का अर्थ "हृदय के लिये उत्तेजक" छप गया है उस स्थान पर "हृदय के लिए बलदायक" ऐसा होना चाहिए । पाठक इसको जरूर सुधार लें। क्योंकि डिजीटेलिस हृदय को उत्तेजना नहीं देता, वह उसकी गतिको सुव्यवस्थित करके उसे बल देता है।

मुद्रक—

PATRONS.

1—His Highness Maharaja dhiraj Sir George Jiwaji Rao Scindia A'ijah Bahadur G. C. I. E., Gwalior.

2—Late Lieutenant colonal His Highness Maharao Sir Ummed Singh Bahadur G. C. S. I. G. C. I. E. G. B. E., Kotah.

3—Lieutenant His Highness Maharaja Krishna Kumar Singh Bahadur, Bhawnagar.

4—Lieutenant colonal His Highness Maharaja Jam Sahab Sir Digvijay Singh Bahadur K. C. S. I., Nawanagar.

5—Lieutenant colonal His Highness Maharaja Lokendra Sir Govind Singh Bahadur G. C. S. I., K. C. S. I., Datia.

6—Lieutenant His Highness Maharaj Rana Rajendra Singh Bahadur, Jhalawar.

7—Captain His Highness Maharaja Mahendra Sir Yadvendra Singh Bahadur K. C. S. I., K. C. I. E., Panna.

8—Rai Bahadur Devi Singh Diwan Rajgarh State, Rajgarh.

9—Seth Magni Ramji Ram Kumarji Bangar Didwana

10—Rai Bahadur Rajya Bhushan Daulbir Seth Hiralal Kasliwal Indore.

11—Seth Sohanlalji Shubhakaranji [illegible] Dugar Fatehpur.

12—Seth Chunnilal Bhaichand Mehta Bombay.

प्रकाशक—
चन्द्रराज भण्डारी,
संचालक—
ज्ञान-मन्दिर,
भानपुर (इन्दौर-स्टेट)

भूल सुधार

इस भाग के पृष्ठ १११६ पर डिजीटेलिस के प्रकरण में डिजीटेलिस का अर्थ "हृदय के लि
उत्तेजक" छप गया है उस स्थान पर "हृदय के लिए बलदायक" ऐसा होना चाहिए । पाठक इस
जरूर सुधार लें । क्योंकि डिजीटेलिस हृदय को उत्तेजना नहीं देता, वह उसकी गतिको सुव्यवस्थित क
उसे बल देना है ।

PATRONS.

1—His Highness Maharaja dhiraj Sir George Jiwaji Rao Scindia Alijah Bahadur G. C. I. E., Gwalior.

2—Late Lieutenant colonal His Highness Maharao Sir Ummed Singh Bahadur G. C. S. I. G. C. I. E. G. B. E., Kotah.

3—Lieutenant His Highness Maharaja Krishna Kumar Singh Bahadur, Bhawnagar.

4—Lieutenant colonal His Highness Maharaja Jam Sahab Sir Digvijay Singh Bahadur K. C. S. I., Nawanagar.

5—Lieutenant colonal His Highness Maharaja Lokendra Sir Govind Singh Bahadur G. C. S I., K. C. S I, Datia,

6—Lieutenant His Highness Maharaj Rana Rajendra Singh Bahadur, Jhalawar.

7—Captain His Highness Maharaja Mahendra Sir Yadvendra Singh Bahadur K. C S. I., K. C. I. E., Panna.

8—Rai Bahadur Devi Singh Diwan Rajgarh State, Rajgarh.

9—Seth Magni Ramji Ram Kumarji Bangar Di[illegible]

10—Rai Bahadur Rajya Bhushan Daubir Seth Hiralal Kasliwal Indore.

11—Seth Sohanlalji Shubhakaranji Ratanlalji Dugar Fat[illegible]pur.

12—Seth Chunnilal Bhaichand Mehta Bombay.

प्रकाशक—
चन्द्रराज भण्डारी,
संचालक—
ज्ञान-मन्दिर,
भानपुर (इन्दौर-स्टेट)

भूल सुधार

इस भाग के पृष्ठ १११६ पर डिजीटेलिस के प्रकरण में डिजीटेलिस का अर्थ "हृदय उत्तेजक" छप गया है उस स्थान पर "हृदय के लिए बलदायक" ऐसा होना चाहिए । पाठक जरूर सुधार लें । क्योंकि डिजीटेलिस हृदय को उत्तेजना नहीं देता, वह उसकी गति को सुव्यवस्थित उसे बल देता है ।

PATRONS.

1—His Highness Maharaja dhiraj Sir George Jiwaji Rao Scindia Alijah Bahadur G. C. I. E., Gwalior.

2—Late Lieutenant colonel His Highness Maharao Sir Ummed Singh Bahadur G. C. S. I. G. C. I. E. G. B. E., Kotah.

3—Lieutenant His Highness Maharaja Krishna Kumar Singh Bahadur, Bhawnagar.

4—Lieutenant colonal His Highness Maharaja Jam Sahab Sir Digvijay Singh Bahadur K. C. S. I., Nawanagar.

5—Lieutenant colonal His Highness Maharaja Lokendra Sir Govind Singh Bahadur G. C. S. I., K. C. S. I., Datia,

6—Lieutenant His Highness Maharaj Rana Rajendra Singh Bahadur, Jhalawar.

7—Captain His Highness Maharaja Mahendra Sir Yadvendra Singh Bahadur K. C. S. I., K. C. I. E., Panna.

8—Rai Bahadur Devi Singh Diwan Rajgarh State, Rajgarh.

9—Seth Magni Ramji Ram Kumarji Bangar Didwana.

10—Rai Bahadur Rajya Bhushan Daabar Seth Hiralal Kasliwal Indore.

11—Seth Sohanlalji [illegible] Dugar Fatehpur.

12—Seth Chunnilal Bhaichand Mehta Bombay.

स्मृति

स्व० सेठ कमलापतजी सिंहानिया कानपुर
की स्मृतिमें

विषय सूची

(१)

हिन्दी

विषय सूची

(२)

संस्कृत

विषय सूची

(३)

मराठी

विषय सूची

(४)

गुजराती

विषय सूची

(५)

वंगला

Index.

Latin Names.

विषय सूची

(८)

(रोगानुक्रम से)

इस विषय सूची में इस ग्रन्थ में आई हुई औषधियां जिन २ रोगों पर काम करती हैं उनमें से कुछ खास २ रोगों के नाम और औषधियों के नाम पृष्ठांक सहित दिये जारहे हैं। सब रोगों के नाम इसमें नहीं आसके, इसलिये उनका विवरण ग्रन्थ के अन्दर ही देखना चाहिये। जिन रोगों के अन्दर जो औषधियां विशेष प्रभावशाली और चमत्कारिक हैं उनपर पाठकों की जानकारी के लिये ऐसे फूल * लगा दिये गये हैं:—

ज्वर

अतिसार

जलोदर

बवासीर

वनौषधि चन्द्रोदय

(चौथा भाग)

वनौषधि चन्द्रोदय

(चौथा भाग)
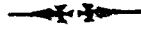
चिलकामकोय

नाम—

यूनानी—चिलकामकोय ।

वर्णन—

यह एक प्रकारकी रोइदगी होती है । इसके पत्ते गोल, छोटे, पतले, नाजुक और तोते की जबान की तरह होते हैं । इसकी शाखाएं पतली और फूल कालापन लिये लाल रंग के होते हैं । इसकी फली उड़द की फली की तरह और बीज खुरासानी अजवायन के दानों की तरह होते हैं । इन बीजों का स्वाद कड़वा और तेज होता है । इसके पत्तों की तरकारी बनाई जाती है । इसके फूलों का रंग तोते की नाक की तरह होता है, इसीलिये इसका नाम चिलका-मकोय रखा गया है ।

इसकी एक जाति और होती है जिसका पौधा आधे गज तक ऊंचा होता है । इसके पत्ते नई के पत्तों की तरह होते हैं । इनका स्वाद मीठा होता है । इसका तुख्म छोटा और पीला होता है ।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मत से इसके पत्ते शीतल तथा बीज गरम और खुश्क होते हैं। इसके पत्तों क रस प्रमेह में लाभ पहुंचाता है। इसकी तरकारी कफको नष्ट करती है। यह औषधि पाचनशक्ति व तीव्र करके भूख को बढ़ाती है। आमाशय को बलवान बनाती है। जो मधुमेह मेदे की खराबी से पैद होता है, उसमें यह लाभ पहुँचाती है। आमाशय की खराबी को यह दूर करती है। इसकी मात्रा आ तोले तक की है।

चांदकुड़ा

इस वनस्पति का वर्णन इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के पृष्ठ २७६ पर 'उपास' के नाम से दिय गया है।

चिनाई घास

नाम—

हिन्दी—चिनाई घास। लंका—अगरअगर। तेलगू—समुद्रउपाची। अंग्रेजी—Ceylor Moss (सीलोन मास)। लैटिन—Gracilaria Lichenoides (ग्रेसीलेरिया लायचेनोइडेस)

वर्णन—

यह वनस्पति लंका और कन्याकुमारीके खारे तालावोंमें पैदा होती है। मोह एक शेवाल जातिय की वनस्पति है। इसके तंतु पीले रंग के, सीने के धागे के समान मोटे होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

चिनाई घास स्नेहन, पौष्टिक और पचने में बहुत हल्की होती है। इसका रासायनिक विश्लेषण करने पर इसमें एक प्रकार का पौष्टिक कफ नाशक सत्व ५४ प्रतिशत पाया जाता है। इसमें ७ प्रतिशत क्षार का अंश भी रहता है। सिंहल द्वीप और हिन्दुस्तान के हिस्से में इस वनस्पति का बहुत प्राचीन काल से उपयोग होता आ रहा है। इसके चूर्ण की खीर बनाकर संग्रहणी, आम इत्यादि आंतों के रोग

और फेफड़ों के रोगों में लाभदायक पदार्थ की तरह दी जाती है। क्षयरोग में भी यह वनस्पति लाभदायक मानी जाती है।

चिरविल्व (चरेल)

नाम—

संस्कृत—चिरविल्व। हिन्दी—चिरविल्व, चिरमिल, चरेल, पापरी, करंजी। मराठी—वावड। काठियावाड—चरेल। गुजराती—कणझो। तेलगू—नवीली। तामील—प्रयम्-लेटिन-Holoptelea Integrifolia (होलोप्टेलिया इंटेग्रिफोलिया)।

वर्णन—

यह एक बड़ा वृक्ष होता है, जिसकी ऊंचाई २० से २५ हाथ तक होती है। इसका वृक्ष करंज के वृक्षकी तरह दिखाई देता है। इसकी छालका रंग खाकी, डाले झुकी हुई और गुच्छेदार, पत्ते उग्र दुर्गन्धियुक्त, फूल छोटे, पीले, तीव्रगंधयुक्त और फल फीके पीले रंग के चपटे होते हैं। हर-एक फल में एक एक बीज रहता है। इसकी छाल से बहुत सुन्दर रेशे निकलते हैं जिनकी रस्सी बनाई जाती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति शोथनाशक और रुधिरस्राव में लाभ पहुंचाती है। इसकी जडकी छाल को औटाकर सन्धियों की सूजन पर बांधने से लाभ होता है। इसके पत्तों की लुगदी से तेल को सिद्ध कर उस तेल को व्रणों पर लगाने से व्रण भर जाते हैं। इसकी डालियों के रसको दाद पर लगाने से दाद नष्ट हो जाता है।

चीड़*

नाम —

संस्कृत—भद्रदारु, धूपवृक्षा, मनोज्ञा, सरिचनिका, पीतदारु, पिनाद्रु, पूतिकाष्ठ, सरला, सुरभिदारुका। हिन्दी—चीड़, साला, सारल, सरल। अल्मोड़ा—साला। बंगाल—सरल

*नोट—इस ग्रन्थ के तीसरे भाग में गन्धा विरोजा के प्रकरण में भी इसका सविस्तर वर्णन

गच्छा, सरल कष्टा। गुजराती—सरल देवदार। मराठी—सरलदेवदार। गढ़वाल—साला, कोलेन, कुलहेन। कुमाऊं—चीड़। काश्मीर—चीड़, साला, उल्ल। पंजाब—चीड, गुला, नखनार, नश्तार। संयुक्तप्रान्त—चीड़, कोलन। नेपाल—धुपसलधी। लेटिन—Pinus Longifolia (पायनस लांगिफोलिया)

वर्णन:—

चीड़ का वृक्ष बहुत बड़ा होता है। यह हिमालय प्रदेश में सिंध से भूटान तक डेढ हजार फीट से साढ़े सात हजार फीट की ऊंचाई तक और अफगानिस्तान में पैदा होता है। इसके पत्ते गुच्छों में लगते हैं। इसकी डालियां हलके पीले रंग की होती हैं। इसकी छाल में दरारें पड़ी हुई रहती हैं। इसके पत्ते चमकीले हरे रंग के और फल नोकदार होते हैं। इस फल में बीज रहता है। इसकी छाल में किसी औजार से जखम कर देने से एक प्रकार का चिकना गोंद निकलता है। जिसको संस्कृत में श्रीवास और हिन्दी में चीड़ का गोंद या गन्धा विरोजा कहते हैं। इस गन्धे विरोजे को सूखी हालत मे भभके में रख कर तेल उड़ाते हैं। इस तेल को खन्नू तेल या सत विरोजा कहते हैं। इस तेल में तारपीन के तेल की तरह खुशबू आती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत से यह वृक्ष मीठा, तीक्ष्ण, कड़वा, गरम, स्निग्ध और आँतों के कीडों को नष्ट करने वाला होता हैं। आँख, कान, गला, रक्त और चर्म की बीमारियों में भी यह लाभदायक है। इसका गोंद कडवा, कसैला, गरम और स्निग्ध होता है। यह पेट के आफरे को दूर करता है, कामोद्दीपक होता है। मूत्रल, कृमि नाशक और वेदना शून्यता लाने के गुण भी इसमें विद्यमान हैं। योनि और गर्भाशय की तकलीफों में भी यह लाभदायक है। मन्दाग्नि, वृण, खुजली, प्रदाह और सिर दर्द को यह दूर करता है।

यूनानी मत—यूनानी मतसे इसका गोंद तीसरे दर्जे में गरम और खुश्क होता है। पुरानी खांसी, दमा, हिस्टीरिया, मृगी, बवासीर और जिगर तथा तिल्ली की बीमारियों में यह मुफीद हैं। गुलाब के तेलमें घोटकर इस को कान में टपकाने से सिर का दर्द और कफ से पैदा हुआ कान का दर्द मिट जाता है। फोड़े, नासूर और जखमों पर इसका लेप करने से बहुत लाभ होता है। पट्ठों के फालिज या लकवा में भी यह बहुत फायदा करता है। इसकी लकड़ी वायु और कफ को बिखेरती है, गुर्दे और मसाने की पथरी को तोड़ती है, हिचकी में भी लाभ पहुँचाती है। कण्ठमाला पर इस का लेप करने से लाभ होता हैं। मुंह के छालों पर भी यह मुफीद हैं।

डाक्टर मुडीन शरीफ के मतानुसार इसका गोंद अंत प्रयोग और बाह्यप्रयोग में लिये जाने पर उत्तेजक औषधि का काम करता है। अन्त: प्रयोग में लिये जाने पर यह पाकाशय और मूत्राशय की

श्लेष्मिक झिल्लियों पर अपना असर बतलाता है। सुजाक की यह एक उत्तम दवा है। हमने इस बीमारी के कई बीमारों पर इस औषधि को आजमाया और जहाँ कोपेवा, कबाब चीनी, टरपेन्टाइन और गुर्जन के प्रयोग भी सफल नहीं हुए, वहां भी इससे लाभ हुआ। इसकी खुराक एक से लगा कर तीन ड्राम तक की है। इसे २४ घन्टे में ४ बार देना चाहिये।

डाक्टर वामन गणेश देसाई के मतानुसार गन्धाविरोजा के अन्दर टरपेन्टाइन के सब धर्म मौजूद रहते हैं। गन्धाविरोजा खाने के पश्चात मुंह में पानी छूटता है, पेट में गर्मी और ठण्डाई होने के समान अनुभव होता है, डकार आती है, वायु सरती है, नाड़ी भरपूर चलने लगती हैं, श्वासोच्छ्वास का प्रमाण बढ़ता है, शरीर में गर्मी पैदा होती है, पेशाब की मात्रा बढ़ती है और आमाशय व मज्जा तन्तुओं में उत्तेजना पैदा होती है। इसको अधिक मात्रा में लेने से वमन और दस्त होने हैं, नाड़ी क्षीण होती है, जी घबराता है, शरीर ठण्डा पड़ जाता है, पेशाब में जलन होकर खून गिरने लग जाता है और सारे शरीर में शिथिलता पैदा हो जाती है। इस लिये इस को अथवा इसके तेल को थोड़ी मात्रा में देना चाहिये। इसकी मात्रा साधारणतया १० रत्ती से १५ रत्ती तक की है। इसको मुलहटी के चूर्ण और शहद के साथ देने से विशेष अच्छा रहता है।

गन्धाविरोजा यह एक उत्तम वायु नाशक पदार्थ है। यह आँतों को उत्तेजित करके दस्त लाता है जिससे आँतों के अन्दर सड़े हुए पदार्थ बाहर निकल जाते हैं और उनसे होने वाला उदर शूल तथा पेट का फूलना बन्द हो जाता है। इसके सेवन से दोनों ही द्वार से वायु सरता है और आँतों के विजातीय द्रव्य नष्ट होजाते हैं। इसके तेल को पेट पर मालिश करने से और इसकी वस्ती (एनेमा) देने से बहुत लाभ होता है। [illegible] में पैदा हुई पथरी में भी यह औषधि बहुत लाभ पहुँचाता है। इसके तेल को थोड़ी [illegible] शक्कर और पानी के साथ मिलाकर देने से आँतों के कृमि नष्ट होते हैं और आँतों से बहने वाला रक्त भी बन्द होजाता है रक्तातिसार और क्षीण ज्वर में रक्तस्राव बन्द करने के लिये यह एक उत्तम औषधि है। बवासीर में इसकी गोलियाँ बनाकर देने से गुदा के ऊपर असर [illegible] होकर रक्तस्राव बन्द हो जाता है। [illegible] में इसको प्रति घण्टा [illegible] २ बूँद की मात्रा में देना चाहिये।

गन्धाविरोजा रक्त के अन्दर बहुत जल्दी मिल जाता है और वहाँ से [illegible] की श्लेष्मावाहिनी के द्वारा और [illegible] तथा [illegible] के द्वारा बाहर निकलता है। [illegible] द्वारा बाहर निकलते समय [illegible] है।

[illegible]

अन्दर की रक्तवाहिनी फटकर रक्त बहने लगता है और वह कफ के साथ गिरने लगता है। ऐसी हाल में चीड़ का तेल खिलाने से, सुँघाने से और उसकी मालिश करने से लाभ होता है। फुफ्फुस औ श्वास नलिका की सूजन में और दमें में चीड़ का तेल छाती पर मालिश किया जाता है।

मूत्र पिण्ड से लेकर मूत्र द्वार तक के सारे मार्ग का शोधन करने में भी यह वस्तु बहुत प्रभ शाली है। इसके सेवन से इन भागों की रक्ताभिसरण क्रिया बढ़ती है, विनिमय क्रिया में सुधार हो है और श्लेष्मा की कमी होती है। बस्ती की सूजन और पुराने सुजाक में इसका बहुत उपयोग हो है। खन्नू तेल को १ से लेकर ३ बूंद की मात्रा में देने से पुराने सुजाक में बहुत लाभ होता है।

त्वचा के मार्ग से बाहर निकलते समय यह वस्तु त्वचा के अन्दर की सूक्ष्म रक्तवाहिनियों संकोचन करती है, जिससे रक्तपित्त, दाद, खुजली, इत्यादि रोगों में इसका उपयोग किया जाता है।

यकृत की खराबी से पैदा हुए जलोदर में पेशाब बढ़ाने के लिये चीड़ का तेल लाभ दायक हो होता है मगर ऐसे रोगों में इसका उपयोग करने के पहिले पेशाब जाँच कर इस बात की पुख्ता जां कर लेना चाहिये कि रोगी का मूत्रपिण्ड बिलकुल निरोग हो। अगर मूत्रपिण्ड में खराबी हो तो इस उपयोग कभी नहीं करना चाहिये, नहीं तो बहुत नुकसान होता है।

ताजे घावों पर चीड़ तेल को लगाने से रक्तस्राव बन्द होता है और घाव में पीब पैदा नहीं होना इसका व्रणरोपक धर्म बहुत उत्तम है। सड़ने वाले व्रणों पर इसकी बत्ती लगाने से वे जल्दी भर जा हैं। इसकी मात्रा १२ रत्ती से २० रत्ती तक की है और इसके दर्प को नाश करने के लिये कतीर बबूल का गोंद और मीठी बदाम का तेल मुफीद है।

चीनी मिट्टी।

नाम—

हिन्दी, यूनानी—चीनी मिट्टी।

वर्णन—

यह एक मशहूर मिट्टी है जो सफेद रंग की होती है जिसके बर्तन बनाये जाते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

चीनी मिट्टी को बारीक पीस कर कपड़े में छान कर मंजन करने से दांत चमकदार होते हैं इस का चूर्ण ताज़ा ज़ख्मों के खून को बन्द कर देता है।

नासूर के अन्दर भी यह औषधि बहुत लाभदायक साबित हुई है। इसके लिये इसको उपयोग करने का तरीका इस प्रकार है। चीनी मिट्टी को पीसकर, कपड़े में छानकर, नीम के पत्तों के रस में तर कर लें और एक चीनी की रकाबी पर फैलाकर सुखा लें। सूखने पर उसको फिर से नीम के पत्तों के रस में तर कर के सुखावें। इस प्रकार उसको तीन बार तर कर के सुखावें और फिर बारीक पीसकर और कपड़े में छानकर रखलें। इस औषधि को नासूर में भरने से नासूर बहुत जल्दी आराम होता है।

हकीम अलीशा कहता है कि नासूर के ऊपर यह दवा निहायत और अजीब फायदेमन्द है। दस बार के प्रयोग में एक बार भी ऐसा नहीं देखा गया कि नासूर अच्छा न हुआ हो। दूसरे हकीमों ने भी यही लिखा है कि यह दवा हर जगह के नासूरों में फायदेमन्द है। एक बार गुदा के नासूर में भी इससे फायदा पहुँचा।

अगर चीनी मिट्टी न मिले तो चीनी के बरतन का फूटा हुआ टुकड़ा काम में ले सकते हैं।

(ख० अ०)

चीपी।

नाम—

बम्बई—चीपी। बंगाल—अर्चिंक, ओर्च। उरिया—सुन्दरिगुन। मराठी—[illegible]। [illegible]—सिनई। मलयालम—थिरल, दिलति। लेटिन—So[illegible]neratia C[illegible] ([illegible] रेसिम्रोलेरिस)।

वर्णन—

यह वनस्पति हिन्दुस्तान, सीलोन, मलाया प्राय द्वीप, स्याम और [illegible] के समुद्र के किनारों पर पैदा होती है। यह एक छोटे कद का वृक्ष होता है। इसके पत्ते [illegible] ६ [illegible] वाले और पत्र ५ से ५ सेन्टिमीटर तक लम्बा और [illegible] होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति रक्त स्तम्भक और [illegible] होती है। इसके [illegible] और [illegible] पर [illegible] से लाभ होता है। [illegible] है।

चीना

नाम

संस्कृत—चीनक, काककंगु, शुश्लक्षण। हिन्दी—चेना, चीना। बंगाल—चिने। मराठी—रा
गुजराती—चीणों। फारसी—उरजान। अरबी—जारेगा। अंग्रेजी—Millet (मिलेट)। लेटिन—
Panicum Miliari (पेनिकम मिलेरी)।

वर्णन—

यह एक प्रकार का अनाज है जो कगनी की जाति का होता है। यह धान मथुरा, आगरा पंजाब, बुन्देलखण्ड आदि में खेती करके बहुत पैदा किया जाता है। शिमले के तरफ के लोग इसकी रोटी बनाकर तथा चांवलों की तरह पकाकर खाते हैं। व्रत उपवास के रोज हिन्दू लोग इसका फलाहार करते हैं। इस अनाज में से ६६ प्रतिशत मैदा और ३ प्रतिशत तेल निकलता है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेदिक मत से चीना मधुर, रुचि कारक, कसेला, स्वादिष्ट, शीतल, दाह नाशक, रूखा और भग्न हड्डी को जोड़ने वाला है।

यूनानी मत—यूनानी मत से यह पहले दर्जे में सर्द और दूसरे दर्जे में खुश्क है, कब्जियत करता है, मेदे की रतूबत को सुखाता है, जलोदर की बीमारी में पथ्य है। इसको दूध और घी के साथ खाने से सीने की जलन दूर होती और वीर्य बढ़ता है।

हूक्स बूलर के मतानुसार बलूचिस्तान में शोरन नामक स्थान पर यह सुजाक की बीमारी पर काम में लिया जाता है।

कर्नलचोपरा के मतानुसार यह वनस्पति तिल्ली और रक्तश्राव में फायदा पहुँचाती है।

चीकू

नाम—
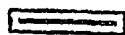
हिन्दी—सपेना, चीकू। गुजराती—चीकूनू झाड। कच्छी—चीकूजो झाड। दक्षिण—चिकू। इंडिया—सोपेटो। अंग्रेजी—Bully Tree। लेटिन—Achras Sapota (एकूस सपोटा)।

वर्णन—

चीकू का वृक्ष छोटा और सुन्दर होता है। इसमें बारहों महीने पत्ते रहते हैं। इसकी छाल भूरे रंग की होती है। फूल फीके, सफेद और फल टीमरू की तरह रहते हैं। इसमें टीमरू की तरह ही गुठलियां निकलती हैं। यह वृक्ष मूलतः अमेरिका का है, मगर अब भारतवर्ष में भी बहुत पैदा होने लगा है।

गुण, दोष और प्रभाव—

कोकण के अन्दर इसका फल पित्तनाशक और ज्वरनाशक औषधि की बतौर काम मे लिया जाता है। इसकी छाल पौष्टिक और ज्वरनाशक होती है। इसकी क्रिया साधारणतया सिनकोना की तरह होती है इसके बीज एक जोरदार मूत्रल औषधि हैं। इन बीजों की मात्रा २ रत्ती की है। इससे अधिक मात्रा में यह जहरी हो जाते हैं। इनके प्रयोग से पेशाब बहुत अधिक होता है। इसकी छाल का काढा बनाकर जीर्ण ज्वर में दिया जाता है।

वेटली के मतानुसार इसकी छाल मे ज्वरनाशक और बीज में मूत्रल और विरेचक गुण रहता है।

वेस्ट इंडीज में इसके बीज मृदु विरेचक और मूत्रल माने जाते हैं और इसकी छाल पौष्टिक और ज्वरनाशक मानी जाती है। कम्बोडिया में इसकी छाल सकोचक और ज्वरनाशक मानी जाती है। अतिसारमें इसका काढा बनाकर दिया जाता है।

चुकन्दर

नाम—
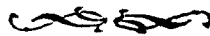
संस्कृत—रक्तनञ्जन। हिन्दी—चुकन्दर। फारसी—चुकन्दर। उर्दू—चुकन्दर। बंगाल—बिटपलंग, पलंग साग। अंग्रेजी—Beet (बीट) लेटिन—Beta Vulgaris (बीटा वल्गेरिस)।

वर्णन—

यह एक प्रकार की तरकारी है। इसका पौधा मूलीके पौधे की तरह होता है। इसका कन्द भी मूली की तरह होता है मगर इसका रंग लाल होता है और इसका आकार लम्बाई की अपेक्षा मोटाई में ज्यादा होता है। इसको काटनेसे लाल रंग का पानी बहता है और इसके अन्दर चकरियां नजर आती हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

इसके पत्ते मूत्रल, विरेचक, सूजन को दूर करने वाले और सिरदर्द, लकवा, यकृत और तिल्ली की बीमारियोंमें और कान के दर्द में लाभदायक हैं। इसके बीज कड़वे, मूत्रल, कफनिःसारक, शान्तिदायक, पेटके आफरे को मिटाने वाले, ऋतुश्राव नियामक और सूजन को दूर करने वाले होते हैं। इनका तेल दर्द पर मालिश करनेसे लाभ पहुंचाता है। इसका कन्द मीठा, सूजन में लाभदायक और मानसिक तकलीफों में फायदेमन्द है। इसके ताजे पत्तों को रगड़ और मोच पर लगाने से फायदा होता है।

रासायनिक विश्लेषण—

चुकन्दरके कन्दमें एक प्रकारकी शक्कर पाई जाती है। अगर इसको व्यापारिक तौर पर तैयार किया जाय तो गन्ने की शक्कर से यह सस्ती पडती है। मगर गन्नेकी शक्कर के बराबर इस में गुण नहीं होते। गन्ने की शक्कर जैसे हृदय के लिये पौष्टिक पदार्थ है वैसे यह नहीं है।

यूनानी मत—मखजाइनुल अदवियाके मतानुसार चुकन्दरके पत्तोंके रसको शहदके साथ सूजनपर लगानेसे सूजन बिखर जाती है। इसके पत्तोंके काढेको ठंडा करके आगसे जले हुए स्थानपर डालने से लाभ होता है। इसके रस को कुनकुना करके कान में टपकानेसे कानकी सूजन और कानके दर्दमें फायदा होता है। इसके पानी को नाकमें टपकाने से दिमाग की खराबी दूर होती है और मिरगी में लाभ पहुंचता है। इसकी जड़का असारा नाकमें टपकाने से आधा शीशी दूर होती है। इसके रससे कुल्ले करने से दाँत का दर्द हमेशा के लिये मिट जाता है। राई और सिरके के साथ इसको पकाकर खाने से यकृत और तिल्लीके सुद्दे बिखर जाते हैं। गरम मसाले के साथ इसको खाने से तिल्ली की सूजन बिखर जाती है। अगर किसी के सिर के बाल उड़ गये हों तो इसके पत्तों के पानी को लगातार लगाते रहने से बाल फिर जम जाते हैं। इसकी साग बनाकर खाने से कामेंद्रिय की शक्ति बढती है। यह वनस्पति गरम मिजाज वालों को दही और मट्ठे के साथ और सर्द मिजाज वालों को गरम मसाले के साथ खाना चाहिये।

मुज़िर—यह वनस्पति अधिक मात्रा में सेवन करने से पेट में फुलाव और मरोड़े पैदा करती है। मेदे को नुकसान पहुंचाती है। इसकी जड़ से जी मचलता है और कभी २ उदर शूल भी पैदा हो जाता है।

दर्पनाशक—इसके दर्प को नाश करने के लिये गरम मसाला, सिरका, राई, खट्टे अंगूर का रस और नींबू का शर्बत दुरुस्त है।

प्रतिनिधि—इसका प्रतिनिधि शलगम है।

चुन्नापिण्डू

नाम—

यूनानी—चुन्ना पिण्डू ।

वर्णन—

यह एक जंगली वृक्ष है। इसकी शाखाएं बहुत घनी होती हैं। इसके पत्ते गोल और छोटे होते हैं। उनका रंग हरा होता है। इसके फल गुच्छों में लगते हैं। हरएक फल आकार में ज्वार के दाने के बराबर और सफेद होता है। इसका स्वाद खटमीठा होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानीमत—यूनानी मतसे यह सर्द और तर है, पित्त को नष्ट करता है। जी मिचलाने को रोकता है। मेदे को ताकत देता है। भूख बढाता है। पित्तजन्य बुखार को दूर करता है, देर से हजम होता है। गरम प्रकृति वालों के लिये यह विशेष लाभ दायक है।

मुजिर—यह फेफडे को नुकसान पहुँचाता है।

दर्प नाशक—इसके दर्प को नष्ट करने के लिये मीठा अनार मुफीद है (ख० अ०)

चुनार

नाम—

यूनानी—चुनार ।

वर्णन—

[illegible]

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानीमत—यूनानीमत से यह पहले दर्जे में सर्द और खुश्क है। इसकी लकड़ी सर्द और तर होती है। इसके पत्तों को पीसकर लेप करने से जोड़ों और जाँघों की सूजन मिट जाती है। कफ की वजह से पैदा हुई हर जगह की सूजन में यह लेप मुफीद है। इसकी छाल को जलाकर जख्मों पर छिड़कने से जख्म सूख जाते हैं। इसकी राख का लेप करने से सफेद दाग में फायदा होता है। इसकी छाल को सिरके में पकाकर चर्बी मिलाकर आग से जले हुए स्थान पर लगाने से शान्ति मिलती है। इसके हरे पत्तों को पीस कर सिरपर लगाने से सिरदर्द मिटता है। इसके सूखे पत्ते और फल का चूर्ण सूंघने से नक्सीर का खून बन्द हो जाता है।

मुजिर—यह वस्तु फेंफड़े और हलक् को नुकसान पहुँचाती है। श्वास की नलीपर भी इसका खराब असर होता है।

दर्प नाशक—इसके दर्प को नाश करने के लिये मक्खन, शहद, दूध, दालचीनी और अगर मुफीद है।

प्रतिनिधि—इसकी छाल के बदले मे अनार की छाल और इसकी लकडी के बदले में अञ्जीर लकड़ी काम में ली जा सकती है। (ख० अ०)

चुंगी

नाम.—

यूनानी—चुंगी।

वर्णन—

यह एक छोटी जाति का पेड़ होता है। इसकी दो जातियाँ होती हैं। एक छोटी और एक बडी। छोटी जाति के पौधे की लम्बाई आधे गज तक और बडे की एक गज तक होती है। छोटी जाति के पत्ते अनार के पत्तों की तरह मगर उनसे लम्बाई में कम और चौडाई में ज्यादा होते हैं। इसके फूल पीले होते हैं और बीज फलियों में लगते हैं। इसके फूल, फली और बीज, पवार के फूल, फली और बीज की तरह होते हैं। इसका स्वाद कुछ कड़वा और तेज होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मत—यूनानी मत से यह दूसरे दर्जे में गरम और खुश्क है। मेदे के लिये यह बहुत ताकतवर है, यह भूख बढ़ाता है। इसकी जड़ को मुँह में रखने से प्यास और खुश्की मिटती है (ख०अ०)

चितसिंगी

नामः—

हिन्दी—चितसिंगी । गुजराती—घोली अडबाउगदव । कच्छी—अच्छेरेजिजको । अंग्रेजी—White Melilot (व्हाइट मेलिलोट) । लेटिन Melilotus Alba (मेलिलोटस एल्बा) ।

वर्णन—

यह एक प्रकार का घास होता है। इसके पौधे १ फुट से २ फुट तक ऊंचे होते हैं। पत्ते मेथी के पत्तों की तरह होते हैं। फूल सफेद आते हैं। इसकी फली में प्रायः दो २ बीज निकलते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

यह औषधि अस्लर्क नामक औषधि की जगह पर काम में ली जाती है।

(अस्लर्क का वर्णन इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में देखिये)

चुम्बर

नामः—

पंजाब—चुम्बर, दरनक, कबूर । लेटिन—Artemisia S[illegible] ([illegible]) ।

वर्णन—

यह वनस्पति कुमाऊ और सिक्किम में दस हजार फीट [illegible] होती है। यह एक [illegible] झाड़ी हुआ करती है। इसकी [illegible] है। इसके पत्ते [illegible] ५ से लेकर ५ [illegible] मीटर तक लंबे होते हैं। [illegible] होते हैं [illegible] पीले होते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

[illegible]

चूलासी

नाम—

नेपाल—चूलासी। लेटिन—Osbeokia Crinita (ग्रासवेकिया क्रिनिटा)।

वर्णन—

यह वनस्पति सिकिम और भूटान में ४००० फीट से ८००० फीट तक की ऊँचाई पर और खासिया पहाड़ियों तथा बरमा में पैदा होती है। यह एक झाड़ीनुमा बहुशाखी वृक्ष है। इसके पत्ते ५ से लगाकर १० सेंटिमीटर तक लम्बे बरछी आकार के होते हैं। इसके फूल बैंगनी और सफेद होते हैं। इसका फल २ सेंटिमीटर तक लंबा होता है।

गुण दोष और प्रभाव—

चापा जाति के लोग इसके सूखे पत्तों का काढ़ा दांत के दर्द में काम में लेते हैं।

चूका

इसका वर्णन अमलवेत के प्रकरण में इस ग्रन्थ के पहले भाग में पृष्ठ १०५ पर देखना चाहिये।

चूका (सिकिम)

नाम—

सिकिम—चूका। लेटिन— Rheum Novile (हीयूम नोवाइल)।

वर्णन—

यह वनस्पति हिमालय के भीतरी भागों में १२००० फीट से १५००० फीट तक की ऊंचाई पर होती है। इसकी जड़ें बहुत लंबी होती हैं। इसके पत्ते लंबगोल, कटी हुई किनारों के और फल गोल होते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

इसकी गठान तीक्ष्ण, कटुपौष्टिक और मृदुविरेचक होती है। पेचिश में क्षुधा के नष्ट होने पर यह लाभदायक है। इसके गुण रेवंदचीनी के गुण से मिलते जुलते हैं।

यूनानी मतानुसार इसकी जड़ तीखी और कड़वी होती है। यह विषनाशक, विरेचक, ऋतुस्राव नियामक और मूत्रल होती है। पित्त, कटिवात, मस्तक की गरमी, बवासीर, जीर्णज्वर, वायुनलियों का जीर्ण प्रदाह, दमा, शूल, और रगड़ में यह उपयोगी है।

कर्नल चोपरा के मतानुसार इसमें ग्लुकोसाइड्स और अन्य अम्ल रहते हैं। इसके गुण रेवंद-चीनी से मिलते जुलते हैं।

चेरुका

नाम—

हिन्दी—चेरुका। लेटिन—Capparis Heyneane (केपेरिस हेनिएना)।

वर्णन—

यह वनस्पति भारत के दक्षिण में तथा सीलोन में पैदा होती है। यह एक झाड़ीनुमा वृक्ष है। इसके पत्ते हरे और तीखी नोक वाले रहते हैं। इसके फूल सफेद और हलके पीले रंग के होते हैं इनकी पंखड़ियां गोलाकार रहती हैं। इसका फल अभी तक देखा नहीं गया।

गुण दोष और प्रभाव—

कर्नल चोपरा के मतानुसार इसके पत्ते आमवात और जोड़ों के दर्द में उपयोगी हैं। इसके फूल विरेचक होते हैं।

चेम्बुल

नाम—

पंजाब—चेम्बुल। लेटिन—Ranunculus Arensis (रेननक्युलस एरेन्सिस)।

वर्णन—

यह वनस्पति हिमालय में काश्मीर से कुमाऊं तक और लघु तिब्बत में पैदा होती है। यह एक छोटी बहुशाखी वनस्पति है। यह विषैली और [illegible] भी होती है। इसके फूल हल्के पीले रंग के और फल [illegible] रहते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूरोप में यह वनस्पति पारीयिक ज्वर, गठिया और दमे के उपयोग में ली जाती है। इसके पत्ते विषैले होते हैं।

चेरुपिनाई

नाम—

बंबई—चेरुपिनाई, सरापुना। मराठी—बाबी, सुरई। कनाड़ी—बाबी, बोबी। ट्रावनकोर—अत्तुपुन्ना, कत्तपुन्ना, सेरुपुन्ना। तामील—सिरुपिनाई। लेटिन—Calophillum Apotalum (कैलाफिलम एपीटेलम)

वर्णन—

यह वनस्पति बंबई प्रेसिडेन्सी के पश्चिमी घाट में और मैसूर से ट्रावनकोर तक १००० फीट की ऊंचाई तक होती है। यह एक मध्यम आकार का वृक्ष है। इसकी छाल कुछ पीले रंग की, पत्ते कटी हुई किनारों के, लंबगोल, फल अंडाकार, चिकना और पकने पर लाल हो जाता है।

गुण दोष और प्रभाव—

इसका गोंद घाव पूरने वाला, वेदना शून्यता पैदा करनेवाला और प्रदाह को कम करने वाला होता है। इसके बीजों से तैयार किया हुआ तेल कोढ और चर्मरोगों मे उपयोगी माना जाता है। इसका शीत निर्यास शहद के साथ मिलाकर गीली खुजली और सन्निपात के उपयोग में लिया जाता है।

चेदवला

नाम—

हिन्दी—चेदवला, चेतो। पंजाब—चमा, चेतर, चेतेन, दादुर, गोकसा, कुंडिज, ममरल मतनी, निगेर, रेतियोन, रंगरक, शोमफल, सिंदरोर, शीतपंजा, तादू, थलोट। कुमाऊ—स्पिटी। तिब्बत—नैल, सापो। लेटिन Rhamnus Dahurious (हैमूनस डेव्हरीकस)।

वर्णन—

यह वनस्पति पंजाब और हिमालय में २५०० से ६००० फीट की ऊंचाई तक तथा शिमला, भूतान और मद्रास प्रेसिडेन्सी में पैदा होती है। यह एक प्रकार की कटीली झाड़ी है। इसके पत्ते बहुत घने, पंखड़ियां लंब गोल तथा फल काला और चमकीला रहता है। फल के अन्दर गुठली बहुत सख्त होती है। यह स्वाद में बहुत कड़वा होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

कर्नल चोपरा के मतानुसार इसका फल वमनकारक और विरेचक होता है। तिल्ली के विकारों में यह उपयोगी माना जाता है। इसमें ऑक्सिमेथिल, एन्थ्राक्विनोन्स और रेमनोस नामक पदार्थ पाये जाते हैं।

चेरुचुरल

नाम—
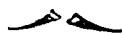
मलयालम—चेरुचुरल, कडुचुरल। लेटिन— Calamus Travancoricus (कैलेमस ट्रेवेनकोरिकस)।

वर्णन—

यह वनस्पति दक्षिणी प्रायद्वीप में मलाबार से ट्रावनकोर तक होती है। इसका तना बहुत नाजुक रहता है। इसके पत्ते ३ से लेकर ५ तक के गुच्छे में रहते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

कर्नल चोपरा के मतानुसार इसके कोमल पत्ते पित्तविकार, अनिमांद्य और कान की तकलीफों में उपयोगी माने जाते हैं। ये कृमि नाशक होते हैं।
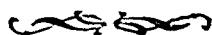
चोबचीनी

नाम—

संस्कृत—द्वीपान्तरवचा, फ्रान्तोपहिता। हिन्दी—चोबचीनी। बंगाल—तोपचीनी। मराठी—चोपचीनी। गुजराती—चोपचीनी। फारसी—बेखचीनी, एवन। अरबी—एवन। तेलगू—पटगीचक्का। अंग्रेजी China Root (चायनारूट)। लेटिन— Smilax China (स्माइलेक्स चायना)।

वर्णन—

चोबचीनी की जडें चीनदेश से यहाँ पर आती हैं। चीन में इनको "ट्रूफ़ह" कहते हैं। इसका पेड़ जमीनपर बिछा हुआ होता है। डालियाँ पतली होती हैं। इसके पत्ते लंब-गोल, पतले और तेजपात के पत्तों से मिलते जुलते होते हैं। इसकी जड सुर्खी माइल गुलाबी रंग की होती है। कोई २ सफेद और काली भी होती है। चीन के पहाडों के अतिरिक्त, बंगाल में सिलहट के पहाडों पर और नेपाल के पहाड़ों पर भी यह पैदा होती है।

मखजूनल अदविया में चोबचीनी का वर्णन करते हुए लिखा है कि यह एक जाति की लता की जड़ होती है जो चीन के तरफ से आती है। इसके टुकडे प्राय: एक बालिश्त तक या उससे छोटे बड़े होते हैं। कोई टुकड़ा कम गठानवाला, कोई अधिक गठानोंवाला, कोई चिकना, कोई खुरदरा कोई वजनदार, कोई हलका, कोई सख्त, कोई मुलायम, कोई गुलाबी रंग का, कोई सफेद और कोई काला होता है। इन टुकड़ों में सबसे अच्छी चोपचीनी वही होती है, जिसका रंग लाल या गुलाबी हो, स्वाद मीठा हो, चमकदार और चिकनी हो, जिसमें गांठें कमहो और रेशे न हो। जो भीतर और बाहर से एक रंगकी हो, जो स्वादमें कुछ मीठी हो, और जो पानी में डालने से डूब जाय। जो टुकडे वजन में हलके और सफेद रंग के हों उनको कच्चे समझना चाहिये और जो काले रंग के टेढ़ेमेढ़े और अनेक गठानों वाले हों उनको हलकी जाति के समझना चाहिये।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत— पूर्व कालीन आयुर्वेदिक ग्रन्थों में इस औषधि का उल्लेख कहीं देखने को नहीं मिलता। मगर मध्यकालीन भावमिश्र ने अपने भावप्रकाश ग्रन्थ में इसका वृत्तान्त लिखा है। इससे ऐसा मालूम होता है कि इस औषधि का प्रचार मुसलमानी हकीमों के द्वारा ही यहां पर हुआ।

भावप्रकाश के मतानुसार चोबचीनी चरपरी, मधुर, कड़वी, गरम, मल मूत्र को शोधने वाली तथा आफरा, शूल, वात व्याधि, अपस्मार, उन्माद और अंग की वेदना को दूर करने वाली है। विशेष रूप से यह फिरंग रोग में लाभदायक है।

इसका रस कुछ मधुर और कुछ कड़वा होता है। यह गरम और अग्निवर्द्धक होती है। कब्जियत को मिटाती है। आफरा और उदरशूल को दूर करती है। दस्त और पेशाब को साफ लाती है। पक्षाघात, संधिवात तथा वायुके दूसरे रोगों में बहुत लाभदायक है। अपस्मार और उन्माद में भी फायदा पहुँचाती है। उपदंश रोग के लिए यह एक अक्सीर औषधि है। पुरुषों के वीर्यदोष और स्त्रियों के रजोदोष को यह दूर करती है। कंठमाल और नेत्ररोगों में भी यह लाभदायक है।

डाक्टर वामन गणेश देसाई का कथन है कि चोबचीनी की मुख्य क्रिया त्वचा के ऊपर और

त्वचा के उपभाग अर्थात् संधियों, बंधन और रस ग्रन्थियों पर होती है। यह एक उत्तम रसायन और दिव्य औषधि है। इसकी मात्रा ३ माशे से ६ माशे तक है, जो सूंठ के साथ दूध के अनुपान से दी जाती है।

सुजाक की वजह से पैदा हुई संधियों की सूजन और संधियों की अकड़न में तथा उपदंश की दूसरी और तीसरी अवस्था में चोबचीनी बहुत लाभ पहुँचाती है। इन रोगों में पोटेशियम आयोडाइड की अपेक्षा अधिक शीघ्रतासे और अधिक निश्चयपूर्वक चोबचीनी लाभ पहुँचाती है। सुजाक और उपदंश की वजह से पैदा हुई रसग्रन्थियों की सूजन में इसके सेवन से पहले दर्द की कमी होती है और उसके पश्चात सूजन उतरती है। इन रोगों में पोटेशियम आयोडाइड से जैसा लाभ होता है वैसा चोबचीनी से नहीं होता। यह औषधि चूर्ण के रूप में जैसा गुण बतलाती है वैसा क्वाथ या शीतनिर्यास के रूप में नहीं बतलाती।

चोबचीनी शरीर की संधियों और शिराओं के अन्दर प्रवेश करके अविकृत पित्त को सहायता पहुँचाती है। खून को साफ करती है, संधियों को मजबूत करती है, पेशाब [illegible] है, [illegible] धर्म को साफ करती है। लकवा हाथ पैरों का सूजना, उपदंश की वजह से होने वाले [illegible] दर्द, [illegible] सीसी, पुराना नजला, विस्मृति, चक्कर, उन्माद, उपदंश और इसी के रोगों में भी यह लाभदायक है। खून को शुद्ध करने का इसमें खास गुण होने की वजह से यह फोड़े, फुन्सी, [illegible] की [illegible] से होने वाले रोगों में अकसीर-फायदा करती है। इसके सेवन से अफीम खाने की [illegible] छूट जाती है। जहरी पदार्थों के विकार को भी यह शांत करती है। इसी प्रकार [illegible] की शक्ति नष्ट हो जाने से नाउम्मीद हो गये हों उनको भी यह फिर से नवीन पुरुषार्थ देती है।

डाक्टर मुडीन शरीफ कहते हैं कि चोबचीनी की मजबूत [illegible] वाली यह एक [illegible] और सुनिश्चित औषधि है। [illegible] आइल, [illegible] और [illegible] आयोडाइड के [illegible] में यह बहुत सफलताके साथ काम में आती है। मैंने [illegible] रोग की [illegible] तथा उपदंश, सन्धिवात और कंठ माला के कितने ही केसों में इसका उपयोग बहुत [illegible] के साथ किया है। यह औषधि चूर्ण और क्वाथ के रूप में काम में ली जा सकती है।

उपरोक्त विवेचन से मालूम होता है कि चोबचीनी [illegible] है और इस लिये यह [illegible] के समान [illegible], उपदंश के [illegible] पर बहुत लाभ पहुँचाती है। इसके [illegible] होता है।

यूनानीमत—यूनानीमतसे चोबचीनी शरीर के अन्दर मुलायिमत पैदा करती है। भीतरकी खराबियों को दूर करती है, खून साफ करती है, दिल, दिमाग, कलेजे और कामेन्द्रियको ताकत देती है। फालिज, लकवा, कंपकंपी, ऐंठन, पागलपन, मालीखोलिया इत्यादि ज्ञानतन्तु सम्बन्धी बीमारियाँ, गर्भाशय की बिमारियाँ, गुदा सम्बन्धी बीमारियाँ, तथा कोढ़, खुजली, जहरीले फोड़े, दाद, इत्यादि रक्त सम्बन्धी रोगों में यह बहुत लाभ पहुँचाती है। वातसे पैदा हुआ बुखार, मौसिमी ज्वर और फील पाँव में भी यह लाभदायक है। इससे अफीम खानेकी आदत छूट जाती है। इसके सेवन से चेहरेका रंग लाल, साफ और रौनकदार हो जाता है जिसको बेजानकारीमें पेशाब जानेका रोग हो उसे भी यह ठीक करती है।

इसको सर्दीके शुरूमें अथवा बसन्त ऋतुमें सेवन करना चाहिये। कड़ाकेकी सर्दी और कड़ाकेकी गर्मीमें इसका सेवन मुनासिब नहीं। जवानीके आखिरमें और बुढ़ापे के शुरूमें इसका सेवन करनेसे बुढ़ापेका असर अधिक मालूम नहीं होता। कफ सम्बन्धी बीमारियोंमें इसका सेवन ठीक नहीं है।

मुजिर—अधिक गरम मिजाजवाले लोगोंको और बच्चोंको इसके सेवनसे बहुत खुश्की पैदा होती है। निर्बल मनुष्योंको इसका सेवन करनेमें बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिये क्योंकि यह हृदय की धड़कनको कम करती है।

दर्प नाशक— इसके दर्पको नाश करनेके लिये अनार उत्तम है।

प्रतिनिधि—हकीमोंके मतानुसार इसका प्रतिनिधि उसवा और वैद्योंके मतानुसार असगंध है।

मात्रा:–इसके चूर्ण की मात्रा ३ माशेसे ६ माशे तककी है।

उपयोग—

उपदंश—जिसका शरीर उपदंशसे फूटगया हो और जिसके सारे शरीरमें उपदंशका विष फैल गया हो उसको चोबचीनीके शीत निर्यासमें शहद मिलाकर पिलाना चाहिये।

गंडमाल—इसका चूर्ण ४ माशे से १ तोले तककी मात्रामें शहदके साथ चटानेसे कंठ मालमें लाभ होता है।

रक्त विकार—इसके चूर्णको शहदके साथ चटानेसे त्वचाके पुराने रोग मिटते हैं।

बनावटें:—

उपदंश नाशक चूर्ण—चोब चीनी १६ तोले, मिश्री ४ तोले, पीपर, पीपलामूल, काली मिर्च, लवंग, अकल करा, सूंठ, खुरासानी अजवायन, वायविडङ्ग, दालचीनी, ये सब चीजें एक २ तोला। इन सबका बारीक चूर्ण करके इसमें से ६ माशे चूर्ण सुबह शाम शहद के साथ लेने से रक्त में मिले हुए उपदंशके कीटाणु नष्ट होते हैं और उपदंश के परिणामसे होने वाले अन्य रोग, जैसे रक्त विकार, सन्धिवात, गठिया, लकवा, प्रमेह, इत्यादि नष्ट होते हैं। (वनौषधि गुणादर्श)

चोबचीनी पाक—चोबचीनी ४८ तोले, पीपर, पीपला मूल, कालीमिर्च, सूंठ, अकलकरा और लौंग, ये सब एक २ तोला। इन सबके चूर्णका जितना वजन हो उतनीही शकरकी चाशनीमें इसका पाक बना लेना चाहिये। इस पाकमें से एक २ तोला सवेरे-शाम लेनेसे नपुंसकता, व्रण, कुष्ठ, वातरोग, भगन्दर, क्षय, इत्यादि रोग दूर होते हैं।

भगंदर नाशक मोदक—चोबचीनीका चूर्ण आधी छटाक, शकर आधी छटाँक और घी आधी छटाँक। इन तीनोंको मिलाकर इनके २ लड्डू बनालेना चाहिये। एक लड्डू सवेरे और १ लड्डू शामको खाकर ऊपरसे गायका दूध पीना चाहिये। पथ्यमें सिर्फ गेहूँकी रोटी, घी, शकर और दूधही देना चाहिये। १४ दिन तक इस औषधिका सेवन करनेसे भगंदर नष्ट होजाता है। अगर इस दवाके सेवनसे शरीरमें गर्मी मालूम पड़ेतो दवाकी मात्रा कम करदेना चाहिये और घी दूधकी मात्रा बढ़ादेना चाहिये।

(जगलनी जड़ी बूँटी)

रक्त शोधक क्वाथ—चोबचीनी, अनंत मूल, मजीठ, सनाय, हरड, बहेड़ा, आँवला, नीम गिलोय, नीमकी अन्तर छाल, कुटकी, पीपलकी अन्तर छाल, दारू हलदी और मुलेठी इन सबको समान भाग लेकर चूर्ण करलेना चाहिये। इस चूर्णमें से ४ तोला चूर्ण लेकर ६४ तोले पानीमें औटाना चाहिये। जब ८ तोला पानी बाकी रह जाय तब छानकर पी लेना चाहिये। इस प्रकार दिनमें दो बार इस क्वाथका सेवन करनेसे शरीरमें फैला हुआ उपदंशका विष दूर होजाता है तथा सब प्रकारके रक्त विकार, खाज, खुजली, व्रण, भगंदर, कुष्ठ, वगैरह रोग नष्ट होते हैं। एक्जिमाके ऐसे केसमें जिनमें डाक्टरोंने रोगीका पांव काट डालनेकी सलाह दी थी इस औषधिके प्रयोगसे आराम होता देखा गया है।

मदन संजीवन चूर्ण—जायफल, लवंग, जायपत्री, पीपर, वज, तमाल पत्र, इलायची, नागकेशर, पीपलामूल, अजवायन, कौंचबीज, सेमरमूसली, असगन्ध, सफेदमूसली, बलबीज, गोखरू, समुद्रशोषके-बीज, धतूरेके बीज, वंशलोचन और मुलेठी। ये सब चीजें एक २ तोला। चोबचीनी ४० तोला। इन सब औषधियोंका बारीक चूर्ण करके रख देना चाहिये। इस चूर्णमें से ३ माशे चूर्ण ३ माशे शहद और ६ माशे घी के साथ मिला कर चाटना चाहिये और ऊपरसे गायका दूध पीना चाहिये। यह चूर्ण अत्यन्त कामोद्दीपक और वाजिकरण है। इससे सब प्रकारके वीर्यदोष नष्ट हो कर मनुष्यकी काम शक्ति बहुत बढ़ती है।

चूना

नाम—

संस्कृत—चूर्णं, सुधा, महोदन्रूपरक, शिलारस, उद्भवा, हिन्दी—चूना। गुजराती—चूनो।

मरेठी—चूना । बंगाल—चूना । पंजाब—चूना । तेलगू—चुन्नपु । द्राविडी—शुन्नाम्बु अरबी—किलस । फ़ारसी—आहक । अंग्रेजी—Lime, Carbonate of Lime, quick lime ।

गुण, दोष और प्रभाव—

चूना भारतवर्षमें अत्यन्त प्राचीनकालसे जनसमाज के परिचयमें आरहा है । हज़ारों वर्ष पहिलेसे यहां पर चूनेसे इमारतें बनाने का काम होता आया है । कंकरीसे चूना जलाने की प्रथाभी यहां पर बहुत प्राचीन कालसे चली आई है । सुश्रुत, वाग्भट्ट, इत्यादि प्राचीन आयुर्वेदाचार्योंने औषधि विज्ञानमें भी इस वस्तुका उपयोग किया है ।

आधुनिक काल में इस वस्तुने और भी अधिक महत्व धारण किया है । मनुष्य शरीर का पोषण करनेके लिये और हड्डियों को मजबूत करनेके लिये आजकल केलशियम नामक तत्व बहुत उपयोगी माना जाता है और वह केलशियम इसी चूनेके अन्दर पाया जाने वाला एक तत्व है ।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानीमत— यूनानीमत से यह चौथे में गरम और खुश्क होता है । यह कब्जियत पैदा करता है, खट्टेपन को मिटाता है, पेशाब और खून को साफ करता है, जखम पर लगानेसे जखम भर देता है । सुजाकमें इसके पानीको पिचकारी देते हैं । आगसे जले हुए स्थान पर चौगुने मक्खनमें इसको मिला कर लगानेसे शान्ति मिलती है । जले हुए स्थानको शान्ति पहुचाने की इसमें खास तासीर है । चोट लगनेके स्थान पर इसको शहद और तिलके ताजे तेलके साथ मिला कर लगाने से लाभ होता है । शरीर के किसीभी हिस्से से खून बहता हो तो वहा पर धुले हुए चूनेको लगाने से बन्द हो जाता है । चूना और अफीम दोनों को समान भाग लेकर उड़दके बराबर गोलियाँ बना कर सुबह, शाम लेनेसे दस्त, मरोड़, पेचिश और संग्रहणीमें लाभ होता है । अदरकके पानीमें चूना मिला कर थोड़ा सा नमक डालकर सर्दी की सूजनपर लगानेसे सूजन बिखर जाती है ।

मुज़िर—अधिक मात्रामें चूना खाने और पीनेसे पीने वालेके मुंहमें खुश्की पैदा होती है, मुंहमें छाले होजाते हैं, मेदेमे जलन होकर मेदा खिचने लगता है, पेशाब रुक जाता है, आंतोंमें घाव होकर मरोड़ी और खूनके दस्त आने लगते हैं, दिलमें धड़कन होकर बेहोशी पैदा होजाती है । अगर ऐसा उपद्रव हो तो ताजा दूध या बादामका तेल पिलाना चाहिये और तर पदार्थ खिलाना चाहिये ।

कर्नल चोपराके मतानुसार कलीके चूनेमें पाया जाने वाला केलशियम सब प्रकारके प्रादाहिक सूजन के लिये एक उत्तम औषधि है । इसे चूनेके पानीके रूपमें काममें लेते हैं । २ औंस कलीके चूनेको एक गैलन पानी में डालकर छोड़ देते हैं । चूना जम जानेपर पानी को नितार लेते हैं । इसी लाइमवाटरमें केलशियम रहता है । इस चूनेके पानी को किसी साधारण जातिके तेलमें मिलाकर खाज, खुजली, जलना

इत्यादि चर्म रोगों पर लगाने व पिलाने के काममें लेते हैं। बच्चोंके पेटके कीड़ोंको नष्ट करनेके लिये २ औंस चूनेके पानी का एनिमा दिया जाता है। मंदाग्नि और हृदय की जलनमे भी इसको पिलानेमे बडा लाभ होता है। वमन और अतिसारमें, बच्चों की वमन और क्षय मे और खनिज अम्लोंके विषमें चूने का पानी उत्तम औषधि है इसे दूधके साथ मिलाकर देनेसे काफी फायदा होता है। १ पिंट दूधमे ४ औंस पानी मिलाया जाता है।

चूने का पानी अम्लनाशक होता है। इसे जोडों के दर्द में, दादमें, गजमें और पीलिया मे उपयोग में लेते हैं। मूत्र सम्बन्धी रोग, अस्थियों की वृद्धि और अम्ल की अधिकता में यह लाभदायक है।

उपयोग—

गांठ और मस्से—चूना, सज्जी, तूतिया और सुहागेको पानीमे पीसकर मसहर लगानेसे लाभ होता है।

मूत्रकृच्छ्र—चूनेके नितारे हुए पानीमें तिल का तेल और शक्कर मिलाकर पिलानेसे किसी दूसरी औषधिसे नही मिटने वाला मूत्रकृच्छ्र मिट जाता है।

अम्लपित्त—५ तोले कलीको ५ सेर पानीमें डाटदार शीशीमे बुझाकर २।३ मिनट तक हिलावे और डाट बंद कर रख छोडे। जब चूना नीचे जम जाय तब उस नितरे हुए पानी में से ढाई २ तोला पानी सुबह शाम पिलाने से अम्ल पित्त मिटता है।

बालरोग— ढाई तोले चूने को ५ तोले मिश्री के साथ खरल करके ढाई पाव पानी में मिलाकर डाटदार शीशी में भरकर डाट बन्द करके रख दे। जब पानी नितर जाय तब उसमें से १५।२०बूंद पानी दूधमें मिलाकर बच्चेको पिलानेसे उसके पेटमें होनेवाले दूध सम्बन्धी विकार नष्ट हो जाते हैं। वह तन्दुरुस्त रहता है और केलशियम की कमी से होने वाले उपद्रवोंसे उसकी रक्षा होती है।

अजीर्ण—अजीर्णकी वजहसे जिसका पेशाब रुक गया हो या पीला पड गया हो, खट्टी डकारें बहुत आती हों और वमन होने लग गई हों ऐसे रोगमें दूधमें चूनेका पानी मिला कर पिलाने से लाभ होता है।

अतिसार—जिसको अम्लपित्तसे अतिसार हो गया हो उसको चूनेके नितरे हुए पानीमें बबूलका गोंद मिला कर पिलानेसे अतिसार मिटता है।

नम्बर २—चूनेके पानीमें कुन कुना दूध और गोंद मिला कर गुदामें पिचकारी देनेसे भी अतिसार मिटता है।

वमन—जब किसी भी औषधिसे वमन नहीं रुकती हो तो दूधमें चूनेका नितरा हुआ पानी मिला कर पिलानेसे रुक जाती है। पीले बुखारमें काली वमन को रोकनेके लिये दूध और चूनेका पानी बहुत हितकारी है।

श्वेतप्रदर—एक भाग चूनेके नितरे हुए पानीमें तीन भाग पानी मिला कर पिचकारी देनेसे श्वेत-प्रदरमें लाभ होता है।

गंडमाला—जिस गंडमालमें पीववाले फोड़े होते हों और लगातार पानी पड़ते जाते हों वह भी चूने के पानी को दूध के साथ मिलाकर पीनेसे मिट जाती है मगर यह दूध १२ घंटेसे अधिक नहीं पड़ा रहना चाहिये। साथमें गंडमालाके फोड़ों पर चूनेका पानी भी लगाना चाहिये।

दुष्टव्रण—सवा पाव चूनेके नितरे हुए पानी में १५ रत्ती कपूर मिलाकर उपदंश सम्बन्धी फोडे और न भरनेवाले फोडों पर लगानेसे लाभ होता है। मगर इसका कपड़ा फोड़ा पर हमेशा तर रहना चाहिये। खुजली और दूसरे दाहक चर्मरोगोंमें चूनेके नितरे हुए पानीमें तेल मिलाकर उसमें कपड़ा तर करके रखने से बड़ा लाभ होता है।

कर्णरोग—चूनेके पानीमें दूध मिलाकर नाक या कानमें उसकी पिचकारी देनेसे नाक और कान का बहना बन्द हो जाता है।

क्षयरोग—क्षयरोग वाले मनुष्य को दूधमें चूनेका पानी मिलाकर देनेसे लाभ होता है। बहु मूत्रके लिये भी यह प्रयाग हितकारी है। जिस बच्चेकी गुदामें चुरनिये पड गये हो उसको चूनेके पानी की पिचकारी देनेसे लाभ होता है।

सखिये का विष— चूने का पानी पिलाने से सखिये का विष उतरता है।

अग्नि से जलना— अग्नि से जले हुए स्थान पर चूना और अलसी का तेल मिलाकर लगाने से शान्ति मिलती है।

शीतलाके व्रण— रूई के फोयेको चूनेके जलमे भिगो कर शीतला के व्रणों पर रखनेसे वह गहरे नहीं पडते हैं।

बदगांठ— चूना और शहद मिलाकर कपडेपर लगाकर बदगाठ पर बांधने से बदगांठ बिखर जाती है।

पसली का दर्द— चूने और शहद को कपडेपर लगाकर पसली के दर्दपर रखकर पट्टी बंधा देने से पसली का दर्द मिट जाता है।

मकडी का जहर— चूने को नीबू के रस में मिलाकर लगाने से मकडी का जहर उतर जाता है।

मस्तक पीड़ा— चूने और नौसादर को मिलाकर सुंघाने से कफ और वात का सिरदर्द और हर तरह की बेहोशी दूर होती है।

नारु— चूने और बोदुलवण को पानी के साथ पीसकर लेप करनेसे नारु मिटता है।

तिल्ली— चूने को शहद के साथ पीसकर तिल्ली पर लेप करके ऊपर अंजीर के पत्ते बांधनेसे तिल्ली मिटती है।

मकड़ी का विष— चूना, तेल और चिरोंजी को पीसकर लगानेसे मकड़ी का जहर दूर होता है।

अग्निमान्द्य— कली का चूना २ रत्ती, तुलसी के पत्तों के रस या अदरक, प्याज अथवा लहसनके रस के साथ लेने से आमाशय का खट्टापन दूर करके जठराग्नि को तीव्र करता है। आमाशय के विजातीय द्रव्यों को यह दस्त के द्वारा बाहर निकाल देता है।

अतिसार और संग्रहणी— कली का चूना २ रत्ती तुलसी के रस या शहद में मिलाकर चाटनेसे अतिसार और संग्रहणी में लाभ होता है।

खाज और खुजली— कली का चूना १ तोला लेकर ढाई तोला गौमूत्र में खूब अच्छी तरह मिला लेना चाहिये। उसके बाद उसमें थोड़ा मोम गलाकर डाल देना चाहिये। जिससे वह मरहम की शक्ल का हो जायगा। इस मरहम को खाज खुजली और घावों पर लगाने से बहुत जल्दी आराम होता है।

मूत्रकृच्छ्र—कली का चूना १ रत्ती, भैंस के कान का मैल पावरत्ती, इन दोनों चीजों को शहद में मिलाकर चटाने से पेशाब साफ होकर मूत्रकृच्छ्र में तुरंत लाभ होता है। इसको नाभिके ऊपर लगादेने से भी यही लाभ होता है।

आधा शीशी और मस्तक शूल— गोविन्द फल या व्याघ्रनखी की ३ माशे नरम कोंपलें लेकर उसमें आधी रत्ती चूना मिलाकर उसको गौमूत्र में मिला देना चाहिये। अगर व्याघ्रनखी न मिले तो राई नीम के पत्तों का रस निकालकर उसमें पाव रत्ती चूना मिलाकर उसकी १.२ बूंद नाक अथवा कान में डालने से आधाशीशी और मस्तकशूल फौरन आराम होता है।

मोच और हड्डी का टूटना— चूने को मक्खन के साथ मिलाकर मोच के ऊपर बांधने से मोचकी पीड़ा शान्त होती है और हड्डी में पड़ी हुई गठान भी बिखर जाती है। टूटी हुई हड्डीपर इस औषधि का लेप करके उसके ऊपर मोरपंख के डंडों की पट्टी बांधना चाहिये। इस पट्टी को ५-७ दिन में बदलते रहना चाहिये।

मुंहकी कीलें— चूने को शहद में मिलाकर मुंह की कीलों पर लगाने से मुंह की कीलें मिट जाती हैं।

वमन— चूने को पानी में घोल कर एक स्थान पर रख देना चाहिये। जब चूना नीचे जम जाय तब साफ पानी को नितारकर उस पानी में शहद मिलाकर पीने से वमन, जी का मिचलाना और आमाशय का खट्टापन दूर होता है। रुचि उत्पन्न होती है। बच्चा अगर दूध निकालता हो तो वह भी इस औषधि को देने से बंद होजाता है।

चमजुए— कई लोगों के गंदगी की वजहसे बगलमें, गुह्य स्थानों पर और आंखों की पलकों में चमजुएं पड जाती हैं। ऐसी हालतमे नहानेके गरम जलमें चूना और नीमके पत्तोंका रस डालकर उस पानीसे स्नान करनेसे और आँखे धोनेसे चमजुएं नष्ट होजाती हैं। रक्त और पसीनेके विकारको दूर करने के लिए ३ माशे घी में १ रत्ती चूना मिलाकर खाना चाहिये। नहानेके पहले शरीर पर चूना मिले हुए घी का मालिश कर लेना चाहिये। इस सारे उपचार से चमजुएं बहुत जल्दी नष्ट होती है।

यकृत और तिल्ली की वृद्धि— कली का चूना १ रत्ती और सरपखे की जड का रस १ तोला मिलाकर पेट पर लेप करने से और उस हिस्से पर शहद, सोंठ और चूने को समान भाग लेकर उसका बंधान बांधने से अच्छा लाभ होता हैं।

बिच्छू का विष— नीम के पत्तों के रसमें १ रत्ती चूना मिलाकर उस रस की १।२ बूंदे कानमे डालने से और डक पर बार २ लगाने से बिच्छू का विष उतरता है।

अग्नि से जलने पर— चूने के नितरे हुए पानी में दही की मलाई समान भाग मिलाकर लगाने से अग्नि के जले हुए पर शान्ति मिलती है।

शस्त्रका घाव— अगर चाकू छुरी, वगैरह किसी शस्त्र से गहरा घाव पड़ गया हो तो चूनेको मक्खन और सूंठ के साथ मिलाकर घाव में भरने से खून का बहना बन्द हो जाता है और कुछ दिनों में घाव अच्छा होजाता है।

कानका बहना— आधी रत्ती कली का चूना गौमूत्र में मिलाकर कानमें भरकर, १ घण्टे तक रोगी को ऐसे सुला देना चाहिये जिससे वह बाहर न निकल सके उसके बाद उसको बाहर निकाल देना चाहिये। इसप्रकार हर तीसरे दिन करने से कान का बहना बंद होजाता है।

नासूर—कली का चूना और मक्खी की हगार समान भाग लेकर शहद में मिलाकर उसमें बत्ती को तरकरके नासूर के अंदर भरने से और गौमूत्र और नीम के पत्तों के रससे व्रण को धोते रहने से नासूर जल्दी भर जाता है।

हृदयरोग—कलीका चूना ३ रत्ती और गुड ५ तोला इनको मिलाकर रोग के हमले के अनुसार कमज्यादा मात्रामें चटानेसे हृदयके भीतरका वेग और पीडा मिटकर हृदय मजबूत होता है और रक्ताभिसरणकी क्रिया सुधर जाती है।

दमा—एक रत्ती कलीका चूना १ तोला शहद में मिलाकर चाटने से दमे में लाभ होता है।

बालकोंका सूखा रोग—कलीका चूना १ रत्ती, शहदमें मिलाकर चटाकर ऊपर से धारोष्ण दूध पिलाने से बालकों का सूखा रोग मिटता है।

वायुगोला—कलीका चूना डेढ़ रत्ती शक्कर १॥ रत्ती और नमक १॥ रत्ती पाव भर पानी में मिलाकर उस पानी में से २ तोला पानी देनेसे वायगोला, अफरा और पेटके कृमि नष्ट होते हैं।

अजीर्ण और अरुचि—एक रत्ती कलीका चूना, ३ माशे अदरकके रसमें कुछ शहद मिलाकर लेने से अजीर्ण और अरुचि मिटती है और भूख लगती है।

स्वर भंग—चूनेको बबूल की कलियों के रसमें पीसकर चने के बराबर गोलियां बना लेना चाहिये इन गोलियों को मुँहमें रखकर चूसने से सरदी की वजह से बैठा हुआ गला खुल जाता है।

शक्तिवर्धक—कलीका चूना १ रत्ती, सवेरे शाम ६ माशा शहद में मिलाकर चाटना चाहिये। ऊपर से केशर और शक्कर मिला हुआ बढ़ियाँ दूध पीना चाहिये। इस प्रयोग से खून हजम होता है। भूख लगती है, निर्बलता दूर होती है और वीर्य तथा पुरुषार्थ बढ़ता है।

विदेशमें होने वाला जलवायुका दूषित प्रभाव—१ मन भर पानीमें आध सेर कलीका चूना डाल कर उस पानीको नितार करके पीते रहने से जलवायु के सब दोष दूर हो जाते हैं। अगर किसी को विदेश के जलवायुसे विकार हो गये हों तो एक रत्ती चूने को १॥ माशे जीरेके चूर्णमें मिलाकर सवेरे शाम खानेसे सब विकार मिट जाते हैं।

वात नाशक प्रयोग—चूना २ तोला, अफीम १ तोला, तीन वर्षका पुराना गुड़ ४ तोला। इन सब चीजों को मिलाकर खूब खरल करना चाहिये। फिर चनेके बराबर गोलियाँ बना लेना चाहिये। इनमें से १ गोली सवेरे शाम पानीके साथ देने से वादी की वजह से होने वाला पेटका दर्द, पसली का दर्द और जोड़ों का दर्द मिटता है।

धनुर्वात्—[illegible] की दवीके सूखदी ७ भावना देकर सुखा लेना चाहिये। फिर इसके समान भाग चूना मिलाकर पीसकर चूर्ण बना लेना चाहिये। इसमें से [illegible] से ६ माशे तक दिन में [illegible] देने से धनुर्वात में लाभ होता है।

[illegible]—चूने [illegible]

[illegible]

जहर के दोषों को दूर करके रोगी को आरोग्य करदेती है। फिर भी यह आवश्यक है कि रोगी १ वर्षतक पानी के प्रवाह, अग्नि की ज्वाला और खटाइ इत्यादि अपथ्य कारी भोजनोंमे नचारहे।

चूड़ाखा

नाम—

यूनानी—चूड़ाखीम, चूड़ाखी।

वर्णन—

यह एक जाति का फल है जो फालसे के समान होता है। कच्चा फल खट्टा और कुछ कडवा होता है। इसका अचार बनाते हैं। पकने पर यह लाल और जायकेदार हो जाता है। इसकी जड कुछ लालरंग की होती है।

गुण दोष और प्रभाव,—

इसकी प्रकृति गरम और खुश्क है। इसकी सूखी जड के चूर्ण को सूँघने से छींके आकर मास्तिष्क साफ हो जाता है। बिच्छू का जहर भी इससे निकल जाता है। इसके फल को खाने से पेट के कीडे नष्ट हो जाते हैं। खाँसी, दमा और मेदे की खराबियों को भी यह दूर करता है। इससे हाजमा दुरुस्त होकर भूख बढती है।

(ख० अ०)

चोबे हयात

नाम—

संस्कृत—जीवदास, लोहकाष्ट, वृद्धमित्र, अमृतदारू, गुह्याक्ष। हिन्दी—चोबे हयात यूनानी—चोबे हयात। बम्बई—लोह लक्कड। लेटिन—Guaiacum Officinalis (गुएकम आफिसिनेलिस)।

वर्णन—

यह एक झाड़ी नुमा पौधा होता है। इसकी लकड़ी उदी रंग की औरबहुत सख्त होती है। इस लकड़ी के अन्दर कुछ तेल का अंश होता है। यह पानीमें डालने से डूबजाती है और कूटनेमें बहुत कठिन

होती है। इसको जलाने से धूप के समान खुशबू निकलती है। इसकी छाल बहुत सख्त [illegible] और हलके रंग की होती है। ये जड़ से लगते हैं। औषधि के प्रयोग में इसकी लकड़ी और उसमें से निकलने वाला राल काम में आता है। यह वृक्ष पहाड़ी प्रान्तों में होता है और बहुत बढ़ता है। ऐसा कहा जाता है कि यह वृक्ष बनारस, गोरखपुर और हाथरस के जिलों में पैदा होता है और वहाँ इसकी लकड़ी से पलंग और तख्त के पाये बनते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

चोबे हयात दीपन, पाचन, मूत्रल, वेदना नाशक, आनुलोमिक, पसीना लानेवाली, सूजन को नष्ट करनेवाली, धातुपरिवर्तक, मासिक धर्म को साफ करनेवाली एक उत्तम रसायन है। इसके सेवनसे आमाशय में गर्मी पैदा होती है। पाचक रस दौड़ने लगता है, जिससे भूख लगती है, अन्न पचता है और दस्त साफ होता है। अधिक दिनों तक सेवन करने से मनुष्य की जीवन विनिमय क्रिया सुधरती है और शरीर में ओज और लावण्य बढ़ता है। इसको अधिक मात्रा में सेवन करने से दस्तें लगती हैं। जम्भाइयां आती हैं, नाड़ी जल्दी चलने लगती है और त्वचा तथा मूत्रपिंड की क्रिया शीघ्रगामी हो जाती है।

ढलती हुई उम्र के लोगों के लिए यह एक उत्तम औषधि है इसको पारे और गन्धक के साथ भी दिया जाता है। यह औषधि छोटी मात्रा में कई वर्षों तक लेते रहने पर भी कोई नुकसान नहीं होता।

प्राचीन आमवात में, संधियों की अकड़न में तथा गृध्रसी, इत्यादि वात रोगों में इसके सेवन से वेदना की कमी हो जाती है और बहुत लाभ होता है। इसको गंधक, शोरा, सूंठ और तिलवर्णी के साथ मिलाकर रात्रि के समय चाटने से लाभ होता है।

प्रौढ़ मनुष्योंके गलेकी श्लेष्म त्वचा पर गांठ या सूजन होनेपर इसके सेवनसे बहुत लाभ होताहै। ऐसे समय में इसकी लकड़ी के चूर्ण को जबान पर रखकर गले में उतारना चाहिये। अगर वैसे नहीं उतरे तो पानी के साथ उतारना चाहिये। प्रौढ़ मनुष्यों के गले की सूजन के लिए इस औषधि के बराबर दूसरी चमत्कारिक औषधि नहीं है।

आर्तव के ऊपर भी इस औषधि की क्रिया बहुत प्रभावशाली है। मासिकधर्म की रुकावट और कष्टप्रद मासिकधर्म के लिये यह एक उत्तम औषधि है। अगर इसको धैर्य के साथ लगातार दिया जाय तो रोगी के गर्भाशय की शुद्धि होकर वे सन्तानोत्पत्ति के योग्य होजाती हैं।

रासायनिक विश्लेषण—इसकी लकड़ी में एक प्रकार की अम्ल स्वभाव की राल पाई जाती है जो लाली रंगकी और सुगन्धित होती है। यह पानीमें अघुलनशील और अल्कोहल में घुलनशील होती है।

मात्रा—इसकी लकड़ीके चूर्ण की मात्रा १५ रत्ती तक की है जो दिनमें ३ बार ली जा सकती है। और इसकी राल की मात्रा २ से ७ रत्ती तक की है।

यूनानी मत—यूनानी मत से यह दूसरे दर्जे में गरम और खुश्क है। इसकी लकड़ी में जहर दूर करने की अच्छी तासीर है। अगर किसी ने जहर खा लिया हो तो इसके इस्तेमाल से लाभ होता है। सांप और बिच्छू के जहर मे भी यह बड़ी लाभदायक है। इसका लेप भी जहर की जगह पर करने से वेदना कम होकर शांति मिलती है। हैजे के लिए भी यह बहुत लाभदायक है। इसके सेवन से हैजे की दस्त और उलटियाँ बन्द हो जाती हैं। इसके मरहम से जख्म भर जाते हैं। इसके चूर्ण को ४ माशे की मात्रा में एक माशे काली मिर्च के साथ पानी में पीस कर प्रातःकाल पीने से और ऊपर से २।३ दिनके गेहूँ की रोटी को गाय के घी में तर करके खाने से ४० दिन में कोढ़ जाता रहता है।

चोबचीनी बड़ी

नाम—

हिन्दी—बड़ी चोबचीनी। बंगला—हरिनाशुक् चिन। मराठी—मोटी शुकचिन। पहाड़ी—हाजिना। लेटिन—Smilax Glabra (स्माईलेक्स ग्लेबेरा)

वर्णन—

यह वनस्पति आसाम, सिलहट और खासिया पहाड़ियों में पैदा होती है इसकी डालियां नाजुक और चिकनी होती हैं। इसके पत्ते कुछ पतले और अण्डाकार रहते हैं। इसके फूल बहुत छोटे और सफेद होते हैं। इसकी जड़ चोबचीनी की जड़की तरह ही मोटी होती है। औषधि प्रयोगमें यह जड़ही काम आती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

आसाम के पहाड़ी लोग रक्तविकार फोड़े—फुन्सी और उपदंशजनित उपद्रवों पर इसकी ताजा जड़ का काढ़ा बनाकर देते हैं। दुराचार जनित व्याधियों में यह एक उपयोगी वस्तु है।

चोबचीनी हिन्दी

नाम—

हिन्दी— चोबचीनी हिन्दी। बंगला—गुरियाशुकचीनी, पहाडी—हूरिन शुकचिन।

वर्णन—

यह भी चोबचीनी की एक जाति है। इस की बेल पूर्वी बंगाल, आसाम और बरमामें पैदा होती है। इसके पत्ते झिल्ली दार और शल्याकृते होते हैं। इसकी डालियां नाजुक रहती हैं। इसका कंद चोब चीनी की तरह होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

आम वातमें और संधिवातमें इसके कंद का रस पिलाया जाता है और उसका बना हुआ बोदर दर्द की जगह पर बांधा जाता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार इसके गुण साधारण चोबचीनीसे मिलते जुलते हैं। यह कामोद्दीपक, पसीना लाने वाली और संधिवातमें लाभ दायक है।

चोबचीनी (जंगली उसबा)

नाम —

हिन्दी—चोबचीनी, जंगली उसबा, राम दन्तुन। बंगला—कुमारिका। संस्कृत—हिरण्य शाक। मराठी—मोटवेल, गुटी। नेपाल—चोबचीनी। तामील—मले तामर। मलाबार—कलतामर। तेलगू—कोंद तमर। लेटिन Smilax Zeylanica (स्माइलेक्स झेलेनिका)। Smilax Macrophylla (स्माइलेक्स मेक्रो फिला)

वर्णन—

यह एक मोटी और कांटेदार बेल मलाबार और कोकणके जंगलों में होती है। इसके पत्ते लम्बे, मोटे, अखंड और गोल होते हैं। ऊपरसे ये चमकीले रहते हैं। इसका फल बड़े मटर के आकार का रहता है। इसकी जड़ें बहुत होती हैं और वे मूंगाके समान लाल रंग की दिखाई देती हैं। ये जड़ें ही औषधिके काममें आती हैं। गोवामें इसकी जड़ें बिकती हैं और वहां इन्हें देशी सार्सापरिला कहते हैं। ये जड़े ताजी ही गुण कारी होती है, पुरानी होने पर निःसत्व हो जाती हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति पसीना लाने वाली, मूत्रल, पौष्टिक और रसायन होती हैं। उपदंश की दूसरी अवस्थामें, पुरातन आमवातमें, और संधियो की सूजनमें यह बहुत उपकारी है। उपदंश की वजहसे होने वाले फोड़े-फुन्सी, संधिवात, अस्थिवात और सारे शरीरमें होने वाली गठानों पर यह बहुत उपयोगी है। पुराने चर्म रोग और कंठमालामें भी इससे लाभ होता है।

मात्रा—इसकी जड़के १ या २ तोले चूर्ण का क्वाथ एक बारमें पिलाना चाहिये। नेपालके निवासी इसको ३ माशेकी मात्रामें सुजाक की बीमारी और श्लेष्मिक झिल्लियोंके अन्य विकारमें देते हैं।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह कामोद्दीपक, पसीना लाने वाली, शान्ति दायक और संधिवातमें उपयोगी है।

चोहतक

नाम—

पंजाब—चोहतक, अयकू। लेटिन Rheum Nobile (हीम नोबिली) Oxyria Digyna (अक्सेरिया डिगिना)।

वर्णन—यह वनस्पति काश्मीरसे सिक्किम तक हिमालयमें १०००० से १७५०० हजार फीट की ऊंचाई तक पैदा होती है। इसकी डंडियां खट्टी होती हैं। इनको उबाल कर खाते हैं। ये रुचिकर और शीतल होती हैं। इसका पाताली धड फैलनेवाला होता है। इसके पत्ते लंबे पत्र वृन्त वाले होते हैं। इसका फल ४ से लगाकर ६ मिलिमिटर तक के आकार का होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह औषधि शीतल और ज्वर तथा प्यास को उपशम करने वाली होती है।

चोरा

नाम—

पंजाब—चोरा, चुरा। लेटिन—Angelica Glauca (एंगेलिका ग्लोका)।

वर्णन—

यह वनस्पति पश्चिमी हिमालयमें काश्मीरसे लगाकर शिमला तक पैदा होती है। इसका तना पोला रहता है। तनेके ऊपर कुछ रेखाए रहती हैं। इसके पत्ते बड़े और गहरे हरे रंगके रहते हैं। इसके फूल सफेद और बैंगनी रंगके होते हैं। इसका फल लंब गोल और मोटा रहता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

कर्नल चोपरा के मतानुसार यह वनस्पति हृदयके लिये लाभदायक और उत्तेजक है। इसे अग्निमांद्य और कब्जियत की शिकायतमें काममें लेते हैं।

चौलिया

नाम—

संथाल—चौलिया। मुंडारि—कारगाडू। लेटिन Ruellia Suffruticosa रूएलिया सफ्रूटिकोसा।
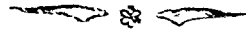
वर्णन—

यह वनस्पति उत्तरी गंगाके मैदान, उत्तरी पश्चिम बंगाल और छोटा नागपुरमें पैदा होती है। यह एक सीधी जाति की वनस्पति है। इसकी जड़ें मोटी और पत्ते कलावार होते हैं। इसकी पत्ती ३-८ सेंटिमीटर लम्बी और फिसलनी होती है। यह बैंगनी रंग की रहती है।

गुण दोष और प्रभाव—

बेम्प वेल्के मतानुसार संथाल जातिके लोग इस वनस्पति को जुलाब उपदंश और गुर्देके रोगोंमें काममें लेते हैं।

इनसायक्लोपीडिया ऑरिएंटैलिसके मतानुसार अगर इसकी सूखी जड़के चूर्ण के २ ड्राम की मात्रा में गर्भवती स्त्री लेले तो उसके गर्भ पात होने का डर रहता है। इसकी जड़ को कूटकर पीस कर, पानी में छानकर नेत्र रोगों को दूर करनेके लिये आंखोंमें डालते हैं

—

चोधारा

नाम—

[illegible] हिंदी—चोधारा, [illegible]

मखमली चोधारो। मराठी—पांढरा चोधारा, सुन्दारा, सुन्दरा, कपूरि माधुरी तामील-पेई मरुति तेलगू—मगबिरा, मोगमेरी। कनाड़ी—करितुम्बे। अंग्रेजी Malabar Catumind (मलाबार केटमिंड)। लेटिन Anisomeles Malabarica (एनिसोमेलस मलेबारिका)।

वर्णन—

यह एक रुएंदार झाडी नुमा पौधा होता होता है। इस पौधे की ऊंचाई २।३ फीट तक होती है। इसके पत्ते बहुत जाड़े, लम्ब—गोल और कुछ शरया कृति होते हैं। इसके फूल हलके पीले रंग के और फल अंडाकार, चपटे और बादामी रंग के होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति पसीना लानेवाली, शीतनाशक, उत्तेजक और तीव्र होती है। दक्षिणी भारतमें यह [illegible] लोकप्रिय और घरेलू औषधि मानी जाती है। इसके सुगन्धित कडुतत्वों का शीतनिर्यास पेट और आँतों की पीड़ामें बहुत उपयोगमें लिया जाता है। पार्यायिक ज्वर और जुकाममें भी यह बहुत उपयोगी है। [illegible] इसे अन्य प्रयोगोंमें तो लेते ही हैं मगर [illegible] गरम काढ़े की भाफ को नाक से [illegible] है। [illegible] पसीना आकर ज्वर उतर जाता है। इसके पत्तों का शीत निर्यास [illegible] आवश्यक माना जाता है। इसका [illegible]

१५ से लगाकर ४५ सेंटिमीटर तक की होती है। इसका तना सीधा रहता है। इसकी शाखाएं जड़ सेही फूटती हैं। इसके पत्ते २.५ से ७ सेंटिमीटर तक लम्बे होते हैं। इसका फल लम्बगोल रहता है।

गुण दोष और—प्रभाव

इसके पत्ते पुरानेवातमें लाभदायक हैं। इसका रस विसर्पिका और अन्य प्रकारके चर्म रोगोमें उपयोगी माना जाता है। सर्प विष को नष्ट करनेमें भी इस औषधिकी बडी प्रशंसा है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति कृमिनाशक है। इसे सर्दी, खुजली और सर्प दशके उपयोगमें लेते हैं।

केस और महस्करके मतानुसार यह वनस्पति सर्पदंशमें निरुपयोगी है।

चौलाई

नाम—

सस्कृत—तण्डुलीय, मेघनाद, कांडेर, तडुलीबीज, विषघ्न, बहुवीर्य, कंचट, इत्यादि। हिन्दी—चौलाइ का शाग। मराठी—तांदलजा, चंवलाई। गुजराती—तांदलजो। फारसी—सुपेनमर्ज। बंगाल—चपनतिया, लाल चपनतिया। तेलगू—मोलाकुरा, कुइकोरा। तामील—कनिकिरी। अंग्रेजी Hermaphrodite Amaranth हरमेफ्रोडाइट एमेरेन्थ लेटिन—Amaranthus Tenifolius (एमेरेन्थस टेनिफोलियस)।

वर्णन—

यह एक मशहूर शाग है जो भारतवर्ष में सब दूर बोई जाती है और सब दूर खाई जाती है इसे सब कोई जानते हैं।। इसलिये इसके विशेष विवेचन की आवश्यकता नहीं।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत— आयुर्वेदिकमत से चौलाई हलकी, शीतल, रूखी, पित्त कफनाशक, रक्त विकार नाशक, मलमूत्र निःसारक, रुचिकारक, दीपन और विषहारक है। यह रसविपाक में मधुर, अत्यन्त शीतल, रूखी तथा तृषा, अरुचि, दाह पित्त, रुधिर विकार और विष को नष्ट करती है।

चौलाई के पत्ते कूटने में शीतल और भारी, रक्तपित्त, विष तथा खांसी को नष्ट करते हैं। ये मलरोधक, पचने में मधुर और दाह तथा दाहक को नष्ट करने वाले हैं।

चौलाई की जड गरम, कफ नाशक, रज रोधक तथा रक्तपित्त और प्रदर को दूर करने वाली है ।

जल चौलाई कडवी, हलकी और रक्तपित्त तथा वात को नष्ट करती है ।

यूनानी मत— यूनानी मत से यह पहले दर्जे में सर्द और खुश्क है मगर इसकी लालजाति बहुत गरम और खुश्क होती है । यह हजम होने में हलकी और मीठी होती है । इसके पचांग का रस पिलाने से सांप का विष नष्ट होता है । इसकी जड़का काढा पिलाने से वायु से पैदा हुआ उदरशूल मिटता है । इसकी जड को घोट छानकर पिलाने से सुजाक में लाभ होता है । इसकी जड़को पीसकर लेप करने से बदगांठ और दूसरे फोडे जल्दी पक जाते हैं । इसके पत्तों को गरम पानीमें भिगोकर मल छानकर पिलाने से मूत्रनाली की जलन मिट जाती है । इसकी जड को घिसकर लेप करनेसे बिच्छूका जहर उतर जाता है । इसकी जड को रसोत, शहद और चांवलों के धोवन के साथ पिलाने से स्त्रियों का श्वेतप्रदर और रक्तप्रदर मिटता है । चौलाई के पत्ते और नीम के पत्तों को पीसकर कनपटी पर लेप करने से नकसीर बन्द होता है । इसकी तरकारीको हमेशा खाते रहनेसे पथरी गल जाती है । इसकी जडोंको पीसकर नारु पर बांधने से नारु गल जाता है । इसके पंचांग की राख को मुंह पर लेप करके थोड़ी देर धूप मे बैठने से मुंह की झांई मिट जाती है ।

तालीफ शरीफ नामक ग्रन्थके मतानुसार चौलाई पित्त, कफ और खूनके फसाद को मिटाती है, पेशाब अधिक लाती हैं । शरीर की गंदगी को दस्तों की राह निकाल देती है । रक्त पित्तके दोषों को मिटाती है । प्रमेहमें लाभ पहुँचाती है, खाँसी को दूर करती है, पित्तसे पैदा हुए बुखार और पागल पन में लाभ पहुचाती हैं । सर्पविषमें भी यह लाभ दायक है । लाल चौंलाई की जडको पानीमे पीसकर प्रातः काल रोजाना पीनेसे गर्भाशयसे बहने वाला खून रुक जाता है । अगर किसीके कफमें खून आता हो तो उसके लिये भी यह लाभ दायक है । इसके पत्तों को घी में पीस कर मकड़ीके जहर पर लगानेसे लाभ होता है । इसकी जड़ का रस निकाल कर उसमें ४॥ माशे रसोद और एक माशा नाग केशर का चूर्ण मिला कर जंगली बेरके बराबर गोलियाँ बाँध लें । इनमें से एक गोली प्रति दिन खाकर उसके ऊपर, चौंलाई की जड़के शीत निर्यासका एक प्याला पी लिया करें । इस प्रयोग से कुछ दिनोंमें खूनी बवासीर मिट जाता है । मगर ऐसी चीजे न खॉयं जो बवासीर को बढाने वाली होती है ।

मात्रा—इसकी जड़ के क्वाथ की मात्रा २॥ तोले से ५ तोले तक की हैं ।

छरीला

नाम:—

संस्कृत—शैलाख्य, शैलेयम्, वृद्ध, सुभग, शिलापुष्प, शिलाभव, कालानुसारिवा, हिन्दी–छरीला,

छार छरीला, भूरि छरीला, पत्थर काफूल। बंगाल-शैलजा। मराठी-दगड फूल फार्सी-दहाल। अरबी-आसीनाः उस्ना। । गुजराती-पत्थरफूल। पंजाब-छार छरीला, अस्नेहा। करनाटकी-कल्हू। तेलगू-रति पति। तामील—कलाहू। उर्दू-हवाकरमनी। लेटिन—Parmelia Perforata (परमेलिया परफोरेटा)।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत से छरीला शीतल, हृदयको हितकारी, कफ पित्तनाशक, हल्का और खुजली, कुष्ट, पथरी, दाह, विष और गुदा के रक्त स्राव को दूर करने वाला है।

निघण्टु रत्नाकरके मतानुसार छरीला चरपरा, शीतल, सुगंधित, हलका हृदयको हितकारी, रुचिकारक तथा कफ, दाह, तृषा, वमन, श्वास, घाव, खुजली, कोढ़, पथरी, विष, ज्वर, रुधिर विकार, वातरोग और खूनी बवासीरको नष्ट करने वाला है।

यूनानी मतसे यह पहले दर्जेमें सर्द और खुश्क है। यह सुगंधित, कब्ज करनेवाला, संकोचक, पौष्टिक, धातुपरिवर्तक, पेटके आफरेको दूर करने वाला और कामोद्दीपक है। यकृत और तिल्लीकी सूजन और गुर्दे तथा मसानेकी वायुको यह बिखेरता है। दिलकी धड़कन, मृगी, वमन, जी मिचलाना, यकृतके रोग, गर्भाशयके रोग और मासिकधर्म सम्बन्धी बीमारियोंमें यह मुफीद है। यह कामेन्द्रियको ताकत देता है। और पथरी को बिखेरता है। हृदय के लिये यह एक बहुत पौष्टिक वस्तु है। इसको जलाकर इसका धुआँ नाकमें पहुँचाने से मृगी सिरदर्द, आधाशीशी और हिस्टीरियामें लाभ पहुँचाता है। इसे आँखोंमें लगाने से आंखों को ताकत मिलती है और उनकी ज्योति तेज होती है। अण्डकी सूजनको चाहे वह सर्दीकी वजहसे हुई हो या गर्मीकी वजहसे यह बहुत फायदा पहुँचाता है। इसका लेप करनेसे शरीरके ढीले अंग कठोर होते हैं। कमरके दर्दमें भी यह बहुत लाभ पहुँचाती है। इसको पीस कर पावडर छिड़कनेसे घाव जल्दी भर जाता है। यह आमाशय और आँतों को ताकत देता है, और हिचकी को मिटाता है।

दर्पनाशक—इसका दर्पनाशक अनीसून है।

प्रतिनिधि—इसके प्रतिनिधि बालछड़ और तगर है

मात्रा—यूनानी मतसे इसकी मात्रा १ माशे तकको है

अनुभूत चिकित्सा सागरके मतानुसार छरीला पागलपन रोगमें बहुत उपकारी है। कुत्तेके विष को उतारने के लिये इसका प्रयोग किया जाता है। इसके सेवनसे मन्दाग्नि मिटती है। पेचिसके रोगमें भी इसका सेवन बहुत लाभ दायक है। इसके चूर्ण के [illegible] से मस्तक पीड़ा मिटती है। [illegible] पावडर इसको लगाने से बहुत लाभ होता है। [illegible] मस्तिष्क दर्द, दमा, [illegible], [illegible]

निकलना, तथा यकृत, गर्भाशय और आमाशय की पीड़ामें यह उपयोगी है। गले और दांतोंके रोगों भी यह मिटाता हैं। इसको पानीमें औटाकर, पीसकर,पुल्टिस बनाकर, गुर्दे और कमरपर बाँधनेसे पे की रुकावट मिटकर पेशाब साफ होता है।

छत्री

नाम—

हिन्दी—छत्री। पंजाब—कीश्राइन। लेटिन— Polyporus officinalis (पोली पो आफसिनेलिस) अंग्रेजी—Larch Agaric (लार्क एगेरिक)।

वर्णन—

यह वनस्पति पंजाब के अन्दर पैदा होती है। ऐसा मालूम होता है कि यूनानी की सुप्रसिद्ध व गारीकून जिसका वर्णन इस ग्रन्थ के तीसरे भाग में दिया गया है, इसीसे तैयार होती है। यद्यपि इस कोई मजबूत प्रमाण नहीं है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह मूत्रल, मृदुविरेचक और कफ निःसारक होती है। इसे स्नायुमंडल को पुष्टकरने के का लेते हैं। यह वनस्पति प्राचीनकाल से ही ग्रीक और रोमन चिकित्सकों की अत्यन्त प्रिय औषधि रही है मध्यकाल के यूनानि हकिमों ने इसकी इसी उपयोगिता के कारण इसे जीवन में अमृत तुल्य समझ इसके सम्बन्ध में काफी खोजकी है। उनके मतानुसार इस औषधि में निम्नांकित गुण हैं।

यह घाव को पूरती है। शरीर मे गर्मी पैदा करती है। गिरने से मोच आजानेपर और ह के टूट जाने पर भी यह लाभ पहुँचाती है। ज्वर में इसे शहद और पानी के साथ देते हैं। यकृत शिकायतों में तथा दमा, पीलिया, पेचिश, गुर्देके रोग, मूत्रनाली के रोग और उन्माद में भी यह बहु उपयोगी है। क्षयमें इसको अंगूर की शराब के साथ देते है। तिल्ली के रोगों में इसको शहद औ सिरके साथ दिया जाता है। पानीके साथ इसको देनेसे खूनका बहना बन्द हो जाता है। मृगी इसको शहद और सिरके के साथ देनेमें इससे लाभ होता है। सर्पविष और दूसरे जहरों पर इस शराब के साथ देने से फायदा पहुँचता है।

छत्ता

नाम—

संस्कृत—छत्र, भुइछत, भूमि स्फोट, भूसुता, भूछत्र, संस्वेदजशाक, कवच, हिन्दी—सांपकी छत्री, छाता, छतोना, फेनछत्तर। बंगाल—छतकुंडा, छाता, भुइछाती। बंबई—अलंबे, कंलबे, खुंबा गुजराती—कागदाना छत्तर, फूग्यू, मीनड़ानी बल्लो। मराठी—अलंबि, भुइफोड, सत्री, कुत्र्याचेमूत। फारसी—कुललिकदिब, समरुग, समरोषा, छत्रीमार। उर्दू—कागमिठा। कोकण—कामिल। अंग्रेजी Msharoom मशरुम। लेटिन—Agaricus Campestris एगेरिकस कंपेस्ट्रिस. A. Psalliota (एगेरिकस सेलिओटा)।

वर्णन

यह वनस्पति पहली बरसात के होते ही पशुशालाओं में, मिट्टी की दिवालों पर और मलमूत्र की जगह अपने आप पैदा हो जाती है। यह बिलकुल छत्री के आकार की होती है इसकी लम्बाई ४ इंचसे ८ इंच तक रहती है। इसका रंग सफेद रहता है। नीचे से एक डंडी निकलती है और उसके ऊपर छत्री के आकार का ढक्कन पैदा होता है। इसकी तीन जातियां पैदा होती हैं। सफेद, लाल और काली।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत— भावप्रकाश के मतसे छत्री शीतल, दोषजनक, भारी तथा वमन, अतिसार, ज्वर और कफ रोगों को उत्पन्न करती है। सफेद शुभ्र स्थान में होने वाली तथा काठ बांस और गायके स्थानों पर पैदा होने वाली छत्री अधिक नुकसानदायक नहीं है। शेष सब त्यागने के योग्य है।

निघन्टु रत्नाकरके मतानुसार छत्री शीतल, बलकारक, भारी, भेदक, मधुर, त्रिदोषजनक, वीर्य वर्द्धकऔर कफकारक होती है। यह पाचनक्रिया में अनियमितता पैदा करती है। इसकी लाल जाति सबसे कम हानिकारक होती है।

यूनानी मत— यूनानी मत से छत्री नाक आंख और यकृत की तकलीफों में लाभ पहुँचाती है। ज्लाबुंद, पक्षाघात, और यकृत की तकलीफों में भी यह लाभदायक है। इसकी काली जाति जहरीली होती है।

डाक्टर वामन गणेश देसाई के मतानुसार जब आमाशय की पाचन शक्ति कमजोर होजाती है और रोगी दुर्बल होता जाता है। तब इस वनस्पति की तरकारी बनाकर देने से लाभ होता है। क्षयरोग में इसको दूध के साथ उबालकर शक्कर मिलाकर देते हैं। ताकत के लिए इसे घी में भूनकर ...

जाती है। इस वनस्पति में बहुत सी जहरीली होती है। इसलिए इसको लेते वक्त सावधानी रखना चाहिये। जिसमें किसी प्रकार की दुर्गन्ध न हो और जो बहुत जल्दी मुड़ जाती हो वह वनस्पति खाने लायक समझी जाती है।

इसकी एक जाति कपासके झाड़के ऊपर पैदा होती है। इसका रंग खाकी होता है। यह व्रण रोधक और रक्त संग्राहक होती है। इसको पानीमें उबाल कर बच्चोंके मुखरोग पर लगानेके काममें लेते हैं।
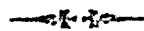
छतरछी

नाम—

यूनानी—छतरछी।

वर्णन—

यह एक बहुत छोटी रोइदगी होती है। इसके पत्ते इमली के पत्तोंकी तरह मगर उनसे छोटे होते हैं। इसका फूल गोल, सांपकी आंखके बराबर लाल रंगका होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह गरम और खुश्क होती है। कितनी ही सख्त खुजली हो गई हो इसके इस्तेमालसे नष्ट हो जाती है। वायुके रोगोंमें भी यह लाभ पहुँचाती है। आँखोंके लिये भी यह मुफीद है।

छतरमूठा

नाम—

यूनानी—छतर मूठा।

वर्णन—

यह एक सुन्दर पेड़ होता है, जिसका तना बहुत छोटा होता है। इसकी शाखाएं अनारकी

शाखाओंकी तरह होती हैं। इसके पत्ते चन्दनके पत्तोंसे कुछ छोटे और कैथके पत्तोंसे कुछ बड़े होते हैं। इसके फूल सफेद होते हैं जिनमें ४ पंखड़ियाँ होती हैं। इन पंखड़ियोंके अन्दर छोटी २ पंखड़ियाँ और होती हैं। इसके मूंग की तरह फलियाँ लगती हैं। इसकी फलीका छिलका ऊपरसे हरा और भीतरसे लाल होता है। इसके बीज काले, इलायचीके दानोंकी तरह होते हैं। इसके पत्तों, शाखों, और फलियोंसे दूध निकलता है। (ख० अ०)

गुण दोष और प्रभाव,—

यूनानी मतके अनुसार इसके पत्ते, फलीका गूदा और छिलका सर्द और खुश्क है। बीज दूसरे दर्जे में गर्म और पहले दर्जे में खुश्क होते हैं। यह वनस्पति कब्जको दूर करती है। खूनको साफ करती है। पीनस, सिर दर्द और कमरके दर्दमें लाभदायक है। दूध, पसीना, और पेशाबको बढ़ाती है। इसके चूर्णको शक्करके साथ खानेसे कुष्ठ, बवासीर और कमरके दर्द में लाभ होता है। (ख० अ०)

छिरेटा।

नाम—

संस्कृत—पाताल गरुडी, दृढ़कांडा, दीर्घवल्ली, महामूला, सोमवल्ली, वनतिक्तिका, तिक्ताग्ग, इत्यादि। हिन्दी—छिरेटा, पाताल गरुडी, हियर, जलयमनी, जमटी की बेल, फरीद बूटी। गुजराती—वेवडी, वेव, पाताल गलोरी। काठियावाड़—वधीनोवेलो। मराठी—वासनवेल, वसनवेल,परवेल, हुन्देर, मुहयाड। बंगाल—हरोर, शिल्हिरा, चिलिंदा। कोंकण—वनतिक्तका। फारसी—फरीद बूटी। उर्दू—फरीद बूंटी। तामील—कट्टुकोदि। तेलगू—चिपुरटिगे,दुसलटिगे। उड़िया—मूषाकानी। चीनाप्रदेश—पाठा। कनाड़ी—दागडी वेल, सुगंधि बालि। सिंध—फुरसन, फर्नार। बलुचिस्तान—अरदद, फनूर। लेटिन—Cocculus Villosus, कोक्यूलस व्हिलोसस C. Hirustus (को० हिरसूटस)।

वर्णन—

छिरेटाकी बेलें बरसातके दिनोंमें खूब दूर पैदा होती हैं। कहीं २ ये बारहों महिने देखी जाती हैं। यह पहाड़ों पर नहीं होती। इसकी बेलें बहुत लम्बी और जमीन पर फैली हुई रहती हैं। अथवा यदि नजदीक में कोई वृक्ष हो तो उस पर चढ़ जाती हैं। इस सारी बेलके डंठलों पर सफेद बालके रुएँ होते हैं। नई बेलके डंठल कोमल रहते हैं मगर पुरानी होने पर ये लंबे, मजबूत व मोटे हो जाते हैं। इनके

पत्ते २ से ३ इञ्च तक लंबे और १॥ से २ इञ्च तक चौड़े कहीं गोल और कहीं तिकोने होते हैं। कहीं ये ५ कोने वाले होते हैं। कुछ पत्ते नागर वेलके पत्तों की तरह होते हैं। एकही वेलपर और एकही डाली पर भिन्न २ प्रकारके पत्ते नजर आते हैं। इसके फूल सब्जी माइल पीले रंगके, बहुत छोटे होते हैं। इसके फलभी बहुत छोटे, कच्ची हालत में हरे और पकने पर बैंगनी हो जाते हैं। इनमें कालारस भराहुआ रहता है। इसके फूल वर्षामें और फल जाड़े में आते हैं। इसके पत्तों को पानी में मसल देनेसे पानी जम जाता है इसी लिये इसको जल जमनी कहते हैं। इस वेलकी जड में बहुत गहरा एक कद निकलता है। इसीसे इसका नाम पाताल गरुडी रक्खा है। औषधिमें इसके पत्ते और इसकी जडे काममें आती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदके मतसे छिरेटा मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, रुचिकारक तथा दाह, पित्त रुधिर-विकार और विषके उपद्रवोंको नष्ट करने वाला है। इसकी जड़ उष्णवीर्य्य,पसीना लाने वाली, मूत्रल, बल वर्धक, ज्वर नाशक, वायुके विकारोंको दूर करने वाली, शोधक और मृदु स्वभावी होती है। मूत्र मार्गों के ऊपर यह ग्राही और शामक क्रिया करती है इसके पत्ते जलन को शांतकरने वाले, मूत्रल, सूजनको नाश करने वाले और दुग्धवर्द्धक होते हैं।

हब्सबूलर के मतानुसार इसका लुआब दूधके साथ लेनेसे अनैच्छिक वीर्यश्रावमें लाभ पहुँचता है। खांसीमें भी यह लाभदायक है। आँखों की पलकों का सूजन दूर करने पर भी इसका उपयोग किया जाता है।

मुरेके मतानुसार सिंध मे इसकी जड़ें और पत्ते सिर दर्द और स्नायुके शूलमें लाभ-दायक माने जाते हैं।

फरमा कोपिया ऑफ इंडिया के मतानुसार इस वनस्पतिमें संभवत: गिलोय के पौष्टिक गुण भी रहते हैं।

गुजरात, काठियावाड और कोकण में यह एक लोकप्रिय और घरेलू औषधि है। वहां पर इसकी जडों को बकरीके दूधमें उबाल कर उसमें पीपर, सूंठ और मिर्च डालकर पुराने आम वात, चर्म रोग और उपदंश जन्य संधिवातमें देते हैं। इसके पत्तों का रस शीतवीर्य होने की वजह से जीरा और खडी शक्करके साथ नये सुजाकमें बहुत लाभ पहुँचाता है। चोट, सूजन, मोच, रगड़, इत्यादि व्याधियों पर इसके पत्तोंको गरम करके बांधते हैं।

संधिवात, विस्फोटक, खुजली तथा उपदंशकी वजहसे पैदा होने वाले रक्तविकारों पर यह सार्सा

परिलाकी तरह लाभ पहुँचाती है और ऐसे रोगोंमें इसकी दो तोला जड़को ७ काली मिरच के साथ पीसकर ६० तोला पानीमें उबालते हैं। जब ५ तोला पानी शेष रहजाता है तब उसको पिलाया जाता है।

इसकी जड़में से बहुत गहराई पर एक कन्द निकलता है। ऐसा कहा जाता है कि इस कन्द को घिसकर पानीके साथ पिलानेसे उल्टी होकर साँपका विष तत्काल नष्ट हो जाता है। इसीसे इसका नाम संस्कृतमें पाताल गरुडी रक्खा गया है।

इसके सिवाय इस औषधिमें एक और महत्व पूर्ण गुण पाया जाता है। जिन लोगोंको अफीम खानेका व्यसन पड़ जाता है और वह किसी प्रकार नहीं छूटता, उन लोगोंको अगर धीरे २ अफीम कम करते हुए उसके बदलेमें छिरेटेकी जड़का चूर्ण दिया जाय तो धीरे २ अफीमका व्यसन छूट जाता है। यह चूर्ण शुरूमें १ तोलेकी मात्रामें देना चाहिये और इसके पश्चात् धीरे २ कम करते जाना चाहिये। इस औषधिके सेवनसे सिरमें चक्कर आते हैं और उल्टी भी होती है इसलिये इसके ऊपर मिश्री मिले हुए दूधमें १॥-२ रत्ती जायफलका चूर्ण मिलाकर पीना चाहिये। इस प्रकार एक दो मास लगातार इस औषधि का प्रयोग करनेसे २० वर्षका पुराना अफीमका व्यसन भी छूट जाता है।

इस वनस्पतिमें दूसरा चमत्कारिक गुण यह बतलाया जाता है कि इसके जरिये पारेकी अग्नि स्थाई गोली बनाई जा सकती है। इसकी तरकीब इस प्रकार है—

छिरेटेके पत्ते और आंकडेके कुछ कच्चे और पके पत्ते समान भाग लेकर उनका १ सेर रस निकाल लेना चाहिये। उसके बाद मिट्टीकी एक सरावली लेकर उसे चूल्हे पर रखकर नीचे धीमी आँच लगाना चाहिये। फिर उसमें उस रसका कुछ हिस्सा डालना चाहिये। जब रस गरम होकर उफान देकर नीचे बैठ जाय तब उसमें ७ तोला पारा डाल देना चाहिये। जैसे २ नीचेका रस जलता जाय वैसे २ ऊपरसे नया रस डालते जाना चाहिये। इस प्रकार जब रस जल जाय तब उस सरावलीको नीचे उतार लेना चाहिये। इस प्रकार १० दिनमें १० सेर रस पचा देनेके पश्चात् पारेकी गोली बन जाती है। ऐसा कहा जाता है।

(जंगलकी जड़ी बूटी)

उपयोग—

जुलाब—छिरेटाके २ तोले पत्तोंको पानीमें पीसकर छान ले और [illegible]। [illegible] २-३ मासे मिर्च डाले। पथ्यमें बिना नमककी रोटी और [illegible]। [illegible] दिन तक इसका सेवन करनेसे जुलाब [illegible] जाता रहता है।

उपदंश और [illegible]—इसकी [illegible] २ [illegible]

मिलाकर उस पर कुछ काली मिर्चका चूर्ण डालकर प्रातःकाल पिलाने में गठिया और गर्मीकी वजह से होने वाले दूसरे उपद्रव मिटते हैं।

हाजमेकी कमजोरी—इसके ६ माशे चूर्णमें शक्कर और सोंठ मिलाकर देनेसे पित्तकी वजहसे पैदा हुई हाजमेकी कमजोरी मिटती है।

नारू—इसको पानीके साथ पीसकर पिलानेसे नारू मिट जाता है।

मात्रा—इसकी जड़के रसकी मात्रा ४ माशे तक और पत्तोंकी मात्रा ४ माशेसे ७ माशे तक है।

छोंकर (खेंजड़ा)

नाम—

संस्कृत—शमी, भाद्रा, दुरितदामिनि, ईषिरगधा, केशहंत्रा, लक्ष्मी, पापनाशिनि, शक्तुफला, शांता, शिवा, इत्यादि। हिन्दी—छोकर, छिकुर, खेजड़ा, सफेद कीकर। गुजराती—खेजडी, खीजड़ो। बंगाल—शाईं गाछ, छुइ बाबला। मराठी—शमी, लघु शमी। पंजाब—जंड, जंडी। बम्बई—शमी, शबरी। मारवाडी खेजडा, कजरा। तेलगू—जवी, जाँबी, प्रियादर्शिनी, तामील—जंबू, कलिसम्। अंग्रेजी—Spunge Tree (स्पंज ट्री) लेटिन—Prosopies Spicigera (प्रोसोपिस स्पिकीगेरा)।

वर्णन—

यह वृक्ष पंजाब, सिंध, राजपूताना, गुजरात, बुंदेलखंड इत्यादि प्रान्तों में बहुत अधिक तादाद में होता है। खेजडे के वृक्ष १५ से लेकर ३० फीट तक ऊँचे होते हैं। इसके फूल कुछ सफेदी किये हुए पीले रंग के और लंबी कलगी की तरह आते हैं। इसके पापडे सफेद रंगके ४ से लेकर ८ इंच तक लंबे होते हैं। एक २ पापडे में १० से लेकर १५ तक बीज निकलते हैं। ये पापड़े थोडी मात्रा में बैलोंके लिये पौष्टिक खाद्य होते हैं। अधिक मात्रा में ये नशीले और जहरीले होजाते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे खेजड़ा कड़वा, चरपरा, शीतल, कसेला, रोचक, हलका, तथा कफ खांसी, भ्रम, श्वास, कोढ़, बवासीर और कृमि को दूर करता है। इसका फल पित्तजनक, रूखा बुद्धिवर्धक और केशों को नष्ट करने वाला होता है। (भाव प्रकाश)

खेजड़ा रूखा, कसेला, शीतल, हलका, कड़वा, चरपरा, दस्तावर तथा रक्तपित्त, अतिसार,

कुष्ट, बवासीर, श्वास, खांसी, कफ, भ्रम, कम्प और थकावट को नष्ट करने वाला है इसका फल तीक्ष्ण, पित्तजनक, मेधाजनक, भारी, स्वादिष्ट, रूखा, गरम और केशनाशक है।

इसकी छाल खुश्क, कसेली, कटु और तेज स्वाद वाली होती है। यह शीतल, कृमिनाशक और पौष्टिक है। कोढ़, पेचिश, वायु नलियों का प्रदाह, दमा, धवलरोग, बवासीर, मस्तिष्क की विकृति और मज्जाओंके कम्पनमें यह लाभदायक है। इनके पत्तों का धुआं नेत्रों की तकलीफमें उपयोगी है।

सुश्रुत और योगरत्नाकरके मतानुसार यह वृक्ष साँपके विषपर लाभदायक है। सुश्रुतके मतानुसार इसका छिलका बिच्छूके काटने पर भी उपयोगी है।

केस और महस्करके मतानुसार इस वनस्पतिके सब हिस्से सर्प विषमें निरुपयोगी हैं।

पंजाबके अन्दर इसका पापड़ा संकोचक माना जाता है।

मध्य प्रदेशमें इसकी छाल संधिवातके उपयोगमें ली जाती है।

इब्न दूलरके मतानुसार कन्नानके सहमा नामक गांवमें गर्भवती स्त्रियां इसके फूलोंको शक्करके साथ लेती हैं जिससे गर्भ पात होनेका डर नहीं रहता है।

लान देशमें इसकी राखको चमडे पर रगडते हैं जिससे बाल गिर जाते हैं।

कर्नल चोपराके मतानुसार इसका पापड़ा संकोचक है। इसका छिलका संधिवातमें और बिच्छूके काटने पर लाभ दायक है।

उपयोग—

आगसे जलनेपर,—सेंजडेके पालेको पीसकर गायके दहीमें मिलाकर लेप करनेसे आगसे जले हुए स्थान पर शांति मिलती है।

नख और दाँतके जहर पर—सेंजड़ा, नीमकी छाल, बरकी छाल तीनों को पीसकर लेप करनेसे नख और दाँतोंसे काटे हुए जखम विषपर लाभ पहुँचता है।

प्रमेह—सेंजनेकी कोमल कोंपलें १ तोला लेकर उसमें ३ माशे जीरा मिलाकर बारीक पीस लेना चाहिये। उसके बाद गायका कच्चा दूध पाव भर लेकर उसमें इनको मिलाकर छानके [illegible] लेना चाहिये। फिर उसमें सफेद [illegible] [illegible] लेना और [illegible] तोला मिलाकर पी लेना चाहिये। इस प्रकार १४ दिन तक पीनेसे प्रमेह नष्ट होता है। यह योग गर्मी के [illegible] में [illegible] पहुँचाता है।

[illegible]

छिरवेल

नाम—

संस्कृत—अर्क पुष्पी, दुर्धपी, जल कांडका, जीवंती, क्षीरोदधि, शीतला शीतपर्णी, सूर्य वल्ली। हिन्दी—छिरवेल। बबई—दूदोली, सीदोरी, तुलतुली। गुजराती—खरनेर, खीरवेल, मराठी—शिरदोड़ी, तुलतुली, खानदोड़की। मुंडारी—अपंग, सथाल—अपंग, भोटो राख। तेलगू—पले किरे। तामील—पल पुर लेटिन—Holostemma Rheedii (होलोस्टेमा रेडी)

वर्णन—

यह वनस्पति हिमालय, बरमा और कोकणमें बहुत पैदा होती है। यह एक बड़ी जाति की झाडीनुमा वेल होती है। इसके पत्ते गिलोय के समान मोटे, गोल, नोकदार और जाड़े, फूल लाल और सफेद तथा सुगन्धित और उनके ऊपर छत्री के आकारके तुर्रे रहते हैं। इसके पत्ते मोड़नेसे दूध निकलता है। इसकी डोडी नुकीली होती है। इसके बीज लम्बे और पतले रहते हैं। इसकी जडें खाकी रंगकी, और जडों की छाल मोटी होती है।

इसी वेलकी तरह दीखने वाली एक और दूसरी वेल होती है। जिसको विषदोड़ी, भुइ दोड़ी तथा लेटिनमें टायलेफोरा फेसिक्यूलेटा कहते। यह वेल बहुत जहरीली होती है। इस लिये छिरवेलके बदलेमें यह न आजाय इस की पूरी सावधानी रखनी चाहिये।

गुणदोष और प्रभावः—

आयुर्वेदिकमत—यह वनस्पति मीठी, धातु परिवर्तक, आंतों को सिकोड़ने वाली शीतल, मूत्रल और सूजन को नाश करने वाली होती है।

नये सुजाकमें इसकी जडों का काढा जीरा, मिश्री और दूधके साथ देनेसे मूत्र नलिकाकी जलन कम होती है, पेशाब अधिक होता है और सुजाक मिट जाता है। इसकी जड़ों को पीसकर उसका लेप आँखों पर करने से नेत्र रोगोंमें लाभ होता है। अनैच्छिक वीर्यश्रावमें इसकी जड को सुखाकर पीस कर दूध और शक्करके साथ दिनमें २ वक्त दिया जाता है।

इसके पत्तों को पीसकर और तेलमें मिलाकर गले पर बाँधनेसे गले की गठानों की जलन कम होती है। वे जल्दी पक कर फूट जाती हैं और उनका जखम जल्दी भर जाता है।

संथाल जातिके लोग इसके काढ़े को खाँसी और अंडकोषकी सूजनमें उपयोगमें लेते है। मुंडा जातिके लोग इसको पेटके दर्दमें काममें लेते हैं।

कर्नल चोपराके मतानुसार इसकी जड़ें शीतल और धातु परिवर्तक हैं। ये आंखकी बीमारीमें काममें लीजाती हैं।

छतिवन (सप्तपर्ण)

नाम.—

संस्कृत—सप्तपर्ण, शारद, गृहनाश, सुतिपत्र, मदगन्ध, देववृक्ष, बहुपर्ण, शाल्मलिपत्रक, गन्धपर्ण इत्यादि। हिन्दी—छतिवन, सतवन, सतौना, छातियान, शैतानका झाड़। बंगाल—छाटीन, छतिनगाछ। गुजराती—सातवण वृक्ष, सप्तपर्ण। मराठी—सातविण। बरमा—लेटोप, टौंगमियोक। कनाडी—एलेलेहेल, हाले, जन्हेल, कोडेल, मुघोल, मुडिहाले। अंग्रेजी—Dita Bark (डिटाबार्क)। लेटिन—Alstonia Scholaris (अलस्टेनिया स्कॉलेरिस)।

वर्णन—

यह एक बड़ी जाति का वृक्ष है। जो भारतवर्ष के दक्षिणी हिस्सों में और सीलोन में बहुत पैदा होता है इसकी पैदावार विशेषकर सूखे जंगलों में होती है। इसके पत्ते मैनर के पत्तोंकी तरह होते हैं। इसीने प्राचीन जमानेमें इसका नाम सप्तच्छद रक्खा गया था। इसका दूध कड़वा होता है। इसकी छाल भूरी और खुरदरी होती है। इसके पत्ते कटी हुई किनारोंके लम्बगोल ऊपर की बाजू गहरे हरे और नीचेकी बाजू फीके हरे होते हैं। इसके फूल कुछ हरापन लिए हुए सफेद रंगके रहते हैं। इसका फल लम्ब गोल रहता है और इसमें बीज रहता है। औषधि प्रयोग में इसकी छाल काम में आती है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेद मत से छतिवन कड़वा, कसैला, उष्णवीर्य, स्निग्ध, भूख बढ़ानेवाला, मृदुविरेचक कृमिनाशक और दूध बढ़ानेवाला होता है। यह हृदयरोग, दमा, पथरोग, ज्वर, रक्तविकार, त्रिदोष, अर्बुद और पुराने घावों को नष्ट करता है। दांतों को बढ़ानेमें भी यह फायदा पहुँचाता है।

इस वृक्षकी छाल रक्तोत्तर, पौष्टिक, कृमि नाशक, धातु परिवर्तक और ज्वर नाशक है। अतीसार या पुराने पेचिशमें भी यह लाभ दायक है। इसका दूध फोड़ोंपर लगानेसे वह जल्दी पक जाता है। इसे तेलके साथ मिलाकर कानमें डालनेसे कानका दर्द मिटता है। इसके नाजुक पत्तोंको उबालकर पीटकर पुल्टिस बनाकर उसको बांधनेसे फायदा होता है।

[illegible] यह एक [illegible] है। [illegible] अन्दर [illegible]

नियामक मानी जाती है। इसे यकृत सम्बन्धी शिकायतोंमें, पुराने उदर रोगोंमें और तिल्लीकी शिकायतोंमें काममें लेते हैं।

सुश्रुत और योग रत्नाकरके मतानुसार इसकी छाल अन्य औषधियों के साथ में सर्प विषको नष्ट करने के लिये दी जाती है।

केस और महस्करके मतानुसार सर्प और बिच्छूके विषमें इसकी छाल बिल्कुल निरुपयोगी है।

मलेरिया ज्वर और सतवन वृक्ष—उपरोक्त गुणोंके अतिरिक्त आधुनिक युगमें इस औषधिके अंदर मलेरिया ज्वरको नष्ट करनेकी अद्भुत शक्तिका पता लगा है। आजकल मलेरिया ज्वरको नष्ट करनेके लिये अनेक स्थानपर किनाइनका उपयोग करनेका रिवाज बहुत प्रचलित है। मगर उसमें कठिनाई यह होती है कि किनाइन उसी हालतमें रोगीको दी जा सकती है जबकि उसके अंदर ज्वरका अंश न हो। चढ़े हुए ज्वरमें उसका कोई उपयोग नहीं होता। इसलिये कई स्थानोंपर किनाइन निरुपयोगी होजाती है। इसके [illegible] किनाइनकी प्रतिक्रियाए भी बहुत खराब होती हैं अगर उसको कुछ अधिक मात्रामें कुछ अधिक समय तक [illegible] जाय तो कानमें बहरापन, पेटमें मंदाग्नि, इत्यादि कई उपद्रव खड़े हो जाते हैं। मगर सतवनके उपयोगसे [illegible] खराबियां पैदा नहीं होतीं। कलकत्ताके [illegible] अस्पतालमें मलेरियाके अनेकों [illegible] इसका उपयोग किया जा चुका है और उन परीक्षणोंमें यह औषधि बहुत सफल साबित होचुकी है और यह [illegible] हो चुका है कि मलेरिया ज्वरमें यह कुनैनके समानही फायदा पहुंचाती है। मगर [illegible] कोई नुकसान इससे नहीं होता।

[illegible] इस वृक्षकी छालमेंसे डिटेनिन नामक सत्वकी खोजकी है। यह सत्व भी ताजी छाल [illegible] मलेरिया ज्वरपर अपना प्रभाव बतलाता है।

[illegible] अपने सुप्रसिद्ध ग्रंथ "दी इकॉनामिक प्रॉडक्ट्स ऑफइंडिया"में लिखते हैं कि इस [illegible], पौष्टिक, [illegible] और कृमिनाशक होती है। यह एकांतरा, तिजारी, चौथिया, [illegible] सम्बन्ध रखने वाले ज्वरोंपर उपयोगमें ली जाती है इसकी छालमेंसे [illegible] डिटेनिन [illegible] मलेरिया ज्वरपर सफलतापूर्वक दिया जा सकता है।

[illegible] लिखते हैं कि डिटेनिन इस वृक्षकी छालमें [illegible] किनाइनके समान ही [illegible] किनाइनसे होनेवाली प्रतिक्रियाएं भी इससे नहीं होतीं।

[illegible], पौष्टिक और ज्वर निवारक पदार्थ [illegible] आमाशय पर और उनका [illegible] फायदा करता है किन्तु [illegible]

प्रसूतिकाल में अगर पहले दिनसे ही इसकी छाल को दूसरे सुगन्धित और ज्वरनाशक द्रव्योंके साथ दी जाय तो प्रसूता को ज्वर नहीं होता, अन्न भली प्रकार पचता है और दूध खूब छूटता है। ज्वर के पश्चात् अथवा प्रसूतिकालके पश्चात् जब थकावट मालूम होती है, अन्न नहीं पचता है, और शरीरमें फीकापन रहता है ऐसी हालत में सतवन के प्रयोग से अच्छा लाभ होता है।

त्वचाके ऊपर भी इस औषधि की अत्यन्त प्रत्यक्ष और उत्तेजक क्रिया होती है। इसलिये चर्मरोगोंमें भी यह औषधि अच्छा लाभ पहुँचाती है। पुराने व्रणोंके ऊपर इसकी छाल का लेप किया जाता है। सड़े हुए व्रणोंके ऊपर इसके कोमल पत्तों को गरम करके उनको पीसकर उनका लेप करनेसे अच्छा लाभ होता है। रक्तपित्त में इसका घन क्वाथ चोबचीनी के साथमें दूधके अनुपान से दिया जाता है।

यह वनस्पति आमाशय की शक्ति को बढ़ाकर पाचनक्रिया को दुरुस्त करती है। इसलिए जीर्ण ज्वरके साथ होने वाले अजीर्णमें इसकी छाल के चूर्ण को १० रत्ती की मात्रामें कालीमिर्च और सेंधे निमक के साथ देनेसे बहुत लाभ होता है। जीर्ण अतिसार और आंव रोग में भी इसका काढ़ा एक मूल्यवान औषधि है। जीर्ण आमवात और संधियों की सूजन में इसकी छालका लेप करने से फायदा होता है।

मात्रा— इसकी छाल के चूर्ण को २ तोले की मात्रामें लेकर उसका क्वाथ या शीतनिर्यास बना कर देना चाहिये। छाल के चूर्ण की मात्रा ३ माशे से ६ माशे तक की है। इसके सत्व डिटेनिन की मात्रा ५ रत्ती से १० रत्ती तक की है इसके घनसत्व की मात्रा १॥ माशे से ३ माशे तक की है।

उपयोग—

अतिसार— इसकी छालके क्वाथमें अतीस का चूर्ण डालकर पिलाने से पुराना अतिसार बन्द हो जाता है।

पेट के कृमि— इसकी छालके क्वाथमें वायविडंग का चूर्ण डालकर पीनेसे पेटके कृमि नष्ट हो जाते हैं।

रक्तविकार— इसकी छाल का चिरायते के साथ शीत निर्यास बनाकर पिलानेसे खून साफ होकर रक्त विकार मिट जाता है।

फोड़े— जिन जख्मोंमें बदबूदार पीव निकलता है, उनपर इसके नरम पत्ते को गरम करके पीसकर लेप करनेसे बड़ा लाभ होता है।

बनावटें—

[illegible] — [illegible]

जाने वाले सफेद और पीले दोनों प्रकारके तत्वोंके भिन्न २ गुण हैं। अजमेलाइन वर्गके तीनों सफेद तत्व हृदयके ऊपर अवसन्नताकारक प्रभाव डालते हैं। ये श्वास प्रश्वास की क्रिया और स्नायु मंडलपर भी अपना प्रभाव डालते हैं। दूसरे सर्पेण्टाइनवर्गके पीले तत्व हृदयपर तो उत्तेजक प्रभाव डालते हैं किन्तु स्नायुमंडल और श्वासोच्छोश्वास की क्रियापर निष्क्रियताका प्रभाव डालते हैं। ये परिणाम मेण्डकोंके ऊपर इसको आजमाकर निकाले गये हैं। यह निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता कि मनुष्योंके ऊपर भी इसके इसी किस्मके प्रभाव नजर आवेंगे या नहीं।

सेन और बोसने बड़ी जातिके प्राणियों पर भी इसके परीक्षण किये। उन्होंने इसे बिल्लियों परभी आजमाया। वे इस निर्णयपर पहुँचे कि इस सारी वनस्पतिके जलीय तत्व जो प्राणियोंके शरीरमें पहुँचाये गये, उनका कोई चमत्कारिक प्रभाव नजर नहीं आया। इसके रेजिन्सको अलग करके उनकोभी आजमाया गया किन्तु इनका भी कोई विशेष प्रभाव नजर नहीं आया। सिर्फ गर्भाशयके मज्जाओंको कुछ उत्तेजना पहुँची। इसके उपक्षारोंकी परीक्षाकी गई और इनका निश्चित असर पायागया। इनसे रक्तभार (Blood pressure) कुछ गिरा हुआ दिखलाई दिया और श्वासोच्छ्वासकी क्रिया उत्तेजित पाई गई।

हृदयके मज्जातंतुभी इनसे कुछ अवसन्न होगये और छोटी आंत तथा गर्भाशयमे कुछ ढीलापन पाया गया। यह वनस्पति मुँहसे ली जानेपर या इन्जेक्शनके द्वारा पहुँचाई जानेपर कोई नुकसान नहीं पहुँचाती। गांगुलीने सन् १९३१ में यह बात सिद्ध की कि मामूली खुराकमें ली जानेपर यह कुछ भी नुकसान नहीं पहुँचाती। अगर इसको अधिक मात्रामें ली जावे तो गहरी नींद आती है। धीरे २ चैतन्यता कम होती जाती है और श्वास क्रियाके निष्क्रिय बनजानेपर मृत्युतक हो सकती है।

इस वनस्पतिको बहुत पुराने समयसे पागलपनकी दवा मानते हैं। सेन और बोसने इस वनस्पतिको मानसिक विक्षिप्तिके बीमारोंपर और जिनका रक्तभार अधिक था ऐसे लोगोंपर आजमाया। इसकी पीसी हुई जड़को दिनमें दो बार २० से ३० ग्रेनतककी मात्रामें देनेसे न केवल शांतिदायक असर ही होता है किन्तु रक्तभार भी घट जाता है। एक सप्ताहके अन्दर ही बीमार का दिमाग ठीक हो जाता है। [illegible] में समय अधिक लगता है। हाय ब्लडप्रेशर में भी इन लोगोंने इस औषधिको [illegible] पाया। खास करके [illegible] की तकलीफ जिसमें मौजूद है और हृदयके तंतुओंमें कुछ फोड़े बन गये हों, यह विशेष लाभदायक है। ज्वरमें भी इसकी उपयोगिता बतलाई जाती है। किन्तु अभी तक इस विषयमें जोरदार प्रमाण नहीं मिले हैं। [illegible] ज्वरमें भी इसकी तारीफ की जाती है किन्तु इस विषयमें भी इसे आजमानेकी जरूरत है।

[illegible] और प्रमाण [illegible] हैं उनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि पागलपनमें स्नायुमंडलकी जलनमें और हाई ब्लड प्रेशरमें यह एक चमत्कारिक औषधि है।

[illegible] इस औषधिपर और भी परीक्षण हो रहे हैं और इसके लिए और भी परिणाम निकलनेकी [illegible] ही संभावना है।

छोटातरोटा (मींढीआँवल)

नाम—

संस्कृत—भूम्यावर्तनी, भूतलपोटा, भूम्याहुली । हिन्दी—छोटातरोटा, जंगलीसोनामुखी । गुजराती—मींढीआँवल, सूरतीसोना मुखी । मराठी—भुईंतरवड़, तामील—तिल्वरे, कट्टुतिल्वरे । तेलगू—नेल्दोना, नेलतँगेदू, मुन्नमुखी । अंग्रेजी—Country Senna (कन्ट्रीसेना) । लेटिन—Cassia Abovata (केसिया एबोवेटा) ।

वर्णन—

यह वर्षायु क्षुप पंजाब, सिंध, गुजरात और दक्षिण में पैदा होता है । यह वनस्पति बहु [illegible] स्थायी और फैलनेवाली होती है । इसका वृक्ष ३० से लगाकर ६० सेंटिमीटर तक ऊँचा होता है । इसका तना चिकना और फीके हरे रंगका रहता है । इसके पत्ते ५ से लगाकर १० सेंटिमीटर तक लंबे रहते हैं । ये लंबगोल और फीके हरे रंगके होते हैं । इनके [illegible] पत्तों की अपेक्षा छोटे, फली अर्ध चन्द्राकार, [illegible] और [illegible] होती है । [illegible] बीज होते हैं । [illegible] चमकीले और गहरे बादामी रंगके होते हैं ।

गुण, दोष और प्रभाव—

इस वनस्पति का उपयोग और गुण धर्म [illegible] है ।

कर्नल चोपरा के मतानुसार इसके पत्ते विरेचक, [illegible]

तीखी नोक वाले होते हैं। ये ५ से लेकर २० सेंटिमीटर तक लंबे होते हैं। इसके फूल अक्सर सफेद होते हैं। ये गुच्छोंमें लगते हैं। फूलोंकी पँखड़ियाँ लम्बी और गुलाई लिये हुए होती हैं। इसकी मंजरी लंब गोल होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

यह औषधि प्रसूति कालके पश्चात् गर्भाशय से जो स्राव होता है उसे उत्तेजित करनेके काममें ली जाती है। चर्मरोगोंमें और जरायुके फूल की रुकावटके लिये भी इसका उपयोग किया जाता है।
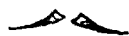
छोटा जंगली अञ्जीर

नामः—

हिन्दी—छोटा जंगली अञ्जीर। तामील—चिरियापेटी तेलगू—चिनवेरीपांडु। लेटिन—Ficus Ribes (फायकस रिबेस)।

वर्णन—

यह अञ्जीर की एक जाति होती है। इसके पत्ते लम्ब गोल, फिसलने और कुछ रुएँदार होते हैं।

गुण दोष और—प्रभाव

इस औषधि के गुण धर्म सब काठ गूलरके गुण धर्म ही की तरह होते हैं। काठ गूलरका गुण धर्म इस ग्रंथके दूसरे भागमें देदिया गया है।

जकाल

नाम—

यूनानी—जकाल।

वर्णन—

यह एक बड़े झाड़ का फल होता है। इसकी शक्ल करौंदे की तरह होती है। कई लोगोंने इसको करौंदा ही माना है। मगर कई लोग इसको करौंदेकी एक जाति मानते हैं।

और वेदना कम हो जाती है और घाव जल्दी अच्छा हो जाता है। दूसरी चिकित्सा की अपेक्षा इसके पत्तोंको जख्म पर बाँधनेसे बहुत जल्दी लाभ होता है। नये जख्मों पर तो इसके मुकाबिले की कोई दूसरी औषधि नहीं है। हर एक जख्म इतना आसानीसे और इतना जल्दी भरता है कि उसका निशान भी सहसा नजर नहीं आता।

उपयोग—

नेत्ररोग—इसके ताजा पानी में काला सुरमा तीन रोज खरल करके आँखों में आँजने से नेत्र पीड़ा शान्त होती है।

हैजा—इस बूंटी को पीसकर पिलाने से हैजे में लाभ होता है।

बवासीर—(१) काली मिर्च के साथ इस बूटी को पीसकर पिलाने से खूनी और बादी बवासीर में लाभ होता है।

(२) इसकी छोटी जातिके पत्तोंको छायामें सुखाकर पीसले। रातमें सोते समय सात तोला गुड़ खाकर सो जांय। सवेरे इसके चूर्णको हथेली भरकर ठण्डे पानीके साथ खालें। इस प्रकार सात दिनतक सेवन करनेसे बवासीरके मस्से मुरझा कर हमेंशाके लिए आराम हो जाते हैं। दवा लेते समय खटाई और बादीकी चीजोंसे परहेज करें।

मूत्रावरोध—इस बनस्पतिको काली मिरचके साथ पीसकर पिलानेसे, सुजाकका जख्म, पेशाबकी जलन और मूत्रावरोध दूर हो जाते हैं।

कुष्ठ और उपदश—पहले कोई उत्तम जुलाबसे कोठा साफ करके बादमें इस बनस्पतिको काली मिरचके साथ चालीस दिनोंतक पिलानेसे कुष्ट और उपदशके घाव अच्छे हो जाते हैं।

चर्मरोग—इसके पत्तोंको गरम करके चोटपर बांधनेसे सूजन उतर जाती है। जखमपर बाँधनेसे जख्म भर जाता है। इसके पत्तोंका लेप करनेसे बिगडे हुए फोडे आराम होजाते हैं, और चमडे का रग बदलना बन्द हो जाता है। मोच खाई हुई और आगसे जलीहुई जगहोंपर भी इसका लेप लाभदायक हैं।

जंगली अंगूर

नाम—

हिन्दी—जंगली अंगूर, आम्लुक, बंगाल—अमोलुक, अंधइया। मराठी—कोलेफान, रामद्राक्ष

कोंकण—पालकद, मलयालम—मेंदरवल्लि। तामील—कांदरवल्लि। तेलगू—सांवरवल्लि। कनाडी—निरालीनांदी, लेटिन—Vitis Indica व्हिटिस इण्डिका।

वर्णन—

यह एक बड़ी बेल होती है। इसके पत्ते और फल अंगूरकी तरह होते हैं। इसकी जड़ बहुवर्षायु और कंदमय होती है। इसके फूल हरे और बैंगनी रंगके होते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

यह वनस्पति भेदक, मूत्रल और शोधक होती है। इसका काढ़ा बच्चोंका रक्त शुद्ध करनेके लिये दिया जाता है। इसकी जड़का रस नारियलके गूदेके साथमें मृदु विरेचक वस्तुके तौरपर काममें लिया जाता है। यह ग्रंथियोंको निर्विकार बनाता है।

कम्बोडियामें इसकी जड़ें सीनेके रोगोंको दूर करने वाली और मूत्रल मानी जाती है। इसे श्वास-नलियोंके प्रदाहमें और सुजाकमें काममें लेते हैं।

जंगली बादाम

नाम—

हिन्दी—जंगली बादाम। [illegible]

कनाडी—[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]—[illegible]terculia [illegible]

वर्णन—

[illegible]

गुण दोष और प्रभाव—

इसकी छाल पसीना लानेवाली, मूत्रल और विरेचक होती है। यह आमवात और उदर रोग उपयोगी मानी जाती है। इसके बीजोंसे निकाला हुआ तेल साधारण मृदुविरेचक होता है। पेटके आफरेको दूर करने वाला और शांतिदायक होता है। अगर इसके बीज असावधानीसे निगले ज तो वमन और सिरमें चक्कर पैदा करते हैं।

जावामें इसका फल सुजाकमें उपयोगी माना जाता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह मृदुविरेचक, पसीना लानेवाली और मूत्रल है।

जंगली अरंडी

नाम—

हिन्दी—जंगली एरंडी, उदर बीबी। संस्कृत—निकुम्भा। बंगाल—लाल भेरंड। बंबई—जंगली एरंडी, उदर बीबी। तामील—अदलई, कटमनाकु, दुलिया मनाकु। तेलगू—नेलमिदि। कनाडी—कि नक, तोतला सिदर। मलयालम—अतला, नाकदन्ती। फारसी—बेदी अंजीरा। उर्दू—जगली एरंड। लेटिन—Jatropha Glandulifera (जेट्रोफा ग्लेन्ड्युलिफेरा)

वर्णन

यह वनस्पति दक्षिणमें तथा कलकत्तामें पैदा होती है। इसका झाड अरंडाकी तरह ही होता है। इसके पत्ते लाल रंगके होते हैं। इसके फूल हरे पीले और फली १-३ सेन्टिमीटर लम्बी, गोल, फिसलनी और दांत वाले तथा चमकीले होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

इसके पत्ते ऋतुस्राव नियामक, वेदना शून्यता पैदा करने वाले और ज्वराव साद वाले होते हैं। इसकी जड़ बवासीरमें लाभदायक है, इसके पत्ते बिच्छूके काटने पर लगाये जाते हैं और तत्काल फायदा करते हैं। ये प्रदर, दमा, [illegible] का प्रदाह, कटिवात और पक्षाघातमें भी लाभ पहुँचाते हैं। इसके बीज विरेचक होते हैं।

इसकी जड़को पानीके साथ पीसकर देनेसे बच्चोंका बढ़ा हुआ पेट मुलायम [illegible] जाता है और [illegible]

की मात्रामें एक नरम और निश्चित विरेचक है। इससे ३ से लेकर ८ घण्टेके अन्दर दस्त शुरू हो जाती है। इसके प्रभावकी निश्चिततामें यह अरंडीके तेलसे मिलता जुलता है। किन्तु यह अरंडीके तेलसे कई बातोंमें उत्तम है। यह दुर्गन्ध पूर्ण और बदजायका नहीं होता और इसके लेनेमें वमनकी प्रवृत्ति नहीं होती।

जंगली झाउ

नाम—

हिन्दी—जंगली झाउ, जंगली सरू, विलायती सरू। बम्बई—सरोकाझाड़, विलायती सरो। बंगाल-झाऊ। मराठी-जंगली सरू, सुरोना, सारपूला, सुरु। मैसूर—कसेरिकी। तामील—चिनवर्मी, सवुक्कु। लेटिन—Casuarina Equisetifolia (केसुरिन इक्विसेटिफोलिया)।

वर्णन—

यह वनस्पति बंगालकी खाड़ीके पूर्वमें चिटगांवसे दक्षिणके तरफ होती है। यह एक सुन्दर वृक्ष होता है। इसकी शाखाएं सीधी और सुन्दर होती हैं। यह झाड़ बहुत नाजुक रहता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

कर्नल चोपराके मतानुसार इसकी छाल और लकड़ी पुराने अतिसार और पेचिशमें लाभदायक होता है। इसके पत्ते उदर शूलमें काममें आते हैं। इनमें केसूरिना नामक तत्व पाया जाता है।

जंगली गाजर

नाम—

हिन्दी, मराठी—जंगली गाजर। सिंध-लुनुक। तेलगू-बुदाकेरू। लैटिन—Portulaca Tuberosa (पोर्चुलेका ट्युबरोसा)।

वर्णन—

यह वनस्पति सिंध, गुजरात, कर्नाटिक और ट्रावनकोरके खुश्क भागोंमें पैदा होती है। इसकी जड़ गाजरके समान मोटी रहती है।

जंगली हलदी

नाम—

संस्कृत—वन हरिद्रा। हिन्दी—जंगली हल्दी, वन हल्दी। बंगाल—वनहल्द। बंबई—कोचीन हलद, जंगली हलद। मराठी—वेठी हलद, राण हलद। तामील—कस्तूरी मंजल। तेलगू—कस्तूरी पसुलु। लेटिन—Curcuma Aromatica (करक्यूमा एरोमेटिका)*

वर्णन—

यह हल्दी ही की जातिका एक क्षुप होता है इसके क्षुप प्रायः जगलोंमें लगते हैं। कोचीन और मेसूर प्रांतमें यह बहुत पैदा होता है। इसके पत्ते कोमल होते हैं। बरसात के पूर्व इसके नवीन पत्ते फूटते हैं और उनके साथही फूल आते हैं। इसकी जड़की गठाने खाद और पानी देने पर मुट्ठी के बराबर मोटी हो जाती हैं। इसकी साधारण मध्यमश्रेणी की गठान अण्डाकृति और २ इंच से अधिक मोटी होती है। इस गठान के आसपास बहुतसी पतली जड़ें भी रहती हैं। जो नारंगी रंगकी होती हैं। मुख्य गठान का भीतरी हिस्सा हलदीके समान गहरे नारंगी रंगका होता है। इसकी खुशबू हलदी की अपेक्षा अधिक उग्र और कपूरकी तरह होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे वन हलदी रुचिकारक, कड़वी, अग्नि दीपक तथा कुष्ट और रक्तवातको नष्ट करने वाली है।

सर्प विषके अन्दर इसको कुट, अपामार्ग और मेंसिलके साथ देनेसे लाभ होता है। विस्फोटक, खुजली, मोच, सूजन, इत्यादि पर इसका लेप किया जाता है। यह शक्तिदायक और शान्तिदायक भी मानी जाती है।

कोकण के अन्दर विस्फोटक ज्वरके फोडे फुन्सियों पर इसका लेप किया जाता है। चोट और रगड़ पर भी दूसरे संकोचक द्रव्यों के साथ इसको लगाया जाता है। गीली खुजली पर और माताके दानों पर भी इसका लेप किया जाता है।

मुसलमान हकीम सर्पदंशके कुछ निश्चित केसों में इस वनस्पति को एक बहुमूल्य औषधि मानते हैं।

केस और महस्कर के मतानुसार यह वनस्पति सर्पदंश में उपयोगी नहीं है।

---

*नोट—इस ग्रन्थके पहले भागमें आंबी हल्दी के प्रकरण में आंबीहलदी का लेटिन नाम करक्यूमा एरोमेटिका छप गया है। उस जगह करक्यूमा एमेडा पढ़ना चाहिए। करक्यूमा एमेडा आंबीहलदी को और करक्यूमा एरोमेटिका जगली हलदी को कहते हैं।

जंगली अदरख

नान—

नाम— संस्कृत—वनार्द्रकम्, पेऊ, अरण्याद्रका। हिन्दी-जगली अद्रक, वन आदा। गुजराती—वन आदू। मराठी—रान आलें, मालाबारी हलद। पंजाब—जंगली अदरक। तेलगू—करपुण्पू। लेटिन—Gingibar Cassumunar (झिञ्जीबार केस्यूमनर)।

वर्णन—

जंगली अदरक का पौधा बड़े कुलिंजन के पौधे की तरह होता है पर इसके पत्ते उससे बड़े होते हैं। इसकी गठानें अदरक या हल्दी की गठानों के समान होती हैं। इसमें कपूर के समान तीव्र गंध आती है। इसका स्वाद चरपरा और कुछ कड़वा होता है परन्तु सूख जाने पर ये सब बातें कम हो जाती हैं। यह असाढ सावन में फूलता है और कातिक अगहन में फलता है।

गुण दोष और प्रभाव—

कोकण के वैद्य इस वनस्पति को सर्पविष को दूर करने के प्रयोग में लेते हैं। थोड़ी २ देरके अन्दर वे कई दफे इसे पेट में पिलाते हैं और दंशस्थान पर लगाते हैं। पुराने चर्मरोगों में इसको अरीठे और गोमूत्र के साथ उबालकर लगाते हैं और उसके बाद स्नान करवा देते हैं। इस लेप को आंखों के अन्दर जानेसे बचाया जाता है। कॉलिक उदरशूल और अतिसारके अन्दर भी इसका उपयोग किया जाता है।

स्त्रियों का आवेश रोग मिटाने के लिए इसके रस में नमक मिलकार पिलाना चाहिये। शरीर का अगर कोई अंग संज्ञाशून्य होजाय तो उसपर काली मिरच के साथ इसका लेप करना चाहिये। पेट का अफारा मिटाने के लिए इसके कद को भोबल में भूनकर छीलकर नमकके साथ खिलाना चाहिये। धनिये के साथ इसका क्वाथ बनाकर पिलाने से अतिसार मिटता है। इसके रसमें गुड़ मिलाकर सुंघाने से अपस्मार रोग मिटता है।

जंगली जायफल

नाम—

हिन्दी यूनानी—जंगली जायफल। मराठी—रान जायफल। संस्कृत—काफल, मलाटी। तामील—कट्टुचेदी। मलायलम—पनम पटक। लेटिन—Myristica Malabarica (मिरि-स्टिका मलाबारिका)।

वर्णन—

जङ्गली जायफल का वृक्ष कोकण कर्नाटक और उत्तरी मलाबार में पैदा होता है। इसके फल को जंगली जायफल, रामफल के नामों से पहिचानते है। इसीप्रकार इसकी पत्तियों को रामपत्री या बम्बई की जायपत्री कहते हैं। जंगली जायफल दूसरे जायफल की अपेक्षा लम्बा और मोटा होता है। असली जायफल की अपेक्षा इसमें सुगन्धि और तेल थोडा पाया जाता है। इसकी जायपत्री पीलापन लिए हुए लालरंग की होती है। इसमें असली जायपत्री की अपेक्षा खुशबू और स्वाद की कमी रहती है।

गुण दोष और प्रभाव—

जंगली जायफलके साधारण गुण असली जायफलकी तरह मगर उनसे कुछ हलके दर्जेके होते हैं। इसके तेल की मालिश करने से गठिया मिटता है। इसको पीसकर लेप करनेमे वादीका दर्द मिटता है। इसको भूनकर पीसकर दिनमें २।३ बार देने से आव के दस्त बंद हो जाते हैं। इसको पीसकर शहदमें चाटने से नींद आ जाती है।

जंगली प्याज

इस वनस्पतिका वर्णन कोलीकाँदाके प्रकरणमें अन्दर इस ग्रंथके दूसरे भागमें देखिये।

जंगली मदनमस्त

नाम—

हिन्दी—जंगली मदन मस्त, मलयालम—तोडमरम। तामील—पद्दन्दु। लेटिनः—Cycas Rumphii साइकास रंफी Cy Cas Circinalis साइकास सिरसीनेलिस।

विवरण—यह एक हमेशा हरा रहनेवाला खजूरकी भान्तिका वृक्ष होता है। इसके पत्ते वृक्षके सिरे पर ही लगते हैं। ये ४५ से लगाकर ७५ से० मी० तक लम्बे होते हैं। इसका फल लंब गोल होता है। इसका आकार मुर्गीके अण्डे जैसा होता है। यह रंगमें नारंगी पीला होता है।

उत्पत्तिस्थान—यह ब्रह्मा, मलाया प्रायद्वीप, अण्डमान और निकोबार में होता है। इसे भारतके बगीचोंमें भी बोते हैं तथा सेशल्स, न्यूगायना और उत्तरी आस्ट्रेलियामें पैदा भी होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

गु० दो० प्रभाव:—कुर्जके मतानुसार इसका गोंद दुष्ट व्रणोंपर लगाया जाता है इससे बहुत कम समय में ही मवाद पैदा हो जाता है ।

कम्बोडियामें इसकी गठानोंको पानीके या चावलके पानीके साथ पीसकर फोड़ोंपर, सूजी हुई ग्रन्थियोंपर और व्रण वाले घावपर लगाते हैं ।

कर्नल चौपराके मतानुसार यह उत्तेजक कामोद्दीपक और निद्रा लानेवाला होता है । इसमें ग्लूकोसाइड्स रहते हैं ।

जंगली मेंहदी

इसका वर्णन कुरंड वृक्षके नामसे इस ग्रंथके दूसरे भागके ५७६ पृष्ठ पर देखिये ।

जंजबील

नाम—

यूनानी—जंजबील ।

वर्णन—

यह कुरपेकी एक जाति है । इसकी डालियोंका रंग लाल होता है और इसका स्वाद सोंठकी तरह तेज़ होता है ।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जेमें गरम और पहले दर्जेमें खुश्क है । इसको दीनोंके सहित पीसकर मुँहपर मलनेसे चेहरेकी झांई और पुराने काले दाग मिट जाते हैं । इसके बीजों व पत्तोंको पीसकर सख्त सूजनपर लेप करनेसे सूजन बिखर जाती है ।

जंजीदयून

नाम—

यूनानी—जंजीदयून ।

शीतल, त्रिदोष नाशक और रक्तविकार, जलन, अग्निविसर्प, चर्मरोग, गलेकी बीमारी और अर्बुदको नष्ट करती है। यह शरीर के सौंदर्य को भी बढ़ाती है।

इसकी दूसरी जाति गंधमांसी कडवी, शीतल, कफनाशक, रक्तपित्तको मिटाने वाली और विष, भूतबाधा और ज्वरमें लाभ पहुँचाने वाली होती है। यह भी सौन्दर्य वर्धक है। इसके और सब गुण जटामान्सीके तुल्यही है। अन्तर इतनाही है कि इसकी क्रिया मज्जातंतुओं पर विशेष होती है।

इसकी तीसरी जाति आकाशमान्सी शीतल, नाड़ी रोगनाशक, सूजनको मिटाने वाली और सौंदर्य वर्धक है। यह केशों को उज्ज्वल करने वाली, वातनाशक, शीतल तथा भूत बाधा, रक्तपित्त, मसूरिका (शीतला), नाडी व्रण (नासूर), और विस्फोटक रोगमें लाभदायक है।

यूनानी मत—यूनानी मतसे यह पौष्टिक, उत्तेजक, मूत्र निस्सारक, ऋतुश्राव नियामक, पेटके अफरेको दूर करने वाली, अग्निवर्धक, और विरेचक होती है। यह आंखो की ज्योति को बढाती है, बालोंको काला करती है, खांसी, पुरातन प्रमेह, सीनेके रोग, अन्तडियों की सूजन और मूत्राशय तथा कटि सम्बन्धी रोगोंको दूर करती है। यह घावको सुखानी और भूखको बढाती है।

इसकी जड़े सुगंधित होती हैं। ये कडवी, पौष्टिक और आक्षेपनिवारक होती हैं। इनका उपयोग प्रायः मृगीकी बीमारीमें किया जाता है। गुल्म वायुमें भी यह उपयोगी सिद्ध हुई है। हृदयकी धड़कनमे भी इनका उपयोग किया जाता है।

इस वनस्पतिमें वेलेरिन (Valerien) नामक अंग्रेजी औषधिके सब गुण मौजूद हैं। यह आक्षेप निवारक और उदर शूलमें मुफीद है। इसका सम्मेलन उन औषधियों के साथ किया जाता है, जिनका उपयोग वायुनलियोंके प्रदाहमें धूम्रपान करनेमें देते हैं। कोमानका कथन है कि इसके सतका उपयोग उदर शूल और कब्जियत के अन्दर किया गया और उसमें यह उपयोगी पाई गई।

राबर्टके मतानुसार इसकी जडे पानीके साथ पीसकर बेहोशी के अन्दर आंखो पर लगाई जाती है।

हिन्दू चिकित्साशास्त्रमें इस वनस्पतिका प्रयोग बहुत प्राचीन कालसे किया जा रहा है। इस देशमें यह वस्तु सुगंधित द्रव्यके रूपमें काममें ली जाती है। सुश्रुतमें इस औषधि को अपस्मार रोगके उपचारमें बहुत लाभदायक बतलाया है। भारतीय वैद्य इसको स्नायु मण्डलके रोगोंमें और पेटके अफरेको दूर करनेके उपयोगमें लेते हैं।

रासायनिक विश्लेषण—

गोंद ६ प्रतिशत तथा भीमसेनी कपूरके समान एक प्रकारका कपूर, एक [illegible] द्रव्य और एक प्रकारका उड़नशील तेल पाया जाता है। यह उड़नशील तेल इसमें ½ प्रति सैकड़ा रहता है। यह तेल ही इसमें पाया जानेवाला सबसे प्रधानद्रव्य है। इसका रंग फीका पीला और कुछ हरी झाँई लिये हुए होता है। इसमें तीव्र गंध आती है।

डॉक्टर वामन गणेश देसाईके मतानुसार जटामांसी भूख बढ़ानेवाली, पाचन क्रियाको दुरुस्त करनेवाली और [illegible] बचानेवाली होती है। इसको पेटमें जानेपर पेटमें कुछ गरमी मालूम होती है, डकार आती है, पसीना छूटता है, पेशाब होता है और नाड़ी सुधर जाता है। अधिक मात्रामें इसको लेनेसे वमन होती है, पेटमें मरोड़ देकर दस्तें होती हैं, मस्तिष्क और मज्जा तन्तुओंपर इसकी पौष्टिक और उत्तेजक क्रिया होती है। थोड़ी मात्रामें इसको अधिक दिनतक लेनेसे मन शान्त होता है, काम करनेका हौंसला बढ़ता है और नाड़ीकी गति व्यवस्थित रहती है।

मस्तिष्क और मज्जातन्तुओंके रोगोंपर जटामाँसी बहुत लाभ पहुँचाती है।

अतिशय मानसिक परिश्रमकी वजहसे अथवा और किसी कारणसे अगर मन अस्थिर हो गया हो, उसमें थकावट मालूम होती हो, नाड़ी छोटी और शीघ्रता पूर्वक चलती हो तो, ऐसी स्थितिमें जटामाँसी को देनेसे नाड़ी सुव्यवस्थित होकर मन शान्त होता है। किसी भी प्रकारका मानसिक आघात लगनेसे अथवा अत्यधिक मानसिक परिश्रमकी वजहसे पैदा हुए चित्त भ्रममें जटामांसी बहुत शीघ्रताके साथ असर पहुचाती है। ऐसे रोगोंमें हींग, कस्तूरी, वगैरह औषधियोंकी अपेक्षा जटामाँसीकी क्रिया अधिक शीघ्र, अधिक सुनिश्चित और अधिक उत्तम होती है। भूत और प्रेतकी बाधामें जटामाँसीका ब्राह्मीके स्वरस वच और शहदके साथ देना चाहिये।

रक्ताभिसरण क्रियाकी खराबीमें भी जटामाँसी बहुत उत्तम औषधि है। मस्तिष्कमें रक्ताभिसरण क्रियाकी अधिकतासे रक्त भरा हुआ सा दीखने लगता है और पागलपनके लक्षण दिखलाई देने लगते हैं। ऐसी स्थितिमें इस वनस्पतिको देनेसे प्रत्यक्ष लाभ दिखलाई देता है। इसी प्रकार रक्ताभिसरण क्रियाकी कमीसे जब चक्कर आना, मूर्च्छा, आँखोंके आगे अँधेरा आना, इत्यादि चिन्ह नजर आने लगते हैं, वैसी हालतमें भी जटामांसीको देनेसे रक्ताभिसरण क्रियाकी गति सुधरकर ये सब लक्षण मिट जाते हैं। मतलब यहकि यह औषधि रक्ताभिसरण क्रियाकी अधिकता और कमी दोनोंको मिटाकर उसको सुव्यवस्थित कर देती है। हृदयकी शिथिलता, हृदयकी धड़कन व हृदय रोगकी वजहसे पेटमें वायुका सचय हो जाता है। ऐसी स्थितिमें जटामाँसीकी रक्ताभिसरणपर होनेवाली यह क्रिया खास हृदयके ऊपर, रक्तवाहिनियोंके उपर और मज्जा तंतु और रक्ताभिसरणके केंद्र स्थानपर होती है। इसके सेवनसे रक्त वाहिनियोंका संको-चन होता है, जिससे रक्तपित्त, विसर्प और रक्तस्रावके ऊपर भी इस औषधिसे लाभ होता है।

बालकोंके उदर शूल और पेट फूलनेपर और सुशिक्षित लोगों और नाजुक स्त्रियोंको होनेवाले सूक्ष्म

उदर शूलपर तथा बदहज्मी और पाचन नलिकाके रोगोंपर जटामांसीको नौसादर और दूसरे सुगंधित द्रव्यों के साथ देनेसे पित्तकी क्रिया व्यवस्थित हो जाती है और पाचन क्रिया सुधर जाती है।

ज्वरमें अथवा शोथज्वरमें जब त्रिदोष कुपित होजाते हैं और सन्निपातके चिन्ह दीखने लगते हैं, ऐसे समयमें जटामांसी मन्त्र शक्तिकी तरह काम करती है। इससे रक्ताभिसरण क्रिया सुधरती है, मज्जातंतुओं को उत्तेजन मिलता है, गलेमें और श्वास नलिकामें कफ छूटने लगता है, शरीर की दाह कम होती है और सूजन बिखरने लगता है। ऐसे समयमें मालूम होताहै कि प्राचीन आचार्योंने इसको जो त्रिदोष जित्की संज्ञा दी है वह कितनी युक्तियुक्त है।

चर्म रोगोंके अन्दर भी इस औषधिको उपयोग करनेका बड़ा रिवाज है। जलन पर या फोड़ों पर इसका लेप करनेसे दाह और पीड़ाकी कमी होती है। विसर्प, कुष्ठ और रक्तपित्त रोगोंमें भी जटामांसी को पिलानेसे और उसका लेप करनेसे रोग दूर होकर त्वचाकी कांति सुधरती है।

कष्टप्रद मासिकधर्ममें जटामांसीको देनेसे कष्टकी कमी होकरके मासिक धर्म शुद्ध होने लगता है। स्त्रियोंका मासिक धर्म बंद होनेके समय या बंद होनेके पश्चात् जो उपद्रव होते हैं, उनको दूर करनेमें जटामांसी बहुत उपयोगी है।

शरीर की जीवन विनिमय क्रिया बिगड़कर पेशाबमें शक्कर या एक प्रकारका दूसरा सूक्ष्मसार जाने लगता है। जटामांसी को देनेसे पेशाबके अन्दर शक्कर और [illegible] की कमी होजाती है और जीवन विनिमय क्रिया सुधरकर शरीर [illegible]

कर्नल चोपड़ाके मतानुसार इसकी जड़ोंका [illegible] गुल्मवायु, आक्षेप, [illegible] और कंपवातमें विशेष रूपसे लाभ दायक होता है।

मात्रा—इसकी जड़की मात्रा १० से लेकर ३० रत्ती तक की है।

उपयोग—

रक्त विकार—जटामांसीके शीत निर्यासके साथ मिलाकर पिलानेसे [illegible] रक्त विकार मिटता है।

हिचकी [illegible]—जटामांसी को पानी में [illegible] हिचकी [illegible]

मस्तक पीड़ा—इसको पानीमें [illegible] मस्तक पीड़ा मिटती है

दन्त शूल—इसके चूर्णका मंजन करनेसे दन्तशूल मिटता है।

[illegible]—[illegible] मिटते हैं।

विषाभावा, विषहंत्री, इत्यादि। गुजराती—निर्विशी। सिमला—मनीला। नेपाल—नीलोविक। अरबी, फारसी व उर्दू—जदवार। लेटिन—Dolphinium Denudatum (डेलफिनियम डेन्यूडेटम,)।

वर्णन—

यह एक क्षुप जातिकी वनस्पति है। इसका पौधा नागरमोथे के पौधे के समान और इसका कंद अतीसके समान होता है। यह नेपाल और तिब्बतमें विशेष पैदा होती है। इसके पत्ते ३ से लेकर ३-७ सेंटिमीटर तक लम्बे होते हैं। इसके फूल वसन्तः ऋतुके आरंभ मे आते हैं। इसकी जड़ कुछ कालापन लिये हुए खाकी रंगकी होती है। यूनानीमतसे इसकी ६ जातियाँ होती हैं। पहली जाति वह होती है जिसकी जड़ ऊपर से मट मैली और भीतर से कुछ ललाई लिये हुए नीली होती है.। इसका स्वाद पहले मीठा और बादमें कड़वा मालूम होता है। इस जातिको जदवार खताइ कहते हैं। यह सबसे उत्तम होती है। दूसरी जाति भीतर और बाहर दोनों तरफ मट मैले रंगकी, पीलापन लिये हुए होती है। यह स्वादमें कड़वी होती है। पहली जातिसे यह गुणोंमें भी कुछ कम होती है। तीसरी जाति बाहर और भीतरसे काली होती है। उसको पानीमें घिसनेसे पानीका रंग नीला हो जाता है। गुणोंमें यह तीसरे नम्बर की है। ये तीनों जातियाँ तिब्बत और नेपालके जंगलोंमें पैदा होती हैं। चौथी जाति दक्षिणके पहाड़ोंमें पैदा होती है। इसका स्वाद कड़वा होता है और यह जैतूनके फलके बराबर होती है। पाँचवी जातिको अन्तला कहते हैं। यह एक बालिश्तके बराबर लम्बी, काली, नरम और स्वादमें बहुत कड़वी होती है। क्योंकि यह विशेष कर बच्छनागके साथ पैदा होती है। ऐसा कहा जाता है कि इसको पास रखनेसे बच्छनागका जहर असर नहीं करता। जिन स्थानों पर यह पैदा होती है वहाँके लोग इसको पास रखकर ३ रत्ती तक खा लेते हैं। इसकी छठी जाति सफेद, मीठी और खुशबूदार होती है। इसमें थोडीसी तेजी भी होती है।

जो जदवार खुरासानके पूर्वके तरफके पहाडोंमें पैदा होती है वह छोटी फीके रंगकी और सफेदी लिये हुए होती है। इसमें विषको नाश करनेकी शक्ति बहुत कम होती है। जो जदवार तिब्बतके पहाड़ोंमें पैदा होती है, वह बड़ी और ताकतवर होती है। इसमें विष को नष्ट करने की शक्ति जदवार खताईके बराबर ही होती है, यह हिन्दुस्तानमें पैदा होनेवाली जदवारसे उत्तम होती है। हिन्दुस्तानकी जदवार खुरासान वगैरह दूसरे देशोंकी जदवारसे उत्तम होती है।

असली जदवारकी पहिचान—जदवारके अन्दर कई प्रकारकी मिलावटें होती हैं। उसमेंसे असली जदवारको छांट लेना बड़ा मुश्किल होता है। कई लोग बच्छनागकी जड़ोंको दूधमें जोश देकर उनका जहर कम करके जदवारके बदलेमें बेच देते हैं। इसलिये जदवारको लेते समय उसकी परीक्षा कर लेनी चाहिये।

वछनाग और जदवार फरक—

१—वछनाग आकार जदवारसे पतला और छोटा होताहै। उसका रंग लाल होता है।

२—अगर वछनागको तोड़कर जबान पर रक्खें तो जबानमें जलन और शून्यता पैदा हो जाती है। कभी २ जबान पर छाला भी पड़ जाता है। जदवारसे ये बातें नहीं होतीं।

३—जबान पर वछनागको रखनेसे जो छाला व जलन पैदा होती है उस पर अगर जदवार को मलदें तो वछनाग से पैदा हुई तकलीफ दूर होजाती है।

४—जदवार और वछनागके स्वाद में भी अन्तर है। जदवार में कड़वापन होता है मगर वछनागमें नहीं होता।

५—नकली जदवार ऊपरसे खुरदरी और चरगदार होतीहै, असली जदवार चिकनी और साफ होती है।

६—नकली जदवार ऊपरसे रंगीन और भीतर से सफेद होती है। मगर असली जदवार भीतर और बाहर एक रंगकी मटमैली या नीली होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेदिक मतसे जदवार कड़वी, शीतल, व्रणको भरनेवाली तथा कफ वात रुधिर विकार और विषको नष्ट करने वाली होती है।

इसको गौमूत्रमें औटाकर सूजन पर लगानेसे सूजन दूर होती है। दाँतों पर मलनेसे दाँतों का दर्द दूर होता है।

यूनानी मत—यूनानीमतसे यह दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। यह मूत्रल, शक्तिवर्धक, उत्तेजक और ज्ञानतंतुओं को बल देने वाली है। इसके सेवनसे दिल, दिमाग और जिगरको ताकत मिलती है, आँख की ज्योति बढती है, कामेन्द्रिय को बल मिलता है, पेशाब अधिक होता है, सूजन बिखर जाती है, मृगी, लकवा, फ़ालिज, इत्यादि ज्ञान ततुओ से सम्बन्ध रखने वाले रोगोंमें लाभ पहुँचाती है, जलोदर, पीलिया, उदर शूल, और मूत्र कष्टमें भी यह लाभदायक है। जहरीले जानवरों के जहर और वछनागके जहर को भी यह दूर करती है, गुर्दे और मसाने की पथरीको तोड देती है, कफ के बुखारमें लाभ दायक है, अगर बच्चा माँ के पेटमे मर गया हो और उसका जहर माँ के शरीर में फैल गया हो अथवा बचा पैदा होने के समय जच्चा कमजोर होगई

हो और इनके मूत्र अधिक गिरता हो तो इस हालतमें इसका [illegible] मात्रामें लेकर १६ [illegible] दिन तक पिलाने से अच्छा लाभ होता है।

बच्चों को होनेवाली मृगी [illegible], इत्यादि दिमाग सम्बन्धी बीमारियोंमें इसको दूधमें पीसकर देनेसे फायदा होता है। बवासीरके मस्सोंपर इसको लगानेसे वहांकी सूजन उतर जाती है। इसको रुईमें तर करके बच्चोंके गुदा द्वारमें रखनेसे गुदाद्वारके सब कीड़े मर जाते हैं और फिर पैदा नहीं होते।

गिलानीके मतानुसार यह औषधि जहरको दूर करनेके लिये एक हुक्मी वस्तु है। इसको सिरकेमें पीसकर लेप करनेसे चेहरेकी झांई और सफेद दाग दूर हो जाते हैं। हर प्रकारकी सूजन फिर वह चाहे वात, पित्त या कफ किसी भी वजहसे क्यों न हुई हो, इसके भीतरी और बाहरी प्रयोगसे नष्ट हो जाती है। गलेकी हर किस्म की सूजन भी चाहे वह कंठ माला या गलगंडसे हुई हो, चाहे हलक की खराबीसे हुई हो इसके सेवनसे मिट जाती है। सर्दी की सूजनमें इसको काली मिरचके साथ और गर्मी की सूजनमें धनियाँके ताजे पत्तोंके साथ देनी चाहिये।

इसको पीसकर ताजा और पुराने जख्मों पर छिड़कनेसे जख्म बहुत जल्दी भर जाता है। हृदय को शांति और शक्ति देनेके लिये भी यह औषधि बहुत कारगर है। अगर किसीका हृदय सर्दी की वजहसे कमजोर हो तो उसको रोजाना ६ रत्तीसे १२ रत्ती तक जदवार, नीलोफरके शरबत या गाव जबानके अर्कके साथ देनेसे बड़ा लाभ पहुँचता है। हृदयको शान्ति देनेके सम्बन्धमें यह एक दिव्य औषधि है। अगर इसको ४ रत्ती की मात्रामें प्रतिदिन शिकंजबीनके साथ लिया जाय तो जिगर की ऐसी कमजोरी जिससे कि जलन्दर पैदा होनेका अंदेशा रहता है, मिट जाती है।

अगर किसीका पेशाब रुका हुआ हो और मसानेमें फोड़ा होगया हो तो जदवारके चूर्णको गोखरू, मकोय, ककड़ीके बीज, और खरबूजे के बीजके साथ शीत निर्यास बनाकर देने से पेशाब खुल जाता है। और गुर्दे का दर्द तथा पथरी नष्ट होजाती है।

काले सर्पके विषमें इसको २। मासेकी मात्रामें देनेसे फायदा होता है ऐसा कहा जाता है मगर इसके लिये कोई विश्वासनीय प्रमाण नहीं है।

मात्रा—इसकी साधारण मात्रा ४ से १२ रत्ती तककी होती है। जलोदरके रोगमें कुछ लोग इसको ३ मासे तककी मात्रामें देते हैं। कामेंद्रियकी शक्ति को बढ़ानेके लिये इसको २ मासे तक की मात्रामें देते हैं। इससे अधिक मात्रामें लेनेसे आँतोंके अन्दर जख्म पैदा हो जाता है।

मुज़िर—यह वनस्पति गरम और खुश्क मिजाज वालों को हानि कारक है। ऐसे लोगोंके अन्दर यह सिर दर्द पैदा करती है तथा आँतोंमें जख्म भी पैदा कर देती है।

दर्प नाशक—इसके दर्पको नष्ट करनेके लिये धनियाँ, दूध, कतीरा और शिकंजबीन मुफीद है।

जनवा

नाम—

यूनानी–जनवा ।

वर्णन—

यह एक प्रकारकी तरकारी है जो इराक देशके अन्दर बहुत पैदा होती है।

गुण दोष और प्रभाव,—

यह बहुत गरम है। इसको खाते रहनेसे हवाकी सरदी और मौसमी सर्दीका बिलकुल असर नहीं होता। इससे सर्दीका सिर दर्द भी दूर होता है। आंखोंकी ज्योति तेज होती है। इसकी धूनीसे विषैले जानवर भाग जाते हैं। गरम प्रकृतिवालोंको यह नुकसान करती है। (ख० अ०)

जनबक

नामः—

यूनानी—जनबक ।

वर्णन—

यह एक रोइदगी होती है। इसका पौधा गजभर या उससे कम लंबा होता है इसकी डालियोंके ऊपरके पत्ते आसके पत्तोंकी तरह मगर उनसे कुछ लंबे होते हैं। जड़के पासके पत्ते कासनीके पत्तोंकी तरह मगर उनसे कुछ दबे हुए होते हैं। इसका फूल सफेद और खुशबूदार होता है। इसकी जड़की गांठ प्याजकी तरह होती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह वनस्पति पहले दर्जेमें गरम और खुश्क है। यह दिमाग़को ताकत देती है।

इसको पीसकर बदनपर मलनेसे दाग और निशान मिट जाते हैं, इसको पानीमें उबालकर उस पानी से मुंह धोनेसे चेहरा साफ और चमकीला हो जाता है। चेहरेकी झाँई और कालेदागोंपर इसका लेप फायदा करता है। इसके लगानेसे तर और खुश्क खुजली मिटती है। (ख० अ०)

जफ्त बहरी

नाम -

यूनानी—जफ्तबहरी।

वर्णन—

यह एक प्रकारका काले रंगका तरल पदार्थ होता है जो मिट्टीके तेलकी तरह जमीनसे निकलता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह तीसरे दर्जेमें गर्म और खुश्क है। यह वायुको [illegible] है। [illegible] है। लकवा, अधिवात, प्रधनी और जोड़ोंके दर्दमें लाभदायक है। इसका लेप [illegible] है। टूटी हुई हड्डी पर भी इसका लगाना मुफीद है। यह फेफड़े को नुकसान पहुँचाता है। इसका दर्पनाशक कतीरा है। इसकी मात्रा ७ माशेतक है। (ख० अ०)

जफ्ततर।

नाम—

यूनानी—जफ्ततर

वर्णन—

यह जमीनी [illegible] पेड़से टपकने वाला मद है। इसका रंग काला होता है।

गुण दोष और प्रभाव—

यह दूसरे दर्जेमें गर्म और खुश्क है। [illegible]
है। [illegible] है। [illegible]

उसमें उत्तेजना पैदा होती है। जख्मों पर इसको लगाने से जख्म भर जाते हैं। शक्करके साथ इसको लेनेसे पुरानी खांसी और कफके साथ खून जानेकी बीमारीमे लाभ होता है। इसको मोममें मिलाकर नाखूनोंमें लगानेसे नाखूनोंकी सफेदी मिट जाती है। जिस दादमें से पीब बहता हो उस दाद पर इसको लगानेसे लाभ होता है। इसको जौ के आटेमें मिलाकर सिरकी गज पर लगाने से नये बाल जम जाते हैं। हड्डी उखड़ जानेपर या मोच आ जानेपर इसके लेपसे फायदा होता है।

इसको जौ के आटेके साथ बच्चेके पेशाबमें पकाकर लेप करनेसे कंठमाला अच्छी होजाती है। फालिज और गठिया पर भी इसके लेपसे फायदा पहुँचता है। इसको जलाकर उससे काजल बनाकर उस काजलको आँखमें आंजनेसे आँखकी ज्योति तेज होती है, आंखसे पानीका बहना बंद हो जाताहै और आँख की जलन मिट जाती है।

कडवी बादामके तेलमें इसको मिलाकर कानमे टपकाने से कान का दर्द मिट जाता है। कानके कीड़े भी मर जाते है और पीबका बहना भी बन्द हो जाता है। इसको आगपर गरम करके उसमें बराबर वजनका चूना मिलाकर कीड़े से खाये हुए दाँतमें भरदें तो दाँत गिरने से बच जाता है।

इसको शक्कर और बादाम के साथ खानेसे दमा और साँस की तगी मिट जाती है। छातीमे जमा हुआ कफ निकल जाता हैं। कफके साथ खून और पीबका आना भी रुक जाता है। निमोनियाँ मे भी लाभ पहुँचता है। छाती और फेफड़े मे अगर कोई फोड़ा हो तो उसमें भी इससे लाभ पहुँचता हैं।

इसको योनिमें रखनेसे गर्भका बच्चा मरजाता है। स्त्री सभोगके पहिले अगर पुरुष इसको अपनी इन्द्रिय पर लगाले तो स्त्री को गर्भ नहीं रहता और हमेंशा लगाते रहने से स्त्री वंध्या हो जाती है।

इस औषधिमें विषनाशक गुण भी रहता है। अफाइ नामक विषैले सर्पके विषको यह दूर करता है। इसी प्रकार स्थावर विषोंके ऊपर भी यह लाभ दायक है। कीडे मकोडों के काटने की जगह पर इसको नमक के साथ लगाने से फायदा होता है। इसकी मात्रा ३ माशे तक की है। (ख० अ०)

जफ्त आफरीद

नाम—

यूनानी—जफ्त आफरीद ।

वर्णन—

यह एक रोइदगी है । इसका पौधा रेतीके मैदानों मे पैदा होता है । इसके पत्ते चनेके पत्तोंसे छोटे और शाखाएँ बारीक तथा घनी होती हैं । इसकी शाखाओं के सिरेपर सनम्बरी की तरह ३ । ४ गिलाफ लगे हुए रहते हैं, जिनकी शक्ल हराड़िया बादाम की तरह होती है । इनके किनारों पर काँटे होते हैं । हरेक गिलाफके भीतर ३ परदे होते हैं हरएक परदे में मेथीके बीजों की तरह ५ पांच बीज होते हैं । जब ये गिलाफ पकजाते हैं तब इनके सिर फटकर बीज निकल जाते हैं । इस वनस्पति की पैदाइश स्याम और रूममें होती है । वहां के लोग इसे छोटी सालम मिश्री कहते हैं । मगर यह सालम मिश्री से भिन्न वस्तु है । इतना जरूर है कि कामेंद्रिय की शक्ति को बढ़ाने में यह सालम मिश्री से भी ज्यादा ताकतवर है ।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जेमें गरम और तर है । किसी २ के मतसे गरम और खुश्क है । यह कामेंद्रिय को शक्ति देती है, पेटकी मरोड़ी को मिटाती है, गठिया के रोगमें मुफीद है, इसके बीजों को हलवे के साथ बनाकर लगातार २ हफ्ते तक लेते रहने से हर किस्म के जलोदर में बहुत लाभ होता है । शक्कर और शहद के साथ इसका मुरब्बा भी बनाया जाता है । यह भी बहुत कामोद्दीपक है ।

मात्रा—इसकी मात्रा ७ माशेतक है ।

मुज़िर—गुर्दे के लिये यह हानिकारक है ।

दर्पनाशक—इसका दर्प नाशक कतीरा है । (ख० अ०)

जन्द — अलखरूप

नाम—

यूनानी—जन्द अलखरूप ।

वर्णन—

यह एक रोइदगी है । इसकी जड़ पानी होती है । [illegible]

पोली होती है। इसके पत्ते दूर २ लगते हैं। ये पत्ते रामनाके पत्तोंकी तरह और फूल सरसोंके फूलकी तरह होते हैं। इसके बीज छोटे २ होते हैं। इसके पंचांग का स्वाद कुछ तेज और कड़वा होता है। इसको तोड़नेसे इसमेंसे कुछ चिकना चेप निकलता है। यह वनस्पति स्याममें बहुत पैदा होती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। इसके पत्तोके रसको आँखमें लगानेसे आँखकी सफेदी जाती रहती है इसके खानेसे पेटमें होनेवाली वायुकी मरोड़ मिट जाती है और बढ़ी हुई तिल्ली फट जाती है। पागल कुत्तेके विषपर भी यह मुफीद है। (ख० अ०)

जन्ब अलसञ्बा

नाम—

यूनानी—जन्ब अलसञ्बा।

वर्णन—

यह एक छोटी जातिका पौधा है जो खेतोंमें पैदा होता है। इसकी ऊचाई २ गज के करीब होती होती है। इसके पत्ते गावजबाके पत्तोंसे मिलते जुलते मगर उनसे कुछ छोटे,रुएदार और सफेदी लिये हुए होते हैं। इनके किनारोंपर छोटे छोटे काटे होते हैं। इसके पिंडके नीचेका हिस्सा तिकोना और ऊपरका हिस्सा गोल होता है। इसके पिंड पर भी मुलायम कांटे होते हैं। इस वनस्पतिके अन्दरसे एक प्रकारका दूधिया चेप निकलता है।

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह औषधि पहले दर्जेमें गरम और दूसरे दर्जेमें खुश्क है। किसी २ के मतसे यह सर्द है। यह दवा कब्जियत करती है। इसकी ताजा जड़को छीलनेसे जो लुआब निकलता है उस लुआब को शरीरके किसी भी अंगमें होनेवाले दर्दपर मलनेसे दर्द फौरन जाता रहता है। टूटी हुई हड्डीपर इसकी जड़को लगानेसे और ४ माशेकी खुराकमें खिलाते रहनेसे हड्डी जुड़ जाती है। गठियाके दर्दमें भी यह मुफीद है।

मुजिर—इसको अधिक मात्रामें खानेसे यह सिर दर्द पैदा करती है।
दर्पनाशक—इसकी दर्पनाशक मकोय है।

मात्रा—इसकी मात्रा ४ माशे तक है। (ख० अ०)

जन्ब अलकरब

नाम—

यूनानी—जन्ब अलकरब।

वर्णन—

यह वनस्पति ठंडे और खुश्क स्थानोंपर पैदा होती है। इसके पेड़में पत्ते कम और छोटे २ होते हैं। इसका फूल पीला होता है। इसके फलका आकार बिच्छूकी पूँछकी तरह होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

हकीम जालीनूसके मतसे यह तीसरे दर्जेमें गर्म और खुश्क है। जिस व्यक्तिको ऐसे जानवरने काटा हो जिसका जहर सर्द हो या कोई सर्द जहरीली चीज खाई हो उसको यह औषधि देनेसे लाभ होता है।

जम्बे अलखील

नाम—

यूनानी—जम्बे अलखील।

वर्णन—

यह एक हमेशा हरी रहने वाली वनस्पति है जो स्याम और भारतमें तर ज़मीनके पास और पानीके किनारे बहुत पैदा होती है। इसकी डालियाँ घोड़ेकी पूंछ की तरह होती हैं। इसका स्वाद कड़वा होता है। इसके पत्ते पतले और अजगरके पत्तोंसे मिलते जुलते रहते हैं। इसकी पतली २ डालियाँ पासके पेड़ोंपर चढ़कर ऊपर तक पहुँच जाती हैं और इधर उधर लटक जाती हैं। इसकी जड़ बहुत कठोर होता है। इस वनस्पतिमें फूल और फल कुछ नहीं आते, किन्हीं २ के मतसे इस पर हलके नीले रंगके फूल आते हैं। इसकी छोटी और बड़ी दो जातियां होती हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

यह दूसरे दर्जे में सर्द और खुश्क है। कब्ज़ियत और खुश्की पैदा करती है। इसके पत्तों को बारीक पीसकर बहे हुए ज़ख्मों पर लेप करनेसे ज़ख्म भर जाते हैं। वैसा ही बवासीर फोड़ा हो उस पर

इसके पत्तोंको सिरकेमें पीसकर लगानेसे वह सूख जाता है। शरीर किसी जगहसे कट जाय या फट जाय तो इसके पत्तोंको लगानेसे बहुत फायदा होता है। गर्मीकी ऐसी सूजन जिसमें बहुत जलन हो इसके पत्तोंके लेप से मिट जाती है। इसके पत्तोंके रसको नाकमे टपकानेसे और पेशानी प. लेप करनेसे नाक से बहता हुआ खून बन्द हो जाता है। मुंह से आता हुआ खून भी इसके पीनेसे रुक जाता है। इसकी जड, पत्ते और डालियों को पीसकर पीनेसे गर्मीकी पुरानी खाँसी मिट जाती है। आँतों, गुरदे और मसानोंके जख्मोंमें इसे शराबके साथ पीनेसे बहुत लाभ होता है। स्त्रियों के मासिकधर्म की अधिकतामें भी यह फायदा करती है। मेदा और जिगरकी सूजन व जलोंदरमे भी यह लाभदायक है।

मुजिर—इसको अधिक मात्रामें लेनेसे बात पैदा होता है और गलेमें नुकसान पहुँचता है।

दर्पनाशक—इसके दर्पको नष्ट करनेके लिये शक्कर, बादामका तेल और खमीरा बनफ्शा मुफीद है।

प्रतिनिधि—इसका प्रतिनिधि अंजुबार है।

मात्रा—इसकी मात्रा ३ माशा तक है। (ख० अ०)

जबर जद

नाम—

यूनानी—जबरजद।

वर्णन—

यह जमरुद की किस्मका एक कीमती पत्थर है। और उसीकी खानमें पैदा होता है। कहीं २ सोने की खदान में भी यह निकलता है। यह हरे और पीले रंगका होता है। बढ़िया वह माना जाता है जिसमें हरे रगकी धारियाँ हो, जो साफ हो और न टूट सके।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मत से यह तीसरे दर्जे में सर्द और खुश्क होता है। यह बहते हुए खून को रोकता है। रुके हुए पेशाब को खोलता है। पथरी को तोड़कर निकाल देता है। आखों की ज्योति को बढाता है। मिरगीमें लाभ पहुंचाता है। इसको पीसकर खाने से दिल को ताकत मिलती है। इसको पीनेसे जहर का असर दूर होता है। इसको अगूठीमें जड़वाकर पहिननेसे प्रेत बाधा, नजर का लगना, क्षय और प्रसव काल का कष्ट दूर होता है।

मुजिर— यह कामेन्द्रिय को नुकसान पहुंचाता है।

दर्पनाशक— इसका दर्पनाशक शहद है।

प्रतिनिधि— इसका प्रतिनिधि जमर्रुद है।

मात्रा— इसकी मात्रा ? माशे तक की है

जवरा

नाम—

हिन्दी, यूनानी—जवरा।

वर्णन—

यह एक रोइदगी है जो हर साल गर्मीके दिनोंमें पैदा होती है। यह जमीन से ३।४ इंच ऊंची उठती है। इसके पत्ते बालछड़ के पत्तों की तरह होते हैं। जड बाल की तरह बारीक होती है और रंगमें सफेद होती है। इसमें न फूल आते हैं और न फल आते हैं। यह घास तीन महीने से अधिक नहीं ठहरती। शहदमें रखनेसे ज्यादा दिन तक ठहर जाती है। इसमें शराब की सी गन्ध आती है। यह अफ्रिका के पहाडों की चोटियों पर और ऊंचे स्थानों पर पैदा होती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह दूसरे दर्जे में गरम और तर है, दिल को ताकत देती है, चिन्ता को मिटाती है, प्रसन्नता पैदा करती है, खून को साफ करती है, जख्मों को भरती है। इसकी जड़के चूर्ण को ताजा जख्मों पर छिड़कने से वे जल्दी भर जाते हैं, पीलिया के लिए भी यह मुफीद है। इसकी ७ माशे जड़ को शराब के साथ लेनेसे अगर हड्डीमें किसी तरह का फरक होगया हो तो वह निकल जाता है। (ख० अ०)

मुजिर— यह गरम मिजाज वालोंमें सिरदर्द पैदा करती है।

दर्पनाशक— इसका दर्पनाशक कडवे बादाम का मगज है।

प्रतिनिधि— इसके प्रतिनिधि केशर और कंतुरयून है।

मात्रा— इसकी मात्रा ७ माशेसे १४ माशे तक की है।

जबरा हींग

नाम—

हिन्दी-यूनानी—जबरा हींग।

वर्णन—

यह एक रोइदगीके बीज हैं। जो तिल की तरह होते हैं। कुछ लोग इनको पीली निसोतके बीज और कुछ लोग काली निसोतके बीज बतलाते हैं। खजाइनुल अदविया के मतानुसार इसका पौधा घास की तरह होता है जो हिन्दुस्तान में ऊँचे स्थानों पर पैदा होता है। इसके फूल सफेद और जड़ पतली होती है। इसके बीजों का स्वाद कड़वा होता है। इसके गुण धर्म खरबक की तरह होते हैं। इसलिए बहुत से लोग इसे खरबक भी कहते हैं।

गुण, दोषऔर प्रभाव—

यूनानी मतसे यह तीसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। यह एक जहरीली वस्तु है। इसको जख्मों पर रखने से जखम फट जाते हैं। इसको खानेसे दस्त और उलटियां होती हैं। इसको पौने दो माशे की मात्रामें देने से दस्त उलटी होकर फालिजके रोगीको लाभ होता है। साढ़ेतीन माशेकी मात्रामें में यह प्राण घातक होजाती है। इससे दस्त और उलटी होकर आदमी बेहोश होजाता है, गलेके अन्दर सूजन आकर सर्द पसीना शुरू होजाता हैं, शरीर की ताकत नष्ट होजाती है। इसके उपद्रवों को शान्त करनेके लिए दूध पिलाना चाहिये, एनेमा लगवाना चाहिये, पानी को गरम करके उसमें बिठाना चाहिये। तथा घी, जीरा, अनीसून, चिकनी वस्तुएं और ताजा दूध व शहद देना चाहिये। (ख० अ०)

जमसत

नाम—

यूनानी—जमसत।

वर्णन—

यह एक किस्म का कम कीमती जवाहिरात होता है। इसका रंग सफेद, लाल और नीला होता है। मगर उसमें लाल सबसे अच्छा होता है। इसको अरबीमें अलमास तुबरी और टर्कीमें जंगूम कहते हैं।

वर्णन—

यह वृक्ष हिमालयकी तलहटीमें ६००० फीटकी ऊंचाई तक होता है। इसके अतिरिक्त बुंदेलखंड, बिहार, मध्यप्रान्त, कोंकण, पश्चिमी घाट, दक्षिण और कर्नाटकमें भी यह पैदा होता है। यह एक मध्यम आकारका वृक्ष होता है। इसके पत्ते आमने सामने लगते हैं। ये अणीदार, लंबगोल, कटी किनारीके, दोनों बाजू चिकने तथा ६·३ से १५ सेंटिमिटर तक लंबे और २·५ से ६·३ सेंटिमीटर तक चौड़े होते हैं। इसके फूल पीले, छोटे और झूमकोंमें लगते हैं। इसके फल पीले, बेरकी तरह, तथा जड़की छाल मोटी, तूरी और कड़वी होती है। औषधि प्रयोगमें इसकी छाल और पत्ते काममें आते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

स्त्रियोंको गुल्म वायु और हिस्टीरियासे जो मूर्च्छा आ जाती है उस मूर्च्छाको दूर करनेके लिये इसके पत्ते और इसकी छाल बहुत उपयोगी है। इसके पत्तोंकी धूनी देनेसे व उनका धुआँ पिलानेसे अथवा उनको सुंघानेसे साधारण सिर दर्द भी दूर हो जाता है।

इसकी छालको पानीमें उबालकर, पीसकर सूजनके ऊपर उसका लेप करते हैं। जिससे सब प्रकार [illegible] है। इसकी जड़ सर्प विषकी एक उत्तम दवा है। इस कामके लिये देहाती लोग इसकी [illegible] है। इसकी छाल एक प्रकार का तीव्र विष है।

[illegible] लोग इसकी जड़का टुकड़ा जो कि उंगलीके समान मोटा होता है, पीसकर पानीमें [illegible] वमनकारक औषधिकी तरह पिलाते हैं जिससे वमन होकर [illegible] है। [illegible] अधिक मात्रामें होनेपर इस औषधिसे मृत्यु तक होजाती है। [illegible] विषमें भी लाभ होता है।

[illegible] के मतानुसार यह औषधि संकोचक और सर्प विषमें उपयोगी है।

[illegible] और महस्कर के मतानुसार यह औषधि सर्प विषमें निरुपयोगी है।

जमाल गोटा

नाम—

[illegible]

रासायनिक संगठन—इसके तेलमें क्रोटोन ग्लोलिक एसिड, टिगलिक एसिड, एक उड़नशील तेल और स्निग्ध तत्व पाये जाते हैं।

मात्रा—इसकी पीसी हुई जड़ १० से लेकर ३० ग्रेन तक की मात्रामें दी जाती है। इसका तेल एक बून्दकी मात्रामें दिया जाता है। इसके शुद्ध किये हुए बीजों का गूदा १ रत्तीसे २ रत्ती तक देना चाहिये।

बाह्यप्रयोग—जमाल गोटेका तेल चमड़े पर लगाने से जलन पैदा करता है। इससे चमडे पर फफोले पैदा होजाते हैं। यह जोड़ों के दर्द पर, जलन मिटाने के उपयोगमें लिया जाता है मगर आज कल इसको इस उपयोग में बहुत कम लेते हैं क्योंकि इससे जलन बहुत ज्यादा होती है और इससे जो घाव पड़ जाते हैं उनके चिन्ह हमेशाके लिये कायम रह जाते हैं। वे नहीं मिटते। इन घावोंसे मवाद वगैरहके बहुत घृणित दृश्य दिखलाई देने लगते हैं। (सन्याल और घोष)

अंतः प्रयोग—यह मुँहके द्वारा खानेसे पेट और अँतड़ियोंमें जलन पैदाकरता है। इसके तेल की १ बूंद लेनेसे कुछही समय बाद पेटमें दर्द और शूल शुरू होता है और घण्टे दो घण्टेके बाद खूब दस्तें लगना शुरू होती है और दस्त अधिक पतले २ होते जाते हैं। कभी २ ये दस्त खूनके भी होने लगते हैं। अधिक मात्रामें खुराक पहुँचनेपर उपरोक्त हालतके बाद रोगीकी मृत्युतक होसकती है। जमाल गोटेका तेल बहुत कम उपयोगमें लिया जाना चाहिये। संन्यास रोग,रक्तज मूर्च्छा रोग और पागल पनके रोगियोंके लिये यह गुणकारी है। इसकी १ बूँदको मक्खन या शक्करमें मिलाकर जबानपर रखकर तुरन्त निगल जाना चाहिये। जिससे जबानपर यह जलन पैदा न कर सके। कमजोर बीमारोंको, गर्भवती स्त्रियों को, बच्चों को, बवासीर के रोगियों को, पाक स्थली के रोगियों को और आन्त्रिक प्रदाह से पीड़ित रोगियों को यह नहीं देना चाहिये।

चरकके मतानुसार इसकी जडका छिलका टण्डे पानी या पुराने गुड़के साथ मिलाकर पीलियाके रोगीको दिया जाता है। अगर इसकी जड़के छिलकेको पुल्टिसके रूपमे विद्रधि पर बाँधा जायतो विद्रधि फूट जाती है।

जमाल गोटेको शुद्ध करनेकी विधि—जमाल गोटेका छिलका निकाल कर उसको बीचमें से चीर कर उसमें जो पत्तेकी तरह वस्तु रहती है उसको निकाल देना चाहिये और उसमें आठवाँ हिस्सा सुहागे का चूर्ण मिलाकर दूधके अन्दर डोलायन्त्रमें शुद्धकर लेना चाहिये। इसप्रकार तीन बार करने से जमाल गोटा शुद्ध हो जाता है। जिस दूधमें इसको शुद्ध करे उस दूध को ऐसी जगह फेंक देना चाहिये जहाँ कोई उसे पा नहीं सके।

यूनानी मत—यूनानी मतसे इसके मगज चौथे दर्जेमें गरम और खुश्क हैं। इसकी जड दूसरे दर्जे में गरम और खुश्क है। यह वस्तु बहुत तेज दस्तावर है। शरीरके अन्दर फैले हुए गर्मीके जहरको

यह निकाल देती है। उपदंश, कोढ़, और दूसरे चर्म रोगोंमे यह लाभ पहुँचाती है। गुर्दे और मसानेकी पथरीको यह तोड़ देती है। कफसे पैदा हुए जलंदर, कमरके दर्द और पीलिया रोगमें भी यह मुफीद है। हिन्दुस्तान की बहुत सी औरतें जब बच्चेको डिब्बा या मृगीकी बीमारी होजाती है तब बच्चे की हैसियत और जरूरत को देखकर जमालगोटे की मगजको अदरकके रस या मां के दूधमें घिसकर थोड़ा सा पिला देती हैं, जिससे ३-४ दस्त होकर बच्चा खुल जाता है।

इसका जुलाब दिमाग़, पेट, जोड़, इत्यादि शरीरके दूर २ हिस्सोंमें फैली हुई गदगीको खींचकर दस्तकी राह निकाल देता है। इसने गठिया और लकवेके समान भयंकर रोगोंमें भी फायदा होता हुआ देखा जाता है। यह मुंहके खराब जख्मोंको भर देता है। इसको पीसकर रोगन खेरीमें मिलाकर कानमें टपकानेसे कानके कीड़े मर जाते हैं इसको दांतोंपर रखनेसे दांतोंका दर्द भी जाता रहता है।

यह वस्तु गरम मौसिममें, गरम मुकामों पर और गरम प्रकृतिके लोगोंको कभी नहीं देना चाहिये। सर्द मौसिममें, सर्द मुकाम पर व सर्द प्रकृतिके रोगियों पर इसका इस्तेमाल करना चाहिये। देशकालके अनुसार भी इस औषधिके प्रभाव जुदा जुदा होते हैं। कई पहाड़ी लोग इसके बीजोंको चार २ पांच २ की गिनतीमें खाजाते हैं और उनको सिर्फ एक या दो दस्त होते हैं मगर देहली और लखनऊके तरफ रहनेवाले लोग इसका आधा दाना भी खा लें तो उनकी बुरी हालत होजाती है। राजपूतानाके रहनेवाले बहुतसे मजबूत लोग इसको १ से लेकर २ दाने तककी मात्रामें खा लेते हैं और उनको मामूली दस्तें होती हैं। इसलिये इस वस्तुका उपयोग करते समय देश, काल और प्रकृतिका पूरा २ ध्यान रखना चाहिये।

जमालगोटेके पेड़की जड़ बहुत तेज गरम होती है, यह कफ, पित्त और कफके उपद्रवोंको दूर करती है, जलोदर और सूजनकी बीमारीमें फायदेमन्द है, पेटके कीड़ोंको मारती है, चर्म रोग सम्बन्धी बीमारियोंमें लाभ पहुँचाती है। अफरा और गठियामें लाभदायक है। प्रथिवात (Gout) [illegible] और रक्त विकारमें भी यह उपयोगी है। जमालगोटेकी गिरीको पानीमें घिसकर नासूर पर लगानेसे नासूर एक दिनमें आराम हो जाता है ऐसा कहा जाता है मगर यह दवा बहुत जलन पैदा करती है। इस लिये लगाने वालेको अपनी सहन शक्तिका अन्दाज करके लगाना चाहिये। बिच्छूके [illegible] इसके मगजको पीसकर लगानेसे फायदा होता है। सांपके जहर पर जमालगोटेको पानीमें घिस कर आँखमें आँजनेसे [illegible] नहीं करता मगर इस प्रयोगसे आँखोंको बहुत नुकसान और असह्य वेदना होती है। इस लिये अगर [illegible] यह प्रयोग कर लिया जाय तो [illegible] का फोहा भिगोकर आँखोंपर बाँधना चाहिये। ([illegible]—म०)

जमालगोटेकी विष शान्तिके उपाय—

अगर जमालगोटेके इस्तेमाल करनेसे [illegible]

में गर्मी व जलन पैदा हो तथा दस्त और मरोडी अधिक आने लगे और वमन होते हों तो दूधमें घी मिलाकर पिलाना चाहिये और तुख्म खुरफा, इसबगोल, बबूलका गोंद, मालतुलसी के बीज इत्यादि किसी भी लुआबदार चीज को पानीमें गलाकर उसका लुआब तैयार करके उस लुआबमें बादामका तेल और रोगन गुल मिलाकर पिलादें। शीरा मगज तुख्म कद्दू या शीरा तुख्म खुरफा खिलावें। लुआबदार चीजोंका एनेमा लगावे। कभी ज्यादा दस्तें होने की हालतमें ठण्डे पानीके टबमें बिठानेसे भी लाभ होता है। नींबूके रसमें शक्कर मिलाकर पिलाने से भी इसके विषमें लाभ होता है।

उपयोग—

दमा—जमाल गोटेके मगज को चिराग की लौ में जलाकर उसका धुआँ नाकके जरिये पीनेसे दमा जाता रहता है। इसकी मगज को चिरागकी लौमें जलाकर उसका चौथा हिस्सा पानमें रखकर खिलाने से भी दमा मिटता है।

हिचकी—जमाल गोटेके मगज को हुक्के में भरकर पीनेसे बादी की हिचकी बन्द होती है।

सिरदर्द—जमाल गोटेकी मगजको पानीमें पीसकर कनपटियों पर लेप करने से सिर और आंख का दर्द मिटता है।

सर्प विष—सर्पके काटे हुएको शुद्ध किये हुए जमाल गोटेकी मगज खिलाने से तथा उसको घिसकर आँखमें आँजनेसे विषका असर बहुत कम होता है।

बनावटें—

जमालगोटेकी गोलियां—गुलबनफशा १७ माशा, गुलाबके फूल १७ माशा, खुरफेके बीज साफ किये हुए १७ माशा, कद्दूके बीजोंकी मगज १० माशा, ककड़ी के बीजोंकी मगज १० माशा, मग़ज बेदाना १० माशा, गुलनीलोफर १० माशा, कशनीज साफ किया हुआ ७ माशा, मस्तगी ७ माशा, वंशलोचन ७ माशा, कतीरा ७ माशा, मगज जमालगोटे का शुद्ध किया हुआ ३ तोला, इन सब चीजोंको पीसकर इसबगोलके लुआबमें मिलाकर चनेके बराबर गोलियां बनालें।

ये गोलियां १ माशेसे दो माशेतककी मात्रामें गुलाबके शरबतके साथ देनेसे अच्छा जुलाब लग जाता है। इन गोलियोंसे जमालगोटेसे होने वाले सब फायदे तो मिल जाते हैं मगर उसकी उग्रता और उसके नुकसानसे रोगी बच जाता है। क्योंकि इसमें जमालगोटेके दर्पको नाश करनेवाली बहुत सी औषधियां मिली हुई रहती हैं।

जम्भोरी

जम्भीरी नीम्बूकी एक जाति है इसलिए इसका पूरा परिचय अगले भागमें नीम्बूके वर्णनके साथमें दिया जावेगा।

जमीकन्द (सूरणकन्द)

नाम—

संस्कृत—अर्शोघ्न, बहुकन्द, सूरणकन्द, कन्दुला, स्थूलकन्दक, कन्दी, तीव्रकण्ठ, वातारि, ओला, इत्यादि। हिन्दी—सूरणकन्द, जमीकन्द, कन्द। बंगाल—ओल। मराठी—गोडासूरण, खाजेरासूरण। गुजराती—सूरण, बम्बई—सूरण। कच्छ—सूरण। कोंकण—सुमा, सूरण। तेलगू—मचीकन्दा, देलकन्दा, कन्दगोदा। तामील—करुनइ कलग। फारसी—जमीकन्द, ओल। लेटिन—Amorphophallus Campaulatus (एमरोफोफेलस कम्पेन्यूलेटस)।

वर्णन—

जमीकन्द या सूरण एक मशहूर वनस्पति है जो हिन्दुस्तानके सभी भागोंमें तरकारी बनाने और औषधि प्रयोगमें काममें आती है। इसकी दो जातियाँ होतीं हैं। एक जंगली और दूसरी लगाई हुई। इसका कन्द चपटा और लम्बगोल होता है। यह २० से लगाकर २५ सेंटिमीटरके आकारका होता है। इसका रंग गहरा बादामी होता है। इसके पत्ते फूलोंके बादमें लगते हैं। ये ३० से लगाकर ६० सेंटिमीटर तक चौड़े होते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे जमीकन्द रूखा, कसैला तीक्ष्ण, और खुजलीको पैदा करनेवाला होता है। यह रुचि वर्धक और क्षुधावर्धक होता है, कफको नष्ट करता है, बवासीरमें बहुत लाभ पहुँचाता है, प्लीहा और गुल्म रोगों को नष्ट करता है, वायु नलियों के प्रदाह, वमन, पेटकी पीड़ा, रक्त रोग और श्लीपद में यह लाभदायक है।

इसके बीज जलन पैदा करते हैं। सर्पदंशमें सूजन और उसके दर्दको मिटानेके लिये इसके कन्द और इसके बीजोंका लेप लाभदायक होता है। इसके कन्दका मुरब्बा या आचार पेटका आराम उत्पन्न करनेवाला और शान्तिदायक माना जाता है। इसके कन्दमें कुछ कसैला और जहरीला रस रहता है जो गर्मीके द्वारा इससे अलग किया जा सकता है।

इसकी जड़ चक्षुरोगमें उपयोगमे ली जाती है।

इसे फोडों पर भी लगानेके काममें लेते हैं। ऋतुश्राव नियामक वस्तुकी तौर पर भी यह काममे लिया जाता है।

छोटा नागपुरकी मुण्डा जातिके लोग इसके फलको पीसकर तीव्र संधि वात या जोड़ों की सूजन पर लेप करने के काममें लेते हैं।

सूरण की तरकारीसे यकृत की क्रिया सुधरती हैं और दस्त साफ होता है। इन दो कारणों से बवासीरके अन्दरसे बहने वाला खून बन्द हो जाता है। इसके प्रयोगसे गुदाके अन्दर रहने वाली रक्त वाहिनियों का सकोचन होता है। इसीसे खूनी बवासीरके अन्दर यह औषधि बहुत हितकारी होती है, और इसी कारण संस्कृतमें रक्खा हुआ इसका नाम अर्शोघ्न सार्थक होता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वस्तु अग्निवर्धक, पौष्टिक, शक्तिदायक और पेटका आफरा उतारने वाली है। बवासीर में भी यह बहुत लाभ पहुँचाती है।

उपयोग—

गठिया—सूरणकंदका गूदा और उसके बीजों को पीसकर लेप करने से गठिया में लाभ होता है।

खूनी बवासीर—सूरण कन्दको इमलीके पानी और धानके तुसोंके साथ उबालकर, धोकर शाग बनाकर खानेसे खूनी बवासीर मिटता है।

(२)—सूरण कंदपर कपड मिट्टी करके उसे आगमें भूनकर उसकी कपड मिट्टी हटाकर उसमें नमक और तेल मिलाकर खाने से बवासीर मिटता है।

(३)—इसके टुकडोंको छायामें सुखाकर उनका चूर्ण बनाकर १० माशेकी मात्रामें प्रातः काल लेनेसे बवासीरमें लाभ होता है।

बिच्छूका विष—सूरण कंदका पुल्टिस बाँधनेसे बिच्छूका और दूसरे जहरीले कीड़ों का विष उतरता है।

बनावटें—

बृहत् सूरण मोदक—सूखे जमीकंदका चूर्ण १६ तोले, चित्रककी जडकी छाल ८तोले, सोंठ ४तोले, काली मिर्च २ तोले, त्रिफला १२ तोले, पीपलामूल ४ तोला, तालीसपत्र ४ तोला, शुद्ध भिलावा ४ तोला बायबिडंग ४ तोला, मुलेठी ८ तोला, सफेद मूसली ४ तोला, विधायरेके बीज १६ तोले, दालचीनी २ तोले, इलायची २तोले। इन सब चीजोंको कूटपीस छानकर चूर्ण बनालेना चाहिये। जितना चूर्णका वजन

हो उतने दूना पुराना गुड़ मिलाकर आधी २ छटांकके लड्डु बना लेना चाहिये। प्रति दिन सवेरे शाम अपनी शक्तिके मुआफिक इन लड्डुओंका सेवन करनेसे और पथ्यमें हलका भोजन करनेसे बिना ऑपरेशन और क्षारकर्मके ही बवासीर जड़से नष्ट हो जाता है। इसके अतिरिक्त इस पाकका सेवन करने वाले मनुष्यकी जठराग्नि, पाचन शक्ति और मैथुन शक्ति भी अत्यंत प्रबल हो जाती है। इसी प्रकार श्लीपद (हाथी पाँव) सूजन, कफ वातकी संग्रहणी, हिचकी, श्वास, खांसी, राजयक्ष्मा और प्रमेहमें भी इससे लाभ पहुँचता है। बवासीरकी यह एक सुप्रसिद्ध दवा है।

जयंती

नाम—

संस्कृत—जया जयन्ती नदेयी वैजन्ती। हिन्दी—जयन्ती, जूझन, झीजन, रामिन, जेत बंगाल—जयन्ती, बम्बई—जेत, जजन, सेवरी, शेवारी। पोरबंदर—जयन्ति। तामील—करुनजैवी, नगुरई, सेंवई, करुशेवै, चंपेइ। उर्दू—जैत। तेलगू—जतुगु, नीमिन्ता। उरिया—जोयोत्री। मुंडारि—लील्दारू। फ़ारसी—सीसीबन, लेटिन—Sesbania Egyptiana (सेसबेनिया इजिप्सियाना)।

वर्णन—

इस वनस्पतिका मूल उत्पत्ति स्थान अमेरिका है। यह प्रायः सभी गरम देशोंमें बोई जाती है। यह एक छोटा नरम लकड़ीका झाड होता है। यह बहुत जल्दी बढ़ता है। इसके पत्ते ७.५ से १५ सेंटिमीटर तक लम्बे होते हैं। इसके फूल १.२ से १.५ सेंटिमीटर तक लंबे और पीले होते हैं। इसकी फली या पापटा १५ से २३ सेंटिमीटर तक लंबा होता है। इसमें २० से लगाकर ३० तक बीज रहते हैं। इसकी दो जातियां होती है, एक लाल फूलवाली, दूसरी पीले फूल वाली।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतानुसार इसकी जड़ गरम, कड़वी, पेटका अफरा उतारने वाली, धातु परिवर्तक, और कृमिनाशक होती है। कफजनित ग्रंथियोंमें उदरमें, गलेमें, मूत्रेन्द्रियमें, यकृत रोगमें और कलेजेके रोगोंमें यह बहुत उपयोगी है। कफ, पित्त और मदात्ययको यह दूर करती है। बिच्छूके काटनेपर यह एक उत्तम दवा है। इसकी छाल संकोचक होती है। प्लीहा और तिल्लीकी वृद्धिमें और दस्तोंमें इसके पत्तोंके सेवनसे बड़ा लाभ होता है। मलेरिया बीमारीमें भी इसके बीज लाभदायक हैं। चर्म रोगोंमें इसकी छालका रस पिलानेसे और इसके बीजोंका लेप करनेसे लाभ होता है।

यूनानी मत—यूनानी मतसे इसके बीज विरेचक, कृमिनाशक और शान्तिदायक होते हैं। ये रजोवृद्ध

तथा सभी प्रकारके दर्द और प्रदाह मे फायदा पहुंचाते हैं। इसके बीज ऋतुश्रावनियामक, उत्तेजक और सकोचक होते हैं। ये पुराने व्रण और फोड़ोंको भर देते हैं। तिल्लीकी बीमारी, अतिसार और अत्यधिक रजः श्रावमे ये लाभदायक हैं।

पंजाबमें इसके बीजोंको आटेके साथ मिलाकर खुजली के ऊपर लेप करते हैं। ढाकामे 'इसके ताजा पत्तोंका रस कृमिनाशक वस्तुकी तौरपर उपयोगमें लिया जाता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार इसके बीज और इसका छिलका अतिसारमें लाभदायक है। ये अत्यधिक रजश्राव और चर्मरोगमें उपयोगमे लिये जाते हैं। इसके पत्ते सन्धिवातमें उपयोगी है।

जरेशक

इस औषधिका विशेष वर्णन आगेके भागमें दारूहलदीके प्रकरणमें देखिये। दारूहल्दीके झाडके फल को ही जरेशक कहते हैं।

जरनब

नाम—

यूनानी—जरनब।

वर्णन—

इस वनस्पतिके सम्बन्धमें यूनानी ग्रन्थकारोंके अन्दर बड़ा मतभेद है। कोई २ इसे ब्राह्मी और मण्डूकपर्णीका दूसरा नाम बतलाते हैं। किसी २ का मत है कि यह एक जातिका वृक्ष होता है। किसी का मत है कि जरनब का पेड १ गजसे छोटा होता है। इसका स्वाद तेज होता है। इसकी डालियाँ बारीक होती हैं और इसमें नींबू की सी खुशबू आती है।

खजाइनुल अदवियाके लेखक लिखते हैं कि मैंने सूखी हुई जरनब को देखा तो वह मूंगकी पत्तियोंके समान दिखाई दी। इसकी शाखाएं गोल, बारीक और सींक की तरह होती हैं और जगह २ छोटी गठानों पर ऐसे निशान होते हैं जैसे पत्तोंकी जड़ें टूट जानेके बाद रहते हैं। इसमें बिजोरे नीबूकी तरह गन्ध आती है और इसका स्वाद दालचीनीसे मिलता जुलता रहता है। यह फारस के पहाड़ोंमें विशेष पैदा होती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानीमतसे यह दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। यह वनस्पति हृदयके लिये एक पौष्टिक वस्तु है। मेदा, जिगर व दिमाग को भी यह ताकत देती है, भूख बढ़ाती है, आवाज को साफ करती है, वायु को बिखेरती है, वायगोला और बदहजमी को दूर करती है, खाँसी, दमा और हिचकीमें मुफीद है, पेशावको साफ लाती है, कामेंद्रियकी शक्तिको बढ़ाती है, इस औषधिमें विषनाशक गुण भी है।

मुजिर—यह औषधि गरम प्रकृति वाले लोगों के लिये हानिकारक है।

दर्पनाशक—इसके दर्पको नाश करने के लिये धनियां और चन्दन मुफीद है।

प्रतिनिधि—इसके प्रतिनिधि कबाबचीनी और नरकचूर है

मात्रा—इसकी मात्रा १ माशे तक है। (ख० अ०)

जरर

नाम—

यूनानी—जरर।

वर्णन—

यह एक गेहदगी (क्षुप) होती है। इसका पौधा १ बालिश्त तक का घास की तरह होता है। इसका फूल पीला और गोल होता है। इस वनस्पतिमें थोड़े मुलायम काँटे भी होते हैं। इसके पत्ते सफेद और छोटे और जड़ १ फुट लम्बी होती है। रंगरेज लोग इसके फूलोंको कपड़े पर पीला रंग चढ़ानेके काममें लेते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति सर्द और खुश्क है. इस [illegible] है [illegible] निकालती है. दस्तको [illegible] है, पेशाब और [illegible] है। [illegible] निशानको मिटाती है। [illegible] के साथ इसका काढ़ा बनाके पीनेसे [illegible] में लाभ पहुंचाता है। इसके काढ़ेसे [illegible] है। इसको [illegible], दाद और [illegible] पर लगानेसे [illegible] है। [illegible] है।

दर्पनाशक—[illegible]

[illegible]

जरान

नाम—

यूनानी—जरीन।

वर्णन—

यह मझले कदका एक वृक्ष होता है। इसके पत्ते जैतूनके पत्तोंकी तरह और फूल सूरज फूलकी तरह होता है यह ईरानमें पैदा होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानीमतसे यह गरम और खुश्क होता है। इसके पंचांगका रस निकालकर पीनेसे मृगमी वातमें लाभ होता है। मासिक धर्म की रुकावट और पेशाब को भी यह साफ करता है जहरीले जानवरों के जहर पर भी यह मुफीद है।

जरविंद-इ-तवील

नाम—

यूनानी—जरविंद—इ—तवील, जरविंद दराज। लेटिन–Aristolochia Longa (एरिस्टोलोकिया लोंगा)।

वर्णन—

यह एक पेडकी जड़ है। इसकी दो जातियाँ होती हैं। एक नीली और दूसरी सुनहरी। पहली जाति की जड ऊंगलीके बराबर लम्बी और उंगलीसे कुछ पतली होती है। इसका रंग सुर्खी माइल नीला और स्वाद कड़ुआ होता है। इसके पत्ते इश्कपेंचाके पत्तों की तरह होते हैं। मगर उनसे कुछ चौडे और लम्बे होते हैं। इसकी डालियां एक २ बालिश्तके बराबर और पतली होती हैं। इसका फूल नीले रगका और दुर्गन्ध पूर्ण होता है।

इसकी दूसरी जातिका रंग लाल और सुनहरा होता है। यह पहली जातिसे बड़ी होती है। इसकी डालियाँ भी पतली होती हैं। इसके पत्तों की गोलाई पहली जातिके पत्तों से अधिक होती है। इसके फूल सदाबके फूलकी तरह होते हैं। इसकी जड़ मोटी और केसरिया रग की होती है। उसमें सुगन्ध आती है।

गुण दोष और प्रभाव—

यह तीसरे दर्जेमें गरम और दूसरे दर्जेमें खुश्क होती है। इसकी पहिली जाति विषैले जानवरोंके जहर को दूर करती है, सर्दी की सूजनको बिखेर देती है, कफको छांटती है, पथरीको तोड़कर निकाल देती है, गालोंके रंगको साफ करती है, वायुको नष्ट करती है, पेशाब और मासिक धर्मको जारी करती है, पेटके कीडोंको निकाल देती है, फालिज और कंपवातमें मुफीद है, मृगीमें फायदा करती है। इसकी बत्ती बनाकर योनिमें रखने से मासिक धर्म साफ होजाता है। इसको ७ माशेकी खुराकमें पीसकर शराबके साथ लेनेसे और बिच्छूके डंक पर इसका लेप करने से बिच्छू का जहर उतर जाता है। इसका लेप करनेसे बवासीर की सूजन उतर जाती है, इसके काढ़े से बालों को धोने से जुएं मर जाती हैं, इसे पीसकर दाँतों पर मलनेसे दाँत साफ हो जाते हैं और मसूडों का मवाद निकल जाता है। इसको ४ माशेकी मात्रामें शराबके साथ लेनेसे मृगी और धनुर्वातमें बहुत लाभ होता है। शिकंजबीनके साथ इसको लेनेसे तिल्लीकी सूजन मिटती है और काली मिरचोंके साथ इसको लेनेसे प्रसवके बाद गर्भाशयमें रही हुई खराबी दूर हो जाती है।

इसकी दूसरी जातिके गुणदोष भी इससे मिलते हुए हैं मगर इसमें कुछ प्रभावशाली हैं।

—

जरविंद-ई-गिर्द

नाम—

यूनानी—जरविंद-ई गिर्द, । जरविंद मुदहर्ज लेटिन—Aristolochia Rotunda (एरि-स्टोलोकिया रोटुंडा)।

वर्णन—

यह एक पौधा होता है जिसकी डालियां जमीनसे ही फूटती हैं। इन [illegible] नहीं होता। इसकी डालियाँ १ गज या इससे कुछ अधिक लम्बी होती हैं। इसके पत्ते [illegible] की तरह मगर उनसे कुछ छोटे और नरम होते हैं। ये [illegible] और स्वादमें कुछ तेज होते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

यह दूसरे दर्जेमें गरम और रूक्ष है। [illegible] को दूर [illegible] करती है, [illegible] इसमें [illegible] है। [illegible]

हिचकी, इत्यादि रोग जोकि पित्त और कफसे पैदा हुए हों उनमें यह फायदे मंद है। दमा, पुरानी खांसी, सीनेका दर्द, गठिया अधरंगी वात, और ग्रंथिवातमें इसको शहदके साथ देनेसे लाभ पहुँचता है। शरीरमें कांटा लग गया हो तो इसका लेप करनेसे बाहर आ जाता है। टूटी हुई हड्डीपर भी इसका लेप करनेसे लाभ होता है। इसको खानेसे तोतलापन मिट जाता है, पुराने और बदबूदार जख्मोंपर इसे लगानेसे जखम साफ हो जाते हैं और बदबू मिट जाती है। इसके खाने और लगानेसे कुष्ट और सफेद दागों में भी फायदा होता है। दिमाग की खराबी और गरदन की अकड़न को दूर करनेके लिये इसको चाटते हैं। इसके काढ़े को कानमें टपकाने से बहरापन मिट जाता है और कान की फुन्सियां साफ होजाती हैं। इसको पीसकर गायके घीमें मिलाकर साढ़े तीन माशे की टिकिया बनाकर उसमें से १ टिकया हुक्केमें रखकर पीनेसे दमे का दौरा फौरन आराम होजाता है। तिल्ली, जिगर, गर्भाशय की खराबी, और और बिच्छूके विष पर इसको जरविंद ई-तवील की तरह ही दिया जाता है।

दर्पनाशक— इसका दर्पनाशक शहद, जरेशक और बनफ्शा का तेल है।

प्रतिनिधि— इसका प्रतिनिधि जरविन्द-ई-तवील और नरकचूर है।

मात्रा—इसकी ४ माशे से ७ माशे तक की है।

जरमीलक

नाम—

यूनानी—जरमीलक।

वर्णन—

यह एक रोइदगी है। इसके पत्ते जबानकी शकलके होते हैं। इसका रंग हरा और नीला होता है। इसकी डालियाँ १ गजके करीब लम्बी होती है। इसका फूल नीले रंगका, नीलोफर के फूलसे बहुत छोटा होता है। इसकी जड १ बालिश्त लम्बी उंगली के बराबर मोटी, कुछ तल्ख, स्वादमें मीठी तथा ऊपरसे काली और भीतर से सफेद होती है। औषधि प्रयोग में इसकी जड़ ही काम आती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

इसकी जडको पीसकर दाँतों पर मलने से दाँतोंकी बदबू चली जाती है और दांतों की जड़ें

मजबूत होती है। हड्डीके टूट जाने पर भी इसके लेपसे फायदा होता है। इसको लगाने से हर किसमका जख्म भर जाता है। इसके खानेसे आँतों के जख्म और आँतो की सूजनमें लाभ पहुँचता है।

(ख० प्र०)

जरायुप्रिया

नाम—

संस्कृत—जरायुप्रिया, मक्षिकविषा, पालिता। लेटिन Erigeron Canadensis (एरीजिरान केनेडेंसिस)

वर्णन—

यह एक बहुशाखी छोटा झाड होता है। इसके पत्ते २·५ से ७·५ सेंटिमीटर तक लम्बे और दंतदार होते हैं। फूल पीले, फूलोंकी डण्डी गुलाबी और उनकी खुशबू पोदीनेकी तरह रहती है। इसका स्वाद तुरा और कुछ कड़वा होता है। यह वनस्पति पश्चिमी हिमालय, पंजाबके मैदान, [illegible] के मैदान और सभी गरम देशोंमें पैदा होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतानुसार यह वनस्पति रक्तस्राव रोधक, मूत्रल और [illegible] होती है। इसकी क्रिया गर्भाशयके ऊपर विशेषरूपसे होती है।

यह औषधि आमातिसारके ऊपर उपयोगी है। [illegible] इससे बहुत लाभ होता है। गर्भाशय से बहनेवाला खून भी इसके प्रयोगसे बंद हो जाता है। रक्त प्रदर और बस्तिशोथमें भी यह लाभदायक है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति [illegible], [illegible] और [illegible] है। इसका तेल [illegible] लाभदायक है। [illegible] भी यह लाभ पहुँचाता है। इसमें [illegible] पाया जाता है।

जरूल

नाम:—

हिन्दी— जरूल । बंगाल—जरूल । आसाम—अजदार । बम्बई—तामण, बंदरा । कोंकण—तामण । मराठी—बुन्द्रा, मोटा बुन्द्रा, तामण । मुन्डारी—गरमेकरी, हुहरी । संथाल—सेकरा । तेलगू—वरगोचू । तामील—पोदले मुफी । लेटिन— Lagerstroemia Flosreginae (लेगस्ट्रोमिया फ्लोसरेजिनी) ।

वर्णन—

यह एक बड़ी जाति का वृक्ष है । इसकी डालियां बहुत फैलाने वाली होती हैं । इसकी छाल फिसलनी और फीके रंग की रहती हैं । इसके पत्ते १० से लेकर २० सेन्टीमीटर तक लम्बे और ३.८ से ७.५ सेन्टीमीटर तक चौड़े रहते हैं । हर एक पत्तेमें १० से लेकर १३ तक नसें रहती हैं । इसके फूल ५ से लगाकर ७.४ सें० मीटर तक लंबे होते हैं । इसका फल लंबगोल लाल रंगका और बीज फीके बादामी रंगके रहते हैं ।

गुण दोष और प्रभाव—

इसकी जड़ उत्तेजक और बुखार को दूर करनेवाली मानी जाती है यह एक संकोचक वस्तु की तरह काममें ली जाती है । इसकी छाल और इसके पत्ते विरेचक होते हैं । इसके बीज नींद लाने वाले होते हैं ।

अंडमान में इसके फल को मुह के छालों पर लगानेके काममें लेते हैं ।

कर्नल चोपरा के मतानुसार इसके बीज, पत्ते और छाल नींद लाने वाले होते हैं ।

यूनानीमतसे यह पहले दर्जेमें खुश्क और दूसरे दर्जेमें सर्द है । यह पित्तके विकारको शान्त करता है । खूनकी गर्मी को मिटाता है । शरीर को मोटा करता है । भूख पैदा करता है । पीला जरुर कफ की बीमारियां पैदा करता है और देरसे हजम होता है । मगर लाल रंग का जरुर मेदा और जिगर को ताकत देता है । कब्जियत पैदा करता है । बूंद २ पेशाब आने के मर्ज को दूर करता है और कामेन्द्रियको शक्ति देता है । इसका दर्पनाशक सोफ और गुलकन्द है । इसका प्रतिनिधि खट्टी सेव है । इसके रसकी मात्रा ७ तोले तक और चूर्ण की मात्रा १ माशे से ४ माशे तक है ।

जगबूल

वर्णन—

यह एक बूटी है। इसका जितना भाग जमीनके ऊपर रहता है उसका रंग हरा और स्वाद खट्टा होता है तथा जितना भाग जमीनमें होता है उसका रंग सफेद और स्वाद मीठा होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

इसके पत्ते मनुष्यकी काम शक्तिको नष्ट करते हैं। इसकी जड़ काम शक्तिको बढ़ाती हैं। यह पित्तकी तेजीको शान्त करती है।

जफरा

नाम—

यूनानी—जफरा।

वर्णन—

यह एक प्रकारका घास है जो जमीनपर बिछा हुआ रहता है। इसकी डालियें नरम और पतली पत्ते गोल, ऊपरसे हरे तथा नीचेसे लाल होते हैं। इसका छोटा पत्ता नाखूनके बराबर और बड़ा पत्ता उससे कुछ बड़ा होता है। फूल पीला और जड़ उंगलीके बराबर मोटी होती है।

गुणदोष और प्रभाव.—

यूनानी मत—यूनानीमतसे यह चौथे दर्जेमें गरम और रूक्ष है। यह एक बहुत जहरीली वनस्पति है। इसका लेप जख्मों के बदगोश्तको काट देता है। व्रण, मस्से और नासूरपर इसको लगानेसे फायदा होता है। इसे खानेके काममें कभी नहीं लेना चाहिये।

जरी

वर्णन—

यह एक बूटी है। [illegible] समुद्रके किनारेपर पैदा होती है। इसके पत्ते [illegible], [illegible]

सरोवरका जल—सरोवरका जल बलकारक, तृषानाशक, मधुर, हलका, रोचक, कसैला, रूखा और मल तथा मूत्रको बांधनेवाला है।

आयुर्वेद और जल चिकित्सा—

ऊपर हम आयुर्वेदकी दृष्टिसे सब प्रकारके जलोंके भेद और उनके साधारण गुण दोषोंका वर्णन कर चुके हैं। मगर इनके सिवाय जलके द्वारा अनेक रोगोंको दूर करनेकी पद्धति बहुत प्राचीनकालसे इसदेशमें चली आ रही है और प्राचीन शास्त्रोंमें इसका विशद विवेचन किया गया है। उनमेंसे १।२ पद्धतियोंका नीचे वर्णन किया जाता है।

आठ कटोरी जलका प्रयोग—

आजकल के पाश्चात्य रसायन शास्त्रियों का ख्याल है कि प्राणी मात्र का जीवन एक प्रकार के रासायनिक फेरफार का ही परिणाम है। इस रासायनिक फेरफारके लिए शरीरमें एक निश्चित परिमाणमें गर्मीका होना आवश्यक है। शरीरके अन्दर पाई जानेवाली यह कुदरती गर्मी जब कम हो जाती है तब कई प्रकारकी व्याधियां खड़ी होती हैं। यह गर्मी जब बिलकुल नष्ट होजाती है तब जीवधारी की मृत्यु होजाती है। इसलिए जीवन को सुरक्षित रखने के लिए शरीरमें इस गर्मी को संचित रखने वाले पदार्थों की आवश्यकता होती रहती है। ऐसे पदार्थों में जल सबसे उत्तम पदार्थ है क्योंकि इससे किसी भी प्रकार का नुकसान न होते हुए शरीर को जितनी गर्मी की आवश्यकता होती है उतनी ही गर्मी उसे दी जा सकती है।

हमारे प्राचीन आचार्य्यों ने भी इस विज्ञान को बहुत प्राचीनकाल से समझाहुआ था और इसके लिए उन्होंने पानी का एक बहुत सादा उपचार निर्माण किया था। यह उपचार आठ कटोरी पानी के प्रयोग के नाम से प्रसिद्ध है। जब मनुष्य को भयकर रीतिसे ज्वर चढ रहा हो, वायु बहुत बढ गया हो, मूर्छा आगई हो, दस्त-उल्टी वगैरह होते हों, शरीर ठण्डा पड गया हो अथवा इसीप्रकारके जिन्दगी को जोखम में डालने वाले दूसरे लक्षण दिखाई देते हों और केशर कस्तूरी, स्प्रिट एमोनिया एरोमेटिक, हेमगर्भ, हिरण्यगर्भ, चन्द्रोदय. इत्यादि बहुमूल्य औषधियां जवाब दे चुकी हों ऐसी हालत में यह आठ कटोरी जलका प्रयोग काम कर देता है।

इस आठ कटोरी जल को बनाने की रीति इस प्रकार है— एक मिट्टी के बरतन में आठ कटोरी भर पानी डालकर उसमें सूंठ, मिरच पीपर, तज, लौंग बायबिडंग प्रत्येक डेढ़२ माशा और तुलसी तथा बेलके पत्ते दो २ तोला डालकर आँचपर चढाना चाहिये। जब जलते २ एक कटोरी पानी शेष रहजाय तब उसको उतारकर छानकर रोगीको पिलादेना चाहिये। इस प्रकार दिनमें ३ बार पानी तैयार करके रोगीको पिलानेसे चाहे जैसा ज्वर रोगीको चढा हो तो उतर जाता है। अगर ज्वरका वेग बहुत ज्यादा हो और आठ कटोरी पानीके प्रयोगसे शान्ति न पडती हो तो आठ कटोरीकी जगह उस मिट्टीके

बर्तनमें १६, ३२ अथवा ६४ कटोरी पानी डालकर उबालते २ जब एक कटोरी पानी रह जाय तब उसको छानकर पिलाना चाहिये । यह और भी अधिक गुणकारी सिद्ध होता है । कभी २ बिलकुल असाध्यावस्था में प्राप्त हुए रोगीके शरीरमें भी इससे ऐसी गर्मी पैदा हो जाती है कि वह एक बार तो मरण शय्यासे उठकर बात करने में समर्थ हो जाता है ।

उषा जलपान—

शरीरमें पैदा हुई अनेक व्याधियोंको नष्ट करने के लिये जिस प्रकार गरम जलका प्रयोग उपयोगी होता है उसी प्रकार शरीरमें बढ़े हुए दोषों को समानता पर लानेके लिये और प्रकृतिको स्वस्थ बनानेके लिये उषा काल या बड़े सबेरे ठंडा जल पीनेसे बड़ा लाभ होता है । वह जल कैसे और कितना पिया जाय इस विषयका विवेचन करते हुए निघण्टुरत्नाकरमें लिखा है कि प्रातः काल रवि मंडलके उदयके पहिले अरुणोदयके समय अर्थात् डेढ़ घंटा रात शेष रहने पर पेशाब करनेके पहिले बिछोने पर ही बैठे हुए जो मनुष्य रात्रिको तांबेके बर्तनमें भरकर रखा हुआ आठ अंजली जल पीता है उस मनुष्यके बढ़े हुए वात, पित्त और कफ तीनों दोषोंकी शान्ति हो जाती है और उसमें अनेकों स्त्रियों के साथ रमण करनेके योग्य बल आ जाता है ।

जल और आधुनिक चिकित्सा विज्ञान –

आधुनिक चिकित्सा शास्त्रमें भी सिर्फ जलके द्वारा मनुष्य शरीर में होने वाली तमाम व्याधियोंकी चिकित्सा करनेकी पद्धतिने बहुत महत्त्व धारण किया है । इस पद्धतिका मूल जन्मदाता विन्सेन्ज प्रिस्निज (Vincenz Priesnitz) नामक एक अशिक्षित किसान था । उसने सन १८२६ में ग्रेफेनबर्ग में एक चिकित्सागृह की स्थापना की । वह एक बड़ा सूक्ष्मदर्शी और अन्तर दृष्टि सम्पन्न व्यक्ति था । वह पहले स्वयं अस्वस्थ रहा करता था और अपने को पुनः स्वस्थ बनानेके लिये प्रयत्न शील हो रहा था । इसी सिलसिलेमें उसने ठंडे जलमें रोगोंको दूर करनेकी अद्भुत शक्तिका अनुसन्धान किया । इसका उसने अपने सेनेटोरियमके रोगियों पर भीतरी और बाहरी दोनों तरहका प्रयोग किया । कुछही समयमें उसका स्वास्थ्यगृह रोगियों और पीड़ितों के लिये तीर्थस्थान बनगया । उपचार के लिये दूर २ से झुण्डके झुण्ड लोग वहाँ पहुँचने लगे । उसके पश्चात् जे० रनाथ नामक चिकित्सकने जल चिकित्सा पद्धति को अपनाकर शुरूमें प्रबल विरोध और अन्तमें महान् कीर्तिको सम्पादित किया । सन् १८४६ में विंटनबर्गके ड्यूकका पैर बुरी तरहसे जख्मी होगया और उनकी हालत नाजुक होगई । तत्काल तीन डॉक्टर उसको अच्छा नहीं कर सके और उन्होंने उसका पैर काटडालनेकी व्यवस्था देदी । तब ड्यूक रनाथकी संस्थामें पहुँचे और वहाँसे कुछ ही महिनोंमें भगवान् के अपना चंगा पैर लेकर घर लौटे । इनके पश्चात् फादर नीप, अर्नाल्ड रिक्ली, डाक्टर हेनरिच् लेमन, इत्यादि लोगोंने इस पद्धतिको अपना कर इसका विकास किया । आज यह निस्सन्देह कहा जा सकता है कि जल चिकित्साके

सबसे बडे आचार्य जर्मनीमें डाक्टर लुइ कुने हुए। सिर्फ २० सालकी अवस्थामें ही उनका स्वास्थ्य बिलकुल नष्ट होगया और उन्होंने डाक्टरोंकी चिकित्सासे ऊबकर प्राकृतिक चिकित्साकी शरणली। जिससे उनका स्वास्थ्य शीघ्रही सुधर गया और वे इस पद्धतिके भक्त बनगये। उन्होंने कई वर्ष तक इस पद्धतिका अध्ययन करके सन १८८३ में लिपजिगमें एक स्वास्थ्य गृहकी स्थापना की और वहाँ से हजारों असाध्य रोगियोंको उन्होंने सिर्फ जल और धूपकी चिकित्साके द्वारा स्वास्थ्य प्रदान किया। उन्होंने रोगोंको नष्ट करनेके लिये कुछ स्नानों की व्यवस्थाकी। इन स्नानोंका विशेष वर्णन जल चिकित्साके किसी स्वतन्त्र ग्रन्थमें देखना चाहिये। यहाँपर उनकी अत्यन्त प्रिय ३।४ स्नानोंका संक्षिप्त वर्णन किया जाता है।

वाष्पस्नान—(Steam Bath) मिट्टी अथवा ताम्बे के ४ या ५ ऐसे बर्तन जिनमें १०।१५ सेर पानी समा सके, लेकर उनमें स्वच्छ ताजा जल भरकर औटाना चाहिये। जब पानी खूब खौलने लगे और उसमें आवाजके साथ भाफ निकलने लगे तब रोगीके सब वस्त्र उतारकर उसको एक ऐसी चारपाईपर जिसमें चारों तरफ छेद हों और जिसमें भाफ आसानीसे जासके सुला देना चाहिये। उसके पश्चात् चारपाईको चारों तरफ कम्बल मे इस प्रकार ओढा देना चाहिये कि वह कम्बल उस चारपाइ के चारों ओर जमीन तक टिक जावे और उसमें से बाहर भाफ निकलनेकी गुञ्जाइश न रहे। उसके पश्चात् खौलते हुए पानीके बर्तनोंमें से दो बर्तन लेकर उन बरतनों को चारपाईके नीचे इस प्रकार रखना चाहिये कि एक बर्तन रोगीकी पीठके नीचे और दूसरा बर्तन रोगीके सिरके नीचे रहे। उसके पश्चात् उस कम्बलके चारों कोनों को ऐसे दबा देना चाहिये जिससे भाफको बाहर जानेकी गुञ्जाइश न रहे। पानीके बरतनों पर ढक्कन की सुविधा भी रहना चाहिये। जिससे अगर कभी भाफको कम ज्यादा करने की जरूरत हो तो की जा सके। रोगी को जितनी भाफ सहन हो उतनी ही देना चाहिये। १०।१५ मिनटमें रोगीका सारा शरीर पसीनेसे तर बतर हो जायगा। अगर उसमें कुछ कमी मालूम हो तो उन बरतनों को निकाल कर उनके बदलेमें दूसरे ताजे बरतन रख देना चाहिये। जिससे सारे शरीर का विजातीय द्रव्य पसीने की राह बाहर निकल जायगा और रोगीको परम शान्ति का अनुभव होगा।

जिन लोगोंके पेटमें विकृत पदार्थ एकत्रित होगये हों, आमाशय खराब हो गया हो, आँतें कमजोर पड़गई हों, हमेशा कब्जियत रहती हो, उनलोगोंको सिर्फ पेट और पीठके भागपर यह स्नान देना चाहिये। जिन लोगोंकी छातीमें दर्द रहता हो, हृदय कमजोर पड़ गया हो, फेंफड़ोंमें विकार हो गया हो, उनको सिर्फ छाती और पीठपर यह स्नान देना चाहिये। मूत्राशयकी बीमारी और प्रदर तथा प्रमेहके समान रोगवाले रोगियोंको पेड़ूके ऊपर और मस्तक, कान, नाक, वगैरहके रोगियोंको सिरके ऊपर वाष्प स्नान लेना चाहिये। जिस स्थानपर वाष्प स्नान लेना हो उसी जगहको कम्बल से ढँककर उसके नीचे भाफका बरतन

रखकर उसको चारों तरफ से बंद कर देना चाहिये। शेष अगोंको खुले रखना चाहिये। बाष्प स्नानके बाद प्रत्येक व्यक्तिको कटिस्नान लेना आवश्यक होता है। उसकी विधि इस प्रकार है।

कटिस्नान—कटिस्नानके लिये ठडे पानीसे भरे हुए एक लंबे टबकी आवश्यकता होती है। इस टबमें स्वच्छ ठडा जल इतना भरा हुआ होना चाहिये जिसमें मनुष्यका नाभिसे नीचेका भाग और उसकी जंघाएं उसमे डूब सके। नाभिसे ऊपरका शरीरका भाग और जघाओंसे नीचेका पैरोंका भाग पानीसे बाहर रहना चाहिये। टबके बाहर एक ऐसी तिपाई रखना चाहिये जिससे टबके बाहर वाला पैरोंका भाग आसानीसे उस तिपाई पर रक्खा जासके। जल कुएका स्वच्छ और ताजा होना चाहिये। वह इतना ठंडा न हो कि सहन न होसके। उसकी गर्मी ६८ से लेकर ८१ डिग्री फॉरनहाइट तक होना चाहिये। कुएं का ताजा जल प्रायः इसी गर्मी वाला होता है। जिस जगह यह स्नान लेनाहो वह जगह साफ़, हवादार और एकान्त होना चाहिये। पेट भरकर भोजन कियेके बाद या बिलकुल भूखे पेट यह स्नान नहीं लेना चहिये। शरीरके वस्त्रोंको दूर करके टब में बैठकर पैरोंको बाहरकी तिपाई पर रखदेना चाहिये। पैरोंके खुले भाग पर और सिरपर ऊनके गरम वस्त्र ढक लेना चाहिये।

टब में बैठनेके पश्चात् खादीका एक भींगा हुआ टुवाल लेकर उससे नाभिके नीचे वाले पेडूके भागको जल्दी २ भली प्रकार घिसना चाहिये। जिससे वहांके रोमकूप खुलकर जलके परमाणु उनके अंदर आसानीसे जासके। सारे शरीरमें ठंडकका संचार होने तक यह स्नान लेना चाहिये। शुरु २ में ५ से १० मिनट तक यह स्नान काफी होता है। अभ्यास होने पर धीरे २ आधा घण्टा या उससे भी अधिक समय तक यह स्नान किया जासकता है। कमजोर मनुष्योंके लिये ३।४ मिनटका ही स्नान काफी होता है। इस स्नानके पश्चात् शरीर कुछ ठंडा पड़ जाता है। इसलिये पुन गर्मीका संचार करनेके लिये मनुष्यको खेल कूद या हलके व्यायाम करना चाहिये और निर्बल मनुष्यको कपड़े पहिनकर, ओढकर कुछ देर बिछौनेमें सो जाना चाहिये।

शरीरका बलाबल और ऋतुका विचार करके दिनमे १ से या ३ बार यह स्नान किया जा सकता है। इस कटिस्नानके लेनेसे ढोलके समान फूला हुआ पेट कुछ दिनोंमें पतला पड़ जाता है। कब्जियत, बद्धिजयत, मंदाग्नि, अतिसार, पेचिश, शूल, संग्रहणी, इत्यादि उदर और आंतों से सम्बन्ध रखने वाले रोगोंके भयंकर आक्रमणके समय यह कटिस्नान जितना फायदा पहुंचाता है उतना कोई दूसरी दवा नहीं पहुंचा सकती। कमरका दर्द, मूत्राशय और मलाशयके रोग और स्त्रियोंमें भी इससे बड़ा लाभ होता है। अगर किसीका पेशाब बंद हो गया हो या मूत्रकी अत्यन्त जलन हो रही हो तो ठण्डे पानीमें इस प्रकार १० मिनट बैठनेसे पेशाब साफ होकर जलन कम हो जाती है।

मेहनस्नान—यह स्नान मनुष्यकी गुह्येन्द्रियका स्नान है। मूत्राशय और [illegible]

मासिक धर्मसे शुद्ध होनेके पश्चात् इसको लेना चाहिये। ऊपर बताये हुए कटिस्नानके टबमें एक छोटी तिपाई रखकर उसमे इतना पानी भरना चाहिये कि उस तिपाई की बैठक की जगहके बराबर वह पानी आजाय। उसके पश्चात् रोगीको उस तिपाई पर बैठा देना चाहिये और खादीका एक मुलायम टवाल पानीमें भिंगोकर उससे योनिके मुखको बहुत धीमे २ मलना चाहिये। बार २ टवालको पानामें भिगोकर उसको मलते रहना चाहिये। इस स्नानमे गुह्यांग के सिवाय मनुष्यका सारा भाग पानीके बाहर रहता है। सवेरे पहला पेशाब करनेके बादही यह स्नान शुरू कर देना चाहिये। १० मिनिटसे लेकर १ घंटे तक यह स्नान किया जा सकता है। इस स्नानमे सिर्फ बाहरी शुद्धि ही नहीं होती परन्तु अन्दरके सब रोग भी दूर हो जाते हैं। योनिकी खुजली, योनिकन्द, योनिभ्रंश, वगैरह रोग शीघ्र दूर हो जाते हैं। जो स्त्रियाँ गुह्ययोगके रोगों से अत्यन्त पीडित हैं और जो सन्तान पैदा होन की आशा छोड़ चुकी हैं वे अगर नियमित रूपसे इस स्नानका प्रयोग करें तो कुछ दिनोंमें अवश्य रोग मुक्त होकर सन्तान सुखको प्राप्त कर सकती हैं।

स्त्रियो ही की तरह पुरुषों के लिय भी यह स्नान बडा उपयोगी है। ऊपर बतलाये अनुसार टबमें पानी भरकर उसमें तिपाई रखकर उसपर पुरुषको बैठना चाहिये। फिर बायें हाथमें कामेंद्रियको लेकर उसका चमडा आगे खींचकर सुपारीका हिस्सा ढक देना चाहिये। फिर कामेंद्रियका अगला भाग पानीमें डूबा हुआ रखकर दाहिने हाथमें एक मुलायम कपड़ा लेकर पानीमें भिंगोकर उससे धीरे २ कामेंद्रियके अगले हिस्से को मलना चाहिय। यह क्रिया शुरू में १० मिनिट से लेकर बढते २ पचास मिनिट तक की जा सकती है। उसके पश्चात् १० मिनिट तक क्रिया बन्द करके कामेंद्रियको पानीमें डूबी हुई रखना चाहिये। इस स्नानमें कामेंद्रियको छोड़कर मनुष्यका सारा शरीर सूखा रहता है।

इस प्रकार यह स्नान करने से लिंगेंद्रिय की निर्बल हुई नसोंमें शक्तिका संचार होता है। कुसंग की वजहसे जो लोग अपने जीवनको नष्ट कर चुके हैं। अथवा हस्त मैथुनके द्वारा जो अपनी नसोंको बेकार कर चुके हैं उनके लिये यह स्नान आशीर्वाद स्वरूप है। लगातार एक महिने तक यह स्नान करते रहनेसे नपुंसकता, इन्द्रियका टेढापन, धातुस्राव, वगैरह रोग नष्ट होकर आनन्दमय जिन्दगी प्राप्त होती है।

निद्रा दायक स्नान—अगर किसी रोगीको अच्छी तरहसे नींद न आती हो तो सोनेके कुछ समय पहले उसके दोनों पैरोंको साधारण गरम जलमें रखकर सिरके ऊपर ठण्डे जलकी धार देना चाहिये। ऐसा करनेसे रक्तकी गति सिरकी तरफसे नरम पडके पैरोंके तरफ जाती है। जिससे उसे थोडी देरमें सुखमय निद्रा आ जाती है।

गीले कपड़का स्नान—अच्छे गरम जलमें बन्नातके एक बड़े टुकड़ेको डुबोकर भिगो लेना

चाहिये। उस समय उसमें से गरम २ भाफ निकलती है। उस कपडे को शरीर पर लपेट लेना चाहिये। और उसके ऊपर एक और सूखा गरम कपडा लपेटकर रोगीको सुला देना चाहिये। आधे घण्टेके बाद इन सब कपडों का दूर कर देना चाहिये। इस समय रोगीको हवा नहीं लगने देना चाहिये और साफ कपडेसे उसके शरीरको पोंछ देना चाहिये। ज्वर चढने को बहुत समय होने पर भी अगर वह नहीं उतरता हो अथवा निदोप इत्यादि व्याधियोंसे फेफडेमें वरम आगया हो तो यह क्रिया लाभ दायक होती है।

इसी प्रकार सनके कपड़ेको ठंडे पानीमें भिंगाकर एक कम्बल अथवा रजाइके ऊपर फैला दिया जाता है। और उस पर रोगीको सुला देते हैं। उसके पश्चात् उसके हाथ ऊँचे करके नीचे बिछे हुए गीले कपडेका आजू बाजूका भाग उसके शरीर पर लपेट देते हैं। उसके बाद रोगीको रजाई ओढ़ाकर सुला देते हैं। जिससे भीतर गर्मी पैदा होकर पसीना आने लगता है। आधे घंटेके पीछे इन सब कपडों को दूर कर दिया जाता है। यह सब प्रयोग करते समय खूनका जोश मस्तिष्कमें न चढ जाय, इसके लिये रोगीके सिरके ऊपर ठण्डे पानीमें भींगा हुआ रुमाल रक्खा जाता है। उत्ताप ज्वर वाले रोगीके लिये जिसका सारा शरीर जल रहा हो और जिसको ओढना बिलकुल न सुहाता हो, यह बहुत लाभ दायक है।

सारे शरीर पर यह पट्टा न बाँधते हुए अगर शरीरके खास खास अगों पर इसको बाँधा जाय तो कई बीमारियोंमें बड़ा लाभ होता है। विशेष अगो पर बांधते समय पट्टे की २।३ तह करके बाँधना चाहिये और उसके ऊपर सूखा गरम कपडा लपेट देना चाहिये। अगर पेटके ऊपर ऐसा पट्टा बाँध कर रातको रोगीको सुला दिया जाय तो टाइ फाइड ज्वरमें बहुत लाभ होता है। कब्जियतके रोगियों पर यह प्रयोग करनेसे उनको साफ दस्त आने लगता है। धातुश्रावके रोगियों पर इस पट्टे को चढाने से स्वप्नमें होने वाला वीर्यश्राव बन्द हो जाता है। गर्भाशय और मूत्राशयके रोग भी इससे मिट जाते हैं।

गलेके आस पास इस प्रकारका पट्टा बाँधनेसे टोंसिल और गलेकी सूजन दूर हो जाती है। छाती के ऊपर ऐसा पट्टा चढानेसे फेफड़ेकी सूजनमें लाभ होता है। इसके अतिरिक्त हथियारसे पड़े हुए घाव, दूसरे जख्म, गरमीकी सूजन, कमर का दुखना, सांधोंकी सूजन, मोच, लचक, इत्यादि रोग भी दूसरी दवाइयों की अपेक्षा ऐसे पट्टोंसे जल्दी आराम हो जाते हैं।

बरफके प्रयोग—कुछ रोग ऐसे होते हैं कि जिनकी शांतिके लिये अत्यन्त शीतल जलकी आवश्यकता होती है। ऐसे टाइम पर पानीके बदले बरफका उपयोग किया जाता है। अगर रोगीके शरीरके किसी भी भागसे रक्त श्राव होता हो तो उसको बन्द करनेके लिये बरफका प्रयोग एक आश्चर्य जनक उपाय है। मुँह, गला, नाक, योनि, गुदा मार्ग, इत्यादि शरीरके जिस किसी भी अगसे खून गिरता हो। उस समय एक रबरकी थैलीमें बरफ भरकर रखनेसे फौरन रक्त प्रवाह बन्द हो जाता है। फेंफड़े से कभी

२ ऐसा रक्त श्राव होने लगता है कि रोगी एक दम खूनकी उल्टियां करने लगता है। ऐसे समय उसकी छाती पर बरफ रखकर उसको २।४।५ टुकडे बरफके निगलवा देना चाहिये। पेटमें उन टुकडों के पहुँचतेही खूनका गिरना बन्द होजायगा। क्योंकि रक्त वाहिनी नलियों में जो छेद हो जाते है। वे बरफ की ठंडक की वजहसे बहुत सिकुड जाते हैं।

गर्भाशयके द्वारसे अगर बहुत खून बहता हो तो उसको बंद करनेके लिये भी बरफके टुकडे निगलवाना चाहिये और गुदा तथा योनिके ऊपर भी बरफ रखना चाहिये।

जठरके ऊपर पडेहुए घावोंकी वजहसे अगर रोगीको बहुत उल्टियाँ होती हों तो एक आइसबेग में बरफके टुकडे भरकर उस बेगको पेडूके ऊपर रखनेसे रोगीको तत्काल शांति मिलती है।

मस्तिष्क या मस्तिष्कके अन्दरकी पतली झिल्लीपर पड़े हुए छिद्रों या सूजनको नष्ट करनेके लिये अथवा दीर्घकालके ज्वरसे मगजमें संचित हुई गर्मीकी वजहसे पैदा हुए भयंकर मस्तक शूलमें भी बरफसे भरा हुआ आइस बेग सिरपर रखनेसे बडा काम होता है। कभी २ तीव्र ज्वरकी वजहसे गलेमें बहुत गर्मी पैदा होकर कंठमाला से लक्षण दिखाई देने लगते हैं। ऐसे समयमें गलेकी सूजन और दर्दको कम करनेके लिये बरफ एक सफल दवा है। इसी प्रकार अण्डकोषके ऊपर बरफ रखनेसे उसमें उतरी हुई आँत फिरसे ऊपर चढ़ जाती है और अण्डकोषकी सूजन तुरन्त दूर हो जाती है।

बरफका उपचार करते समय यह खयाल रखना चाहिये कि अत्यन्त निर्बल, वृद्ध, बिलकुल शक्ति हीन और बिलकुल निर्बल मनुष्योंपर यह उपचार नहीं किया जाय।

औषधि मिश्रित बाष्प स्नान—

नीम अथवा द्रोण पुष्पीके पत्तोंको पानीके अन्दर खूब उबालकर उस पानीसे ऊपर बतलाई हुई रीतिसे बाष्प स्नान देनेसे साधारण बाष्प स्नानकी अपेक्षा अधिक लाभ होता है, भयंकर बुखार, सन्निपात और सधिवातमें भी इस प्रकारका स्नान बहुत अधिक लाभ बतलाता है।

यह खयाल रखना चाहिये कि जल चिकित्सामें उपयोग करनेके लिये बहुत शुद्ध और साफ जल काममें लेना चाहिये। जलाशयमें सडी हुइ चीजें डालनेसे अथवा वृक्षोंके पत्ते गिरनेसे पानी खराब हो जाता है। ऐसे पानीका उपयोग नहीं करना चाहिये। पानी भरनेके पात्र भी बहुत साफ होना चाहिये। अगर बरतनमें पानी भरे १२ घंटेसे अधिक होगये हों तो उसे स्नान चिकित्सामें नहीं लेना चाहिये। बरसाती नदियोंका पानी भी इस कार्यके लिये बिलकुल वर्जनीय है। जल चिकित्सा करनेवालेको खानपान के सम्बन्धमें पूरी सावधानी रखना चाहिये। हलका, सात्विक और शुद्ध भोजन करना चाहिये। मिठाई नमक और मसाले बिलकुल नहीं खाना चाहिये। ताजे फल अधिकसे अधिक देना चाहिये। कंद, मूल फलको बिलकुल छोड देना चाहिये।

जलकुम्भी

नाम—

संस्कृत—कुम्भिका, वारिपर्णी, वारिमूलि, आकाशमूलि, कुमुदा, जलवल्कल, जलकुम्भी इत्यादि। हिन्दी—जलकुम्भी। बंगाल—पाना, ताकापाना। गुजराती—जलकुम्भी, जलशृंखला। मराठी—गोंडाल जल मंडवी, शेरवल। मलयालम—नीरचीर। कनाडी—अन्तर्गङ्गा। तेलगू—अन्तदमेर। तामील—आकाशतामरे। यूनानी—ततरअतयुतिस। अरबी—फाग्मिअलमा। अंग्रेजी—The wester lettuce (दी वेस्टर लेट्यूस) लेटिन—Pistia stratiotes (पिस्टिया स्ट्रेटिओटस)।

वर्णन—

यह वनस्पति जलके ऊपर पैदा होती है इसका स्वरूप काईकी तरह होता है जो प्रायः सब दूर तालावों में और रुके हुए पानी पर छाई हुई रहती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे जलकुम्भी शीतल, कड़वी, हलकी, स्वादिष्ट, सारक, चरपरी, त्रिदोषनाशक और रूखी होती है। ज्वर, रक्तविकार और क्षय रोग जनित ग्रन्थियोंके बढ़ने पर यह लाभदायक है।

इसकी राखको पानीमें गलाकर उससे एक प्रकारका क्षार तैयार किया जाता है। इस क्षारमें पोटास क्लोराइड, और पोटास सल्फेट, जवाखारकी तरह ही पाया जाता है।

गलेकी सूजनमें जलकुम्भी और नागर बेलके पानका स्वरस देनेसे लाभ होता है। मूत्रकृच्छ्र या पेशाबकी जलन बन्द करनेके लिये जलकुम्भीका काढ़ा पिलाते हैं और इसको पेडू पर बांधते हैं।

इसके पत्तोंका पुल्टिस बनाकर खूनी बवासीर और रक्तार्शके ऊपर लगाया जाता है। चावल और नारियलके दूधके साथ इसको मिलाकर पेचिशकी बीमारीमें देते हैं। [illegible] और [illegible] में इसको गुलाब जल और शक्करके साथ मिलाकर देते हैं इसकी राखको [illegible] ऊपर लगानेसे दाद नष्ट हो जाता है।

[illegible] लोग इस वनस्पतिको [illegible] लिये काममें लेते हैं।

चीनके चिकित्साशास्त्रमें यह वनस्पति बहुत प्राचीन समयसे [illegible] है। [illegible] भाव, ज्वरदण्ड रोग जनित फोड़े [illegible] में इसे काममें लेते हैं।

[illegible] इसका [illegible]। [illegible] बनाकर ऊपर [illegible] काममें लेते हैं।

कोमानके मतानुसार इसके पत्तों के रसको नारियलके तेलमें सिद्ध करके पुराने चर्म रोगों पर लगानेके काममें लिया गया और इससे बहुतसे बीमारोंको बड़ा लाभ हुआ।

यूनानी मत—हकीम जालीनूसने जलकुम्भीकी दो जातियां बताई हैं। एक जलमें पैदा होने वाली और दूसरी जंगली।

यूनानी मतसे इसकी तबियत सर्द और तर है। इसको गरमीकी सूजन पर लगानेसे सूजन बिखर जाती है। पेशाबकी जलनको यह दूर करती है। शरीरके किसी भी हिस्सेसे होने वाले रक्तस्रावको यह बन्द कर देती है। नासूरको भरती है। इसकी जड़के चूर्णको मिश्रीके साथ फंकी लेनेसे और ऊपरसे गुलाबका अर्क पीनेसे खाँसी दूर हो जाती है। इसकी जड़की काढ़ेमें शहद मिलाकर पीनेसे दमा जाता रहता है। इसकी राखको गायके मूत्रमें पकाकर छान कर पीनेसे गलगंडमें लाभ होता है। इसको खानेसे सिरकी गज भी मिटती है।

जलकुतरा

नाम—

हिन्दी—जलकुतरा, बिच्छोपटा। लेटिन—Primula Reticulata (प्रायमूला रेटिक्यूलेटा)

वर्णन—

यह वनस्पति मध्य और पूर्वी हिमालयमें ११ हजारसे १५ हजार फीटकी ऊंचाईतक होती है। यह एक बहुवर्षजीवी वनस्पति है।

गुण, दोष और प्रभाव—

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति वेदना शून्यता लानेवाली होती है। यह ढोरोंके लिए एक प्रकारका विष है।

जल जंबुआ

नाम—

हिन्दी—जल [illegible]। मराठी—[illegible]। गुजराती—जल [illegible]। काठियावाड़—[illegible], [illegible]। [illegible]—[illegible]। लेटिन—Alternanthera Sessilis ([illegible])।

वर्णन—

यह वनस्पति भारतवर्षके सभी उष्णभागोंमें पैदा होती है। इसके पौधे जमीनपर फैले हुए रहते हैं। और ज्यों २ इनकी डालियाँ जमीनपर आगे बढ़ती जाती हैं त्यों २ वे अपने ततु छोड़कर जमीनमें अपनी जड़ें बनाती जाती हैं। इसके पत्ते सामने सामने लगते हैं। ये १-३ से लेकर ५ सेंटिमीटरतक लंबे और .३ से २ सेंटिमीटर तक चौडे होते हैं। इसके फूल सफेद या कुछ गुलाबीरंगके होते हैं इसका फल दबा हुआ होता है। यह वनस्पति पानीके किनारे भीगे स्थानोंपर ज्यादा पैदा होती है।

गुण दोष और प्रभाव,—

यह वनस्पति मूत्रल, ग्राही और शीतल होती है। इसके खानेसे दूध बहुत बढ़ता है। सीलोन और मेडागास्करमें इसका उपयोग दुग्धवर्धक औषधिकी तरह होता है। इसकी छाल या पत्तोंका रस गायके घी के साथ सर्पदंशपर पिलाया जाता है। जलन करनेवाले फोड़ोंपर इसके पत्तोंका लेप करनेसे शांति होती है।

—

जलकन्दरा

नाम—

हिन्दी, यूनानी—जलकन्दरा।

वर्णन—

यह वनस्पति प्याजकी तरह सफेद होती है और तालाबों के किनारों पर पैदा होती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानीमत से यह तीसरे दर्जे में गरम और दूसरे दर्जे में रूक्ष है। यह [illegible] पैदा करनेवाली है। जोड़ों के दर्द को मिटाती है इसका [illegible] से [illegible] दर्द मिटता है। इसका तेल पक्षाघात में लाभ पहुँचाता है। इसका [illegible] होता है

—

जलकेशर

नाम—

हिन्दी, यूनानी—जलकेशर ।

वर्णन—

यह एक बड़ा और तनेदार पेड़ होता है । इसकी डालियां बड़ी २ होती हैं । इसके पत्ते इमलीके पत्तों की तरह बहुतायतसे होते हैं । इसमें हमेंशा फूल खिले हुए रहते हैं । हर फूलमें ५ पँखड़ियाँ होती हैं । इन फूलोंमें किसी का रंग सन्दली, किसी का पीला और किसी का सफेद होता है । इन फूलोंके बीच में लाल रंगके केशर की तरह रेशे होते हैं । इन रेशोंकी नोकपर चांवलों की तरह एक वस्तु लगी हुई रहती है । इसकी फली करीब २।३ इन्च लम्बी और चपटी होती होती है । इस फली में बीज होते हैं ।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह दूसरे दर्जे में गरम और खुश्क होती है । मलको फुलाने वाली और दस्तावर है । गठिया, ग्रन्थिवात, और सूजनके लिये इसको पीना और इसकी धूनी देना मुफीद है । इसका फूल खुशबूदार होता है यह कब्ज पैदा करता है और दिलकी धडकन को मिटाता है । इसके पत्तों को खानेसे औरतों के स्तन बढ़ जाते हैं । इसके पत्ते सुजाक और प्रमेह में अच्छा लाभ पहुंचाते हैं ।

सुजाक—जलकेसर के पत्तोंका स्वरस १ तोला, लहसुनकी १ गठान, गायका घी ६ तोला । इन सब चीजोंको मिलाकर प्रातःकाल चाट लें और भोजनमें नमक खाना छोड दें । इस औषधिके सेवनसे एक ही दिन में सुजाक में लाभ होता है

जलनीम

नाम—हिन्दी—यूनानी—जलनीम ।

वर्णन—

खजाइनुल अदवियामें लिखा है कि जिस जगह पर पानी भरा रहता है उस जगह पर यह पेड पैदा होता है । इसके पत्ते छोटे खुरपे के पत्तोंकी तरह होते हैं । इसकी शाखाएं बहुत पतली होती हैं । स्वादमें यह बहुत कडवा होता है ।

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जे में गरम और खुश्क है। यह खूनको साफ करता है। वात संबंधी बीमारियों को मिटाता है। कोढ़, आतशक और खुजलीमें लाभ दायक है। कफ और वातके विकारों को दस्तकी राह निकाल देता है। इसको तेलमें मिलाकर मालिश करनेसे तर खुजलीमें लाभ होताहै। हरे जलनीमका रस निकाल कर उसको तिल्लीके तेलमें सिद्ध करके अगर सिरकी गंज और खुजली पर लगायाजाय तो बड़ा फायदा होता है।

जल पिप्पली

नामः—

संस्कृत—जल पिप्पली, शार्दी शकुलादनी, मत्स्यगन्धा, लांगली, महाराष्ट्री, तोय वल्लरी, अग्नि ज्वाला, चित्रपत्री, प्राणदा, तृणशीता, बहुशिखा। हिन्दी—जल पिप्पली, भुइंओकरा, पनसिगा, गंगतिरिया। बंगाल—पानी कंचिरा, कावडाघास, पनसिगा। मराठी—जल पिप्पली, रतवेल। गुजराती—रतवेलियो। मलयालम—कट्टु तिप्पली। तामील—पोडुतले। तैलगू—बोकेन। फारसी—पावल आबी। अरबी—फिलफिल अलमा। अंग्रेजी—Purple Lippia (परपल लीपिया) Lippia Nodiflora (लीपिया नोडीफ्लोरा)।

वर्णन—

यह क्षुद्र जाति की बनस्पति नद [illegible] पानीके आसपास [illegible] पैदा होती है और बारहों महीने [illegible] मिल सकती है। इसके पौधे जमीन पर फैले हुए रहते हैं। इसके पत्ते [illegible] और [illegible] रहते हैं। इसके फूल पीले, सफेद, गुलाबी और कुछ बैंगनीपन लिये हुये रहते हैं इसके [illegible] तरह मगर उनसे कुछ छोटे होते हैं। हर एक फलके दो बीज रहते हैं। [illegible] पत्तों की तरह होते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—निघंटु रत्नाकरके मतानुसार जल पीपल [illegible] अग्निदीपक, [illegible] हृदय, शीतल, तूरा और [illegible] होता है। [illegible] रुधिर विकार, [illegible] दाह [illegible]

[illegible]

इस वनस्पति को पीसकर सूजन पर बांधनेसे जलन कम होजाती है। इस वनस्पति को जरा भूनकर और उसकी फाट बनाकर देने से बच्चों की सरदी और स्त्रियों के प्रसूति रोग दूर होते हैं। जहरीले फोड़े फुन्सियों पर इसको पीसकर लगानेसे बड़ा लाभ होता है इसके पत्तों का रस निकालकर उसको गरम करके शहद के साथ चटाने से बच्चोंके पेट का बोझ कट जाता है।

यूनानी मत— यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। काली मिरचसे इसकी गर्मी और तेजी कम है। यह पेशाब अधिक लाती है। वात, पित्त और कफ की खराबी को दस्त की राहसे निकाल देती है। आतशक (गर्मी) और खारिश में भी यह मुफीद है। इसको ६ माशेकी मात्रामें पानीके साथ पीसकर लेनेसे अच्छा जुलाब हो जाता है। दिल और आंखके लिए यह फायदे मद है। इसके सेवन से कामेन्द्रिय की शक्ति बढ़ती है। सीने की जलन और रक्त विकार को यह दूर करती है। इसके लेपसे बादी का दर्द और कफ की सूजन मिट जाती है। मुंह की झाई, दाद और आंखों परके काले दाग इसके लेपसे मिट जाते हैं।

इसकी लाल फूल वाली जाति के बीजों को जीरेके साथ देने से वमन, प्यास की अधिकता और जी की मिचलाहट मिट जाती है। इसकी जड़ को दांतमें रखनेसे दांतका दर्द मिट जाता है। मगर ज्यादा टाइम तक रखनेसे दांत गिर जाते हैं।

मात्रा— यूनानी मतसे इसकी मात्रा ७ माशे तक है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति पेचिश और पागलपन मे उपयोगी है।

जलबेंत

नाम—

संस्कृत—जलवेतस, वानीरः, नादेयः, परिव्याधः। हिन्दी—जलबेंत। गुजराती—जलवेतस। मराठी—जलवेतस। बंगाली—जलवेत। तेलंगी—प्रब्बहब्बे। द्राविडी–नीरप्रजि। लेटिन—Calamus Fasciculatus (केलेमस फेसकिक्यूलेटस)।

वर्णन—

वर्णन—जलबेंतके झाड़ बंगाल, उड़ीसा, चटगाँव, बरमा, आदिमें पैदा होते हैं। इसका पौधा जब छोटा रहता है तबतक खड़ा रहता है और जब ज्यादा बड़ा होता है तब दूसरे वृक्ष और झाड़ियों के आसरेमें बढ़ता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

जल बेंत शीतल, कड़वी, कसैली, वातकारक, ग्राही और रूक्ष होती है। यह व्रणको शुद्ध करने वाली और पित्त, रुधिर विकार और कफको नष्ट करनेवाली होती है।

जलब्राह्मी

नाम—

हिन्दी—जलब्राह्मी।

स्थान—

यह वनस्पति सिलहट और बंगालके पूर्वी हिस्सेमें काश्तकी जमीन में पैदा होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानीमतसे यह सर्द, कड़वी और दस्तावर होती है। पित्त और चर्मरोग सम्बन्धी बीमारियोंमें यह मुफीद है। इसके पत्तोंके स्वरसको बकरीके दूधके साथ पिलानेसे पेशाबकी जलन बंद होजाती है और सुजाकमें लाभ होता है। इसके पत्तोंको पीसकर पेशानी(ललाट)पर लेप करनेसे सिरकी गर्मी निकल जाती है। पाचन शक्तिकी कमजोरी और पित्तसे पैदा हुए उपद्रवोंमें भी यह लाभदायक है। इसके रसमें शहद मिला कर पिलानेसे छोटी चेचकमें बहुत लाभ होता है।

जल महुआ

नाम—

संस्कृत—जलमधुकः, मंगल्यः, दीर्घपत्रः, [illegible]रकाख्य। हिन्दी—जलमहुआ। गुजराती—जलमहुडो। बंगाल—जलमौल। लेटिन—Bassia Longifolia (बेसिया लॉंगिफोलिया)।

वर्णन—

जल महुएके वृक्ष दक्षिण हिन्दुस्तान, सीलोन और बनारसमें होते हैं। इसके फूल महुएके समान होते हैं। इसमें एक किस्मका गोंद लगता है। इसके बीजोंसे तेल निकाला जाता है। यह तेल कुछ जमा हुआ और पीले रंगका होता है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे जलमहुआ मधुर व्रण नाशक, वीर्यवर्धक, शीतल, बलवर्धक और रसायन है। इस महुएका तेल चर्मरोग सम्बन्धी बीमारियों में काममें आता है। इसके फूल हलके और दस्तावर होते हैं। इसके पत्ते और इसकी छालका रस कब्जियत करता है। इसके दूसरे गुण साधारण महुएके समान होते हैं।

जलसिरस

नाम—

हिन्दी—जलसिरस, ढाढोन, हेते मुरिया। संस्कृत—अम्बुशिरीषिका, शिवदिनिका, दुर्बला, झिंगी, झिंगिनी। मराठी—जल शिरषि। मुण्डारी—तिरुपसिंग। तेगेलाग—मबुलो। लेटिन—Trichodesma Zeylanicum (ट्रिकोडेस्मा झेलेनिकम)।

वर्णन—

यह वनस्पति गुजरात, कोकण और मद्रास जिलेके सभी खुश्क स्थानों पर पैदा होती हैं। यह एक वर्ष जीवी वनस्पति है। इसका वृत्त ३० से लगाकर ६० सेंटिमीटर तक ऊंचा होता है। इसका पिंड मोटा और बैंगनी रंगका रहता है। इसके पत्ते ५ से लगाकर १० सेंटिमीटर तक लम्बे और १.३ से २.५ सेंटिमीटर तक चौडे होते हैं। इसके फूल हलके नीले रंगके होते हैं। इसका फल पकने पर भूरे रंगका हो जाता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतानुसार यह वनस्पति धवलरोग, बवासीर, विषके उपद्रव और त्रिदोषमें लाभदायक है। इसके पत्ते स्नेहन और मूत्रल होते हैं।

जलाधारी

नाम—

संस्कृत—अश्वघ्न, अतितेजनी, लघु वल्कला, पारिजाता, तिक्ता। हिन्दी—जलाधारी पेफली, बुद्रङ्ग। बम्बई—चिरफल, कोकली, सेघल, टेफल, तेसूल। गुजराती—तेजबला। मराठी—तेजबल।

आसाम—ओजोनली। बंगाल—बाम्कीनली। कनाडी—कुमिना, जिमी। नेपाल—तिमूर। तामील—इरतचेई। तेलगू—रचा। लेटिन—Zanthoxylum Budrunga (झेंथोक्सिकलम बद्रुङ्गा)।

वर्णन—

यह वनस्पति कोकण, ट्रावन कोर, म्हैसूर, मलाबार, उडीसा, सिलहट, खासिया पहाडियां, चिटगांव, पेगू, इत्यादि स्थानों पर पैदा होती है। इसकी छाल फीके पीले रंगकी और कांटेदार होती है। इसके फूल चार पँखड़ी वाले रहते हैं। इसका फल गोल, बीज लम्ब गोल, नीले और काले रंगके, चिकने व चमकीले रहते हैं।

गुणदोष और प्रभावः—

आयुर्वेदके मतानुसार इसका फल गरम, पाचक, कडुआ और क्षुधावर्धक होता है। यह कफको नष्ट करके दमा और वायु नलियोंके प्रदाहमें फायदा पहुँचाता है। हृदयरोग, कुक्कर खाँसी, बवासीर और मुँह, दांत तथा गलेके रोगोंमें भी यह मुफीद है।

यूनानीमत—यूनानी मतने यह गरम, सुगन्धित, खुश्क, उत्तेजक संकोचक, और पाचक गुण-वाला होता है। अग्निमांद्य और अतिसारमें यह लाभ पहुँचाता है।

गोआमें इसकी जड़की छाल गुर्देके लिये जुलाबका काम करनेवाली मानी जाती है। हैजेकी बीमारीमें इसके फलको अरण्डारनके साथ पीसकर रोगीको पिलाया जाता है। सन्धिवातमें इसके फलको शहदके साथमें दिया जाता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह संकोचक, उत्तेजक और अग्निवर्धक है। इसमें ७४ प्रति सैकड़ा उपक्षार रहते हैं।

जलमदास

नाम—

हिन्दी—जलमदास कनाड़ीज—अनाज, हुलेन्लाल। मलयलम—अट्टवञ्चि। तामील—अट्टुर्वञ्चि। लेटिन—Sarcocephalus Missionis सारकोसेफेलस मिसिसानिस—

वर्णन—यह एक छोटा वृक्ष होता है। इसके पत्ते १० से लम्बाई १५ सें०मी० लम्बे और [illegible] से ५.० सें० मीटर चौड़े होते हैं। ये अण्डाकार और नुकीले होते हैं, पत्ते [illegible] चमकीले रहते हैं। इनकी [illegible] १० से [illegible] ११ तक होती हैं। इसके पुष्प [illegible]

होते हैं। इसके फूलोंका आकार २·५ से ३·२ सें० मी० होता है। इसकी पुष्पकटोरी रुएंदार रहती है। इसका फूल गोल होता है। इसके बीज मोटे और काले रहते हैं।

उत्पत्तिस्थान—यह वनस्पति उत्तरी कनाड़ा और मद्रास प्रेसिडेंसीके समुद्री किनारेपर होती है। यह मलाया और त्रावनकोरमें भी १५०० फीट की ऊंचाईतक होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

इसका छालको चूर्णके रूपमें दिया जाय या काढ़ेके रूपमें दिया जाय तो कोढ़, व्रण, संधिवात और कब्जियतमें उपयोगी होता है।

क० चौपराके मतानुसार—इसका पिसाहुआ छिलटा या काढा कोढ, व्रण, संधिवात और कब्जियतमें उपयोगी होता है।

जलूर

वर्णन—

हिन्दी—जलूर, मालजन, मालघन, महुल, मालो, मालू, मउलैन, मउरैन। मराठी—चपल चांविल, चंबुल, चंबुरा, चरबोर, मालजिन। पंजाब—तउर। बंगाल—चेतुर। कनारी—अनेपादु, कविहु। मध्यप्रदेश—महालन, मडल, सिहार। डेकन— चंबोलि। गुजराती—चबेलि। गढवाल—मालु। मलयलम—मोतनोवल्लि। मुंडारि— रोरुंगनारि। नेपाल— बोरला। तामिल—मदारि। तेलगू—अदतिगे, मदादु, मुदुपु। उरिया—सिआली। लेटिन—Bauhinia Vahlli (बौहिनिया वाहलि)

उत्पत्ति स्थान— यह वनस्पति सारे भारतवर्षमें पहाडी भागोंमें होती है। यह एक पराश्रयीलता है। इसका छिलका कुछ खुरदरा और लाल बादामी अथवा काले रंग का होता है। इसके कोमल हिस्से रुएंदार रहते हैं। इसके पत्ते कटे हुए रहते हैं। ये २.५ से ८ सें० मीटर तक लंबे होते हैं। इसका पत्र वृन्त ७.५ से १५ सेंटि मीटर लंबा और मोटा होता है। इसके फूल ३·८ से ५ सें० मीटर तकके आकारके होतेहैं। इसके पापड़े २३ से ३० सें० मीटर तक लंबे और ५ से लगातार ७५ सें० मीटर तक चौडे होते हैं। इनमें ६ से लगाकर १२ तक बीजे होते है। ये चपटे और गहरे बादामी रंगके रहते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

इसके बीज पौष्टिक और कामोत्तेजक गुण वाले होते हैं। इसके पत्ते शान्तिदायक और लुआबदार होते हैं।

क० चौपराके मतानुसार इसके बीज पौष्टिक और कामोद्दीपक होते हैं। इसके पत्ते शांतिदायक और लुआबदार होते हैं।

जवासा

नाम—

संस्कृत—अधिकंटक, अनंत, बहुकंटक, बालपत्रा, दुर्लभा, दीर्घमूला, कच्छूरा, त्रिपर्णिका। विपघ्ना, यवासा, यवसका, कंटकी, गांधारी, गिरिकर्णिका। हिन्दी—जवासा, जुनवासा, यवासा। बंगाल—दुर्लभा, जवासा। बंबई—जवासा। गुजराती—जवासा। मराठी—जवासा, कांटे चुम्बका। सिंध—कशखेदरो, उश्तुरखार। उर्दू—जवासा, फरफीयून। फारसी—खरेखुन, खारेशुतर, उश्तर खार। अङ्गरेजी Camel phorn (केमल फार्न)। लेटिन—Alhagi mawrorum (अलहगी मारोरम)।

वर्णन—

जवासेके क्षुप काँटेदार होते हैं इसमें दूर २ पर बारीक २ पत्ते लगे हुए रहते हैं। इसके फूलोंका रंग ललाई लिये हुए होता है। फलियाँ भी ललाई लिये हुए चमकदार तीखी नोकवाली होती है। इन कलियोंमें १ से लेकर ८ तक बीज निकलते हैं। इस पौधेपर गर्मीके दिनोंमें पत्ते और फूल आते हैं। इसलिए ढोरोंके लिये गर्मीमें यह हरे घासका काम देता है। यह वनस्पति गुजरात, सिंध, उत्तरी हिन्दुस्तान, पंजाब, इत्यादि प्रान्तोंमें नदी, नाले और तालाबोंके किनारेपर बहुत पैदा होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे जवासा स्वादिष्ट, कड़वा, कसैला, शीतल और हलका होता है। यह शांतिदायक पाचक, ज्वर निवारक, पौष्टिक, मृदुविरेचक, मूत्रल तथा वात और कफको नष्ट करता है। शरीरके मोटेपन को भी यह दूर करता है। मस्तिष्ककी पीड़ा, कोढ़, चर्मरोग, वायुनलियोंका प्रदाह, प्यास और नाकसे होनेवाले रक्तस्रावमें भी यह लाभदायक है।

इस वनस्पतिमें कफनाशक, स्वेदजनन, मूत्रल और आनुलोमिक ये चार धर्म रहते हैं। इसका आनुलोमिक धर्म बहुत सौम्य है और मूत्रल धर्म भी बहुत थोड़ा है। सिर्फ इसका कफनाशक धर्म बहुत महत्व पूर्ण और प्रभावशाली है।

दस्ता। मराठी—जस्त। पंजाब—जसद। तेलगू—तेलसत्त। फारसी—रुए तूतिया। अरबी—शबहा। लेटिन— Zincum(झिंकम)।

वर्णन

जस्त यह एक सुप्रसिद्ध धातु है। यह मद्रास बंगाल, राजपूताना, पंजाब आदि कई स्थानोंमें खानोंसे निकलता है। इसका रंग सफेद होता है। इससे पानीकी बेटलियाँ, गिलास, सुराहियाँ, हुक्के, इत्यादि बनाये जाते हैं। यह पानीसे आठ गुना भारी होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे जस्त कडवा, कसैला, शीतल कफ पित्त नाशक, नेत्रोंके लिये लाभदायक और प्रमेह पांडु तथा श्वासको नष्ट करने वाला है।

पुराने घीमें जस्तको घिसकर आँखोंमें लगानेसे आँखों की पित्त सम्बन्धी बीमारियां मिटती हैं। इसकी भस्मको घीमें मिलाकर गर्मीके फोड़े फुन्सियों पर लगाते हैं। बच्चोंके कानोंके पीछे या हाथ पैरों की अंगुलियोंके बीच जो चादी पड़ जाती है उसपर इसका सफेदा बुरबुरानेसे बहुत लाभ होता है। सरसोंके तेलमें जस्तको रगड़कर मलनेसे पित्तसे पैदा हुई सूजन मिट जाती है।

यूनानी मत—यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। इसके बर्तनमें रखी हुई अर्क वगैरह चीजें दूसरी धातुओंके बर्तनों की अपेक्षा कम बिगड़ती है। इसके बर्तनमें खाना खाने या पानी पीनेसे दिल और मेदाको शक्ति मिलती है, इससे दिलकी धड़कन भी दूर होती है। इसका सफेदा बनाकर आँखमें लगानेसे आँखका दुखना मिट जाता है।

जस्तको शुद्ध करने की विधि—जो जस्त भारी, सफेद, चमकदार और दाँतों के समान मोटे रवे वालाहो वही उत्तम समझा जाता है। उसीको खाने और अञ्जनके काममें लेना चाहिये। ऐसे उत्तम जस्त को लेकर पहिले दूसरी धातुओंकी तरह सातश्वार कांजी, गोमूत्र इत्यादि सातों चीजोंमें बुझाले, उसके पश्चात् उसको २१ बार गला २ कर गायके दूधमें बुझाना चाहिये। यह खयाल रखना चाहिये कि ऐसी गली हुई धातुएं दूध, गोमूत्र या पानीमें बुझानेसे एक दम उछलती हैं। इसलिये जिस बर्तनमें उसे बुझाना हो उस बरतनके ऊपर चक्कीका पाट या कोई ऐसा पत्थर रख देना चाहिये जिसके बीचमें छेदहो और उसी छेद की राहसे धातुको उसमें बुझाना चाहिये। इस क्रियाके पश्चात् जस्ता शुद्ध हो जाता है।

जस्तकी भस्म करनेकी विधि—१ सेर शुद्ध किए हुए जस्तेको लोहेकी कढाईमें डालकर "तालादि भस्मकरी" भट्टीके ऊपर तेज आंचसे तपावे और लोहेकी कलछीसे चलाते जावें। जब उसमें आगके जैसा उठने लगे तब उसमें नीमके पत्तोंका स्वरस डाले। जब १ सेर रस उसमें डाल चुके तब रस डालना बन्द करदे और आंच चालू रखे [illegible]

ठंडी करके कपड़ेमें छानले। यदि उसमें कुछ अंश कच्चा नजर आवे तो उसको भी कढ़ाईमें डालकर नीमके रसके साथ पकावें। ऐसा करनेसे सब जस्तकी उत्तम भस्म बन जावेगी। कोई २ वैद्य इस भस्म को घी गुवारके रसमें घोटकर टिकिया बनाकर गजपुटमें फूंक देते हैं। ऐसा करनेसे यह भस्म और भी गुणकारी होजाती है।

इस भस्मका अंजन करनेसे नेत्रोंको बहुत लाभ होता है। आयुर्वेदमें जितने भी नेत्र हितकारी प्रयोग हैं उन सबमें इसको मिलानेसे वे ज्यादा गुणकारी हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त यह भस्म श्वास, खाँसी और कफ रोगोंमें भी बड़ा लाभ करती है।

जस्त भस्मकी दूसरी विधी—१सेर शुद्ध जस्तेके चूर्णमें पावभर शुद्ध गंधक मिलाकर लोहेकी कढ़ाही में डाल दे और उसमें अरंडीका तेल इतना डालें कि जिसमें वह चूर्ण डूब जाय। बादमें उस कढाहीको भट्टी पर रखकर तीव्र आँच दे और चूर्णको लोहेकी कलछीसे चलाते जाँय। जब तेल और गंधक बिल कुल जल जाय और जस्तेकी भस्म होजाय तब कढ़ाही ठंडीकर भस्मको छान ले। उसके बाद उस भस्मको घी गुवारके रसमें घोट कर टिकियाएँ बनाकर सुखा ले और उन टिकियाओं को मिट्टीकी हांडीमें बंद कर उस हांडी पर कपड़ा मिट्टी करके गज पुटमें फूंक दे। जस्तकी उत्तम भस्म तैयार हो जायगी।

मात्रा—जस्त भस्मकी साधारण मात्रा २ रत्तीकी है। इसको पित्तज्वर और रक्तातिसारमें छुहारे और चाँवलके धोवनके साथ, शीतज्वरमें लौंग और अजवायनके साथ तथा अतिसार वमन और जीके मिचलानेमें मिश्री और जीरेके साथ देना चहिये। इस भस्मको पुराने घी के साथ खाने से नेत्रोंकी ज्योति बढ़ती है। पानके साथ खानेसे प्रमेहमें लाभ होता है। पचकोल (पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक और सोंठ) के साथ खानेसे मन्दाग्नि दूर होती है और त्रिगंधक (इलायची, दालचीनी और पत्रज) के साथ खाने से सन्निपात मिटता है। इसको ३ माशे अदरकके रस और ६ माशे शहदके साथ चटानेसे खाँसी और दमा मिटजाता है। चंदनके साथ इसे देनेसे सुजाक मिटता है। गोखरूके शरबतके साथ देनेसे पेशाब साफ होता है। तथा कौंचके बीज और मिश्रीके साथ इसको देनेसे प्रमेह और नपुंसकता नष्ट होती है।

अशुद्ध जस्तेसे होनेवाली हानियाँ—अशुद्ध जस्तेकी भस्म बनाकर सेवन करनेसे प्रमेह, अजीर्ण, भ्रांति, वमन, वातरोग, इत्यादि उपद्रव हो जाते हैं। [illegible] ऐसे विकार पैदा हो जायं उसको २ तोला हरड़ और २ तोला मिश्री मिलाकर ३ दिनतक लेना चाहिये। इससे सब विकार शान्त हो जाते हैं।

जहरत अलमाह

नाम—

[illegible]—[illegible]।

वर्णन—

यह वस्तु खारे पानीकी झीलोंमें पैदा होती है। कोई २ इसे एक रोइदगी बतलाते हैं। जो बंद और रुके हुए पानीपर पैदा होती है। पानीके सूख जानेपर इसमें से शोरेकी तरह एक पदार्थ पाया जाता है जिसका रंग पीला और स्वाद तेज होता है और जिसमें मछली की तरह बास आती है। असली वह होती है जो जैतूनके तेलमें घुलनशील हो। पानीमें घुल जानेवाली असली नहीं होती।

गुण दोष और प्रभाव—

यह बहुत गरम, खुश्क, तेज और चरपरा पदार्थ है। सूजनपर लगानेसे उसको फौरन बिखेर देती है। खराब, सड़े हुए, और फैलनेवाले जख्मोंको फौरन अच्छा करती है। तेलमें मिलाकर बदनपर मलनेसे थकावटको मिटा देती है। इसको बालोंपर लगानेसे बाल पतले पड जाते हैं। बदनपरके फोडे फुन्सियोंके निशान इसके लगानेसे फौरन मिट जाते हैं। ऐसे कुष्ट रोगमें जिसमें बदनका चमड़ा फट फटकर गिरता हो और दर्द होता हो उसमें यह फायदा करती है। इसको २ रत्तीकी मात्रामें शिकंजबीनके साथ पीसकर चाटनेसे मृगी जाती रहती है। आंखमें लगानेसे आँखका जाला कट जाता है, ज्योति तेज होती है और आँखसे पानीका गिरना बंद हो जाता है।

मात्रा—इसकी मात्रा २ रत्ती से १ माशे तक है। ३ माशे की मात्रामें यह प्राणघातक विष हो जाता है।

दर्पनाशक—इसका दर्पनाशक अगर है।

जहरी सोनटक्का

नाम—

बम्बे—जहरी सोनटका, पीलकनेर, पिवलीकनेर। कनाडी—अरसिट। गुजराति—अराना। कोंकणी—कनगिनी। लेटिन—Allamanda Cathartica एलेमेंडा केथेरेटिका।

उत्पत्तिस्थान—यह वनस्पति भारतवर्षके आम बगीचोंमें बोई जाती है।

विवरण—यह एक बढ़दार वृक्ष होता है। इसके पत्ते ३ या ४ के गुच्छेमें रहते हैं। ये बरछी आकार और तीखी नोक वाले होते हैं। इनकी लम्बाई १० सें० मी० और चौडाई २.५ से ४ सें० मीटर तक होती है। इसका ऊपरी हिस्सा चमकीला रहता है। इसके फूल कुछ पीले रहते हैं। इसकी पुष्प कटोरी बरछी आकार और लम्बी नोक वाली होती है। इसका बीज कोष ७ सें० मी० लम्बा होता है।

घिसकर पिलानेसे लगातार वमन होकर जहरका प्रभाव मिट जाता है। प्लेग, हैजा, मलेरिया, माता, इत्यादि रोगोंके हमले जब चल रहे हों उस समय जहर मोहरा ३॥ रत्ती, जहरी टोपरा ३॥ रत्ती, और निर्मली १॥ रत्ती। इन तीनो चीजा को पीसकर गुलाब जलके साथ खिला देनेसे इनमेंसे किसी भी रोगके आक्रमण का भय नही रहता। अगर किसी पर हैजेका आक्रमण होजाय तो उसको यह औषधि दो २ घण्टेके अन्तरसे बराबर दीजावे तो दूसरे उपायोंकी अपेक्षा इससे जल्दी और अच्छा लाभ होता है।

यह औषधि अधिक गरम भी नहीं है और अधिक शीतल भी नहीं है। बल्कि समशीतोष्ण है। इस लिये यह हर प्रकृतिके मनुष्यके काम आ सकती है। फिर भी बालकोंके अजीर्ण, वमन, अतिसार और शोष रोगमें यह विशेष रूपसे लाभदायक है।

देश विदेशके जल और हवाके लगनेसे मनुष्य शरीरमें जो विकृति पैदा हो जाती है और उससे जीर्ण ज्वर, अतिसार, संग्रहणी, सूजन, निर्बलता, इत्यादि उपद्रव पैदा होते हैं उन उपद्रवोंको शान्त करनेमें यह एक प्रभावशाली औषधि है। इसी प्रकार हृदय मस्तिष्क, लीवर और पाचन इन्द्रियके बल देनेमें भी यह आश्चर्य जनक कार्य करती है। इसको २ से ४ रत्ती [illegible] मात्रासे प्रतिदिन [illegible] सेवन करते रहने से यह [illegible] के लिये शरीरकी नींवको मजबूत कर देती है।

[illegible] दूसन, विस्फोटक, वगैरह रोगोंमें इसको [illegible], चंदन [illegible] नीमकी [illegible] के साथ लगानेसे बहुत जल्दी लाभ होता है।

शीतलाकी बीमारीमें जहरमोहरा खताई १ माशा, [illegible] १ माशा, [illegible] १ [illegible] और [illegible] १ माशा इन सब चीजोंको गुलाब, केवड़ा और [illegible] [illegible] [illegible] इनमें [illegible] १ रत्तीकी गोलियाँ बनाकर प्रतिदिन [illegible] [illegible] देनेसे बड़ा लाभ होता है और माताके दाने बिना उपद्रवके निकल आते हैं। [illegible] सेवन कराया जाय तो माता निकलनेका डर भी नहीं रहता।

[illegible]

[illegible]

बाजारके अन्दर नकली जहरमोहरा भी बहुत मिलता है। इस लिये यह वस्तु खरीदते समय इस बातका पूरा ध्यान रखना चाहिये कि असली चीज ही खरीदी जाय।

जाकूट

नाम—

यूनानी—जाकूट।

वर्णन—

यह एक प्रकार की रोहदगी है। इसका स्वाद कुछ खारापन लिये हुए मीठा होता है। इसका आकार प्रकार पालक से कुछ मिलता जुलता होता है।

गुण दोष और प्रभाव—

यह वात और कफ के लिये लाभदायक है। जलोदर, सूजन, कुष्ट, शरीर की जलन, मसाने के रोग और बवासीर में यह मुफीद है। कब्जियत को भी यह दूर करती है। इसका अधिक सेवन करने से जिगर और मेदे को नुकसान पहुँचाता है।

जादा

नाम—

यूनानी—जादा।

वर्णन—

यह एक छोटी जाति का क्षुप होता है। इसकी २ जातियां होती हैं। एक पहाड़ी और दूसरी बस्तानी। पहाड़ी का पेड़ सफेद होता है। इसकी लम्बाई १ बालिश्त भरकी होती है। पत्ते छोटे २ होते हैं जो जमीन पर बिछे हुए रहते हैं। पत्तों के ऊपरी हिस्से पर रूआँ रहता है। किनारों पर बारीक २ कांटे होते हैं। डालियों के सिरों पर घुंडियां रहती हैं। जिन पर बाल की तरह सफेद और बारीक तार लटकता रहता है। इन घुंडियों में बीज भरे हुए रहते हैं। इसके फूल का रंग सफेद और पीलापन लिये हुए होता है। इसमें एक प्रकार की अप्रिय और खराब गन्ध आती है। इसका स्वाद कुछ कड़वा होता है। इसको फारसी में गुलअस्या या गुलअरनद कहते हैं।

इसकी बाकी दूसरी बस्तानी होती है। जो बस्तियों के आसपास गीली जमीनों में पैदा होती है। कुछ

लोगोंके मतमे यह बाल छड़की एक जाति है। कुछ लोग इसको भांगरा बतलाते हैं और कुछ लोगोंके मतसे यह जगली हसराज और जगली धनिये का दूसरा नाम है। इसके पत्ते पहाड़ी जादा के पत्तोंसे बड़े होते हैं और गन्ध भी कम होती है। यह बसन्त ऋतु में पैदा होती है और शरद ऋतु तक रहती हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानी मत से यह दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। यह जहर के प्रभाव को नष्ट करनेवाला है। विरेचक, मूत्रनिस्सारक और मासिक धर्म नियामक है। यह वायुको बिखेरती है, खूनको साफ करती है, स्मरण शक्ति को बढ़ाती है। ताजा जखम पर इसके पत्ते को पीस कर लेप करने से बड़ा फायदा होता है। इसको ३॥ माशा की मात्रा में प्रतिदिन खाने से हर एक बात भूल जाने की आदत छूट जाती है। इसकी राख को सिरके और रोगन जैतून में मिलाकर सिर की गज में लगाने से बहुत फायदा होता है। इसके पत्तोंका रस आँख में लगाने से आंखों की धुन्ध जाती रहती है और ज्योति बढ़ती है। इसके सेवन करनेसे शरीर का दूषित वात और कफ दस्त की राह निकल जाता है।

इसकी बड़ी जाति तिल्ली की सख्त सूजन को मिटाकर कामला और पीलिया को नष्ट करती है। तिल्ली की सूजन पर इसको सिरके में मिलाकर लेप करने से भी लाभ होता है। पेटके कृमि भी इसके खाने से नष्ट हो जाते हैं। सर्दी से पैदा हुआ जलोदर, गर्भाशय की खराबियाँ, मसानेकी पथरी और गृध्रसी वातमें भी यह वनस्पति लाभदायक है। बिच्छूके विष पर इसको ४ माशेकी मात्रामें खिलाने से और पीसकर काटी हुई जगह पर लगा देने से अच्छा फायदा होता है।

मुजिर—इसको अधिक मात्रा में लेने से यह सिर दर्द करती है और सीनेको नुकसान पहुंचाती है।

दर्पनाशक—इसके दर्प को नष्ट करने के लिये धनियाँ और बनफशा मुफीद है।

प्रतिनिधि—इसका प्रतिनिधि पहाड़ी पोदीना और अनार के वृक्षकी छाल है।

मात्रा—इसके पञ्चांगके चूर्ण की मात्रा ४ माशे तक है और काढ़े की मात्रा ८ तोला तक है।

—

जामुन

नाम—

संस्कृत—जम्बू, सुरभिपत्रा, नीलफला, श्यामला, महास्कन्धा, मेघ मेदिनी, राजजम्बू, शुक प्रिया।

हिन्दी—जामुन, जामन, कालाजामन, फलाँदा, फलिन्दा। बंगाल—जामगाछ, छोटाजाम, कालाजाम। बंबई—जांभूल, जाँबू, जाँबूडा। गुजरात—जाम, जाँमुडी, जाम्बो। आसाम—जाँबू। मैसूर—नरेनी। कनाड़ी—जामूनरेली। पोरबन्दर—जाँबू। तामील—अरुगदम्, फोटेनरुम। तेलगू—नेरुदू। उर्दू—जामन, फलेंदा। लेटिन—Eugenia Jambolana (यूजेनिया जाम्बोलेना)।

वर्णन—

जामुनके वृक्ष हिन्दुस्तानमें प्रायः सब दूर पैदा होते है। इसकी ३।४ जातियाँ होती है। एक जाति नदीके किनारे होती है। उसके पत्ते कनरके पत्तों की तरह और फल बहुत छोटे होते हैं। उसको जल जामुन कहते हैं। दूसरी जातिके पत्ते आमके पत्तोंकी तरह और फल मध्यम कदके होते हैं इस जातिको जामुन कहते हैं। तीसरी जातिके वृक्ष बहुत ऊंचे और फैले हुए होते हैं। इनके पत्ते पीपल के पत्तों की तरह बड़े, चिकने और चमकदार होते है। इसके फल भी २ से २॥ इंच तक लम्बे और १ से १॥ इंच तक मोटे होते हैं। इस जातिको रायजामुन कहते है। यद्यपि इन तीनों जातियोंके गुण धर्म मिलते हुए है। फिर भी औषधि प्रयोगमें रायजामुनकी जाति विशेष गुणकारी होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे जामुनकी छाल कसेली, मलरोधक, मधुर, पाचक, रूक्ष, रुचिकारक तथा पित्त और दाहको दूर करने वाली होती है। इसके फल कसेले, मधुर,शीतल, रुचिकारक, रूखे, मलरोधक, वात वर्धक और कफ, पित्त तथा आफरेको दूर करने वाले होते हैं।

जामुनकी गुठली मधुर, मलरोधक, और मधुमेहको नष्ट करने वाली होती है। इसके अकुर शीतल, रूखे, ग्राही, और आफरेको पैदा करने वाले होते हैं।

राय जामुन—मधुर, गरम, कसैली, स्वरशोधक, मलरोधक तथा श्वास, श्रम, मुखकी जड़ता अतिसार, कफ और खाँसी को दूर करती है। इसका फल रुचिकारक, मधुर, स्तम्भक, भारी, दोष नाशक और स्वादिष्ट होता है।

जल जामुन—कसेली, शीतल, कड़वी, भारी, पाकमें मधुर, पुष्टि कारक तथा दाह, अतिसार, रुधिर विकार, कफ, पित्त और भ्रमको दूर करनेवाली होती है।

यूनानीमत—यूनानीमत से इसका फल तूरा, कसेला, मीठा और पौष्टिक होता है यह यकृत को पुष्ट करता है, दाँतों और मसूड़ों को मजबूत करता है, रक्तवर्द्धक है, पित्तके अतिसार को दूर करता है। इसके पत्तों को राख दाँत और मसूड़ों को मजबूत करने के काममें ली जाती है। स्वर भग रोग में और गले के छालों में इसके पानी से कुल्ले किये जाते हैं। सिरके दर्द में इसका रस लगाने के काम में लिया जाता है। इसके फलका सिरका पौष्टिक, सकोचक, पेटके आफरे को दूर करनेवाला और शान्ति दायक होता है। इसका बीज संकोचक होता है।

दस्तूर अल-निब्र नामक ग्रथमें लिखा है कि जामुन आवाजको साफ करता है। थकावट, कफके दस्त, दमा, खांसी, मुंहकी ग्लानि, गलेकी बीमारियां और मेदेके कीड़ोंको नष्ट करता है।

यह दिलकी धड़कनको मिटाता है, रक्त विकारको दूर करता है, इसके खानेसे फोड़े फुन्सियोंका होना बंद हो जाता है। इसके शरबतसे वमन, जी मिचलाना, खूनी दस्त और बवासीरमें लाभ होता है। मधुमेहके रोगमें जामुनके सूखे बीजोंका चूर्ण २॥ रत्तीसे १ माशेतककी मात्रामें दिनमें ३ बार लेनेसे पेशाबके साथ शक्करका जाना बन्द हो जाता है। ऐसा देखा गया है कि इसके बीजोंके चूर्णको ५ ग्रेनकी मात्रामें दिनमें ३ बार देनेसे २४ घंटेके अन्दर ३।४ सेर पेशाब कम होने लगता है और पेशाबकी ग्रेविटी भी कम हो जाती है। जामुनके १ तोला मूलको साफ करके पावभर पानीमें पीसकर २ तोले मिश्री डालकर पीनेसे भी मधुमेहमें लाभ होता है। जामुनके २॥ पत्ते पानीमें पीसकर जहरीले जानवरके काटे हुए आदमीको पिलानेसे शांति मिलती है। जामुनके पत्ते, काली मिर्च और गुलदाउदी के फूल (अगरफूल न मिले तो पत्ते) तीनों को बराबर वजन लेकर पानी में पीसकर मे तीजरा और पानी मराके बीमार को पिलाने से उसकी बेचैनी मिट जाती है और शान्ति मिलती है।

जामुनके नरम और ताजा पत्तों को पानी में पीसकर उनसे कुल्ले करनेसे मुंह के खराबसे खराब छाले भी मिट जाते हैं। १ तोला जामुनके पत्तों को पावभर गायके दूधमें घोटकर ७ दिन तक पीनेसे बवासीरसे गिरने वाला खून बन्द हो जाता है। १ तोला जामुनके पत्तों को पीसकर पीने से अफीम का जहर उतर जाता है।

जामुनके बीज कब्जियत पैदा करते हैं। इसके बीजोंको आमकी गुठली और काली हरड के साथ बराबर वजन लेकर भूनकर पीसकर खाने से पुराने दस्त बंद हो जाते हैं। इसके बीजों के चूर्ण में बराबर शक्कर मिलाकर लेनेसे पेट से खून का आना बन्द हो जाता है। तग जूतोंसे अगर किसीके पाव में जखम होजाय तो जामुन की गुठली को पानीमें पीसकर लगानेसे अच्छा हो जाता है।

कुचलेके जहर को उतारने के लिए इसकी सूखी गुठली का चूर्ण १० माशे की मात्रामें देना चाहिये। तिल्ली का वरम बिखेरने के लिए इसका रस १ तोले की मात्रामें देना चाहिये। अशुद्ध पारा या रस कपूर के खानेसे किसी का मुंह आजाय तो इसकी छाल के काढ़े से कुल्लिया करने से अच्छा होजाता है। पथरी के रोगमें पकी हुई जामुनका फल खिलानेसे लाभ होता है।

जामुन का सिरका— पके हुए जामुन के सिरके से पेटमें होनेवाला वायु का दर्द मिट जाता है। तिल्ली के बीमार को पकी हुई जामुन का सिरका ३ माशे से ७॥ माशे की मात्रामें देनेसे बढ़ीहुई तिल्ली आराम हो जाती है।

मधुमेह रोग और जामुन—

आधुनिक खोज के अन्दर इस वनस्पति ने मधुमेह रोग को नष्ट करने के अन्दर तथा

पेशाब के साथ जानेवाली शक्कर की मिकदार को कम करनेके सम्बन्ध में बहुत ख्याति प्राप्त की है। सबसे पहले डाक्टर सी० ग्रेसरने इस विषय में कई परीक्षण किये और उन्होंने इसका वर्णन भी दिया है। उन्होंने सबसे पहले कुत्तोंके अन्दर कृत्रिम रीति से मधुमेह रोगको पैदा कर उसको नष्ट करनेके लिए अनेक प्रयोग किये और अन्तमें अत्यन्त संतोषके साथ में उन्होंने यह सिद्ध किया कि जामुन के फलों की गुठली पेशाबके अन्दर जानेवाली शक्कर को थोड़े समय में ही कम कर डालती है।

इसके पश्चात् डॉक्टर आर० एल० दत्तने उग्र मधुमेहके २ केसोंमें इसकी गुठलीको देकर यह बतलाया कि इसकी गुठलीको देनेसे बार २ उतरने वाला पेशाब और उसमें जानेवाली शक्करकी मिकदार सिर्फ १ सप्ताहकी मियादमें ही कम होगई और रोगी स्वस्थ मनुष्यकी तरह होगये।

इसे शिअलस् ऑफ माडर्न ट्रीटमेंट आफ डिसीजेस नामक ग्रन्थमें लिखा है कि जामुनके फलोंकी मग़ज मधुमेहके रोगमें औषधिकी तरह दी जाती है और इस रोगमें सरेमकी तरह चिपकनेवाले पदार्थकी उत्पत्ति और उसको शक्करके रूपमें परिवर्तित होने से यह रोकती है। इस कार्यके लिए इसकी गुठलीसे बनाया हुआ एक्स्ट्रैक्ट जाबोलिन लिक्विड विशेष अनुकूल पडता है। इसकी मात्रा आधे ड्रामसे २ ड्राम तककी होती है और इसकी गुठलीके चूर्णकी मात्रा २॥ रत्ती से १५ रत्ती तककी होती है।

बबईके इण्डियन मेडिकल डिपार्टमेंटके सर्जन डी०एन० पारिखका मत है कि इसके फलोंकी सूखी गुठलियोंका चूर्ण अगर मधुमेह रोगमें दिया जाय तो वह पेशाबमें जानेवाली शक्करके परिमाण को बहुत शीघ्रतासे रोक देता है।

गुजरातीके सुप्रसिद्ध मासिकपत्र वैद्य कल्पतरुके सन १९३२ के अगस्त मासके अंकमें वैद्यराज बलवंतरायने मधुप्रमेहके ऊपर अपने अनुभवसे एक लेख लिखा था उसमें उन्होंने बतलायाथा कि मधुप्रमेह अथवा पेशाबके साथ शक्कर जानेका रोग अक्सर हमेशा एक ही स्थानपर बैठे रहनेवाले कितने ही लोगों को लगभग ४० वर्षकी उमरके पश्चात् होता है। इस रोगसे धीरे धीरे रक्त दूषित होता है, शक्ति घटती है, पाचन क्रिया विपरीत हो जाती है। शरीरके अवयव बराबर काम नहीं करते, जिससे शरीर शिथिल होजाता है। इस रोगसे पीडित बहुतसे रोगी डॉक्टरोंकी औषधियाँ करके, वैद्योंकी भस्में खाकर तथा बहु मूल्य पेटेंट दवाइयोंसे निराश होकर हमारे परिचयमें आये हैं। ऐसे रोगियोंके ऊपर अनेक प्रकारके प्रयोगोंको अजमानेके पश्चात् एक सादा किन्तु प्रभावशाली प्रयोग हमारे अनुभवमें आया है। जो वैद्य वसन्त कुसुमाकर और स्वर्ण वगके समान मूल्यवान औषधियों को देनेके पश्चात् भी अपने रोगियोंको आराम न कर सके हों और जो डॉक्टर इन्स्यूलीन और ट्राइप्सोजनके समान औषधियों को देनेके पश्चात् भी पूर्ण सफलता प्राप्त न कर सके हों उनको इस सादे प्रयोगकी परीक्षा अपने रोगियोंपर करनेकी मैं सूचना देता हूं। वह प्रयोग इस प्रकार है।

बड़े राय [illegible]मुन के वृक्षकी छालको लाकर उनको सुखाकर, जला डालना चाहिये। जिससे सफेद भूरे रंगकी भस्म तैय्यार होगी। इनको खरलमें घोटकर कपडेमें छानकर, शीशीमें भर लेना चाहिये।

मधुमेह रोगके प्रारभमें रोगीके पेशाबका विश्लेषण करने पर उसकी स्पेसिफिक ग्रेव्टिी १०२५ से लेकर १०३५ तक रहती है। इस समय १ औंस पेशाबमें लगभग ५ से १० रत्तीतक शक्करका तत्व जाता है। ज्यों २ रोग पुराना होता है त्यों २ पेशाबकी ग्रेविटी बढ़कर १०५० तक चली जाती है। इस समय १ औंस पेशाबमें २५ रत्ती तक शक्कर जाने लगती है और इसके सिवाय अल्ब्यूमेन और दूसरे कई जीवन पोषक तत्व पेशाबके साथ बहने लगते हैं।

रोगीके पेशाबकी परीक्षा करनेपर जिनके पेशाबकी ग्रेविटी १०२० से १०३० तक हो उनको इस भस्ममें से १० रत्ती भस्म १ औंस पानीके साथ सवेरे भूखे पेट तथा १० रत्ती भस्म दुपहर और शामको भोजनके १ घंटे पश्चात् देना चाहिये और तीन २ चार२ दिनके अन्तरसे पेशाबकी ग्रेविटी और शक्कर के परिमाणको जाँचते रहना चाहिये। यह विश्वास किया जा सकता है कि इस प्रयोगसे अल्पकाल [illegible] रोग ११ महीनेमें चला जाता है।

अगर रोगियों की स्पेसिफिक ग्रेविटी १०३५ से १०५० तक हो [illegible] १० से [illegible] ग्रेन तक की मात्रामें दिनमें तीन बार देना चाहिये [illegible] उपद्रव मालूम [illegible] [illegible]

मधुप्रमेहके रोगियोंके लिए औषधि प्रयोगके अलावा [illegible] आवश्यक है [illegible] कर लेना चाहिये। [illegible] [illegible] नहीं डालना चाहिये, इस अरसेमें [illegible] चावल इत्यादि [illegible]

[illegible]

महर्षि चरकका मत है कि जामुनके वृक्षकी पीसी हुई गुठलियाँ मधुमेह रोगमें देनेसे काफी फायदा होता है।

डायमॉकके मतानुसार मधुमेह रोगमें जामुनकी क्रिया किस प्रकार होती है यह अभी तक पूरी तरहसे समझमें नहीं आया।

के० एल० डे के मतानुसार जामुनकी गुठलीने मधुमेह रोग को मिटानेमें बडी प्रशंसा प्राप्तकी है। यह प्रत्येक अनाजमें पाये जाने वाले श्वेतसार और स्टार्चको शक्करमें परिणित नहीं होने देती। लेकिन अभी तक इसकी जितनी तारीफ है वह पूरी तरह सिद्ध नहीं हो सकी है।

जामुन् और यकृत, तिल्ली तथा पेटके रोग—

मोरके पंखोंमें जिस प्रकार ताँबेका अश रहता है, पीरलके झाडमें जिस प्रकार सीसेका अश पाया जाता है, नीमके अन्दर जिस प्रकार ताँबा और गन्धक मिलता है, अपामार्गमें जिस प्रकार तांबेका भाग पाया जाता है उसी प्रकार जामुनके अन्दर लोहेका अंश पाया जाता है जामुनके अन्दर रहने वाला लोह सौम्य होनेसे दूसरे लोहेकी तरह उससे किसी प्रकारका अनिष्ट होनेका भय नहीं रहता और वह रुधिरकी अशुद्धतासे होने वाले तिल्ली और यकृतकी वृद्धिमें और दूसरे उदर रोगोंमें बहुत अच्छा लाभ बतलाता है।

डॉक्टर नारायन मिश्रका कथन है कि तिल्ली और यकृतकी वृद्धिमें जामुनका सिरका देनेसे बहुत जल्दी लाभ होता है। इसके पके हुए फलका रस अग्निवर्धक, मूत्रल और शांतिदायक होता है। इसके पत्ते, बीज और जड संकोचक गुण वाले होते हैं।

चक्रदत्तका मत है कि बच्चोंके पुराने अग्नि मांद्य और अतिसारमें इसकी छालका ताज़ारस बकरी के दूधके साथ देनेसे बड़ा लाभ होता है।

सिविल सर्जन एन्सली का कथन है कि इसकी अन्तर छालका काढा मरोड़ी और अतिसारके रोगमें उपयोगमें लिया जाता है।

सर्जन डब्ल्यू० एफ० थाम्सनका कथनहै कि जामुनके बीजोंके चूर्णमें जहरी कुचलेके जहरको नष्ट करनेकी अद्भुत शक्ति पाई जाती है। इस चूर्णको ६ माशाकी मात्रामें लेनेसे कुचले का जहर चाहे जितना चढ गया हो, एक दम उतर जाता है।

सिविल सर्जन बांकेबिहारी गुप्त का मत है कि लम्बे समय तक पारे का सेवन करनेसे अथवा दूसरे किसी कारण से दांतोंके मसूढ़े सूज गये हों, उनमें बहुत वेदना होती हो और बहुत लार बहती हो तो इसकी छाल के काढे से कुल्ले करनेसे बडा सन्तोष जनक परिणाम नजर आता है।

पं० शालिग्राम शर्मा का कथन है कि जामुनके फल की मगज का तेल एक २ बूंद सवेरे शाम

कानमें डालनेसे कान का बहना बन्द होजाता है। इसकी मगज का चूर्ण शहदमें घोटकर तीन २ माशे की गोलियां बनाकर प्रतिदिन सवेरे शाम एक २ गोली खानेसे और उस गोली को शहदमें घिसकर आंखों में आंजनेसे मोतियाबिद का नया रोग मिट जाता है।

उपयोग—

आमातिसार— इसकी छालके चूर्ण की फक्की देनेसे आमातिसार मिटता है।

(२)—इसका ताजा रस बकरी के दूधके साथ पिलाने बच्चों का अतिसार मिटता है।

(३)—इसकी गुठली और आम की गुठली के चूर्ण की फक्की देनेसे आमातिसार मिटता है।

बवासीर— इसकी कोंपलों के २ तोले रस में थोडीसी शक्कर मिलाकर पीनेसे बवासीरसे बहने वाला खून बन्द हो जाता है।

मधुमेह— इसकी गुठली के चूर्ण को सेवन करनेसे मधुमेह रोग मिटता है।

बनावटें—

डायाबिटीज मिक्श्चर—एक्स्ट्रेक्ट जाम्बुलेनें लिक्विड १ ड्राम, ग्लेसरीन सिल्सेरी फास्फेट १ ड्राम इनफ्यूजन जेन्शन १ औंस एलीक्सीर केसिया फोमसिस [illegible] ग्रेन। इन सब औषधियों को मिलाकर इनके तीन हिस्से कर दिनमें ३ बार लेना चाहिये। इससे मधुमेह रोग में बहुत जल्दी लाभ होता है।

तिल्ली रोग नाशक सिरका— शुद्ध आंवलासार गन्धक ७ तोला, नौसादर १ तोला, कलमी शोरा १ तोला, हीराकसी ३ माशे, कुनैन ६ माशे। इन सब चीजों को पीसकर एक शीशी में भर देना चाहिये और उस शीशीमें जामुन के पके हुए फलों का रस भर करके शीशी का मुंह मजबूत डाट से बन्द कर देना चाहिये और उस डाट के ऊपर भीगी हुई चिकनी मिट्टी का लेप करके ४० दिन तक धूपमें रखना चाहिये। उसके बाद उस शीशी का डाट खोलकर काम में लेना चाहिये। इस औषधि में से प्रतिदिन सवेरे शाम २० से ४० बूंद तक औषधि १ औंस पानी के साथ मिलाकर देनेसे बढ़ीहुई तिल्ली का रोग चमत्कारिक ढंगसे आराम हो जाता है। यह प्रयोग [illegible] तब घी का सेवन अधिक मात्रामें करना चाहिये और तेल मिरच, खटाई, गुड़ इमली, बैंगन वगैरह बिलकुल त्याग कर देना चाहिये।

(२)—कच्चे पके हुए जामुनका रस निकालकर उस रसमें [illegible] सेंधा निमक डालकर एक मजबूत डाट वाली शीशीमें बन्द करके ४० दिन तक धूप में रखना चाहिये। इस औषधिमेंसे एक दिनके अन्तरसे आधा चम्मच औषधि देनेसे तिल्ली और जिगरके रोग नष्ट हो जाते हैं।

महर्षि चरकका मत है कि जामुनके वृक्षकी पीसी हुई गुठलियाँ मधुमेह रोगमें देनेसे काफी फायदा होता है।

डायमाँकके मतानुसार मधुमेह रोगमें जामुनकी क्रिया किस प्रकार होती है यह अभी तक पूरी तरहसे समझमें नहीं आया।

के० एल० डे के मतानुसार जामुनकी गुठलीने मधुमेह रोग को मिटानेमें बडी प्रशंसा प्राप्तकी है। यह प्रत्येक अनाजमें पाये जाने वाले श्वेतसार और स्टार्चको शक्करमें परिणित नहीं होने देती। लेकिन अभी तक इसकी जितनी तारीफ है वह पूरी तरह सिद्ध नहीं हो सकी है।

जामुन और यकृत, तिल्ली तथा पेटके रोग—

मोरके पंखोंमें जिस प्रकार ताँबेका अंश रहता है, पीपलके झाडमें जिस प्रकार सीसेका अंश पाया जाता है, नीमके अन्दर जिस प्रकार ताँबा और गन्धक मिलता है, अपामार्गमें जिस प्रकार ताँबेका भाग पाया जाता है उसी प्रकार जामुनके अन्दर लोहेका अंश पाया जाता है जामुनके अन्दर रहने वाला लोह सौम्य होनेसे दूसरे लोहेकी तरह उससे किसी प्रकारका अनिष्ट होनेका भय नहीं रहता और वह रुधिरकी अशुद्धतासे होने वाले तिल्ली और यकृतकी वृद्धिमें और दूसरे उदर रोगोंमें बहुत अच्छा लाभ बतलाता है।

डॉक्टर नारायन मिश्रका कथन है कि तिल्ली और यकृतकी वृद्धिमें जामुनका सिरका देनेसे बहुत जल्दी लाभ होता है। इसके पके हुए फलका रस अग्निवर्धक, मूत्रल और शांतिदायक होता है। इसके पत्ते, बीज और जड़ संकोचक गुण वाले होते हैं।

चक्रदत्तका मत है कि बच्चोंके पुराने अग्नि मांद्य और अतिसारमें इसकी छालका ताजा रस बकरी के दूधके साथ देनेसे बड़ा लाभ होता है।

सिविल सर्जन एन्सली का कथन है कि इसकी अन्तर छालका काढा मरोड़ी और अतिसारके रोगमें उपयोगमें लिया जाता है।

सर्जन डब्ल्यू० एफ० थाम्सनका कथन है कि जामुनके बीजोंके चूर्णमें जहरी कुचलेके जहरको नष्ट करनेकी अद्भुत शक्ति पाई जाती है। इस चूर्णको ६ माशाकी मात्रामें लेनेसे कुचले का जहर चाहे जितना चढ़ गया हो, एक दम उतर जाता है।

सिविल सर्जन बांकेबिहारी गुप्त का मत है कि लम्बे समय तक पारे का सेवन करनेसे अथवा दूसरे किसी कारण से दांतोंके मसूढ़े सूज गये हों, उनमें बहुत वेदना होती हो और बहुत लार बहती हो तो इसकी छाल के काढ़े से कुल्ले करनेसे बड़ा सन्तोष जनक परिणाम नजर आता है।

पं० शालिग्राम शर्मा का कथन है कि जामुनके फल की मगज का तेल एक २ बूंद सवेरे शाम

कानमें डालनेसे कान का बहना बन्द होजाता है। इसकी मगज का चूर्ण शहदमें घोंटकर तीन २ माशे की गोलियां बनाकर प्रतिदिन सवेरे शाम एक २ गोली खानेसे और उस गोली को शहदमें घिसकर आंखों में आंजनेसे मोतियाबिंद का नया रोग मिट जाता है।

उपयोग—

आमातिसार— इसकी छालके चूर्ण की फक्की देनेसे आमातिसार मिटता है।

(२)—इसका ताजा रस बकरी के दूधके साथ पिलाने बच्चों का अतिसार मिटता है।

(३)—इसकी गुठली और आम की गुठली के चूर्ण की फक्की देनेसे आमातिसार मिटता है।

बवासीर— इसकी कोंपलों के २ तोले रस में थोड़ीसी शक्कर मिलाकर पीनेसे बवासीरसे बहने वाला खून बन्द हो जाता है।

मधुमेह— इसकी गुठली के चूर्ण को सेवन करनेसे मधुमेह रोग मिटता है।

बनावटें—

डायबिटीज मिक्श्चर—एक्स्ट्रेक्ट जाम्बुलीनी लिक्विड १ ड्राम, [illegible] इनफ्यूजन जेन्शन १ औंस ग्लीसरीन [illegible] । इन सब औषधियों को मिलाकर इसका तीन हिस्से कर दिनमें ३ बार लेना चाहिये। इससे मधुमेह रोग में बहुत जल्दी लाभ होता है।

तिल्ली रोग नाशक मिश्रण— शुद्ध आंवलासार [illegible], [illegible] १ तोला [illegible] १ तोला, हराकसीस ३ माशे, [illegible] ६ माशे। इन सब [illegible] [illegible] चाहिये और उस शीशीमें जामुन के पके हुए पत्तों का रस [illegible] [illegible] में बन्द कर देना चाहिये और उस [illegible] [illegible] धूपमें रखना चाहिये। इसके बाद [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कर देना चाहिये।

(२)—[illegible]

[illegible] है।

जाँबवारिष्ट—जामुनकी अंतर छाल ८० तोला, जामुनके हरे पत्ते ८० तोला, जामुनके फल ८० तोला, जामुनकी गुठली ८० तोला। इन सब चीजोंको लेकर, कूटकर १२८ सेर पानीमें औटाना चाहिये। जब १६ सेर पानी रहजाय तब उतार कर छान लेना चाहिये। इस क्वाथमें जामुनके फलों का रस ८० तोला, धावड़ीके फूलोंका चूर्ण ४० तोला, नाग केशरका चूर्ण २० तोला और शहद १० तोला मिलाकर चीनी मिट्टीकी बरनियोंमें भरकर उनका मुँह बन्द कर एक महिने तक पड़ा रखना चाहिये। यह औषधि प्रति दिन सबेरे शाम २ से ४ तोले तक की मात्रामें दूने पानीके साथ मिलाकरके पीनेसे मधुप्रमेह, रक्त प्रदर, खूनी बवासीर, रक्तातिसार, मूत्रदाह, उदर रोग और पित्त विकारोंको दूर करती है।

जामुनका अर्क—गजवेलका चूर्ण २० तोला लेकर लोहेकी कड़ाईमें डालकर उसको हलकी आँच पर चढ़ाना चाहिये। उसके पश्चात् उसमें गन्धकका तेजाब २० तोला डालकर लोहेके खुरपेसे अच्छी तरह मिला देना चाहिये। जब वह तेजाब सूख जाय तब उसमें २ सेर नीबूका रस डालकर सुखा देना चाहिये। उसके बाद फिर २० तोला गंधकका तेजाब डालना चाहिये। जब तेजाब जल जाय और धुआँ निकलना बंद हो जाय तब उस कढ़ाहीको नीचे उतार लेना चाहिये और ठंडी होनेपर उसमें जामुनका रस ८ सेर डालकर आठ दिनतक उस कढाहीको वैसे ही धूपमें रख देना चाहिये और दिन में २।३ बार खुरपेसे हिलाते रहना चाहिये। आठ दिनके पश्चात् उसमें ४ तोला चोबचीनी, ४ तोला उन्नाब, ४ तोला कबाब चीनी, २ तोला बंशलोचन, २ तोला इलायची, २ तोला बनफशा, ४ तोला कासनी, ४ तोला तज, ४ तोला मकोय, ५ तोला सफेद चन्दन, ५ तोला लाल चंदन, ५ तोला दारू हलदी, ८ तोला चिरा-यता, ८ तोला शीशमका बुरादा ८ तोला आबनूसका बुरादा, ४ तोला कासनीकी जड, ४ तोला काली मिरच, २ तोला कतीरा, १२ तोला पित्त पापडा, ४ तोला सरफोंका, ४ तोला हरड, ४ तोला बेहड़ा, १२ तोला गोरखमुंडी, ६ तोला अमर बेल, ६ तोला गिलोय, ६ तोला जवासा, १० तोला नीम के फूल, ८ तोला चित्रककी जड़, ६ तोला नीमकी निंबोली, ६ तोला अनंतमूल, १० तोला अजवायन, १० तोला मुनक्का, ४ तोला अञ्जीर, ८ तोला हिमज, ५ तोला आँवला, ५ तोला खारक, ५ तोला गूदी, ४ तोला निसोथ इन सब चीजोंको कूटकर डाल देना चाहिये और ऊपरसे १५ सेर कुएं का जल डालना चाहिये। तीनदिनतक इन सबको पडे रहने देना चाहिये। उसके पश्चात् भबका या अर्क निकालनेके यन्त्रसे इनका अर्क खींच लेना चाहिये। इस अर्कको २५ से ३० बूंदतककी मात्रामें २ तोले गुलाबजलके साथ सबेरे शाम पीना चाहिये तथा तेल, खटाई, कुष्माण्ड, उडद, इत्यादि चीजोंसे परहेज करना चाहिये। ४० दिनतक इस प्रकार इस औषधिका सेवन करनेसे धातुकी निर्बलता दूर होती है। चेहरेपर गुलाबी आभा आ जाती है। जठराग्नि बहुत प्रबल हो जाती है। यकृत और तिल्लीकी खराबी, पांडु, कामला, जीर्ण ज्वर, जलोदर, मधुमेह तथा वृद्धावस्थासे होनेवाली कमजोरियाँ नष्ट हो जाती है।

(जंगलनी जडी बूटी)

रासायनिक विश्लेषण—

इसके बीजोंके अन्दर जम्बोलिन नामक ग्लुकोसाइड पाया जाता है। यह तत्व स्टार्चको शक्करके रूपमें बदलनेमें रुकावट डालता है। इसके अतिरिक्त इसमें क्लोरोफिल, चर्बी, रेजिन, एलब्यूमिन, गेलिक एसिड और कई रंगदार पदार्थ पाये जाते हैं। इसमें उड़नशील तेल भी होता है।

मुजिर-इसका पका हुआ फल अधिक खानेसे मेदे और सीनेको नुकसान पहुंचाता है, देरसे हजम होता है, कफ बढ़ाता है, फेंफड़ेको नुकसान पहुँचाता है और उसमें वायु पैदा करता है। इसको ज्यादा खानेसे बहुधा तहमीस्का मर्ज हो जाता है। इसको अधिक खानेसे बुखार भी आने लगता है। इसका कच्चा फल आतोंमें छिलाव पैदा करता है।

दर्पनाशक—इसके दर्पको नाश करनेके लिये आँवला, अजवायन और सोंठ प्रधान हैं। जामुन में नमक मिलाकर खानेसे भी उसका दर्प नाश हो जाता है।

मात्रा—इसकी गुठलीके चूर्णकी मात्रा ३ रत्ती से १५ रत्ती तक और इसके [illegible] मात्रा भी १० रत्तीसे १५ रत्ती तक है।
[illegible]दायक है।

जांबू (इरुल)

नाम —

संस्कृत—पान पाकुली। हिन्दी—[illegible]। [illegible] [illegible] Xy[illegible] Dolabriformis ([illegible])

वर्णन—

[illegible]

गुण दोष और प्रभाव—

कर्नल चोपराके मतानुसार इसकी छालका काढा कृमि, कोढ़, वमन, अतिसार, सुजाक और व्रणमें उपयोगी माना जाता है। इसके बीजोंका तेल सन्धिवात, बवासीर और कोढ़ में लाभ दायक है।

जामू

नाम—

तेलगू—जामू, जॉबू, दब्बू जॉबू। लेटिन—Typha Angustata (टायफा अगुस्टेटा)।

वर्णन—

यह वनस्पति प्रायः सारे भारतवर्षमें पैदा होती है। इसके पौधे का तना १.५ से २ मीटर तक ऊंचा होता है। इसमें नर पुष्प और नारी पुष्प दोनों लगते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

इस वनस्पतिका पाताली धड़ सकोचक और मूत्रल होता है।

जायफल

नाम—

संस्कृत—जातिफल, जाति, जातिशा, जायफल, सगा, कोषा, कोषक, मधुशौन्दा, मालतीफला, राजभोग्या, सुमनफल, शालुका, इत्यादि। हिन्दी—जायफल। बंगाल—जायफल। गुजराती—जायफल। करनाटक—जायफल। तेलगू—जाजिकाया, जादिफला। तामील—अदि परभम्, कोसम्, सालुगमो। सीलोन—सादिकइ। अरबी—जोजऊलतिब, जौजवावा। कनाड़ी—जाजि। फारसी—जोजबोाय। लेटिन—Myristica Fragrans (मायरिस्टिका फ्रेगरेन्स)।

वर्णन—

जायफलका वृक्ष जावा, मलाया प्रायः द्वीप, और मलायाद्वीपमें पैदा होता है। यह एक बड़ी जातिका वृक्ष है। इसकी शाखाएँ नाजुक रहती हैं। इसका फल लम्बगोल होता है। इसकी छालके भीतर एक लाल गुच्छा होता है। जिसको जायपत्री कहते हैं।

दर्पनाशक—इसके दर्पको नष्ट करनेके लिये धनियाँ, चंदन और बनफशा देना चाहिये।

मात्रा—इसके तेलकी मात्रा १ बूंदसे ३ बूंद तक है और इसकी मात्रा १ माशे तक है।

उपयोगः—

मन्दाग्नि—जायफल के चूर्ण को शहद के साथ देने से मन्दाग्नि मिटती है और हृदय को बल मिलता है।

मुँह के छाले—ताजे जायफल के रसको पानी में मिलाकर कुल्ले करने से मुँह के छाले मिटते हैं।

त्वचा की शून्यता—त्वचा की शून्यता मिटाकर उत्तेजना पैदा करने के लिये जायफल के उड़नशील तेलकी मालिश करना चाहिये।

अतिसार—४ रत्ती से १ माशा तक जायफल खिलाने से मन्दाग्नि, आफरा, शूल और अतिसार मिटता है।

विशूचिका (हैजा)—जायफल को ठंडे पानी में घिसकर पिलाने से हैजे के रोगी की प्यास मिटती है।

अतिसार—बड़े जायफल में एक छोटा छेद करके उस में अफीम भरकर उस छेदको बुरादे से बन्द कर उसपर गीला आटा लपेट कर भूमल में दाब देना चाहिये। उसके पश्चात् उसका आटा हटाकर उसे पीसकर गोलियाँ बना लें। उन गोलियों को २ रत्ती से ३ रत्ती तक की मात्रा में देने से अतिसार मिटता है।

कर्ण मूलकी सूजन—जायफल को पीसकर कानके पीछे लेप करने से कर्णमूलकी गठान बिखर जाती है।

विशूचिका (हैजे) के बॉयँठे—जायफल को तेल में घिसकर मालिश करने से विशूचिकाके बायंठे मिटते हैं।

जी मिचलाना—जायफल को ठण्डे पानी में घिसकर पिलाने से जीका मिचलाना बन्द होता है।

बनावटें—

जाति फलादिवटी—जायफल ६ माशे, छुहारा ६ माशे, और शुद्ध अफीम ६ माशे। इन तीनों को खरल में डालकर नागरवेल के पान के रसके साथ खूब घोटना चाहिये। घुटजाने पर रत्ती २ भरकी गोलियाँ बना लेनी चाहिये। इनमें से एक २ गोली दिन में २ ३ बार मट्ठे के साथ लेने से भयंकर अतिसार भी ७ दिन में आराम हो जाता है।

स्तम्भन योग—एक बड़ा जायफल जो ७ माशेसे कम न हो लेकर खोखला (पोला) करके उसके अन्दर १॥ माशे अफीम भरदे। फिर उसके मुँहको आटेसे बन्द करके ऊपरसे आटा लगाकर गोली बनाकर आगपर सेके। जब सुर्ख होजाय तब ऊपरसे आटा छुडाकर सारे जायफल को पीसकर शहदमें मिलालें और झरबेरी के बेरके बराबर गोलियाँ बनाले। इनमें से १ गोली स्त्री सम्भोगके पूर्व दूधके साथ लेनेसे बहुत स्तम्भन होता है।

जाति फलादि चूर्ण—जायफल, लौंग, इलायची, काली मिर्च, तेजपात, दालचीनी, नागकेशर, वंशलोचन, कपूर, सफेद चन्दन, काले तिल, तगर, हरड, तालीस पत्र, आँवला, पीपल, कलौंजी, स्याह जीरा चित्रकमूल, सोंठ, वायविडंग इन सब औषधियोंको एक २ तोला लेकर अलग २ कूटकर कपडेमें छानकर मिलादें। फिर जितना सब चूर्णका वजनहो उतनाही शुद्ध भंगका चूर्ण उसमें मिलादे। इसके पश्चात् सबको तौलकर जितना वजन निकले इतनेही वजनको सफेद मिश्री पीसकर उसमें मिलादें। इस चूर्णको २। माशे से ३ माशे तककी मात्रामें शहदके साथ चटानेसे संग्रहणी, श्वास, खांसी, अरुचि, क्षय, वात और कफके विकार तथा पीनस रोग नष्ट होते हैं।

जाति फलादि वटी—(मधुमेहके लिये) जायफल, जावित्री, लौंग, केशर, शुद्ध धतूरेके बीज और शुद्ध अफीम ये वस्तु एक २ तोला। शुद्ध शिलाजीत ६ तोला, लोह भस्म ३ तोला। इन सब चीजों को कूट पीस छानकर शिलाजीतके जलमें घोटकर एक २ रत्ती की गोलियां बनावें। इनमेंसे एक २ गोली सवेरे शाम गुड मारके रस और गायके दूधके साथ सेवन करनेसे मधुमेह, मधुमेहकी प्यास, बहुमूत्र, मूत्रपिंडों की निर्बलता, प्रमेह पीडिका, पेशाब के साथ शक्कर जाना इत्यादि रोग दूर होते हैं और शरीर, मन तथा इन्द्रियोंको बल मिलता है।

जाति फलादि वटी—(खूनी बवासीरके ऊपर) जायफल, लौंग, पीपर, सेंधा निमक, सोंठ, धतूरेके बीज, शुद्ध हिंगलू, सुहागे की फूली। इन सब औषधियों को समान भाग लेकर इनका बारीक चूर्ण करे फिर उस चूर्णको जंभीरी नींबूके रसमें खरल करके एक २ रत्तीकी गोलियाँ बनालें। इनमें से १ से लेकर २ गोली सवेरे शाम, ६ माशे तिल और १ तोला मक्खनके साथ लेनेसे बवासीर से गिरता हुआ खून बन्द होता है और कुछ दिनों तक लगातार लेते रहने से बवासीर के मस्से सुखकर झड़ जाते हैं।

—

जायपत्री

नाम—

संस्कृत—जातिपत्री जाति कोष, जातिपत्रक हिन्दी—जायपत्री, जावित्री। बंगला—जायत्री

बंगाल—जायत्री। गुजरात—जावित्री। तेलगू—जाजिपत्री। तामिल—जाती। अरबी—बिसबासह।
फारसी—बजबाज। लेटिन—The Aril of myristica fragrans (दी एरिल आफ मायरिस्टिका फेग्रेंस)।

वर्णन—

जायफलके ऊपरी छिलके उतारनेपर उसके ऊपर जो लाल छिलके सा पदार्थ निकलता है, उसीको जावित्री कहते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेदिक मतसे जावित्री हलकी, गरम, कडवी, सुगंधित, स्वादिष्ट, रुचि-कारक, सौंदर्यको बढ़ानेवाली, मुखको स्वच्छ करनेवाली, [illegible], तथा कफ, खांसी, वमन, श्वास, तृषा, कृमि और विषको नष्ट करनेवाली होती है।

कफकी गड़बड़से पैदा हुए दस्तोंमें जावित्रीको पानमें रखकर खिलानेसे शांति मिलती है। क्षयरोगमें भी यह एक लाभदायक वस्तु है। पुष्टाई बढ़ानेवाली औषधियों और पाकोंमें इसको डालनेसे औषधि का जायका और गुण दोनों बढ़ जाते हैं। शरीरको कृश करनेवाले आंतोंके पुराने रोगोंमें इसको ८ से लेकर १० रत्तीतककी मात्रामें देनेसे लाभ होता है। इसको आगपर सेककर खिलानेसे विशूचिकाके दस्त मिटते हैं।

इसको अधिक मात्रामें नहीं देना चाहिये। ३।४ माशेसे अधिक मात्रामें देनेसे यह नशा और मूर्च्छा पैदा करती है। अगर इसको अधिक मात्रामें लेनेसे कुछ अनिष्ट हो जाय तो मक्खनमें चंदन और मिश्री मिलाकर चटाना चाहिये।

—

जालनीम

नाम—

काश्मीर—जालनीम, गन्दम् गुण्ड्ड। लेटिन—Lycopus Europaeus (लायकोपस यूरोपेयस)

वर्णन—

यह वनस्पति पश्चिमी हिमालय, काश्मीर और पंजाबके मैदानोंमें ७ हजार फीट की ऊंचाई तक

पैदा होती है। इसका एक सीधा वृक्ष होता है। इसकी जड़ें जमीन पर फैलती हैं। इसके पत्ते कटी हुई किनारोंके, फूल छोटे और सफेद तथा बैंगनी दाग वाले होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

इसके पत्तोंका पुल्टिस बाँधने से खराब घाव साफ होकर भर जाते हैं।

जालीदार

नाम—

पञ्जाब—जालीदार, कसकूथरी, थमयेर। अजमेर—धोवन किनाईोज—बुत्ति गरगलि, गरकलि, सान्नुदिनि। कच्छ—लुघकाना। गुजराती—वदेखडो, परेखडो। मराठी—खरमटी। मेरवाड़ा—धेवेलन। संथाल—तरनेकानफ। तामील—कुन्नई। तेलगू—बनता, बेनुना। लेटिन—Grewia Villosa ग्रेविया कुलोसा।

व० विवरण—इसका वृक्ष १८ मीटर ऊंचा होता है। इसकी शाखाएं भूरेरंगकी होती हैं। इसके पत्ते ३·७ से ७·५ सेंटि मीटर लंबे होते हैं। इसकी नोक तीखी रहती है। ये पत्ते ऊपरके बाजू रुएदार रहते हैं, नीचेके बाजू मखमली होते हैं। इसके फूलोंकी पंखड़ियां भद्दे और पीले रंगकी होती हैं। इसका फल पीला लाल और गोल रहता है। इसके फल का गूदा खाने लायक होता है।

उत्पत्तिस्थान—यह वनस्पति सिंधु की तलहटी, पञ्जाब, राजपूताना, सिंध, कच्छ, काठियावाड़, देकन, कर्नाटक, मद्रास प्रेसीडेंसी और दक्षिणी अफ्रिकामें होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

इसके ताजे छिलकेका रस शरबत और पानीके साथ [illegible] [illegible] लिया जाता है। यह [illegible] में भी उपयोगी है।

डॉ० देसाई के मतानुसार इसकी जड़ [illegible] [illegible] काममें ली जाती है।

डा० कीर्तिकर के मतानुसार इसकी जड़ [illegible] काममें ली जाती है

जावसीर

नाम—

हिन्दी यूनानी—जावशीर, जवाशीर । बंगाली—जवेशी । बाम्बे—जुआशुर । लैटिन—Opopanax Chironium (ओपोपेनेक्स चिरोनियम)

वर्णन—

जावशीर का पेड़ मध्यम आकार का होता है। इसके पत्ते अंजीरके पत्तोंकी तरह मगर उनसे कुछ छोटे और खुरदरे होते हैं। इनका रंग गहरा हरा होता है। इसके पेडकी शाखाएं मुलायम होती हैं। और उन पर रूआँ होता है। इनका रंग बाहरसे काला और भीतर से सफेद होता है। इसका फूल पीला और खुशबूदार होता है। इसके बीज काले और अनीसून के बराबर होते हैं। इसकी जडमें बहुत खराब गन्ध आती है।

इसकी एक जाति और होतीहै उसकी डालियाँ पतली और गज भर के करीब लम्बी होती हैं। इसके पेड़ का फावा सौंफ के पेड का सा होता है। इसके पत्ते अकलकरे के पत्तों की तरह होते हैं। इसके फूल का रंग सुनहरी होता है। इसको यूनानीमें असकेलूसक कहते हैं। इन दोनों जातियों में इसकी पहली जाति ज्यादा प्रभावशाली होती है। इसकी वह जड उत्तम मानी जाती है जो सफेद हो, जिसपर झुर्रियाँ नहीं हो और जिसमें तेज गन्ध आती हो और इसका वह फल उत्तम माना जाता है जो एक डालीपर एकही आया हो।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानीमत से इसकी जड़ और फल दूसरे दर्जे में गरम और खुश्क होते हैं। इसकी जड शरीर में गर्मी और खुश्की पैदा करती है। इस वृक्ष का पचांग गरम, तेज तथा कब्जियत को दूर करने वाला और पेट को मुलायम करने वाला होता है। इसका फल रुके हुए मासिक धर्मको जारी करता है। इसकी जडको पीसकर और शहद में मिलाकर जिस जगह का गोश्त उड़ गया हो उस जगह पर लगाने से नया गोश्त पैदा हो जाता है। इसके रसको जैतून के तेल में मिलाकर शरीर की सुन्नता पर लगाने से शरीर की सुन्नता मिट जाती है। निमोनियाँ में इसके पत्तों को गरम करके सीनेपर बाँधने से शान्ति मिलती है। इसके पत्तों का रस निचोडकर सिरके के साथ पीने से तिल्ली की सूजन मिट जाती हैं। गर्भवती स्त्री को इस औषधि से बचना चाहिये। क्योंकि इसको पीनेसे और इसकी जड को गर्भाशयमें रखने से बच्चा मरकर निकल पड़ता है। हिस्टीरियामें भी यह औषधि बहुत लाभ दायक है। इसको शराब के साथ पिलाने से हिस्टीरियाके रोगमें बहुत लाभ होता है।

जावशीरका गोंद

इस वृक्षमें से एक प्रकार का गोन्द निकलता है जो जावशीर का गोंद कहलाता है।

गुण दोष और प्रभाव—

हकीम जालीनूस के मतसे जावशीरका गोंद तीसरे दर्जेमें गरम और दूसरे दर्जेमें खुश्क होता है। यह जावशीरके पंचांगसे हर बातों मे अधिक प्रभावशाली और अधिक उग्र है। यह वायुको बिखेरता है। सूजनकी सख्तीको मुलायम कर देता है, कमजोर पट्ठोंको ताकत देता है। सरदीकी वजह से पैदा हुए ज्ञान तन्तुओंके रोग जैसे—लकवा, मृगी, कम्पवात, सिरदर्द इत्यादि रोगोंमें बहुत मुफीद है। वायु सम्बन्धी तमाम बिमारियों में जो सरदीकी वजहसे पैदा हुई हो यह हुक्मिया औषधि है। अगर हड्डीपर चोट आ जाय तो जावशीरको शराबके साथ देनेसे लाभ होता है।

लकवे के रोग में यह एक प्रथम श्रेणी की औषधि है। स्त्री सम्भोग की अधिकता से मनुष्य शरीर में जो बीमारियाँ पैदा होती है उनमें भी यह लाभदायक है।

इसको आंखोंमें लगाने से मोतियाबिन्द मे लाभ होकर आंखों की ज्योति तेज होती है। इसको कानमें डालने से कानका बहरापन दूर होता है। दाँत पर मलने से दन्तशूल आराम होता है। कीड़ेके खाये हुए दांतके सुराखमें इसको रखनेसे फायदा होता है। इसको ३ या ३॥ माशा की मात्रामें गरम पानीके साथ लेनेसे रुका हुआ मासिकधर्म और रुका हुआ पेशाब चालू होता है। सर्दीसे पैदा हुए जलोदर और पीलियामें भी यह लाभ करता है। बूंद २ पेशाब आने की बीमारी को यह दूर करता है। वायु और कफसे पैदा हुए वातिक उदरशूल में भी यह मुफीद है। इसको शहदमें मिलाकर लेप करनेसे गर्मी के जख्म और जैतून के तेलमें मिलाकर लगानेसे गठिया, [illegible] और [illegible] के विषमें लाभ होता है। सांप और बिच्छूके विषपर इसको ३॥ माशे की मात्रामें पिलाने से और काटी हुई जगह पर पीसकर लगानेसे फायदा होता है। [illegible] गर्भाशय में अगर कुछ खराबी रह जाय तो इसके इस्तेमालसे [illegible] है। इसको [illegible] साथ पीसकर, तिल्ली के तेलमें मिलाकर, जननेन्द्रिय पर लेप करने से बहुत [illegible] है।

यह बात ख्याल रखना चाहिये कि यह गोंद जहाँ बीमार पट्ठोंको तन्दुरुस्त कर देता है वहाँ तन्दुरुस्त पट्ठोंको नुकसान भी पहुँचाती है।

हानि—यह गर्भवती स्त्री के गर्भ को गिरा देता है और [illegible] तकलीफ पहुंचाती है।

दर्पनाशक— कौंचके बीजोंका काढा बनाकर उस काढ़ेमें जावशीर को रातभर भिगोकर इस्तेमाल करनेसे किसी प्रकार की हानि नहीं होती।

प्रतिनिधि— इसके प्रतिनिधि अंजीर का दूध, गन्धा विरोजा और जैतून का तेल है।

मात्रा— इसकी मात्रा २ माशेसे ४ माशे तक है।

जेठीमद

नाम—

कच्छ— जेठीमद। गुजराती—जेठीमद। लेटिन— Teverniera Nummularia (टेवेरनिअेरा न्यूमूलेरिया)।

वर्णन—

यह एक प्रकार की नकली मुलहटी है जो कच्छ गुजरात, सिन्ध और बलूचिस्तान के जंगलोंमें बहुत पैदा होती है। इसके पौधे २ से लेकर ३ फीट तक ऊंचे होते हैं। इसके पत्ते मेथी के पत्तों के समान होते हैं। फूल गुलाबी रंगके पतंगे की तरह होते हैं। ये गुच्छोंमें लगते हैं। इसकी फलियां छोटी होती हैं। हर एक फली में २।४ तक बीज होतेहैं। यह पौधा दूरसे जवासेके पौधे की तरह दिखाई देता है। असली जेठीमद या मुलहटी का वर्णन आगेके भाग में मुलहठी के प्रकरण में देखना चाहिये।

गुण दोप और प्रभाव—

मुरेके मतानुसार इसके पत्ते कठिनाईसे आराम होनेवाले घाव पर बांधनेमे बड़ा लाभ होता है। कर्नल चोपराके मतानुसार इसके पत्ते घावपर बांधनेके काममें लिये जाते हैं।

जैतअलसूदान

नाम—

यूनानी— जैतअलसूदान।

वर्णन—

यह एक फलदार वृक्ष है। इसके फल छोटे बादाम की तरह होते हैं। इसकी दो जातियां होती हैं। एक छोटी और एक बड़ी।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह दूसरे दर्जेमें गरम और पहले दर्जेमें तर है। यह फालिज, सुन्नवात और आफरे का मिटाना है। पागलपन, वहम और रक्तदोष की बीमारियोंमें फायदा पहुँचाता है। यह मूत्रल भी है। इसके सेवनसे अच्छा खून पैदा होता है। इसके रस को कानमें टपकाने से कानका बहरापन और कान का बहना मिटता है।

जैतून

नाम—

हिन्दी—यूनानी—जैतून। कनाडी—जुलिये। तामील—सेदून। तेलगू—जैतून। लेटिन—Olea Europaea ओलिया यूरोपिया।

वर्णन—

इस वनस्पतिका मूल उत्पत्तिस्थान भूमध्यसागर है बलूचिस्तानमें भी यह पैदा होती है। यह एक बड़ी जातिका वृक्ष होता है। इसके फल अण्डाकार और कलमी बेरकी तरह होते हैं। इसके फल कच्ची हालतमें हरे, पकनेपर लाल और आखिरमें काले पड़ जाते हैं। इस फलकी गुठली पौन इञ्च लंबी और आधा इञ्च मोटी होती है। इसके पत्ते अमरूदके पत्तोंकी तरह मगर कुछ गोल होते हैं। इसकी दो जातियाँ होती हैं। एक जंगली और दूसरी बागी।

गुणदोष और प्रभावः—

यूनानीमतसे इसकी डालियाँ और पत्ते दोनो सर्द, खुश्क और काबिज है। इसका पका हुआ फल गरम और कच्चा फल सर्द है। इसके कच्चे फलको पीसकर लगानेसे चेचक और दूसरे फोडे फुन्सियोंके निशान मिटते हैं। खराब जख्मोंपर इसका लेप करनेसे यह उन जख्मोंको फैलनेसे रोकता है। अग्निसे अगर शरीर जल जाय तो उसपर कच्चे जैतूनके फलको पीसकर लगानेसे छाला नहीं पड़ता है। इसके कच्चे फलको जलाकर उसकी राखको शहदमें मिलाकर सिरकी गंज और फुन्सियोंपर लगानेसे लाभ होता है। बागी जैतूनका फल स्मरणशक्तिकी कमजोरीको मिटाता है मगर इसको अधिक मात्रामें खानेसे सिर दर्द और अनिद्रा रोग होनेका भय रहता है। इसका पका हुआ काला फल आँखोंके लिये हानिकारक वस्तु है। इसके खाने और लगानेसे आँखोंकी ज्योति खराब होती है। इसके कच्चे फलको पानीमें औटाकर उस पानीसे कुल्ले करनेसे दांत और मसूड़े मजबूत होते हैं और उनके रोग मिटते हैं। मुंहके छाले भी इससे मिट जाते हैं।

जैतून का गोंद—

जैतूनके वृक्षसे एक प्रकारका गोंद भी निकलता है जो कुछ पीला, स्याह, सुर्खी माइल और मीठा होता है। इसको कुछ देर तक हाथमें रखकर मसलनेसे यह पिघलकर शहद सरीखा हो जाता है।

यह पहले दर्जेमें गरम और खुश्क होता है। कोई २ दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क मानते हैं। यह जुकाम, नज्ला, सर्दी और खाँसीमें फायदा पहुँचाता है और आवाजको साफ करता है। इसको योनिमें रखनेसे गर्भाशयकी सूजन दूर हो जाती है। इसको मरहममें मिलाकर लगानेसे दादके जख्म और तर खुजलीमें फायदा होता है। यह नेत्रशक्तिको भी फायदा पहुँचाता है। इसको आँखमें लगानेसे पुतलीके रोग, जाला और नाखूनी रोगमें फायदा होता है। जंगली जैतूनका गोंद कीड़ा खाये हुए दांतमें भर देनेसे बहुत फायदा पहुँचाता है। इसके सेवनसे पुरानी खांसी मिट जातीहै और कफ निकल जाताहै। इसका गोंद मूत्रल है और योनिमें रखनेसे मासिक धर्मको जारी कर देता है। यह गर्भ को भी गिरा देता है।

कर्नल चोपराके मतसे जैतूनका तेल औषधियोंमें बहुत काममें लिया जाता है। अन्तः प्रयोग और बाह्यप्रयोग दोनोंही में यह उपयोगी है। इससे कई प्रकारके लेप और मरहम बनाये जाते हैं। यह एक प्रकारका पौष्टिक खाद्य भी है। कई ऐसी बीमारियोंमें जिनमें शक्तिका ह्रास होता हो यह देनेके काममें लिया जाता है।

मुजिर—इस वनस्पतिके अधिक सेवनसे अनिद्रा, कमजोरी और दुबलापन पैदा होता है। और फेफड़ों को नुकसान पहुँचाता है। इसका गोंद वरम और सिरदर्द पैदा करता है और गर्भको गिरा देता है।

दर्पनाशक—इसके दर्पको नष्ट करनेके लिये बादाम, अखरोट, शहद और शरबत नीलोफर या खमीरा बनफ्शा मुफीद है।

मात्रा—इसके गोंदकी मात्रा ३ माशा से ५ माशे तक और तेलकी मात्रा ढाई तोले तक की है।

जोटो जोटिया

नाम—

उरिया—जोटो जोटिया। संथाल—लिकुअर। लेटिन—Urena Repanda (यूरेना रेपेंडा)।

शेखका का कथन है कि जैतूनका फल मैदेके लिये हानिकारक है। यह मेदेको ढीला करता है और उसमें वातकी तासीर पैदा कर देता है।

जैतूनके फलका मुरब्बा मृदु विरेचक है। इसको गरम पानीके साथ खिलानेसे खूब दस्त लगते हैं। इसका आचार भूख बढ़ाता हैं, आमाशयको ताकत देता हैं, लेकिन कुछ कब्ज भी करता है। इस आचारको अगर सिरकेमें डालकर खाया जाय तो वह जल्दी हजम हो जाता है।

जैतूनके पत्ते जंगली और बागीके भेदसे अलग २ गुणवाले होते हैं। जगली जैतूनके पत्तोंको सुखाकर पीसकर बदनपर मलनेसे पसीनेका आना बंद हो जाता है। इसके पत्तोंके चूर्णको शहदमें मिला कर जखमोंपर लगानेसे जख्म जल्दी भर जाते हैं। जंगली जैतूनके पत्तोंका लेप पित्ती, खुजली, दाद और गर्मीके खराब जखमोंपर भी फायदा पहुंचाता है। इन पत्तोंका रस कानमें डालनेसे कान के दर्द, पीब और सूजनमें फायदा होता है। इसके पत्तोंके रस को लेकर उसमें बराबरकी शहद मिलाकर कुनकुना करके कानमें डालनेसे कानका बहरापन और कानकी फुन्सी मिट जाती है। बागी जैतूनके पत्ते नेत्र रोगोंमें बहुत लाभदायक है। इनसे मोतियाबिंद में भी लाभ होता है। इसके पत्तोंके पानीको नाकमें चढानेसे बच्चोंकी आँखोंका ढेगपन (तिरछा देखना) मिट जाता है। इसके पत्तोंके सिरकेमें औटाकर कुल्ले करनेसे दांतोंका दर्द और मुंहके छाले मिटते हैं। इसके पत्तोंको पीसकर जौ के आटेमें मिलाकर कुछ पानी डालकर नाभिपर लेप करनेसे पुराने दस्त बंद हो जाते हैं।

जैतून का तेल—

जैतूनमेंसे एक प्रकारका हलके पीले रंगका सफेदी लिये हुए तेल निकलता है। जिसको अंग्रेजीमें ओलिव आइल (Olive Oil) कहते हैं।

शेखके मतसे जैतूनका तेल दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। इसका ताजा तेल गरम और तर होता है। कच्चे फलोंका तेल पहले दर्जेमें सर्द और खुश्क होता है। जालीनूसके मतानुसार हर किस्मका जैतूनका तेल दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क होता है। इसकी खली पहले दर्जेमें गरम और खुश्क होती है।

इस तेलकी मालिशसे पट्ठोंकी सर्दी दूर होकर उनमें ताकत आती है। यह सूजनको दूर करता है। इसके खिलानेसे पेटके कीड़े मरकर बाहर आजाते हैं। इसके तेलकी मालिश सर्दीके रोगोंमें अच्छा फायदा करती है। इसका तेल वातको दूर करता है, सुद्दोंको बिखेरता है और कफको घटाता है। फालिज और सुन्नवातमें भी यह लाभ दायक है। इसको आंखमें लगानेसे आंखकी ज्योति बढ़ती है, नजलेका पानी नहीं उतरने पाता और अगर आंखमें जाला हो तो वह भी कट जाता है। जङ्गली जैतूनके तेलकी मालिश से टूटी हुई हड्डी जुड जाती है। इसके तेलको पीबदार फोडोंमे लगानेसे फायदा होता है। धुले हुए जैतूनके तेलको मुंहपर मलनेसे चेहरेकी रौनक बढ जाती है। इसको आंखमें लगानेसे आँखकी खुजली, जाला, पानीका बहना और नजला साफ हो जाता है।

जैतून का गोंद—

जैतूनके वृक्षसे एक प्रकारका गोंद भी निकलता है जो कुछ पीला, स्वाद, सुर्खी माइल और मीठा होता है। इसको कुछ देर तक हाथमें रखकर मलनेसे यह पिघलकर शहद सरीखा हो जाता है।

यह पहले दर्जेमें गरम और खुश्क होता है। कई इसे दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क मानते हैं। यह जुकाम, नजला, सर्दी और खांसीमें फायदा पहुँचाता है और आवाजको साफ करता है। इसको योनिमें रखनेसे गर्भाशयकी सूजन दूर हो जाती है। इसको मरहममें मिलाकर लगानेसे दादके जखम और तर खुजलीमें फायदा होता है। यह मेदावायुको भी फायदा पहुँचाता है। इसको आंखमें लगानेसे पुतलीके रोग, जाला और धामनी रोगमें फायदा होता है। जंगली जैतूनका गोंद कीड़ा खाये हुए दांतमें भर देनेसे बहुत फायदा पहुँचाता है। इसके सेवनसे पुरानी खांसी मिट जातीहै और कफ निकल जाताहै। इसका गोंद मूत्रल है और योनिमें रखनेसे मासिक धर्मको जारी कर देता है। यह गर्भ को भी गिरा देता है।

कर्नल चोपराके मतसे जैतूनका तेल औषधियोंमें बहुत काममें लिया जाता है। अन्तः प्रयोग और बाह्यप्रयोग दोनोंही में यह उपयोगी है। इससे कई प्रकारके तेल और मरहम बनाये जाते हैं। यह एक प्रकारका पौष्टिक खाद्य भी है। कई ऐसी बीमारियोंमें जिनमें शक्तिका ह्रास होता हो यह देनेके काममें लिया जाता है।

नुकसान—इस वनस्पतिके अधिक सेवनसे अनिद्रा, कमजोरी और दुबलापन पैदा होता है। और फेफड़ों को नुकसान पहुँचाता है। इसका गोंद वरम और सिरदर्द पैदा करता है और गर्भको गिरा देता है।

दर्पनाशक—इसके दर्पको नष्ट करनेके लिये बादाम, अखरोट, शहद और शरबत नीलोफर या खमीरा बनफ्शा मुफीद है।

मात्रा—इसके गोंदकी मात्रा ३ माशा से ५ माशे तक और तेलकी मात्रा ढाई तोले तक की है।

जोटो जोटिया

नाम—

उरिया—जोटो जोटिया। संथाल—विछुआर। लेटिन—Urena Repanda (यूरेना रेपैंडा)।

वर्णन—

यह वनस्पति पंजाब, [illegible] और [illegible] पैदा होती है। यह एक [illegible] बहुवर्षायु वनस्पति है। इसके पत्ते [illegible] और [illegible] होते हैं। इसके बीज [illegible] होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

[illegible] इस वनस्पतिकी जड़ और [illegible] दूर करने के लिये काममें लिया जाता है।

जोड़तोड़

वर्णन—

यह एक जातिका घास है। इसकी बेल तालाब, झील और पानीके किनारों पर पाई जाती है। इसका जोड़तोड़ नाम इस लिये पड़ा है कि इसके डण्ठल को तोड़कर अगर फिरसे जोड़ दिया जाय तो जुड़ जाता है। इसका आकार प्रकार तुलसी की तरह होता है। इस पौधेके पत्ते नहीं होते। इसके डण्ठलोंमें बहुत गांठें होती हैं। यह वनस्पति रुहेलखण्डमें बहुत पाई जाती है।

गुण दोष और प्रभाव,—

३।८ माशे जोड़तोड़ को ३।४ काली मिरचोंके साथ पीस छानकर उसमेंसे ढाई सींक भर कर पिलाते रहनेसे शीतला का ज्वर बहुत कम हो जाता है। इसके सेवनसे रोगी एक रात भर मूर्छित अवस्था में पड़ा रहताहै और दूसरे दिन शीतलाके बड़े २ दाने निकल आते हैं।

जोड़ तोडको उबालकर भुरता बनाकर कामेंद्रिय पर बाँधने से सुजाक नष्ट हो जाता है। १॥ तोला जोड़ तोडको ३।४ तोला पानीमें रातको भिगोकर सुबह उस पानीको मल छानकर पिलानेसे कामला रोग मिटता है। (ख० अ०)

जोजुलमरज

नाम—

यूनानी—जोजुलमरज।

वर्णन—

इस वनस्पति के पत्ते जौ के पत्तोंकी तरह होते हैं। इसका डंठल हाथ भरसे भी अधिक लंबा होता है। इसके ऊपर गोल छत्री की तरह सफेद फूल आता है। इसकी जड ठोस और मुलायम होती है। किसी २ मतसे यह काकनजकी एक जाति है। यह अधिकतर स्याम में पैदा होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जे में गरम और खुश्क है। इसके खाने से पेटके कृमि नष्ट होजाते है। गोखरूके काढ़ेके साथ इसको देने से यह पथरी को तोड़कर निकाल देती है। पिंडलियों पर होने वाले कफज शोथ पर अगर इसका लेप किया जाय तो एकही रातमे अच्छा हो जाता है।

जोला वदेसा

नाम—

लेटिन— Humboldtia Vahliana (हुंबोल्डतिया) वाल्हियाना। मलयालम— [illegible]. पुराति तामील—प्रत्तुवनि।

उत्पत्तिस्थान—नीलगिरी।

वर्णन—

विवरण—यह एक बगैर शाखावाला सीधा वृक्ष है। इसके पत्ते [illegible] होते हैं। ये लम्बी नोक वाले और दरारी आकार के होते हैं। इनके दोनों [illegible] होते हैं। इसकी फली १५ सेंटि मीटर लम्बी और ३.८ सेंटि मीटर चौड़ी होती है। इसके [illegible] तीखी होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

इसका [illegible], रक्त और पित्तदोष [illegible] है

[illegible] मतानुसार—इसका [illegible], [illegible] रक्त और पित्तदोष [illegible] है।

जौ

नाम—

संस्कृत—यव, मेध्य, सितशूक, दिव्य, धान्यराज, पवित्र धान्य। हिन्दी—जौ। बंगला—यव। मराठी—जव। गुजराती—जव। नेपाल—तोस। भूतान—नस। पंजाब—जव। अंग्रेजी—Barley (बार्ली)। लेटिन Hordeum Vulgar (होरडियम व्हलगेट)

वर्णन—

जौ एक मशहूर अनाज है जो हिन्दुस्तानमें सब दूर पैदा होता है। आयुर्वेदके मतानुसार यह शूक, निःशूक और हरित वर्णके भेदोंसे तीन प्रकारका होता है। शूक यव गुणोंमें सबसे अधिक होता है। निःशूक यव उससे हीन गुणवाला होता है और हरित वर्ण उससेभी हीन गुणवाला होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे जौ कसेला, मधुर, शीतल, मृदु, व्रणरोगमें तिलके समान लाभदायक, रूखा बुद्धिवर्धक, अग्निवर्द्धक, पाकमें कडुआ, स्वरको शुद्ध करने वाला, भारी, बलकारक, वातको पैदा करने वाला, कान्ति वर्धक और गलेके रोग, चर्मरोग, कफ और पित्तके रोग, मेद रोग, पीनस तथा श्वास,खाँसी, उरु स्तंभ, रक्त विकार और तृषाको दूर करनेवाला होता है।

जौका सत्व निकालने की विधि—जौको कुनकुने पानीमें गला देना चाहिये। जब उनमें बारीक २ अंकुर फूटते नजर आने लगें तब उनको निकालकर अच्छी तरह सुखा लेना चाहिये। उसके बाद उनका चूर्ण कर लेना चाहिये। इस चूर्णको बराबर वजनके ठंडे पानीमें मिट्टीके बरतनमें ६ घंटेतक भिगोना चाहिये। फिर उसमें चौगुना गरम पानी मिलाकर १ घंटेतक पड़ा रहने देना चाहिये। उसके बाद उसे आंचपर एक जोश दे देना चाहिये। जोश आनेके बाद उसको साफ कपडेमें साफ बरतनके अन्दर छान लेना चाहिये। उस बरतनको गरम पानीसे भरे हुए एक दूसरे बरतनमें रखकर हलकी आंचसे औटाना चाहिये। कुछ देरके बाद शहदके समान गाढ़ा सत्व तैय्यार हो जायगा। उसको ढक्कनदार शीशीमें बंद करके ठंडी जगहमें रख देना चाहिये। इस सत्वको भोजनके ३ घंटे पश्चात् ६ माशेसे लेकर १ तोले तककी मात्रामें लेना चाहिये।

जौका यह सत्व पाचक और पोषक होता है। यह गेहूँके सत्वसे जल्दी हजम होता है। इसको प्रति दिन खानेसे मधुमेहके अन्दर जाने वाली शक्कर नष्ट हो जाती है क्योंकि इसकी सहायतासे अन्न हजम होता है और अन्नका रक्त बनने तक जितनी विनिमय क्रियाएं होती हैं वे सब सुधर जाती हैं। पाचन क्रियाकी खराबीमें और फुफ्फुसके रोगोंसे पैदा हुई कमजोरी में भी जौ का सत्व दिया जाता है।

इस मतनको कम मात्रामें लेना चाहिये। क्योंकि इसको अधिक मात्रामें लेनेसे दस्त लगने लगती हैं। जिन बीमारियोंमें शरीरमें पीव बहता हो उन बीमारियोंमें यह बहुत अच्छा पथ्य है।

जौकी खीर बनानेकी रीति—जौ को रातमें गरम पानीमें भिगोकर सुबह उसमें दूध, शक्कर डालकर मन्दी आंचसे औटाना चाहिये और उसमें थोड़ासा नमक डालकर पिलाना चाहिये। कमजोर बच्चे इससे पुष्ट होजाते हैं।

जौका खार बनाने की विधि—जौ के पंचांगको उखाडकर सुखाकर जला देना चाहिये। फिर उसकी राखको पानीमें खूब घोल लेना चाहिये। उसके बाद उस बरतनको २।३ घंटे तक स्थिर पडा रहने देना चाहिये। जब राख नीचे बैठ जाय तब पानीको ऊपरसे निथार लेना चाहिये। उसके बाद उस पानीको आग पर चढा देना चाहिये। औटते २ जब रबडी सरीखा हो जाय तब उसको उतारकर सुखा लेना चाहिये। इस प्रकार सफेद रंगका उत्तम क्षार तैयार हो जाता है।

जवाखारके गुणदोष—जवाखार यह एक दिव्य वस्तु है। भोजनके पहिले लेनेसे यह अग्निको दीपन करती है और आमाशय की श्लेष्म त्वचामें रहनेवाले मज्जा तंतुओं की पीड़ाको कम करती है। इन्हीं दो गुणोंकी वजहसे अजीर्ण, आमाशय की पीडा और वमनमें यह पदार्थ दिया जाता है। भोजनके पश्चात् लेनेसे यह आमाशय की अम्लताको कम करता है। खूनके अन्दर मिलनेके पश्चात् यह रक्त कणोंके रंग और संख्याको बढ़ाता है। रक्त शुद्धि के लिये जौ खार और दूसरे सुगन्धित पदार्थों के साथ दिया जाता है। जौखार मूत्रपिंड को भी उत्तेजना देता है जिससे पेशाब की मात्रा बढ़ती है। मूत्रपिंडों की सूजन की वजह से जब पेशाब की मात्रा कम हो जाती है तब जवाखार को देने से लाभ होता है। इससे पेशाब में होने वाली जलन फौरन मिट जाती है। सुजाक में भी जवाखार को देने से शांति मिलती है। जवाखार त्वचाको भी उत्तेजित करता है। इसलिये यह पसीना लानेके लिये ज्वरमें नीमके रसके साथ दिया जाता है। जवाखारके लेनेसे कफ पतला होकर छूटता है, श्वास मार्गकी सूजन कम होती है, इसलिये श्वास नलिका की नवीन सूजनमें और सूखी खाँसीमें इसको देनेसे फायदा होता है। यह पित्तको भी पतला करता है और पित्तवाहिनी नलियोंकी सूजनको मिटाता है। इसलिये यकृतकी सूजन वगैरह रोगोंमें भी यह दिया जाता है। जवाखार अम्लता नाशक, दीपन, रक्त शोधक, पांडु रोग नाशक, मृदुस्वभावी, मूत्रल, पसीना लाने वाला, कफको नष्ट करनेवाला, पित्त क्रियाको सुधारने वाला और अत्यन्त सौम्य होता है। जवाखारकी अपेक्षा जौकी राख विशेष अच्छी रहती है। उपरोक्त रोगोंमें जौकी राखही काममें लेनी चाहिये।

रासायनिक विश्लेषण—जौकी राखमें सिलिसिक एसिड २६ प्रतिशत, फास्फोरिक एसिड ३२॥ प्रतिशत, पोटाश २१॥ प्रतिशत और चूना ३॥ प्रतिशत रहता है।

यूनानी मत—यूनानी मतसे जौ दूसरे दर्जेमें सर्द और पहले दर्जेमें खुश्क होता है। यह कब्जियत करता है, खूनके जोशको ठंडा करता है, पित्त और गर्मीके बुखारकी तेजीको कम करता है। क्षय, निमोनिया और खाँसीमें मुफीद है, प्यासको बुझाता है, जौ की गरम २ रोटीके टुकडे करके, उसको मिट्टीके बरतनमें रखकर उसमें थोड़ा पानी भर दें और एक हफ्ते तक जमीनमें गाड़दें। फिर निकालकर उसका साफ पानी लेकर शीशीमें भरदे। इसमेंसे २ से ५ तोला तक पानी अर्क गाव जबाँके साथ बुखारके मरीजको देनेसे तसल्ली मिलती है। जौके आटेको पानीमें पकाकर कुनकुना होने पर लेप करनेसे झाँई और खुजलीमे फायदा होता है। पीली फुन्सियों वाली खुजली पर इसको सिरके के साथ पकाकर लगाना चाहिये। जौके आटेमें तिलका तेल और मट्ठा मिलाकर लगानेसे सूखी खुजलीमें बहुत लाभ होता है। कंठमालामें धनियेके हरे पत्तोंके रसके साथ जौके आटेका लेप करनेसे कंठमाला की सूजन बिखर जाती है। जौके आटेको अञ्जीरके साथ लगानेसे कफकी वजहसे पैदा हुई सूजन बिखर जाती है और सिरके और इसबगोलके साथ इसका लेप करनेसे पित्तसे पैदा हुई सूजन बिखर जाती है। लगाकर कानके पीछेकी सूजनमें यह बहुत फायदा पहुँचाता है। अजवायन खुरासानीके साथ इसके आटेको लेप करनेसे हड्डीके टूटने पर और मोच आने पर फायदा होता है। सिरकेके साथ जौके आटेका पेशानी पर लेप करनेसे गर्मीका सिर दर्द दूर होता है। जिनकी तबियतमें गर्मी चढ़ जाय या गर्मी की वजहसे घबराहट पैदा हो उनको जौका सत्तू और शक्कर पानीमें घोलकर देनेसे बड़ी शान्ति मिलती है। गरम प्रकृति वालोंके लिये यह एक अच्छा पथ्य है। इसके आटेको [illegible] कुलफा और [illegible] के दानोंके साथ लेप करनेसे निमोनियाँ और ग्रंथियोंमें लाभ होता है। अलसीके बीज, मेथीके बीज, सदाब और जौके आटेको पानीमें मिलाकर पेट पर लेप करनेसे जबरदस्त पेटका फुलाव भी मिट जाता है।

जौखार—यूनानी मतसे जौखार गरम और खुश्क होता है। यह वायु और कफका विरोधी है। [illegible] उदर शूलको दूर करता है। कफकी खाँसीमें लाभ पहुँचाता है। अन्नकी [illegible]को बढ़ाता है। मसानेकी पथरीको तोड़ता है। गलेकी बीमारियाँ, मेदेकी खराबी, बवासीर, वायगोला, तिल्ली और यकृतकी सूजन में फायदा पहुँचाता है। बदहजमीमें जब कि मेदेके अन्दर [illegible] ढीलापन हो जाता है तब इसको देनेसे लाभ होता है। उपदंश और गठियाकी बीमारीमें भी इसका प्रयोग किया जाता है।

अहित—जौ का अधिक मात्रामें प्रयोग ठंडी प्रकृति वालोंको नुकसान पहुँचाता है और [illegible] पैदा करता है। इसको हमेशा खाते रहनेसे पेटमें [illegible] और [illegible] होती है और मेदा तथा आँतें कमजोर हो जाती हैं।

दर्पनाशक—इसके दर्पको नाश करनेके लिये [illegible], [illegible], मिश्री, गरम मसाले और [illegible] जरूरी है।

मात्रा—जवाखारकी मात्रा १ माशे से ३ माशे तक की है और जौके सत्वकी मात्रा आधेसे १ तोले तक की है।

जियापोता

नाम—

संस्कृत—पुत्र जीवा, गर्भकरा, गर्भदा, अर्दसादका, कुमार जीवा, पवित्रा। हिन्दी—जियापोता, जीवपुत्रक, ज्योति। बंगाल—जियापोता, पुत्रजीवा। बम्बई—जीवपुत्रक, पुत्रजीवा। मराठी—जीवपुत्रक, पुत्रजुत्रा। पंजाब—जियापुत्ता, पातजन। तामील—इरुपोलि, करुपलि। तेलगू—कद्रजीवी, महापुत्र, पुतजन, पुत्रजीविका। लेटिन—Putranjiva Roxburghii (पुत्रंजिवा राक्सबर्गी)।

वर्णन—

जियापोता के वृक्ष सारे भारत वर्षकी पहाड़ी जमीनमें कुदरती तौरसे पैदा होते हैं। इनकी कहीं २ खेतीभी की जाती है। यह हमेशा हरा रहने वाला वृक्ष होता है। इसकी छाल फीके रंगकी, पत्ते कटी हुई किनारोंके, गहरे हरे रंगके, चमकीले अंडाकार और ६.३ से १० सेंटिमीटर तक लम्बे तथा २-२ से ३.८ सेंटिमीटर तक चौड़े होते हैं। इसका फल अंडगोल और कुछ तीखी नोक वाला होता है। इसकी गुठली तीखी और बहुत कठोर रहती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेद के मतानुसार यह वनस्पति शीतल, सुगंधित, तीव्र, वातदीपक, मूत्रल, और विरेचक होती है। यह आंखोंके लिये लाभदायक है तथा पित्त, प्यास, जलन, सिरदर्द और शूलरोगमें लाभ पहुँचाती है। यह वात और कफ पैदा करती है। इसके फल तथा इसकी गुठली गर्भके अन्दर दी जाती है।

इस वनस्पतिका नाम संस्कृत तथा हिन्दुस्तानकी प्रायः सब भाषाओंमें पुत्रजीवक रखा गया है। इससे यह मालूम होता है कि इस वनस्पतिके इस नामके अन्दर कुछ सार्थकता जरूर है। सिद्ध नित्यनाथ [illegible] रसरत्नाकर नामक ग्रंथमें लिखा है कि पुत्र [illegible] इसके बीज, पत्ते और [illegible] दूध [illegible] पीनेसे जिस स्त्रीके बच्चे हमेशा मरजाते हो वह [illegible] दीर्घायु [illegible] बच्चे पैदा करती है।

[illegible] नामक [illegible] लिखते हैं [illegible] इस [illegible] [illegible] बातें तो बहुत सुनते थे मगर इसका अनुभव लेनेका अवसर हमको नहीं मिला [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] करनेसे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

जिस रोगीकी चिकित्सा करने हम गये थे वह एक स्त्री थी उसे हमेशा गर्भपात होनेकी बीमारी थी। अगर कोई बालक पूरा हो भी जाता तो थोडे ही दिनोंमें मर जाता था। क्योंकि उसका दूध बिलकुल पानीके समान और अत्यंत दुर्गंधपूर्ण रहता था। यदि कोई दूसरी स्त्री बालकको दूध पिलानेकी इच्छा करती तो भी उसकी इच्छा सफल नहीं होने पाती थी। क्योंकि प्रत्येक बालकको जन्मके साथ ही ऐसा रोग पैदा होजाता था जिससे वह दूध पी ही नहीं सकता था इसके अतिरिक्त इस स्त्रीको प्रदर और योनिदाहकी बीमारी भी हमेशा रहा करती थी।

इस नवीन औषधि (पुत्रजीवक) को अजमानेकी लालसासे हमने अपने साथ लाई हुई एक भी औषधिका उपयोग न करते हुए पुत्र जीवककी जड़ोंको ही देना निश्चय किया। प्रति दिन सवेरे शाम एक २ तोला जड़ उसमेंसे दूधमे घिसकर देना शुरू किया और खट्टे, खारे, तीखे और गरम पदार्थोंसे सख्त परहेज करने की हिदायत कर दी। रोगीको इस औषधिपर अविश्वास नहीं होजाय इसलिये उसका विश्वास जमानेको दूसरी औषधिकी तौर पर सिर्फ सुहागेकी पुड़िया देदीं थी। इस प्रयोग को शुरू करनेके पश्चात् धीरे२उसका रोग कम होनेलगा और उसे२।३ महीनेके पश्चात् गर्भ रहा। उसके पश्चात् भी प्रसूति होने तक यह औषधि चालू रक्खी गई। परिणाम यह हुआकि नियत समयपर उसको एक बिलकुल स्वस्थ और सुन्दर पुत्र हुआ। उसका दूध भी सुधर गया और उसके बाद अभी तक वह ५ स्वस्थ संतानोंकी माता है।

इस घटनाके पश्चात् गर्मी, प्रसूति रोग, कंठमाला, प्रदर, विस्फोटक, इत्यादि रोगोंकी वजहसे वंध्यत्व भोगनेवाली लगभग २५ स्त्रियोंपर इस वनस्पतिके फलके गर्भका उपयोग किया गया जिसका परिणाम यह हुआ कि इनमें से करीब २० स्त्रियों पर सन १९२३ की साल तक अत्यंत संतोष जनक परिणाम नजर आया।

इससे पता चलता है कि स्त्रियोंके गर्भाशयके रोगोंको दूर कर उनको गर्भाधानके योग्य बनानेकी इस औषधिमें अच्छी शक्ति है।

सर्प विष तथा दूसरे विषोंके ऊपर भी इस औषधिका अच्छा प्रभाव होता है। रस रत्नाकर ग्रन्थमें लिखा है कि पुत्र जीवकके फलोंकी मगज ४ मासेकी मात्रामे ठंडे पानीके साथ पीसकर पीनेसे तथा आँखमें आँजनेसे और लेप करनेसे स्थावर, जंगम सब प्रकारके विषोंका नाश होता है। अगर साक्षात् काल स्वरूपी नागने भी डंक मारा हो तो भी रोगी बच जाता है।

मगर केस और मस्कर के मतानुसार सर्पविषमें यह औषधि अपना कोई भी प्रभाव नहीं रखती।

रस रत्न समुच्चय नामक ग्रंथमें इस औषधिके लिये लिखा है कि पुत्र जीवकके फलोंके गर्भको पानीके साथ पीसकर लेप करनेसे जलन युक्त गठान, प्लेगके समान जहरी गठान, तथा और चाहे जिस

दोष और चाहे जिस कारण से पैदा हुई गठान उसकी वेदनाके साथ तत्काल नष्ट हो जाती है। बगलमें होनेवाली गठान, गलेकी गठान और बद गठानको भी इसका लेप नष्ट कर देता है।

मकोयके पत्ते, मेनसिल और मुलेठी। इनसबको समान भाग लेकर अथवा सिर्फ पुत्रजीवक के फलोंके गर्भको गायके दूधके साथ पिलानेसे प्लेगके समान असाध्य रोगोंकी जहरीली गठान भी मिट जाती है।

इन सब बातोंसे यह मालूम होता है कि यह औषधि उपदश, फिरंगवात, इत्यादि रोगोंके द्वारा शरीरमें फैले हुए जहरको दूर करनेके लिये भी बहुत उपयोगी है।

बनावटें—

पुत्रदावटी—जियापोताके फलका गर्भ ४ तोला, शिवलिंगीके बीज ४ तोला, पारस पीपलके बीज ४ तोला, नागकेशर ४ तोला, असगध ४ तोला, सरपखाकी जड़ ४ तोला, हरड़ ४ तोला, बहेडा ४ तोला, आंवला ४ तोला, देवदारू ४ तोला, उलट कम्बल की जड़ ४ तोला, कमलगट्टा ४ तोला, बलबीज४ तोला, सफेद चन्दन ४ तोला, लाल चन्दन ४ तोला, दारूहलदी ४ तोला, बंशलोचन ४ तोला, बंग भस्म ४ तोला, लोह भस्म ४ तोला, सोनामुखी भस्म ४ तोला। इनमेंसे सबसे पहिले काष्ट औषधियों का चूर्ण करके तीनों धातु भस्में उसमेंमिला देना चाहिये। उसके पश्चात् सारे चूर्णको १ भावना भोरिंगणीके क्वाथकी, १ भावना अशोक की छालके क्वाथकी, १ भावना पुत्र जीवकके फलोंके गर्भके क्वाथकी और १ भावना शतावरीके रस अथवा क्वाथकी देना चाहिये। उसके पश्चात् इसकी छै २ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छायामें सुखा लेना चाहिये।

इनमेंसे प्रति दिन सवेरे शाम ३ से लेकर ४ गोली तक दूधके साथ लेना चाहिये। कुछ समय तक इसको सेवन करनेसे सभी जातिके ऋतु दोष दूर होकर स्त्रियोंका बंध्यत्व मिट जाता है। जिन स्त्रियोंका गर्भ हमेशा गिर जाता हो, रजोदर्शन के समयमें कष्ट होता हो, मासिक धर्म कम आता हो, गर्भ धारण न होता हो, ऐसी स्त्रियोंके सब विकार इस औषधिसे दूर हो जाते हैं। जन्म बंध्या काक बंध्या और मृत वत्सा औरतों के लिये यह एक उत्तम औषधि है। (जंगलनी जड़ी बूटी)

—

जिकलक(तुर्की)

नाम—यूनानी—जिकलक ।

वर्णन—

यह एक फल होता है जिसका रंग लाल, स्वाद रहट मीठा और गन्ध खरबूजे की तरह होती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह सर्द और तर है। यह हृदय को शक्ति देता है। पित्तकी तजाको कम करता है। शरीर की खुश्कीको दूर कर तरी पैदाकरत है। सूखी खांसी में यह लाभदायक है। वातकी वजहसे पैदा हुए पागलपनमें यह मुफीद है। खुजली, चेचक और बवासीर में भी यह फायदा पहुँचाता है।

जिंगन

वर्णन—

संस्कृत—जिंगिनी, झिगनी, झिगी, सुनिर्यासा, प्रमोदिनी, कुल मंजरी, पार्वती, । हिन्दी—जिगिनी, जिगन, । मराठी—मोई, मोख, शिम्पटी । गुजराती—मवेड़ी, मालेड़ू । काठियावाड—मवेडो । सिंध—मुइ । काश्मीर—गन्धबल, कैमेल । कनाड़ी—उडीमर । तामील—ओदीयमरम् । तेलगू—ओड्डीमानु । लेटिन—Odina wodeir (ओडीना वोडियर) Lamnnea Grandis (लेनिया ग्रेंडिस)

वर्णन—

जिंगिनीका वृक्ष जब पत्ते और फूलोंसे लदा हुआ रहता है तब बहुत सुन्दर दिखलाई देता है। मगर जाड़ोंमें जब इसके पत्ते खिर जाते हैं तब इसके वृक्ष भस्मी रंगके ठूंठकी तरह दिखाई देते हैं। इसके लिए ब्रांडिसने लिखा है। कि "A Handsome Tree when in Full foliage an eyesore when leafless"

इस वृक्षकी साधारण ऊचाई ३०।४० फुट और इसके पिंडकी गोलाई ४।५ फुटकी होती है। इसके बडी और फैली हुई डालियां लगती है। इसके पत्ते लबी सलियोंके ऊपर जोडेसे लगते है। वे बहुत चमकते हुए और सुन्दर होते हैं। शाखाओंके किनारेके पास २ आकर इनका आकार गुम्बजकी तरह हो जाता है। इसके आमके मोरकी तरह सूक्ष्म पीलास लिये हुए लाल रंगके फूल आते हैं जो खुशबूदार होते हैं। बसतऋतुमें इस वृक्षमे कुछ पीला और सफेद रगका गोंद निकलता है। जो आधा

पानीमें गलता है और आधा नहीं गलता। यह वृक्ष काठियावाड, मद्रास प्रान्त और हिन्दुस्तानके गरम भागोंमें कई स्थानों पर होता है। दुष्कालके समय यह ढोरोंके घासकी जगह बहुत उपयोगी सिद्ध होता है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे जिगनी मधुर, गरम, कसैली योनिशोधक, चरपरी, तथा हृदयरोग, वात और अतिसारको दूर करनेवाली होती है। इसका गोंद स्नेहन और समाहक है। इसकी छाल संग्राहक, पौष्टिक और मगारोपक होती है।

दस्तों को बन्द करने के लिये इसका गोंद दिया जाता है। मोच और चोट की पीड़ा मिटाने के लिये इसके गोंद को नारियल के रसमें पीसकर लेप करते हैं। इसकी छालका काढ़ा, अजीर्ण, अतिसार और शरीर की शिथिलता को दूर करनेके लिये दिया जाता है। इस काढ़ेसे कुल्ले करनेसे गलेकी खराबी मिटकर खाँसीमें लाभ होता है। दांतों का दर्द मिटता है और मसूड़ों का ढीलापन दूर होता है। इसकी छालके काढ़ेको तेलमें सिद्ध करके उस तेलको पुराने और न भरनेवाले घावोंपर लगानेसे लाभ होता है। इसके पत्तोंको गरम करके सूजनके ऊपर बाँधते हैं। दमेके रोगमें इसके पत्तोंका क्वाथ बनाकर पिलाया जाता है। स्त्रियोंके हृदयका बल बढ़ानेके लिये भी इसके पत्तोंका क्वाथ मुफीद है। अफीम या दूसरे किसी प्रकारके विषसे अगर मूर्च्छा आगई हो तो उसको मिटानेके लिये इसके ताजे पत्तोंके १० तोले रस में ५ तोले इमली को मसलकर पिलाना चाहिये। जिससे वमन होकर मूर्च्छा दूर हो जायगी। पुराने और भरनेवाले फोड़ों पर इसकी छालको नीमके तेलमें पीसकर लगाने से लाभ होता है।

इसकी छालका लोशन बनाकर दुष्ट घावोंके ऊपर लगानेके काममें लिया जाता है। यह चर्मप्रदाह, कुष्टके व्रण और पीले रंगकी फुन्सियों पर भी लाभ पहुँचाता है।

कोंकणमें अफीम या दूसरे निद्रा लाने वाले पदार्थों की वजहसे पैदा हुई बेहोशी को मिटाने के लिये इसका ताजा रस १० तोले लेकर उसमें ५ तोला इमलीको मसलकर पिलाते हैं। जिससे बेहोशी मिट जाती है।

आर० एन० खोरीके मतानुसार पांडिचेरीमें इसकी छाल अतिसार और पेचिशके ऊपर उपयोगमें ली जाती है। इसका गोंद स्त्रियोंके लिये दुग्ध वर्धक माना जाता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार इसका रस आँखोंके रोग और दुष्ट व्रणों पर लगाने के काममें लिया जाता है।

शियम कारबोनेट रहता है। यह वनस्पति नेत्र रोग कठिनाईसे आराम होने वाले व्रण, विस्फोटक और मुँहके छाले और मसूड़ों पर बहुत उपयोगी है।

जिंगना (जोंकमारी)

नाम—

हिन्दी—जिंगना, जोंकमारी, जंगमानि। काश्मीर—काला चंम। पंजाब—धब्बर। अरबी—अधसिरा, परिजानेह। गुजराती—काली फुलडी, गोलो फुलडी। सीमान्त प्रदेश—जोंकमारी, जैंधानी। लेटिन—Anagallis Arvensis (अनेगेलिस अरवेनसिस)

वर्णन—

यह वर्ष जीवी क्षुद्र वनस्पति नेपाल, कुमाऊँ, खासिया पहाड़ और काश्मीर में पैदा होती है। २ दो जातियाँ होती हैं। एक लाल फूलवाली दूसरी नीले फूलवाली। इसका पौधा छोटा और जमीन पर फैला हुआ होताहै। इसके पत्ते डंठल रहित, अंडाकृति, और बहुत नसोंवाले होते हैं। ये हरेरंगके होते हैं और इनपर पीले धब्बे रहते हैं। इसके फूल किरमिजी रंगके होते हैं। इसकी फली मटरकी फलीकी तरह होती है और उसमें छोटे छोटे बीज होते हैं। यह बनस्पति मच्छियों और कुत्तोंके लिये जहरीली होती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

जोंकमारी—कड़वी, तीखी, आनुलोमिक, वेदना नाशक, व्रणरोपक, सूजनको नष्ट करनेवाली, अवसादक और विषनाशक होती है। इस औषधिको बहुत छोटी मात्रामें देना चाहिये। अधिकमात्रा में देनेसे यह अपना जहरीला असर बताती है। जिससे आमाशयमें प्रबल दाह पैदा होती है। इसका जहरीला तत्व अरीठा और शिकाकाईमें पाये जाने वाले जहरीले तत्वके समान ही होता है।

उन्माद, उदासीन वृत्ति और अपस्मारके रोगमें इस वस्तुको जुलाब लानेके लिये दिया जाता है। पागल कुत्तेके विषमें इसको खिलाते भी हैं और काटे हुए स्थानपर इसका लेप भी करते हैं। सर्पके विषमें इसको शराबके साथमें देते हैं। क्षार युक्त सन्धिशोथ, जलोदर, जलशोथ, यकृतशोथ, मूत्रपिंडके रोग और फुफ्फुसके रोगोंमें इसको देनेसे विरेचन होकर सूजनकी कमी हो जाती है। सूजनकी कमी होनेके लिये, शरीरमें घुसे हुए कांटे निकालने के लिये और दांतोंकी बेदना रोकनेके लिए इसका बाहरी लेप भी अच्छा काम करता है।

यूनानी मत—यूनानी मतके अनुसार यह वनस्पति प्रदाह, फोड़े और यकृत तथा गुर्दे के रोगोंमें लाभ पहुचाती है। नेत्र रोगोंमें और जलोदरमें भी यह लाभदायक है। यह नेत्रोंकी ज्योतिको सुधारती है और नेत्र कनीनिकाकी वेदनाको दूर करती है। इसके रसको सूंघनेसे नाकसे बदबू आना बन्द हो जाता है और नाक बहकर शिरो विरेचन हो जाताहै। मस्तिष्क की पीड़ा, कुष्ठ, पागल कुत्ते का विष, जलोदर, उन्माद और अपस्मार में भी यह लाभदायक है।

यूरोपमें पहले यह वनस्पति मृगी, उन्माद, मूर्च्छा, हिस्टीरिया, यकृत और तिल्लीके रोग, जलोदर, पथरी, सांप और पागल कुत्ते के विष इत्यादि कई बीमारियों पर उपयोगमें लीजाती थी मगर अब इससे अच्छी दूसरी औषधियोंका आविष्कार हो जानेसे इसका उपयोग कम हो गया है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह औषधि गठिया, जलोदर और सर्पविष पर उपयोगी है। इसमें सेपानिन और एम्लिन नामक दो पदार्थ पाये जाते हैं। यह वनस्पति मछलियों के लिये जहर है।

जिम

नाम—

संस्कृत—दीर्घ सुन्दर, फरिणा। हिन्दी—जिम, [illegible]। [illegible]—[illegible]। [illegible]—पर्पटक। तामील—[illegible]। तेलगू—[illegible]। [illegible]—[illegible]। [illegible]—[illegible]। गिरानी—[illegible]। लेटिन— Mollugo Oppositifolia. M. Spergula. (मोल्यूगो आपोसिटीफोलिया और मोल्यूगोस्पेरग्यूला)।

वर्णन—

यह एक [illegible] है। [illegible] में पैदा होती है। यह एक [illegible] वनस्पति है। [illegible] जिनमें [illegible] बीज रहते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

[illegible]

क्रिया सुधर जाती है। नर्मरोगों में इसकी तरकारी बनाकर देने से और इसके पत्तों को पीसकर लेप करनेसे लाभ होता है। इसको गरम करके चांदीके तेजके साथ मिलाकर कानपर बांधनेसे कानका दर्द आराम होता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति आमवातनाशक, कृमिनाशक, और मृदु विरेचक होती है।

जिउन्दली

नाम—

गढ़वाल—जिउन्दली, गदचिराना। मराठी—अटकी। कुमाऊं—नगपधेग। कनाड़ा—मरेन, गुदेहर्गी। मलयालम—किरीटी। लेटिन—Maesa Indica (मेइसा इंडिका)

वर्णन—

यह एक बहुशाखी बड़ी झाड़ी होती है। इसकी शाखाएं नाजुक और फिसलनी होती हैं। इसके फूल छोटे, हलके और सुगन्धित रहते हैं। इसका फल लंबगोल और सफेद होता है इसके बीज काले होते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

इसकी जड़ गरमीकी बीमारीमें लाभदायक मानी जाती है। इसका फल कृमिनाशक होता है।

जिमजिम

नामः—

यूनानी—जिमजिम।

वर्णन—

यह एक वनस्पतिकी जड़ है जो शकाकुल मिश्रीके समान होती है। इसमें खुशबू आती हैं। इसकी ताजी जड़ जंगली गाजरसे मिलती जुलती होती है। इसका रंग, ऊपरसे कुछ पीलापन लिये हुए सफेद होता है और भीतरसे बिल्कुल सफेद होता है। यह खुशबूदार और स्वादमें कुछ कड़वापन लिये हुए मीठी होती है। इसको गाजर मूयान भी कहते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति दमा, पसलीका दर्द, फेफड़ेकी सूजन, निमोनिया, कफमें खूनका जाना और गलेकी सूजनमें लाभदायक है। इसकोर माशेसे ४ माशे तक की मात्रामें किसी दस्तावर औषधिके साथ देनेसे दिलकी धड़कनमें फौरन फायदा होता है। इसकी ताकत बहमन सफेदकी ताकतके बराबर है। यह शरीरको मोटा करती है और कामेंद्रियको ताकत देती है तथा वीर्यके दोषोंको दूर करती है।

मुजिर—यह तिल्लीके लिये हानिकारक है।

दर्पनाशक—इसका दर्पनाशक बबूलका गोंद है।

प्रतिनिधि—इसका प्रतिनिधि शिकंजबीन है।

मात्रा—इसकी साधारण मात्रा १ माशा और दिलकी धड़कन मिटाने रोगीके लिये ४ माशेतक है।

जियान

नाम—

यूनानी—जियान।

वर्णन—

इसकी बेल इश्क पेचाकी बेलके समान होती है। इसके फूल बहुत खूबसूरत होते हैं। फूल चमेलीके फूलसे कुछ छोटा होता है। [illegible] इसकी जड़ काली और पतली होती है और इसमें कई गांठें होती हैं

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानीमतसे यह वनस्पति [illegible] गरम और खुश्क है। [illegible]

इसकी मात्रा १॥ माशेसे ४॥ माशेतक है।

मुजिर—इसको अधिक मात्रामें लेनेसे दस्त, उल्टी, मरोड़ इत्यादि उपद्रव होते हैं। इन उपद्रवोंको दूर करनेके लिये बादामका तेल और इसबगोलका लुआब देना चाहिये।

ज़ीरा

नामः—

संस्कृत—जीरक, दीप्यक, जरना, दीर्घका, अजाजिका, कांजरा, मगधा, मितदिप्या, दीर्घकणा, मिताजाजी, शुक्लजाजी। हिन्दी—जीरा, सफेद जीरा। बंगाल—जीरे, साधाजीरे। मराठी—जीरे, पांढरे जीरे। गुजराती—जीरुं। मलयालम—जीरकम्। तेलगू—जिलकारा, जीरका। तामील—सीरुगम। फारसी—ज़ीरा। अरबी—कमुना। उर्दू—ज़ीरा। यूनानी—खामुन। लेटिन—Cumminnm cyminum (कमिनम सायमिनम)।

वर्णन—

जीरा हिन्दुस्तानके सब प्रान्तोंमें मसालेकी तरह शागमें खाया जाता है। इसको सब कोई जानते हैं। इसलिए इसके विशेष वर्णनकी आवश्यकता नहीं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे जीरा शीतल, रुचिकारक, चरपरा, मधुर, अग्निको दीपन करने वाला, विषनाशक, नेत्रोंको हितकारी और पेटके आफरेको दूर करनेवाला होता है। यह किंचित् उष्ण प्रकृति है। जठराग्नि, को दीप्त करता है, गर्भाशयको शुद्ध करता है, ज्वरनिवारक होता है, तथा क्षय आफरा, वात, कुष्ठ, विष विकार, ज्वर, अरुचि, रक्त विकार, अतिसार, कृमि, पित्त और गुल्मरोगका नाश करता है।

जीर्ण ज्वरके अंदर जीरेका व्यवहार करनेका बहुत रिवाज है। इससे भूख बढती है और बल सुरक्षित रहता है। नवीन ज्वरमें इसको देनेसे शरीरकी जलन और पेशाबकी वेदना कम होती है। जीरेको उबालकर उस पानीसे स्नान करनेसे खुजलीमें लाभ होता है। पेटका फूलना, उल्टी, दस्त, संग्रहणी और अजीर्ण सम्बन्धी रोगोंमें जीरा लाभदायक है। बालकोंके लिये यह विशेष उपयोगी है। बवासीर की वेदना पूर्ण सूजनमें इसको मिश्री के साथ देने से तथा पानी में पीस कर अर्श पर लेप करने से शान्ति मिलती है।

सुज़ाक, पथरी और मूत्रावरोधमें जीरेको मिश्रीके साथ बड़ी मात्रामें देते हैं। जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोगोंमें भी इसका उपयोग लाभदायक माना जाता है।

यूनानीमत—यूनानीमतसे जीरा दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। यह पेटके आफरे को मिटाता है, वायु को शान्त करता है, यकृत और आंतों को ताकत देता है, गुर्देको शक्ति देकर उसमें गर्मी पैदा करता है और उसकी सूजनको मिटाता है, कफ को छाटता है, कब्जियत को मिटाता है, कामशक्ति को बढ़ाता है, इसका हिम रतौंधी, आंखोंके जख्म, नाखूना (एकप्रकार का नेत्ररोग) और आंखोंसे पानी बहनेको रोकता है, मसाने और गुर्दे की पथरी को तोड़ता है। सिरकेके साथ इसको देने से हिचकी बंद होती है। मेदेके कृमियों को यह नष्ट करता है, पित्त को शान्त करता है, गर्भिणी स्त्री को जी की मिचलाहटको दूर करता है। यह सफेद जीरे का हलवा खिलाने से स्त्रियों का दूध बढ़ता है। जीरे को घी में चुपड़कर चिलममें रखकर इसका धूम्रपान करने से हिचकी मिटती है। इसका तेल बीच्छू के जहर को उतारता है। भुना हुआ जीरा दहीके साथ खिलाने से अतिसारमें फायदा होताहै। जीरे को कचनार की छाल के रस का पुट देकर खिलानेसे वात, पित्त और कफ के ज्वर शान्त होते हैं। इसका गुड़के साथ खानेसे विषमज्वर में लाभ पहुंचता है। सोंठ और जीरे को पानी के साथ पीसकर लगाने से मकड़ी का जहर उतर जाता है। इसके बफारे से अंडकोष की सूजन भी दूर हो जाती है।

चरकके मतानुसार जीरेके बीज सर्पविष को दूर करनेमें सहायता पहुंचाते हैं। वाग्भटके मतानुसार यह बिच्छूके विषमें उपयोगी है।

केस और महस्करके मतानुसार यह सांप और बिच्छू दोनोंही के विष पर निरुपयोगी है।

कर्नलचोपराके मतानुसार यह अग्निवर्द्धक, पेटके आफरे को दूर करनेवाला, शान्तिदायक और सर्पविष पर उपयोगी है। इसमें एक उड़नशील तेल पाया जाता है।

थाइमल नामक पदार्थ जो विशेषकर अजवायन से प्राप्त किया जाता है, जीरेमें भी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। जीरेमें पाया जाने वाला मुख्य तत्व क्यूमिनिक एल्डिहाइड है। इसीसे थाइमल प्राप्त किया जाता है।

कन्याल और घोषके मतानुसार इसके बीजोंको पीसकर उनका लेप [illegible] को दूर करने के लिए बतलाया जाता है।

आर० एन० [illegible] मतानुसार यह [illegible] को दूर करनेके लिए [illegible] उपयोगी है।

उपयोग—

[illegible]

जीरा बनाते हैं। यह जीरा गर्भवती स्त्री को देनेसे उसका जी मिचलाना और होजरू आना बंद होजाता है।

हिचकी—जीरे को घी में चुपड़कर चिलम में रखकर उसका धूम्रपान करने से हिचकी मिटती है।

बिच्छू का विष—जीरे और नमक को पीसकर घी और शहद में मिलाकर थोड़ा सा गरम करके बिच्छू के डंकपर लगाने से बिच्छूका विष उतरता है।

पामा खुजली—४ तोला जीरा और २ तोला सिंदूर को ३२ तोला कड़वे तेलमें पकाकर लगानेसे खुजली मिटती है।

अतिसार—दही में जीरेका चूर्ण मिलाकर पिलाने से अतिसार मिटता है।

वात पित्त के रोग—जीरे और धनिये की लुग्दीसे सिद्ध किये हुए घी को सेवन करने से मन्दाग्नि और वात पित्त के रोग मिटते हैं।

विषम ज्वर—इसके चूर्ण को गुड़में मिलाकर खिलाने से मन्दाग्नि, विषम ज्वर और वातके रोग मिटते हैं।

मकड़ी का विष—सोंठ व जीरेको पानीके साथ पीसकर लगाने से मकड़ी का विष उतरता है।

कुत्ते का विष—जीरा और काली मिर्च को घोट छानकर पिलाने से कुत्तेका विष उतरता है।

अंडवृद्धि—जीरा और काली मिरचों को पानी के साथ पीसकर औटाकर मालिश करनेसे अंडकोष की सख्ती मिटती है।

जीरास्याह

नाम—

संस्कृत—कृष्ण जीरक, कृष्णजाजी, जरणा, कालजीरकः, बहुगन्धा, भेदनीका, भेदिनी, सूच, कालमेषी, कश्मीरजीरक, इत्यादि। हिंदी—स्याहजीरा, कालाजीरा। गुजराती—स्याजीरू। पंजाब—जीर स्याह। काश्मीर—गुनियान, गनियून। बंगाल—जीरा, शियजीरा। तेलगू—शिमाइसपू नककजीर। तामील—केकूविराइ, पिल्लपू, शिरगम। लेटिन—Carum Carui (केरम केरुइ)।

वर्णन—

स्याह जीरा काश्मीर, हिमालय, अफगानिस्तान और ईरान मे पैदा होता है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदिक मत से स्याह जीरा चरपरा गरम, नेत्रोंके लिये लाभ दायक, रुचिकारक, सुगन्धित, रूखा, दीपन तथा जीर्णज्वर, कफ, सूजन, मस्तक रोग और कुष्टको दूर करनेवाला होता है।

इसके बीज तीक्ष्ण, चरपरे, गरम, आँतोंके लिये संकोचक, पार्यायिक ज्वरों को दूर करने वाले, अतिसारनाशक और पेट के आफरेको मिटाने वाले होते हैं। ये कफ की वजह से पैदा हुई सूजन को नष्ट करते हैं, सिर दर्द में लाभ पहुँचाते हैं। प्रतिसार धवलरोग, और उदर सम्बन्धी फोडोंमें भी यह लाभदायक है। नेत्र रोगोंके लिये भी यह एक उत्तम वस्तु है।

यूनानी मत—यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जे में गरम और खुश्क है। यह प्रकृतिमें गरमी पैदा करता है, कफ़को मिटाता है, पेटके आफरे को दूर करता है, भूखको खोलता है, मूत्रल और रज प्रवर्तक है, पेटके कृमियोंको नष्ट करता है, इसको मुँहमें चबाकर इसके रसको आँखमें डालनेसे आँखका जमा हुआ खून पिघल जाताहै। इसके काढ़ेसे कुल्ले करनेसे दाँतका दर्द दूर होता है। इसको सिरके के साथ देने से हिचकी मिटती है। इसका शरबत गर्भाशयकी सूजनको दूर करता है। इसके धुएँसे जुकाम और पीनसका रोग मिटता है। इसका बफारा देनेसे बवासीरके मस्से हलके पड़ जाते हैं।

बवासीरके मस्से गुदाके बाहर आकर सूज गये हों तो स्याह जीरेको पानीमें उबाल कर उस पानीसे सेक करनेसे अच्छा लाभ होता है। गर्भाशयकी सूजनमें इसके काढ़ेमें स्त्रीको बिठानेसे लाभ होताहै। जीर्ण ज्वरके समान भयंकर रोगके अन्तमें भूख बढ़ाने के लिये इसका उपयोग किया जाता है। प्रसूति कालमें दूध बढ़ानेके लिये इसको देते हैं। पेटका फूलना, उदर शूल, शिथिलता प्रधान अजीर्ण और मरोड़ीके रोगों में यह एक अच्छी औषधि है।

यूरोपके अन्दर इसके बीज एक शांति दायक और मस्तिष्क को उत्तेजना देने वाले पदार्थ की तरह उपयोगमें लिये जाते हैं। इङ्गलैंडमें ये बच्चो को होने वाले कोष्ट वायु और पेट सम्बन्धी गड़बड़ीको दूर करनेके लिये दिये जाते हैं।

जर्मनीमें इसके बीज हिस्टीरियाके आक्रमणको दूर करनेके लिये और कौलिक उदर शूलमें काममें लिये जाते है।

—

जीउन्ती

नाम—

संस्कृत—माहकुमारि । पंजाब—जीउन्ती । अंग्रेजी—Bugbane बगैन । लैटिन—Cimicifuga folida (सिमिसि फ्यूगा फिटिडा) ।

वर्णन—

यह बहु वर्षायु लोम युक्त वनस्पति भूटानसे कश्मीर तक ७ हजार फीटसे १२ हजार फीटकी ऊँचाई तक पैदा होती है । इसका पौधा २॥ से ३ फीट तक ऊंचा होता है । पत्ते जोड़ेसे लगते हैं । इसके फूल सफेद होते हैं । इसके डोडियाँ लगती हैं जिसमें बीज रहते हैं । इसकी जड़ें ही औषधिमें काम में आती हैं ।

गुण दोष और प्रभाव—

इस वनस्पतिकी शरीरके ऊपर कूट और सुरंजानके समान क्रिया होती है । यह सूजनको नष्ट करती है, ज्वरमें लाभ दायक है, वेदना नाशक, शक्ति वर्धक, कफ निःसारक और आमवात नाशक है । इसकी मात्रा १० से १५ रत्ती तककी है । बड़ी मात्रामें इसको देनेसे वमन होने लगती है, चक्कर आते हैं, कम्पन होता है और नाड़ीकी गति कमहो जाती है । इससे बच्छनागके समान हृदयमें अशक्ति आ जाती है । छोटी मात्रामें यह कटु पौष्टिक, हृदयको बल देने वाली और गर्भाशयका संकोचन करने वाली है । इसके ताजे पत्तोंको पीसकर सन्धियोंकी सूजन पर बाँधा जाता है । नवीन आम वातमें यह बहुत उपयोगी है । गृध्रसी, कमर का अकड़जाना और कष्ट प्रद मासिक धर्ममें भी यह उपयोगी है ।

यूरोपमें इसकी जड़ मृदु विरेचक और वामक मानी जाती है । चीन और इंडो चायनामें यह ज्वर निवारक और पसीना लाने वाली मानी जाती है । सन्धिवातकी पीड़ा, जलोदर, क्षयकी प्रारंभिक अवस्था और वायु नलियोंके प्रदाहमें इसको उपयोगमें लेते हैं ।

साइबीरियामें इस वनस्पतिकी जड़ खटमल और मच्छरोंको भगाने के काम में ली जाती है ।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वस्तु स्नायु मण्डलमें अवसन्नता पैदा करती है । इसमें उपक्षार और सिमिरि फ्युगाइन नामक तत्व पाया जाता है ।

जीवन्ती (सोमलता)

नाम—

मलयालम—जीवन्ती, जीवती। कनाड़ी—कानेड़वल्ली, सोमा, सोमवल्लि। मराठी—रानशेर। तामील—कोडिकलि। तेलगू—पुलतिगे, सोमलता। लेटिन— Sarcostemma Breistigma (सारकोस्टेमा ब्रिविस्टिग्मा,)।

वर्णन—

यह एक लता होती है जो दूसरे झाड़ोंके आसरेसे चलती है। इसके पत्ते लंबगोल होते हैं। इसकी फलियाँ ८।१० सेंटिमीटर तक लंबी रहती हैं। इसके बीज लंबगोल होते हैं इनकी डंडियोंमें कई सधियाँ रहती हैं। इस झाड़में बहुत अधिक मात्रामें एक प्रकारका दूधके समान रस निकलता है।

गुण दोष और प्रभाव—

ऐसा कहा जाता है कि यह वनस्पति आर्य लोगोंकी सुप्रसिद्ध सोमलता ही है। मगर सोमलता की जो पहिचान और जो लक्षण वेदोंमें लिखे हुए हैं वे इस वनस्पतिके लक्षणोंसे बिल्कुल नहीं मिलते।,

ऐसा कहा जाता है कि इस वनस्पतिके गुण सोमलताके गुणोंसे ही मिलते जुलते होते हैं।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति नशीले पदार्थ बनानेके काममें लीजाती है।

जीवन्ती

नाम—

संस्कृत—जीवन्ती, जीवनी, जीवा, जीवदा, सुखकरी रजनीगी, प्राणदा, भद्रा, मंगल्या, जीवपुष्टा, कांजिका, शशिशिंबिका, सुरिंगला, मधुस्रावा, जीववर्द्धिनी। हिन्दी—जीवन्ती। बंगाल—जीवई, जियाति जीवन्ती। मराठी—जीवंती। गुजराती—गड़ावनी, राहटी। कनाटक—हिरिया दिल। लेटिन—Desmotrichum Fimbriatum (डेस्मोट्रिकम फिम्ब्रिएटम) Dendrobium macraei (डेन्ड्रोबियम मेक्रेई)

वर्णन—

जीवन्तीकी लतायें जमीनपर फैलनेवाली होती हैं और उनमें जगह २ पर गठानें पड़ी हुई रहती

हैं। इसके फूल रंग बिरंगे होते हैं। इसके पत्ते १० से लगाकर २० सेंटिमीटर तक लंबे और २ से लेकर ५ सेंटिमीटरतक चौडे होते हैं। यह वनस्पति हिमालय, नीलगिरी और कोकणमें पैदा होती है। इसकी ४ जातियां होती हैं। १ जीवन्ती २ दूसरी बृहद् जीवन्ती ३ स्वर्ण जीवन्ती और ४ तिक्त जीवंती।

गुण, दोष और प्रभाव—

राजनिघंटुके मतानुसार जीवन्ती मधुर और शीतल, होती है। यह रक्तपित्त श्वास, खांसी, वात, क्षय, दाह और ज्वरको नष्ट करती है, कफ और वीर्यको बढाती है, यह आंतोंका संकोचन करती है, कफ निःस्सारक है। इसका फल मीठा और कामोद्दीपक होता है। यह पारेको बांधनेवाली है।

सुश्रुतके मतानुसार यह औषधि दूसरी औषधियोंके साथमें सांप और बिच्छूके विषपर दी जाती है।

इसके पचांगका काढ़ा दूसरे सुगंधित द्रव्योंके साथ त्रिदोषके अन्दर दिया जाता है। धातुपतनसे पैदा हुई कमजोरीमें भी इसका काढा लाभदायक होता है।

क० चोपराके मतानुसार यह शांतिदायक, पौष्टिक और सर्प विष पर उपकारी है।

जीवंती बड़ी

नाम—

संस्कृत—बृहद् जीवन्ती, पुत्रभद्रा, प्रियंकरी, मधुरा, जीवपुण्या, यशस्करी। हिन्दी—बडी जीवन्ती। बंगाल—भड़जवी। गुजराती—मोटी खरखोडी, तृणधारणी।

वर्णन—

यह जीवन्तीकी एक बडी जाति होती है।

गुण, दोष और प्रभाव—

बडी जीवंतीके रस, वीर्य और विपाकमें जीवंतीके समान है। यह पारेको बांधने वाली है।

जीवंती पीली

नाम—

संस्कृत—हेमपूर्णा, स्वर्णलता, स्वर्ण जीवंतिका, हेमवल्ली, हेमलता, सुमगला, इत्यादि। हिन्दी पीली जीवन्ती। मराठी—हरणवेल, हेम हरणवेल। गुजराती—खरखोडी, मोटी खर खोडी। लेटिन—Dregea Volubilis ड्रेजिया व्होल्यूबिलिस।

वर्णन—

यह जीवन्ती की पीली जाति होती है। इसका दूध पीले रंगका होता है। कीर्तिकर और बसूने इसका हिन्दी नाम नकछिकनी लिखा है मगर नकछिकनीको लेटिन में Centipeda Orbicularis सेंटि पेडा आर्बी क्यूलेरिस कहते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे स्वर्ण जीवन्ती वीर्य वर्धक, शीतल, मधुर, नेत्रोंको लाभदायक, वात नाशक जलन को दूर करनेवाली और अग्निसे जले हुएमें लाभ पहुंचाने वाली होती है।

जीवन्ती कड़वी

नाम—

संस्कृत—तिक्त जीवंतिका, तिक्त भद्रा, विष मुष्टि, केशमुष्टि दौडोद्भव। हिन्दी—दौडी। मराठी—विष दौडी। गुजराती—कडवो खरखोडो।

वर्णन—

यह पीली जीवन्तीका एक भेद है जो कडवा होता है।

गुणदोष और प्रभाव.—

आयुर्वेदिक मतसे तिक्त जीवंती कडवी, अग्निदीपक मलस्तम्भक, गरम, पित्त जनक, आम रस पित्त नाशक, हलकी, कामोद्दीपक, रुचिकारक, दाहपैदा करने वाली, कफनाशक और कटरोग, वात, गुल्म, बवासीर, कृमि, कुष्ट, विष, श्वास, प्रमेह, और चूहेके विषको नष्ट करने वाली है।

इसके पत्तोंका लेप फोड़े, फुन्सी विस्फोटक रोग और घावों पर लाभ दायक होता है। इसका पौधा और कोमल कोंपलें वमन कारक तथा कफ निस्सारक मानी जाती हैं। इसका पौधा सरदी और नेत्र रोगोंके लिये भी बहुत उपयोगी है।

जुआर

नाम—

संस्कृत—दीर्घमला, इक्षुपत्रका, रक्तखुमा, मततांदुला, यवनाला। हिन्दी—जुआर। बंगाल—जोआर, जुआर। बम्बई—जोइंला, जोआरी, कागरा। मध्य प्रदेश—जोआर, फाग थुयेरा। गुजराती—जुआर। लेटिन— Sorgum Vulgare (सोरगम व्हलगेर) Holeus Sorghum (होलेस सार गम)।

वर्णन—

जुआर एक प्रसिद्ध अनाज है जो प्रायः सारे भारतवर्षमें खाया जाता है। इसे सब कोई जानते हैं इसलिये इसके परिचयकी आवश्यकता नहीं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे जुवार शीतल, कामोद्दीपक, कब्जियत करनेवाली और, कठिनतासे पचनेवाली होती है। यह रुचि और भूखको बढाती है तथा कफ, पित्त, रक्तरोग, बवासीर, वृण और अर्बुदमें लाभदायक है। इसके दाने मूत्रल और शांति दायक होते हैं।

अमेरिकाकी निग्रो जातिके लोग इसके बीजों का काढा गुर्दे और मूत्रपिंडोंकी बीमारी में काममें लेते हैं।

क० चोपरा के मतानुमार ज्वार कामोद्दीपक होती है। इसमें ग्लुकोसाइड और धुरिन नामक तत्व पाया जाता है।

उपयोग—

आमातिसार—ज्वार की गरम रोटीको दहीमें चूरकर ढक दें जब बिलकुल ठंडी हो जावे तब खिलादें। इससे आमातिसार मिटता है।

अन्तर्दाह—ज्वारके आटे की रबडी रातमें बनाकर रखदें । सवेरे उसमें कुछ सफेद जीरा और मट्ठा मिलाकर पीनेसे अन्तर्दाह मिटती है ।

मलेरिया—मलेरिया ज्वरके ऊपर अथवा शरद ऋतुमें होने वाले पित्त ज्वर पर जिसमें दस्त और उल्टिया भी होती हों उसमे मुगली जातिके जुआरके सांटोंको गन्नेकी तरह चूसनेसे तुरत शांति मिलती है। ३।४ दिनतक इन गले हुए सांटोंको बराबर चूसनेसे एकांतरा,तिजारी,चौथिया, वगैरह मलेरिया ज्वरके सभी लक्षण शांत हो जाते हैं ।

शीत पित्त—अगर किसीके शरीरमें शीतपित्त (पित्ती या चट्ठ) उछल जाय तो जुआरके सांठेके रसमें गलजीभी का रस मिलाकर १ तोलेकी मात्रामे पीनेसे और शरीरपर मालिश करनेसे लाभ होता है ।

धतूरेका विष—जुआरके सांठेका रस, शक्कर और दूध तीनोंको समान भाग मिलाकर उसमेंसे तीन २ तोला घंटे २ भरके अन्तरसे पिलानेसे धतूरेका विष शान्त होता है ।

सर्प, बिच्छूका विष—चासटिया जुआरकी जड़ और यदि वह न मिले तो दूसरी किसी भी जुआर की जड़ २॥ तोला लेकर उसे गौमूत्रमें पीसकर उसको नाक, कान तथा आँखमें टपकानेसे और विष अधिक चढ़ गया हो तो पेटमें पिलानेसे लाभ होता है। इस दवा को पिलाकर सर्पके काटे हुए मनुष्यके सिरपर ५० घड़े पानी डालना चाहिये ।

नेत्ररोग—आँखोंमें होनेवाले मोतियाबिंद, झांक, खील इत्यादि रोगोंपर जुआरके अन्दर होने वाले कायमाके काले आटेको शहदमें मिलाकर अंजन करनेसे बड़ा लाभ होता है ।

संधि वात और पक्षाघात—जुआरके दानोंको पानीमें भाफकर उनको पीसकर उनका रस निकाल लेना चाहिये । उस रसको समान भाग अरंडीके तेलमें मिलाकर गरम करके जहां वात व्याप्ति हो वहा लेप करना चाहिये और ऊपरसे पुरानी रुई बांधकर सेंककर देना चाहिये । १ सप्ताहतक इस प्रयोगको करनेसे अच्छा लाभ होता है ।

कारबंकल—कारबंकल, भगन्दर दुष्टकैंसर और अच्छे न होने वाले फोड़ों पर जुआरके भुट्टे का हरा, ताजा और दूधिया रस साफ करके लगानेसे और उसकी बत्ती बनाकर फोडेमें भर देनेसे घाव जल्दी भर जाता है ।

गर्मी, प्रदर और प्रमेह—जुआरके दो सांठेका रस प्रति दिन प्रात काल चूसनेसे पुराना प्रदर और प्रमेह दूर होता है । यह रस गुर्दे और मूत्र पथ को साफ करता है । इसके सांठेके रसमें ऐसा कुदरती क्षार रहता है जिसके सेवनसे मूत्र बहुत अच्छी लगती है । इसके सेवनसे मूत्रकृच्छ्र और गुर्दे के सब रोग आराम होते हैं ।

पाण्डु और कामला रोग—जुआर का भुट्टा आग पर सेंककर खाने से पाण्डु और कामला रोग में लाभ होता है। इसी प्रकार दूसरे उदर रोगोंमें, लीवरी की सूजन में, तिल्ली की वृद्धिमें और आंतों की बीमारियोमें यह एक उत्तम पथ्य है।

रक्त विकार—जुआरके हरे पत्तों को पत्थर पर पीसकर शरीर पर मसलने से रक्त विकारके कई दोष दूर होते हैं।

आधा शीशी और मस्तक रोग—मस्तकके जिस हिस्सेमें दर्द होता हो नाकके उस हिस्सेमें जुआरके पत्तों या सौंठ का रस टपकाने से तुरन्त लाभ होता है।

कर्णरोग—कान से अगर पीप बहता हो तो जुआरके रसको गरम करके कानमें टपकाना चाहिये।

घाव—चाकू या हथियार का कहीं घाव लग गया हो तो उसमें जुआरके सांठे पर जो सफेद रंगका अस्तर होता है उस अस्तर को पीसकर घावमें भर देना चाहिये।

खुजली—खसरे और खुजली पर जुआरके हरे या सूखे सांठों को लेकर उनको पीसकर उसमें बकरी की मेंगनियों की आधी जली हुई राख और अरंडी का तेल समान भाग मिलाकर लगाने से लाभ होता है।

फोडे को पकाना—जो फोड़ा पकता और फूटता न हो उसपर जुआरके दानों को भाफ कर उनमें धतूरे का रस मिलाकर पुल्टिस लगाने से फोड़ा पक कर फूट जाता है।

मुंहांसे और कीलें—जुआर को कच्ची पीसकर उसमें थोड़ा चूना और कत्था मिलाकर चोपड़ने से शीघ्र लाभ होता है।

दन्त रोग—जुआरके बीजों को जलाकर उनकी राख से दाँतों को मलने से दाँतोंका हिलना, दाँतों का कष्ट और कष्टदायक पीढ़ियोंकी सूजन मिट जाती है।

बद्धकोष्ट—जुआर की थूलीको दूधमें मिलाकर लगातार एक मास तक खानेसे पुरानी कब्जियत भी दूर हो जाती है।

जुल पापड़ा

नाम—

संस्कृत—पर्पटका। बंगाल—जुलपापड़ा। बम्बई—फारस, खरस। मराठी—खरस। करनाटकी—परपाटक। तेलगू—परपाटकम्। लेटिन—Mollugo Stricta मोल्यूगो स्ट्रिक्टा।

वर्णन—

यह छोटी जाति की वनस्पति हिन्दुस्तानमें सब दूर पैदा होती है। इसका पौधा बालिश्त भर ऊंचा होता है। इसके बहुतसी डालियाँ रहती हैं। इसके पत्ते १.३ से ३.८ सेंटिमीटर तक लम्बे और ३ से लेकर ६ मिलिमीटर तक चौड़े होते हैं। इसके फूल सफेद, फली लम्ब गोल और बीज चपटे और गहरे बादामी रंगके रहते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

यह वनस्पति अग्नि वर्धक, मृदु विरेचक, कृमिनाशक और ऋतुश्राव नियामक होती है। मासिक-धर्मकी अनियमिततामें इसके पत्तोंका शीत निर्याण बनाकर देनेसे रजकी मात्रा बढ़ जाती है।

प्रसूति कालमें प्रसूता स्त्री को इसकी तरकारी बनाकर देनेसे दस्त साफ होता है। भूख बढ़ती है और गर्भाशय शुद्ध हो जाता है। विषम ज्वरके अन्दर भी इसकी तरकारी बनाकर दी जाती है।

जुन्देबेदस्तर

नाम—

यूनानी—जुन्देबेदस्तर। लेटिन—Castoreum कैस्टोरियम।

वर्णन—

यूनानी हकीमों के मतसे एक समुद्री जानवर जिसे ऊदबिलाव कहते हैं और जो कुत्तेकी तरह होता है उसके अण्डकोषको जुन्देबेदस्तर कहते हैं। यह जानवर अधिकतर पानीमें रहता है और कभी २ मैदानमें निकलकर धूपमें सो जाता है तब शिकारी लोग इसे मारकर इसके अण्डकोष निकाल लेते हैं। कुछ लोगोंका यह कहना है कि इसके अण्डकोष निकालनेके लिये इस जानवरको मारनेकी जरूरत नहीं होती। शिकारी लोग नश्तरसे इसके अण्डकोषोंको निकालकर इसे जिन्दा छोड़ देते हैं।

इसके अण्डकोषोंके अन्दर एक प्रकारका खून की तरह जमा हुआ पदार्थ रहता है। जो [illegible] तरह होता है और इसमें चर्बीके समान गन्ध आती है। इसके अण्डकोष १ इंच लम्बे अण्डेके आकारके, मजबूत, वजनदार और [illegible] रंगके होते हैं। इसका बहुत [illegible] हुआ करता है।

उत्तम जुन्देबेदस्तर वह होता है जो [illegible] और वजनदार हो। [illegible] रंगका जुन्देबेदस्तर [illegible] होता है [illegible]

खराब नहीं होती मगर उत्तम वह मानी जाती है जो २ सालसे ज्यादा पुरानी न हो। इस औषधिमें भी केशर और कस्तूरी की तरह नकली चीजें मिलाई जाती हैं। इसलिये इसे लेते समय भी असलियत का ध्यान रखना चाहिये।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मतानुसार यह तीसरे दर्जे में गरम और दूसरे दर्जेमें खुश्क होता है। गरम और खुश्क होने पर भी इसमें मुलामियत पैदा करनेकी ताकत बहुत अधिक है। यहाँ तक कि इस काममें कोई दवा इसकी बराबरी नहीं कर सकती।

इस औषधिको खानेसे जितना फायदा हासिल होता है उतनाही फायदा इसको पुराने जैतूनके तेल के साथ मालिश करनेसे भी हॉसिल हो जाता, है लेकिन यह खयाल रखना चाहिये कि बुखार की हालतमें इसका प्रयोग न किया जावे।

सर्दी और वायुसे पैदा हुइ मिरगी, आधाशीशी वगैरह दिमागी बीमारियोंमें इसका धुआँ नाकमें पहुँचानेसे अच्छा फायदा होता है।

सर्दीकी वजहसे पैदा हुए माली खोलिया और लकवेमें भी इसको खिलाने और नाकमें टपकानेसे अच्छा फायदा होता है। कपन, ऐंठन, धनुर्वात और लकवेमें इसको २ माशेकी मात्रामें प्रति दिन सवेरे ७ दिनतक खिलानेसे बहुत लाभ होता है। सिरकेके साथ इसको मिलाकर नाकमें टपकानेसे स्मरण शक्ति बढती है। इसको रोगन गुलमे मिलाकर मस्तक पर लगानेसे सर्दी और वायुका सिर दर्द मिट जाता है। इसको नाकमें टपकानेसे छींकें आती हैं और दिमागमें जमी हुई वायु बिखरकर दिमाग हलका होजाता है। इसको किसी तेलमें मिलाकर कानमें टपकानेसे सर्दीसे पैदा हुआ कानका दर्द मिट जाता है, बहरापन जाता रहता है और कानकी वायु बिखर जाती है। इसको चिलममें भरकर तम्बाकूकी तरह इसका धुआँ पीनेमे सर्दीसे पैदा हुई दिलकी धडकन और सर्दीकी बीमारियाँ दूर हो जाती हैं। इसको सिरके और पानीके साथ घोटकर पिलानेसे कफ और वायुसे पैदा हुई हिचकी बंद हो जाती है।

जुलाबकी औषधियोंके साथ इसको मिलाकर देनेसे कई फायदे होते हैं। पहला—तो जुलाबी दवाइयोंकी उग्रता कम हो जाती है। दूसरा—शरीरके अन्दर जमी हुई गंदगीको बाहर निकालनेमें मदद मिलती है। तीसरे—कफ पिघलकर दस्तकी राह निकल जाता है। इसके साथही एनेमा देनेसे वायु और कफसे पैदा हुए कॉलिक उदर शूलमें भी बहुत लाभ होता है।

अगर किसी स्त्रीके पेट में मरा हुआ बच्चा हो या उसका मासिक धर्म रुका हुआ हो तो जुन्दबेदस्तर को बड़ी मात्रामें खिलानेसे सब खराबियाँ ताकतके साथ बाहर निकल जाती हैं। इसको ऊनमे तर करके गर्भाशयमें रखनेसे गर्भाशयकी सरदी दूर हो जाती है और वायु बिखर जाती है। इससे गर्भ गिरनेका भी

धोखा रहता है। सरदीकी वजहसे अगर किसीको ग्रंथिवात (Gout) हो तो इसको काली मिरच और शहद के साथ देने से लाभ होता है। इसमें सब प्रकार के स्थावर और जंगम विषोंको दूर करने की शक्ति भी है।

आधुनिक वैज्ञानिक लोग इस औषधिको इतनी प्रभावशाली नहीं समझते हैं।

मुजिर—इस औषधिको अधिक मात्रामें लेनेसे यह अपना विषैला प्रभाव शरीरपर दिखाती है। ३ माशासे अधिक मात्रामें यह जहरीली हो जाती है। इससे मुंह सूखजाता है जबान पर दाने निकल आते हैं, छातीमें दर्द होता है। गलेमें सूजन आ जाती है और रोगी बेचैन हो जाता है।

दर्पनाशक—इसके इस विषैले प्रभावको नष्ट करनेके लिये पोदीना और सरिश्ताको शहदके साथ देना चाहिये। बिजोरे नींबूका रस, सिरका और गधीका दूध भी इसके विषको नष्ट करता है।

मात्रा—इसकी साधारण मात्रा ६ रत्तीसे १ माशेतक की है। कई हकीम ३ माशेसे ७ माशेतककी मात्रा तजवीज करते हैं मगर इसकी इतनी मात्रा खतरनाक होती है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वस्तु ज्ञान तंतुओंको उत्तेजना देती है, कृमिनाशक है। इसमें एक प्रकारका उड़नशील तेल, एक प्रकारकी चिड़चिड़ी कड़वी राल और एक प्रकारका चर्बीके समान पदार्थ पाया जाता है।

जूकश्ता

वर्णन -

यह एक बूटी है। इसके पत्ते चनेके पत्तोंके समान होतेहैं। इसका पौधा १ बालिश्त ऊंचा, ऊपरसे गोल और कांटेदार होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

यह वनस्पति ऐसी खुजलीमें जिसमें जखमोंसे पानी बहताहो, लाभदायक है। इसके क्वाथसे बाल धोनेसे जुएं मर जाती हैं। (ख० अ०)

जूट

नाम—

संस्कृत—कालशाक, चंचू, चेत्रपंगा, कोप, सुशाक। हिन्दी—नरमा, जूट, पाट। बंगाल—पाट, कोष्ट, कृष्टा। गुजराती—छूंछ, भोरछूंछ। मराठी—चोंचे। मद्रासी—मरा। कनाडी—चुंनल। अंग्रेजी—जूटप्लेंट jute plant लेटिन—Corchorus Capsularis (कोरकोरस केपस्यूलेरिस)।

वर्णन—

संसारके औद्योगिक क्षेत्र में रेशेदार पदार्थों के अन्दर रुईके बाद जूटका स्थान ही उत्तम माना जाता है। इसका पौधा ३ से ४ फीट तक लम्बा सनके पौधेकी तरह होता है। इसके फूल पीले होते हैं और इसके ऊपर फलियाँ लगती हैं।

चिकित्सा शास्त्रकी दृष्टिसे इस वनस्पतिका जितना महत्व है उससे बहुत अधिक परिमाणमें इसका औद्योगिक महत्व है। अंग्रेजी राज्यका सूत्रपात होने के साथ २ इस वस्तु की उपयोगिता का महत्व संसारको मालूम हुआ और बंगालमें इसकी खेती दिन प्रतिदिन उन्नति करने लगी। सन् १८२८ में जहाँ सिर्फ ३६४ हंडरवेट माल भारतवर्षसे विदेश को गया था वहाँ ५० वर्षोंके बाद सन् १८७८ में ५३६२२६७ हंडरवेट माल भारतवर्षसे विदेश गया और जहाँ सन् १८५५ में बंगालके अन्दर एक जूट मिल था वहा सन्१९२८ में बंगालके अन्दर जूट मिलोंकी सख्या८४ होगई। सन्१८८५में बंगालकी मिलों में ९८४१ करघे काम करते थे मगर सन् १९२७ में इन करघों की संख्या ४०३५४ थी। इन मिलोंमें ४८०० टन माल प्रतिदिन तैयार होता है जिसकी लंबाई ८००० मीलसे अधिक लंबी होती है। इन सब बातोंसे इसके व्यापारिक महत्व का अंदाजा किया जा सकता है।

जूट की जातियाँ— जूट की साधारणतया दो जातियां होती हैं। १ जंगली और दूसरी शहरी। शहरी जूट की करीब आठ नौ जातियां होती हैं। एक सबसे बड़ी जाति होती है जिसको लेटिनमें कोरकोरस ओलिटोरियस (Corchorus Olitorius) कहते हैं। दूसरी जाति को कोरकोरस केपस्यूलेरिस (C. Capsularis) कहते हैं इसी प्रकार थोड़े २ भेद से इसकी ५।६ जातियां और होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत— आयुर्वेदिक मतसे चंचु मधुर, कसेला, मलशोधक तथा गुल्म, उदर रोग, ..., बवासीर और संग्रहणी रोग को दूर करता है।

बड़ा चंचू चरपरा, गरम, कसेला, मलरोधक, रसायन, और उदर रोग, बवासीर ... विषका नाश करता है।

चंचुशाक शीतल, सारक, रुचिकारक, स्वादिष्ट, त्रिदोषनाशक, धातुवर्धक, पौष्टिक, बलकारक और बुद्धिवर्धक है।

चंचुके बीज—चरपरे, गरम तथा गुल्म, शूल, विष, और त्वचाके दोषको दूर करते हैं।

रासायनिक विश्लेषण—इसके रासायनिक विश्लेषणका परिणाम इस प्रकार है।

Water (Hygrosiopic)	9.93
Aqueous Extract	.36
Fat and wax	.68
Incrustingand Pigment matter	24.41
Cellulose	64.24

बहुतसे लोग जूट और सनके रासायनिक तत्वोंको एक समान ही समझते हैं मगर वास्तवमें इन दोनोंके रासायनिक तत्वोंमें बहुत भेद है और इनका नैसर्गिक वर्ग भी जुदा २ है।

डॉक्टर कन्हैयालाल डे० इसके चिकित्सा सम्बन्धी महत्वका वर्णन करते हुए लिखते हैं —

"Medicinal uses—The leaves of the jute plants are used as a cheap domestic medicine in Hindu households, especially in the districts where they are cultivated. The dried leaves are also obtainable in the Bazars of Bengal. An infusion with coriander and aniseed Constitutes a simple bitter used like chiretta as a stomachic and tonic, but having the advantage over that herb in being milder and not so nauseating.

The fine bleached fibre has been used as a basis for antiseptic surgical dressing. It is highly absorptive and admirably suited for this purpose"

औद्योगिक सम्बन्धी उपयोग—[illegible]

जूट

नाम—

संस्कृत—कालशाक, चंचू, क्षेत्रसंभव, कोष, सुशाक। हिन्दी—नरमा, जट, पाट। बंगाल—पाट, कोष्ट, कुष्टा। गुजराती—झूंथ, मोरल्ड। मराठी—चोंचे। बम्बई—सण। कनाड़ी—चुंचल। अंग्रेजी—जूटप्लेंट jute plant. लेटिन—Corchorus Capsularis (कोरकोरस केपस्यूलेरिस)।

वर्णन—

संसारके औद्योगिक क्षेत्र में रेशेदार पदार्थों के अन्दर रूईके बाद जूटका स्थान ही उत्तम माना जाता है। इसका पौधा ३ से ४ फीट तक लम्बा सनके पौधेकी तरह होता है। इसके फूल पीले होते हैं और इसके ऊपर फलियाँ लगती हैं।

चिकित्सा शास्त्रकी दृष्टिसे इस वनस्पतिका जितना महत्व है उससे बहुत अधिक परिमाणमें इसका औद्योगिक महत्व है। अंग्रेजी राज्यका सूत्रपात होने के साथ २ इस वस्तु की उपयोगिता का महत्व संसारको मालूम हुआ और बंगालमें इसकी खेती दिन प्रतिदिन उन्नति करने लगी। सन् १८२८ में जहाँ सिर्फ ३६४ हंडरवेट माल भारतवर्षसे विदेश को गया था वहाँ ५० वर्षोंके बाद सन् १८७८ में ५३६२२६७ हंडरवेट माल भारतवर्षसे विदेश गया और जहाँ सन् १८५५ में बंगालके अन्दर एक जूट मिल था वहां सन्१९२८ में बंगालके अन्दर जूट मिलोंकी संख्या८४ होगई। सन्१८८५में बंगालकी मिलों में ९८४१ करघे काम करते थे मगर सन् १९२७ में इन करघों की संख्या ५०३५४ थी। इन मिलोंमें ४८०० टन माल प्रतिदिन तैयार होता है जिसकी लंबाई ८००० मीलसे अधिक लंबी होती है। इन सब बातोंसे इसके व्यापारिक महत्व का अंदाजा किया जा सकता है।

जूट की जातियां— जूट की साधारणतया दो जातियां होती हैं। १ जंगली और दूसरी शहरी। शहरी जूट की करीब आठ नौ जातियां होती हैं। एक सबसे बड़ी जाति होती है जिसको लेटिनमें कोरकोरस ओलिटोरियस (Corchorus Olitorius) कहते हैं। दूसरी जाति को कोरकोरस केपस्यूलेरिस (C. Capsularis) कहते हैं इसी प्रकार थोड़े २ भेद से इसकी ५।६ जातियां और होती हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत— आयुर्वेदिक मतसे चंचु मधुर, कसेला, मलशोषक तथा गुल्म, उदर रोग, विबंध, बवासीर और संग्रहणी रोग को दूर करता है।

बड़ा चन्चू चरपरा, गरम, कसेला, मलरोधक, रसायन, और गुल्म, शूल, उदर रोग, बवासीर और विषका नाश करता है।

चंचुशाक शीतल, सारक, रुचिकारक, स्वादिष्ट, त्रिदोषनाशक, धातुवर्धक, पौष्टिक, बलकारक और बुद्धिवर्धक है।

चंचुके बीज—चरपरे, गरम तथा गुल्म, शूल, विष, और त्वचाके दोषको दूर करते हैं।

रासायनिक विश्लेषण—इसके रासायनिक विश्लेषणका परिणाम इस प्रकार है।

Water (Hygrosiopic)	9-93
Aqueous Extract	.36
Fat aud wax	.68
Ircrustingand Pigment matter	24-41
Cellulose	64·24

बहुतसे लोग जूट और सनके रासायनिक तत्वोंको एक समान ही समझते हैं मगर वास्तवमें इन दोनोंके रासायनिक तत्वोंमें बहुत भेद है और इनका नैसर्गि वर्ग भी जुदा २ है।

डॉक्टर कनाइलाल डे० इनके चिकित्सा सम्बन्धी महत्वका वर्णन करते हुए लिखते हैं.—

"Medicinal uses—The leaves of the jute plants are used as a cheap domestic medicine in Hindu households, especially in The districts where they are cultivated. The dried leaves are also obtainable in the Bazars of Bengal. An infusion with corianderand smseed Constitutes a simple bitter used like chiretta as a stomachic and tonic, but having the advantage over that herb in being milder and not so heating

The fine lycarded fibere has been used as a basis for antiseptic surgical dressing. It is highly absorptive and admirobly suited for this purpose"

'औषधि सम्बन्धी उपयोगिता—जूटकी पत्तियाँ हिन्दू घरानेमें एक सस्ती घरेलू औषधिकी तरह उपयोग में लाई जाती हैं, खास विशेषतः उन जिलों (प्रान्तों)में होता है जहां जूटकी खेती होती है। इनकी सुखाई गई पत्तियां भी बंगालके बाजारोंमें उपलब्ध होती हैं। धनियां और सरसों के साथ इनका मिश्रण करनेसे एक साधारण कड़वी औषधि तैयार होती है। जिसका व्यवहार चिरायतेकी तरह पेटकी दवा तथा पौष्टिक औषधिके रूपमें किया जाता है परन्तु यह दवा उस औषधि (चिरायते) से यह विशेषता रखता है कि यह कम कड़वी होती है तथा इतनी गर्म भी नहीं होती।

इसका (जूटके) बारीकी से साफ किया हुआ रेशा उन डाक्टरी पट्टियोके बाधनेमें भी आधारत: व्यवहृत होता है जो घाव को सडनेसे सुरक्षित रखती हैं। यह ऊँचे दर्जे का शोषक पदार्थ है तथा प्रशसनीय रूपसे इस कार्य्यके लिये उपयुक्त है।

जूफरा

नाम—

यूनानी—जूफरा।

वर्णन—

यह एक पहाड़ी जातिकी वनस्पति है। इसके पत्ते सोंफके पत्तोंकी तरह किन्तु उनसे कुछ बड़े और रुएंदार होते हैं जिनमें छत्र लगे होते हैं। इसमें सुनहरी रगके फूल लगते हैं। इसके बीज बारीक, लाल रंगके, स्वादमे कुछ तेजी लिये हुए और सुगन्धित होते हैं। इसके सब अङ्ग प्रत्यङ्ग कडवे स्वादके होते हैं। इसकी ३ जातियां होती हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

इसकी प्रकृति पहले दर्जे में गरम और खुश्क है। कोई २ तीसरे दर्जे में गरम और खुश्क बतलाते हैं। यह पेटके आफरेको दूर करती है और बदनके पीलेपन को नष्ट करती है। इसके पत्तों और फलोंको पीसकर सूखी और गीली खुजली, व्रण, फोडे-फुन्सी और छालों पर लेप करनेसे बहुत फायदा होता है। गुलाबके तेलमें इसको पीसकर सिरमें डालने से सिरके दाद और जूएँ नष्ट हो जाती हैं। इसकी जड़के खानेसे मनुष्य की कामशक्ति नष्ट हो जाती है। यह औषधि मूत्रल और रज प्रवर्तक है। बिच्छूके विषमें भी यह लाभ दायक है। इसकी मात्रा ७ माशे की है।

जूफा

नाम—

हिन्दी—यूनानी—जूफा, जूफाए खुश्क, जूफाएबिस। फारसी—जूफाए खुश्क। उर्दू—जूफा। लेटिन—Hyssopus Officinalis (हायसोपस आफिसिनेलिस)

वर्णन—

यह एक जातिका घास है। जो काश्मीरसे कुमाऊं तक ८ हजार फीट से ११ हजार फीट की ऊंचाई तक पैदा होता है। इसके पौधेकी ऊंचाई १ हाथ के करीब होती है। इसके पत्ते खुशबूदार और कडवें होते हैं। इनके कोई २ पत्ते मेंहदीके पत्ते सरीखे होते हैं। इसकी प्रत्येक डालीकी गठान पर, पीला फूल लगता है।

गुण दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति कडवी, कृमि नाशक, कफनिस्सारक, पेटके आफरेको दूर करने वाली, मूत्रल और मृदु विरेचक होती है। यह प्रदाह, पक्षाघात वायुनलियोंका जीर्णप्रदाह, फेंफड़ोंका प्रदाह, दमा, मज्जाओंकी तकलीफ और सीना तथा यकृतके रोगोंमें लाभदायक है।

यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है यह कफको मुलायम करके दस्तकी राह निकाल देती हैं, सूजन और जमेहुए खूनको बिखेरती है, पेटके कृमियोको नष्ट करती है। फालिज़, पुरानी खांसी, फेफडेकी सूजन, छाती, पसली और मेदेका दर्द, कालिक उदर शूल, नजला, मासिकको रुकावट तथा यकृत और जाँघोके दर्दमें यह लाभदायक है। कफकी वजहसे पैदा हुए दमा और खांसीको यह दूर करती है। जलोदर की सूजनमें लाभ पहुँचाती है। यकृतके सुद्दे, आँतोंके जख्म, पेचिश और गर्भाशय, गुर्दे तथा मसाने की सूजनमें यह लाभदायक है।

इसके काढ़े को शरीर पर मालिश करनेसे त्वचाके दाग दूर होते हैं। अजीरके साथ इसका काढ़ा देनेसे तिल्ली की सूजन और डिफथीरियामें फायदा होता है। इसके चूर्णको शहदके साथ चटानेसे पेटमें कृमि पैदा नहीं होते।

इसका शीत निर्यास खांसी और दमेमें लाभ पहुँचाता है। दांतोंके दर्द और गर्भाशय के रोगोंमें भी यह लाभदायक है। इसके पत्ते उत्तेजक, अग्निवर्धक, ऋतुस्राव नियामक और पेट के आफरे को दूर करने वाले माने जाते हैं। इसका पुल्टिस बनाकर आँखोंपर बाँधनेसे नजलेका पानी आना रुक जाता है। इसके पत्तोंका रस या शर्बत गोल कृमियों को नष्ट करनेके काममें लिया जाता है।

केमानके मतानुसार इस वनस्पतिके फूलोंका काढ़ा दमा और पुरानी खांसीके बीमारोंको दिया गया और इससे काफी लाभ हुआ। फारसमें यह वनस्पति इन रोगोंमें लाभदायक सिद्ध हुई है।

कर्नल चोपराके मतानुसार इसके पत्ते उत्तेजक, अग्निवर्धक, कफ निस्सारक, ज्वर निवारक और ऋतुस्राव नियामक होते हैं। इनमें ग्लुकोसाइड और उड़नशील तेल रहता है।

मात्रा—ताजातुल मुफरिदातमें इसकी मात्रा १०॥ माशेकी लिखी है। मगर डॉक्टर देसाईने इसकी मात्रा १० रत्तीसे २० रत्ती तक बतलाई है।

जूही

नाम—

संस्कृत—यूथिका, गणिका, अम्बष्ठा, बालंती, बालपुष्पी, मागधी, बालपुष्पीका इत्यादि। हिन्दी—जूही, जाई। बंगाल—जूई, स्वर्ण जूई मराठी—जाई, शोतजुई। गुजराती—जुई। पंजाब—जूही तेलगू—नंदी वट्ट, जुई पुष्पालु। लेटिन—Jasminum Auriculatum (जेसमिनम ओरिक्यूलेटम)।

वर्णन—

जूहीकी लता वन, उपवन और पुष्पवाटिकाओं में होती है। इसके फूल सफेद रंगके, छोटे २, अत्यन्त सुन्दर और अत्यन्त सुगन्धित होते हैं। इसकी सफेद और पीलीके भेद से दो जातियाँ होती हैं।

गुण दोष और प्रभाव,—

आयुर्वेदिक मतसे दोनों प्रकारकी जूही शीतल, कड़वी, पचनेमें चरपरी, हलकी, मधुर, कसेली, हृदयको हितकारी, पित्तनाशक, कफ और वात कारक तथा चर्मरोग, मुखरोग, दन्तरोग, नेत्ररोग, और विषको नष्ट करने वाली होती है। इसके गुण धर्म चमेली से मिलते जुलते होते हैं।

मुँहके छालोंमें जुहीके पत्तों को चबानेसे फायदा होता है अथवा जूहीके पत्तों, दारुहल्दी और त्रिफला का काढा बनाकर उससे कुल्ले करनेसे भी मुखपाक रोगमें फायदा होता है। कर्णशूल और कानके पकने पर इसके स्वरसमें सिद्ध किये तिल्लीके तेलको कानमें डालनेसे बडा लाभ होताहै। पैरोंमें फटी हुइ बिवाइ पर इसके पत्तोंको पीसकर बाँधना चाहिये। यह वनस्पति अपना असर बहुत जल्दी बतलाती है।

पीली जूही की जड़को पीसकर दाद पर लेप करनेसे दाद मिट जाता है। इसकी छालमें छेद करनेसे जो दूध निकलता है उसको पुराने नासूर, बिगडी हुइ हड्डी या खराब जख्मोंके किनारों पर लगाना चाहिये। इसके फूलों को पीसकर योनि पर लगानेसे योनिका ढीलापन मिटकर वह तंग हो जाती है।

यूनानी मत—यूनानी मतने यह पहले दर्जे में सर्द और तर है। इसका रस जख्मोंपर लगाने से फायदा होता है। इसका लेप करनेसे आधाशीशी, माली खोलिया, और पागलपनमें फायदा होता है। इस वनस्पति का नीचे लखा प्रियोग रतौंधी और आँखों की बीमारी के लिये बहुत मुफीद है:—जूहीके फूल ५०, भांगरे के पत्ते ५०, सहँजना के पत्ते ३०, काली मिरच १६, लेंडी पीपल ३। इन सब चीजोंको बारीक पीसकर इनकी बत्ती बना ले और उसको सुखा लें। जब जरूरत हो तब इस बत्तीको पानी में या कांजीमें घिसकर आंखमें लगा लें। इससे आंखका सब पानी निकल जाता है और आँखें साफ हो जाती हैं।

जेबुरेंडी

नाम—

यूनानी—जेबुरेंडी।

वर्णन—

यह एक वृक्ष होता है। इसके पत्ते करीब ४ इंच लंबे, अंडाकार और हलके हरे रंग के होते हैं। इनकी ऊपर की सतह साफ और नीचे की सतह पीली, रुएंदार और नसों वाली होती है। इन पत्तोंके मसलनेसे एक प्रकार की गंध आती है। इनका स्वाद बहुत कड़वा और चरपरा होता है।

गुण दोष और प्रभाव—

इनके पत्तों से एक प्रकार का क्षार निकाला जाता है। जिसे पायलो-कारपीन नाइट्रेट कहते हैं। इसके पत्ते बहुत पसीना लाने वाले होते हैं। इसके सत्व को सेवन करनेसे ५।१० मिनिट के भीतर ही मुँह से लार का बहना शुरू हो जाता है और खूब जोरसे पसीना आता है। यह प्रभाव २ से लेकर ५ घण्टे तक रहता है। बच्चों की अपेक्षा जवान आदमियोंपर इसका प्रभाव कम होता है। पसीने के साथ २ आँख, मुंह और नाक से भी पानी निकलता है। पेटमें कुछ बेचैनी मालूम होती है। इस वनस्पति का लोशन बनाकर आंखमें डालने से यह आँख की पुतली को सिकोड़ता है। इसका यह प्रभाव एट्रोपीन के प्रभाव से बिलकुल विरुद्ध होता है। एट्रोपीन के कारण जब पुतली फैल गई हो तो तब उसे सिकोड़ने के लिये यह दिया जाता है। एट्रोपीन और बेलेडोना के जहर का यह एक खास एंटीडोट (दर्पनाशक) है। जुकाम और दमेमें इसकी एकही खुराक से काफी लाभ होता है। इसकी मात्रा ५ ग्रेन से ६० ग्रेन तक है।

झड़बेर

नाम—

संस्कृत—भूबदरी, सूक्ष्म बदरी, वल्लि बदरी, अजाप्रिया, सूक्ष्म फला इत्यादि। हिन्दी—झड़बेर, झड़बेरी, जालीबोर। गुजराती—चणियां बोर। मराठी—भुइबोर। बंगाल—मेटोकुल, कुलगाछ। राजपूताना—बोर, जालीबोर। बुन्देलखण्ड—कांटाबेर। पोरबन्दर—पलेटन। पंजाब—बेर, बिरोता, झारबेरी। फारसी—शबारका, कुनार, दश्ती। अरबी—झिरियाब। लेटिन—Zizyphus Nummularia (झिझिफस नुमूलेरिया)।

वर्णन—

झड़बेरीके झाड पंजाब, सिन्ध, गुजरात, दक्षिण, राजपूताना, मालवा और प्रायः सारे भारतवर्ष में बहुतायनसे पैदा होते हैं। इसके पौधे ६ से लेकर १० फुट तक ऊंचे बढ़ते हैं। ये पौधे झाडी की तरह होते हैं। इसका फल गोल, कच्ची हालतमें हरा और पकने पर लाल और चमकदार हो जाता है। इसकी गुठली बहुत कठोर होती है और एक २ गुठली में दो २ मगज होते हैं। इसके काँटे बहुत तीखे और तेज होते हैं। इसके फूल गुच्छों में लगते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतानुसार इसका फल मीठा, तूरा, कफनाशक, अग्निवर्धक, पाचक, रुचिकारक और रक्त पित्तको कुपित करने वाला है। इसकी गुठली कसेली, मीठी, कामोद्दीपक, वीर्य वर्धक और खाँसी, श्वांस, तृषा, वात, वमन, दाह और पित्तको दूर करती है।

यूनानी मत—यूनानी मतके अनुसार इसके पत्ते, फोडे फुन्सी और खुजलीमें लाभ पहुँचाते हैं। इसका धुआँ जुकाम और नाकके बहनेमें उपयोगी है। जोडोंके दर्दमें इसके काढेसे स्नान करनेसे लाभ होता है। मुंहके छालों और मसूड़ोंसे खून बहने पर इसके काढे से कुल्ले करते हैं।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह शीतल और संकोचक होता है। पित्तकी तकलीफोंमें यह उपयोगी माना जाता है।

झाऊ

नाम—

संस्कृत—झाउका, बहुग्रंथिका, विपुल, अफल। हिन्दी—झाऊ। गुजराती—झाऊ। मराठी—झाऊ, बहीमुइ। बंगाल—झाउ गाछ। पंजाब—झाऊ, कोखा, लई पिलची। तामील—शत्तजरो, अत्तु,-नौकू। तेलगू—इरशारू। फारसी—गज्ज, गज्जशाकर। अरबी—तरफा। लेटिन—Tamarix Gallica (टेमेरिक्स गेलिका)।

वर्णन—

यह एक बड़ा और झाड़ीनुमा वृक्ष होता है। ठंडे और समशीतोष्ण कटिबंधमें और उत्तरी हिन्दुस्तानमें गंगा और यमुना नदीके किनारे पर तथा उत्तरी गुजरातमें यह बहुत पैदा होता है। इस वृक्ष का दिखाव साधारणतया सरूके वृक्षकी तरह होता है। इसमें पतली २ अनेकों शाखाएं निकली हुई होती हैं। इसकी शाखाएं बहुत नीचे झुकी हुई और मुलायम होनेकी वजहसे जरासी हवासे ही हिलती रहती हैं। इसकी नरम २ डालियोंके ऊपर बहुत छोटे २ बारीक पत्ते आते हैं। इन पत्तोंके ऊपर सुफेद, गुलाबी, हलके बैंगनी रंगके फूलोंकी कलंगियां आती हैं। ये बहुत ही सुन्दर दिखलाई देती हैं। इसके फल तीन धार वाले, लाल रंगके, चमकदार, नीचेसे चौड़े ऊपरसे तीखे, तीन पड़वाले होते हैं। इसके बीज भूरे रंगके होते हैं।

ईरान और अफगानिस्तानमें यह वृक्ष बहुत पैदा होता है। वहांपर इस झाड़के ऊपर एक जातिकी मक्खी बैठकर अपना घर बनाती है। इस घरको ही लोग फल समझते हैं यह घर तिकोना, गांठदार और पोला होता है। ईरानमें इस झाड़मेंसे एक प्रकारकी शक्कर भी निकाली जाती है। यह शक्कर बंबईमें गज्जअंगबीन और ईरानमें गीजोके नामसे बिकती है। ताजी हालतमें यह सफेद और रवेदार होती है मगर यहांकी हवासे यह पतली पड़ जाती है। बम्बईके बाजार में गज्जअंगबीन शहदके समान गाढा और पीले रंगका मिलता है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे झाऊकी छाल ग्राही, स्तम्भक और कटवी होती है। इसका फल संकोचक होता है। इसकी शक्कर अथवा गज्जअंगबीन आनुलोमिक और कफघ्न होती है। इससे दस्त पतला होकर आसानीसे निकल जाता है और आंतोंको किसी प्रकारकी तकलीफ नहीं होती। इसके पंचांगकी राख मूत्रल और पचानेवाली धातुग्राही और शीतल होती है। इसमें कई प्रकारके कषाय अम्ल पाये जाते हैं माजू फलमें जितने कषाय अम्ल रहते हैं वे इसमें भी पाये जाते हैं।

बच्चों की कब्जियतको दूर करनेके लिये गफ्फजबीन दिया जाता है। इसका फल माजूफलके बदलेमें भी काममें लिया जाता है। अतिसार, आँव, अत्यार्त्तव तथा गले और छातीसे होने वाले रक्त स्रावमें इसको देते हैं। इसकी फाँट दुष्ट व्रण और बद गाँठमें बहुत लाभ देती है।

काठियावाडमें इसके पंचांगसे तैयार किया हुआ घन क्वाथ झावके नामसे बिकता है। यह काले रंगका होता है। सूखी खाँसी और गलेकी शिथिलतामें इसको चटाया जाता है।

झाऊके चूर्णकी मात्रा १५ से ३० रत्ती तक और गफ्फजबीन की मात्रा ३ माशे तक होती है।

यूनानीमत—यूनानी मतसे इसके फल और पत्ते कडवे, तूरे और संकोचक होते हैं। पेचिश, पुराने अतिसार, तिल्लीके रोग और धवल रोगमें यह उपयोगी है। मसूडोंकी सूजनमें इसके काढेसे कुल्ले करनेसे लाभ होता है। इसके पत्तोंको उबाल कर उनका बफारा लेनेसे बवासीर, व्रण और घावोंमें लाभ होता है। इसका फल संकोचक होनेकी वजहसे अतिसार और पेचिशमें दिया जाता है। इस वृक्षका रस मृदु विरेचक और कफ निस्सारक माना गया है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति मृदु विरेचक और कफ निस्सारक मानी जाती है। यह माजूफलके प्रतिनिधि स्वरूप काममें ली जाती है।

उपयोग—

सांघातिक फोड़ा—बिगडे हुए फोडों और उपदंश सम्बन्धी गठानों पर इसके गाढे किये हुए क्वाथ का लेप करनेसे लाभ होता है।

तिल्ली—इसके पत्तोंके चूर्ण को ३॥ माशे की मात्रा में समान भाग मिश्री मिलाकर लेने से तिल्ली कट जाती है।

बालों की सफेदी—इसकी हरी जड को जौकुट करके उसमें समान भाग तिल का तेल और दुगुना जल डालकर आग पर औटाना चाहिये। जब पानी जलकर तेल मात्र शेष रहजाय तब उसको छान लेना चाहिये। इस तेल को सिरमें लगाने से सफेद बाल काले हो जाते हैं।

जुकाम—इसके पत्तों का बफारा लेनेसे जुकाम मिटता है।

कुचों का ढीलापन—झाऊ की छाल और अनार की छालको महीन पीसकर दारूमें मिलाकर दिनमें दोबार स्तनों पर लेप करनेसे ढले हुए स्तन कठोर होजाते है।

बच्चों की कब्जियतको दूर करनेके लिये गर्म्मकजबीन दिया जाता है। इसका फल माजूफलके बदलेमें भी काममें लिया जाता है। अतिसार, आँव, अत्यार्त्तव तथा गले और छातीसे होने वाले रक्त स्रावमें इसको देते हैं। इसकी फाँट दुष्ट व्रण और बद गाँठमें बहुत लाभ देती है।

काठियावाडमें इसके पंचांगसे तैयार किया हुआ घन क्वाथ झावके नामसे बिकता है। यह काले रंगका होता है। सूखी खाँसी और गलेकी शिथिलतामें इसको चटाया जाता है।

झाऊके चूर्णकी मात्रा १५ से ३० रत्ती तक और गम्फजबीन की मात्रा ३ माशे तक होती है।

यूनानीमत—यूनानी मतसे इसके फल और पत्ते कडवे, तूरे और संकोचक होते हैं। पेचिश, पुराने अतिसार, तिल्लीके रोग और धवल रोगमे यह उपयोगी है। मसूडोंकी सूजनमें इसके काढेसे कुल्ले करनेसे लाभ होता है। इसके पत्तोंको उबाल कर उनका बफारा लेनेसे बवासीर, व्रण और घावोंमें लाभ होता है। इसका फल संकोचक होनेकी वजहसे अतिसार और पेचिशमें दिया जाता है। इस वृक्षका रस मृदु विरेचक और कफ निस्सारक माना गया है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति मृदु विरेचक और कफ निस्सारक मानी जाती है। यह माजूफलके प्रतिनिधि स्वरूप काममें ली जाती है।

उपयोग—

सांघातिक फोड़ा—बिगडे हुए फोडों और उपदंश सम्बन्धी गठानों पर इसके गाढे किये हुए क्वाथ का लेप करनेसे लाभ होता है।

तिल्ली—इसके पत्तोंके चूर्ण को ३॥ माशे की मात्रा में समान भाग मिश्री मिलाकर लेने से तिल्ली कट जाती है।

बालों की सफेदी—इसकी हरी जड़ को जौकुट करके उसमें समान भाग तिल का तेल और दुगुना जल डालकर आग पर औटाना चाहिये। जब पानी जलकर तेल मात्र शेष रहजाय तब उसको छान लेना चाहिये। इस तेल को सिरमें लगाने से सफेद बाल काले हो जाते हैं।

जुकाम—इसके पत्तों का बफारा लेनेसे जुकाम मिटता है।

स्तनों का ढीलापन—झाऊ की छाल और अनार की छालको महीन पीसकर दहीमें मिलाकर स्त्रियोंके ढीले स्तनों पर लेप करनेसे ढलके हुए स्तन कठोर होजाते हैं।

झाऊ लाल

नाम—

संस्कृत—रक्तझाऊ। हिन्दी—लाल झाऊ। गुजराती—लालझाऊ। मराठी—तामडी मिरनाटी। लेटिन—Tamarix Articulata (टेमेरिक्स आर्टिक्यूलेटा)।

वर्णन—

लालझाऊ के वृक्ष सिन्ध, रुहेलखण्ड, आदि स्थानों पर बहुत होते हैं इसके झाड़की ऊंचाई ६० फीट तक होती है। इसकी छाल सफेद और कुछ भूरी होती है। इसके पत्ते छोटे होते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति ग्राही, स्तम्भक और रक्तस्रावरोधक होती है। इसकी छाल कड़वी और संकोचक होती। इसकी गाल मूत्रल होती है। साधारणतया यह कहा जा सकता है कि इस वनस्पतिके गुण धर्म माजूफलसे मिलते जुलते होते हैं। इसके चूर्ण की मात्रा १५ से २० रत्ती तक की है। इसके काढे से कुल्ले करने से मुंह के छाले मिटते हैं।

—

झामरवेल

नामः—

कच्छी—झामरवेल, टोररवेल। गुजराती—[illegible]। लेटिन—Ipomea Tridentata (इपोमिया ट्राइडेण्टेटा)।

वर्णन—

इस वनस्पति की बेलें बहुत पतली और छोटी होती हैं। ये जमीन पर फैली रहती हैं। इनमें से पतली शाखाएं बहुत सी निकलती हैं। इनके पत्ते [illegible] छोटे और फूल [illegible] होते हैं। इसका फल गोल, चिकना, चमकदार और ४ बीज वाला होता है। यह वनस्पति पुरानी दीवालों पर और पहाड़ों पर पैदा होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति [illegible] और [illegible] होती है। [illegible] इसको [illegible] जाता है।

कच्छके अन्दर इसका रस झामरा नामक रोग पर लगाया जाता है। खूनी दस्तोंके ऊपर इसका ताजा रस अथवा इसका सूखा हुआ चूर्ण ३ माशे की मात्रामें देनेसे बड़ा लाभ होता है।

इस वनस्पति मे रेचक और ग्राही ये दोनों परस्पर विरोधी गुण एक साथ पाये जाते हैं। यह जहाँ खूनी दस्तों को रोकनेमें सफल होती है वहाँ कब्जियत को मिटानेमें भी इसका उपयोग किया जाता है।

झिंझेरी (कचनार भेद)

नाम—

सस्कृत—अश्मन्तकः, इंद्रकः, कुद्दालः, श्वेतकंचनः, वनराजा, यमालपत्रका। हिन्दी—झिंझेरी, झिंझोरा, कचनार भेद, पापड़ी। गुजराती—आसुन्द्रो। काठियावाड़—आसोंद्रो। मराठी—आपटा, वनराजा। सहारन पुर—झिंझोरा, पापड़ी। पजाब—कोसुन्द्रो। अजमेर—झिंझा। तामील—अरई, अराम, अरिका। तेलगू—मंजियारी। लेटिन—Bauhinia Racemosa (बोहिनिया रेसीमोसा)।

वर्णन—

यह कचनार की ही एक जाति होती है। इसका झाड़ सीधा होता है। इसकी शाखाओं पर रुएँ होते हैं। इसकी छाल सफेद होती है। इसके पत्ते कचनारके पत्तोंकी तरह जुडे रहते हैं। इसके फूल छोटे और सफेद रंगके होते हैं। इसकी फलियोंका स्वाद कसेला और मीठा होता है। प्रत्येक फलीमें १२ से लगाकर २० तक बीज निकलते हैं। ये बीज दबे हुवे चपटे और काले होते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

यह वनस्पति कृमि रोग, यकृत रोग, प्रमेह, दाह, तृषा, मूर्च्छा, विषमज्वर, चातुर्थिकज्वर, भूत बाधा, शर्कराश्मरी, कुष्ट, गुदा भ्रंश, गँडमाल, व्रण, कठरोग, रक्तविकार, विष, अतिसार, और कफ पित्तके रोगोंको दूर करती है। इसकी छाल और इसके पत्त मीठे और कसेले होते हैं। ये ज्वर नाशक, संकोचक, कृमिनाशक और पित्तको नष्ट करने वाले होते हैं। मूत्र सम्बन्धी रोग, भगन्दर, क्षय जनित ग्रंथियाँ, चर्म रोग, गलेका दर्द, अर्बुद, यकृत के रोग और रक्त रोगोंमें यह लाभदायक है। इसका फल कसेला, मीठा, ज्वर और प्यासको बुझाने वाला और सकोचक होता है। इसके तन्तु घावों पर टाँके लगानेके काममें आते हैं।

इसके पत्तोंका रस काली मिर्च और प्याजके साथ अतिसार और आमर्में देते हैं। इसकी

छालका काढ़ा अतिसारमें बहुत लाभ पहुँचाता है। इसके कोमल पत्तों को पीसकर लेप करनेसे ज्वरके साथ होने वाला सिर दर्द मिट जाता है। इसके कोमल पत्तोंका रस दूधके साथ देनेसे पेशाबके अन्दर होने वाली जलन मिट जाती है। इसके पत्तोंका रस बावगोले पर भी लाभ पहुँचाता है। यकृत की सूजनमें इसकी जड़का काढ़ा दिया जाता है। इसकी छालको कुचल कर सूजन व जखम पर बाँधनेसे जखम जल्दी भर जाता है। इसकी छालका काढ़ा बनाकर उससे कुल्ले करनेसे मुँहके छाले मिटते हैं और दाँत मजबूत होते हैं। इसके बीजोंको सिरकेमें पीसकर जहरीले जानवरोंके डंक पर लगानेसे शान्ति मिलती है।

इसके पत्तोंका काढ़ा सिर दर्द और मलेरिया ज्वरके मिटानेके लिये काममें लिया जाता है।

झिंझा

वर्णन—

यह बबूलकी तरह एक वृक्ष होता है इसके पत्ते शीशमके पत्तोंकी तरह होते हैं। इसकी लकड़ीसे बंदूकका तोड़ा बनाते हैं। इसकी छालका स्वाद मीठा और कसैला होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

इसकी छालको कुचलकर पानीमें भिगोकर २।३ बार पीनेसे [illegible] और [illegible] दस्त बंद हो जाते हैं।

झिंटि

नाम—

संस्कृत—झिंटी, कुरबक, नीलपुष्पा, [illegible]। हिन्दी—[illegible]। बंगाल—[illegible], महाझाति। पंजाब—कॉलू। [illegible]—[illegible], [illegible]। [illegible]—[illegible]। [illegible]—नील पेठुली, इदूली। तेलगू—[illegible]। लेटिन—Barleria Cristata (बारलेरिया क्रिस्टेटा)।

वर्णन—

यह वनस्पति [illegible] होती है। [illegible] होता है। इसके [illegible]

१० सेंटिमीटर तक लंबे और २-५ से ४-५ सेंटिमिटर तक चौड़े होते हैं। ये लंबगोल और तीखी नोक वाले होते हैं। इनके दोनों तरफ रुआं रहता है। इसकी फली १-६ सेंटिमीटरतक लंबी होती है। हरएक फलीमें चार २ बीज निकलते हैं। ये बीज दबे हुए और नरम रुएंवाले होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे यह वनस्पति कड़वी, गरम और प्रदाह, ज्वर, खांसी और रक्त रोगोंमें उपयोगी होती है। सुश्रुतके मतानुसार इसकी जड़से सर्प और बिच्छूके विषपर लाभ होता है।

केस और महस्करके मतानुसार सर्प-बिच्छूके विषपर यह निरुपयोगी होती है।

कर्नलचोपराके मतसे यह वनस्पति साँपके काटनेपर लाभदायक है। इसका काढ़ा स्त्रीके दूधके बदलेमें काममें लिया जाता है।

झिंती नीली

नाम—

संस्कृत—दासि, नील कुसुमा, सहचरी, निलझिंती, अर्तगला, बला, बना, नील पुष्पी, इत्यादि। हिन्दी—झिन्ती। बम्बई—वाहिति। बंगाल—दासि। संथाल—रेल बहा। तामील—नीलवां। तेलगु—नीलं बरमू। लेटिन Barleria Strigosa (बारलेरिया स्ट्रिगोसा)।

वर्णन—

यह वनस्पति उत्तरी गंगाके मैदान, बंगाल, आसाम, सिक्किम और बरमामें पैदा होती है। यह एक प्रकारकी बिना शाखावाली झाड़ी है। इसका तना कुछ रुएंदार और खुरदरा रहता है। इसके पत्ते ११-५ से १५ सेन्टिमीटर तक लम्बे होते हैं। ये अण्डाकार और तीखी नोक वाले होते हैं। इसकी फली २ सेटिंमीटर तक लम्बी होती है। प्रत्येक फलीमें चार २ बीज निकलते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति कड़वी और तीखी होती है। व्रण, चर्मरोग, धवलरोग, शूल, खुजली, वायुनलियों का प्रदाह और दाँतोंके रोग पर यह मुफीद है।

संथाल जातिके लोग इसकी जड़को खाँसीकी बीमारीके उपयोगमें लेते हैं।

कर्नल चोपराके मतानुसार आक्षेप युक्त खाँसी की बीमारीमें इसकी जड़ विशेष रूपसे फायदा पहुँचाती है।

झीपटा

इस वनस्पतिका वर्णन इस ग्रंथके तीसरे भागमें पृष्ठ ६०८ पर चिरपोटीके प्रकरणमें दे दिया गया है।

झुन झनियाँ

नाम—

संस्कृत—शणपुष्पी, घंटा, शणघंटिका, पीत पुष्पी, स्थूल फला, सूक्ष्मपुष्पा, क्षुद्रशणपुष्पिका, बृहत्पुष्पी, घावनी। हिन्दी—झुनझुनियाँ, वनसन। मराठी—घागरी, खुडखुड। बंगाल—वन सनुइ, झन् झनियाँ। गुजराती—घुगरा। मलयालम—पेतदल कोट। तामील—वेल कुलप्पै। लेटिन—Crotalaria Verrucosa (क्रोटेलेरिया व्हेरुकोसा)।

वर्णन—

यह मजबूत और बहुशाखी पौधा रेतीली जमीनमें ज्यादा पैदा होता है। इसके पत्ते अंडाकृति, ५ से लगाकर १५ सेंटिमीटर तक लम्बे होते हैं। इसके फूल हलके नीले रंगके होते हैं। इसकी सूखी फलियोंको हिलानेसे खुड़ खुड़की आवाज होती है। इन फलियोंमें २० से लेकर ३० तक बीज रहते हैं। इसके पत्तोंका रस कुछ कडवा होता है। इसकी २ जातियाँ होती हैं। एकको लेटिनमें "क्रोटोलेरिया व्हेरुकोसा" और दूसरीको "क्रोटोलेरिया सीरिसिया" कहते हैं। दोनों जातियों के गुण धर्म प्रायः समान हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे इसके पत्ते गरम, तीखे, कडवे, वमनकारक, कफको नष्ट करनेवाले, कफ निस्सारक, और अजीर्ण, ज्वर, रुधिर विकार, कंठरोग, मुखरोग और हृदय रोगमें लाभदायक है।

इसके पत्तेका रस औषधिके काममें आता है। तामीलके वैद्य इसको गीली खुजली, कड्डु और चर्म प्रदाह तथा पीली फुन्सियों पर खाने और लगानेके काममें लेते हैं।

यूनानीमत—यह गरम और खुश्क है। श्वेत कुष्ट और चर्मके झाँई रोगको दूर करता है। कफ और वायुको शान्त करता है। इसके पत्तोंको पीसकर लेप करने से जहाँ बदनमें बन्दूककी गोली वगैरह रह गई हो वह निकल आती है और तलवारका गहरा जखमभी शीघ्र भर जाता है।

टंकारी

नाम—

संस्कृत—टंकारी। हिन्दी-टंकारी, टिपारी। मराठी-फंपटी,टंकारी। बंगाल-टेपारी। अंग्रेजी-Cape Gooseberry (केप गुजबेरी)। लेटिन—Physalis Peruviana (फिसेलिस पेरुविएना)

वर्णन—

टंकारीके वृक्ष हिन्दुस्तानमें कई बगीचोंमें बोये जाते हैं। इसके पत्ते लबगोल होतेहैं। फूल लाल और गुलाबी तथा कई रंगोंके लगते हैं। इनके फल छोटे झूमकों में लगते हैं। ये चमकदार, कत्थे के रंगके और बहुत स्वादिष्ट होते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे टंकारी वातनाशक, कड़वी, कफ नाशक, अग्निदीपक, हलकी, विषम रोगको दूर करनेवाली और सूजन तथा उदररोगमें लाभदायक है।

लारि यूनियनमें इसका पौधा मूत्रल औषधिकी तरह काममें लिया जाता है। दक्षिणी अफ्रिकामें इसके काढ़ेका एनिमा बच्चोंकी पेटकी खराबीको दूर करनेके लिए दिया जाता है।

यूरोपके अन्दर इसके गरम पत्तोंका पुल्टिस सूजनके ऊपर बांधा जाता है।

टंडी झकनी

नाम—

संथाल—टटोम्हनी, सिकोर। [illegible]—[illegible]। [illegible]। लेटिन—Zornia Diphylla (जोरनिया डिफल्ला)

वर्णन—

यह एक वर्षजीवी [illegible]

ऊचाई २ से ३ फीटतक होती है, इसकी शाखाएं नीचेकी ओर फैलती हैं। इसके पत्ते भिन्न २ आकार के, फूल छोटे और फलियां चपटी होती हैं।

गुणदोष और प्रभावः—

कर्नल चोपराके मतानुसार इसकी जड़ घिसकर बच्चोंको नींद लानेके लिए दी जाती है।

टमाटर

नाम—

हिन्दी—टमाटर, विलायती बेंगन। अंगरेजी—Tomatto।

वर्णन—

टमाटरका उपयोग भारतवर्षमें आजसे करीब ६० वर्ष पहिलेसे विदेशियोंके द्वारा प्रचलित हुआ है। इस वनस्पतिका इतिहास भी बड़ा मनोरंजक है। सबसे पहिले सन १६२८ में सर वाल्टर रेलेको यह फल अमेरिकाके रोलको नामक द्वीपमे प्राप्त हुआ। वहाँके लोग इसे जहरीला पदार्थ मानते थे। यह जब यूरोपमें लाया गया तब यूरोप वासियोंने इसे केवल शोभा की दृष्टिसे बागोंमें बोना शुरू किया। वहाँके लोग इसे "लव्ह एपल' कहते थे। आजसे केवल ६० वर्ष पूर्व इसका समावेश वहाँपर खाद्य द्रव्योंमें किया गया। फिर भी वहाँके लोग इस वनस्पतिसे बहुत डरते थे और उनका खयाल था कि इसके सेवनसे केन्सर, उपदंश, इत्यादि रोग पैदा हो जाते हैं मगर थोड़े ही दिनोंमें उनका यह भ्रम मिट गया। अनुभवोंसे यह बात मालूम हुई कि यह फल एक दम निर्दोष है और इससे कोई रोग होनेकी सम्भावना नहीं है। तबतो इसका प्रचार खूब धड़ाकेसे यूरोप, अमेरिका और भारतवर्ष में हुआ और आज तो भारतवर्षमें शाग सब्जियोंमें आलूके बाद इसका ही नंबर है।

इसका पौधा बैंगनके पौधेकी तरह होता है। इसके फल शुरूमें हरे और पकने पर लाल हो जाते हैं।

इस वनस्पतिको प्रायः सभी लोग जानते हैं। इसलिये इसके विशेष परिचय की आवश्यकता नहीं है।

गुण, दोष और प्रभाव—

टमाटर कुछ खट्टा, मीठा, रुचिवर्द्धक, अग्निदीपक, पाचक, क्षुधावर्द्धक और शक्तिवर्द्धक है। इसका सेवन शरीरकी स्थूलता, उदर रोग, अतिसार, अपेंडिसाइटिस आदि रोगो पर भी लाभदायक सिद्ध हुआ है।

को नष्ट करती है, खुजली और धवल रोगमें लाभदायक है, बवासीर, प्रदाह, व्रण, विसर्प और दांतोंकी पीड़ामें यह उपकारी है। इसके प्रयोगसे वमन करनेकी प्रवृत्ति रुक जाती है।

इसके बीज और यह सारी वनस्पति कामोद्दीपक मानी जाती है। यूरोपमें इसके पत्ते अग्निवर्द्धक। मूत्रल और शीतादिरोग प्रतिशोधक माने जाते हैं। कर्नल चोपराके मतानुसार इसके बीज चिड़चिड़े होते हैं इनका गुण धर्म सरसोंकी तरह माना जाता है।

टरारा

नाम—

हिन्दी—टरारा, रूगरु, हेरा। पंजाब—हेजा, रंगरू, तारा। कुमाऊं—वकल पत्र, पत्र कोरई। नैपाल—हतोकनि। लेटिन—Kalanchoe Spathulata (केलेनचाई स्पेथुलेटा)

वर्णन—

यह वनस्पति हिमालयके गरम हिस्सोंमें और बरमा चीन तथा जावामें पैदा होती है इसके पत्ते लम्बगोल और चिकने तथा इसका फल फिसलना होता है इसकी ऊंचाई ·३ से लेकर १-२ मीटर तक होती है

गुणदोष और प्रभाव—

स्टैवर्टके मतानुसार लाहौरमें इसके पत्ते खास तौरसे हैजेकी बीमारीमें उपयोगमें लिये जाते हैं। कांगड़ामें इन पत्तोंको जलाकर फोड़ेपर लगाया जाता है। यह वनस्पति बकरियोंके लिए जहर है।

टिकचना

नाम—

बंगाल—टिकचना। संथाल—बिरमल्ला। लैटिन—Launaea Asplenifolia (लउनेइया एस्प्लेनिफोलिया)।

वर्णन—

यह वनस्पति पंजाब, उत्तरी गंगा और बंगाल के मैदानोंमें पैदा होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

संथाल जाति के लोग इस वनस्पति की जड़ को दुग्धवर्धक वनस्पति की तौर काम में लेते हैं।

दांतोसे रक्त निकलता हो और स्कर्वी रोगका अन्देशा हो तब लाल टमाटर का दो २ तोले रस दिनमें ४ बार पीनेसे अच्छा लाभ होता है।

दुर्बलता और कमजोरी—लाल टमाटरका रस पीनेसे दुर्बलता और कमजोरी मिटती है। थकावट दूर होती है, भूख बढ़ती है और पाण्डु रोगमें लाभ होता है।

ज्वर—टमाटरका रस या क्वाथ बना कर सेवन करनेसे ज्वरके प्रकोपकी वजहसे रक्तमें जो हानिकर पदार्थोंकी वृद्धि होती है, वह शीघ्रही दूर हो जाती है और रोगीको शान्ति मिलती है।

मधुमेह—मधुमेह ग्रस्त रोगीके लिये टमाटरका सेवन विशेष लाभ प्रद है। डॉक्टर पी० जे० कैंग्रेजने लंदन रिपोर्टमें लिखा है कि मधुमेहीके लिये टमाटर से बढ़कर विशेष लाभ दायक कोई खाद्य पदार्थ नहीं है। इससे खूनकी कमी या रक्ताल्पता दूर होती है। मूत्रमें शकरका परिमाण भी धीरे २ कम होकर मधुमेह अनायास ही दूर हो जाता है।

नेत्रविकार—अल्पदृष्टि, रतौंधी इत्यादि जो नेत्र विकार, शरीरमे विटामिन की कमीसे होतेहैं वे टमाटरके रससे शीघ्रही नष्ट हो जाते हैं।

जीभ का मैलापन—जीभपर सफेदी छागइ होता उसे १ या २ टमाटर नित्य सेंधे निमकके साथ खाना चाहिये।

टरमेरा

—भूतघ्ना, बिवटा, ग्रहघ्न, दुर्धर्ष, कदम्बक, राजिका, कंतुभा, तुवेरिका, उग्रगधा। ।। अफगानिस्तान—मंदऊ। बगाल—श्वेतशुरशा, सफेद शोरशी। कुमाऊ—चर। सीमा, शाहबन। फारसी—जम्बे। पंजाब—अमु, जमनिया, तारा, ऊसन। लेटिन—Eruca एरुका सोटिवा)

हिन्दुस्तानके कई भागोंमें इस वनस्पति की खेती की जाती है।

दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक प्रवर्द्धक, पित्त निस्सारक और कृमिनाशक है। यह कफ और वात

टिटा

नाम—

पंजाब—टिटा। लेटिन—*Gentiana Tenalla* (जेन्शिएना टेनेला।

वर्णन—

यह वनस्पति काश्मीर और पश्चिमी हिमालय में १० हजार से १४ हजार फीटकी ऊंचाई तक पैदा होती हैं। यह एक सीधी और जमीन पर फैलने वाली वनस्पति होती है। इसके पत्ते गोलाकार और फूल सफेद और मैले बैंगनी रंग के होते है इसके छोटी २ फलियां लगती हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

एटकिन्सन के मतानुसार इसके पत्तों और डालियों का काढ़ा दूसरी औषधियों के साथ ज्वर को दूर करने के लिये दिया जाता है।

टीएडसी

नामः—

सस्कृत—डिडिश, रोमशफल,। हिन्दी—टीएडसी, टिण्डेका साग।

वर्णन—

यह एक मशहूर तरकारी होती है। इसके फल गोल, टेढ़े मेढ़े, टमाटर की तरह और रुए दार होते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वैदिक मतसे टीएडसी रुचिकारक, भेदक, पित्त कफ नाशक, शीतल, वात कारक, रुक्ष, मूत्रल और पथरी को दूर करने वाली है।

यूनानीमत—यूनानीमतसे यह पहले दर्जे में सर्द और तर है। यह काम शक्ति वर्धक, पथरीनाशक, मस्तिष्ककी शक्ति को बढ़ाने वाली, कफ पित्त वर्धक तथा देरसे हजम होने वाली होती है।

उपयोग—

पथरी—टीव्हडची के ३ तोले रसमें १ माशा जवाखार मिलाकर गरम करके ६।७ दिन तक पीने से पथरी निकल जाती है और पेशाब साफ होता है।

टेलाजुमिकी

नाम—

तेलगू—टेलाजुमिकी। तामील—सिरुपुनइकलि। कनाड़ी—कुकिबालि। मलयालम—लंगबुल। लेटिन—Passiflora Foetida (पेसिफ्लोरा फोइटिडा)।

वर्णन—

यह वनस्पति भारतवर्षमें बहुत अधिक तादादमें बोई जाती है। यह एक पराश्रयी लता होती है। इसके पत्ते ३.८ से ६-३ सेन्टिमीटर तक लम्बे होते हैं। इसके फूल हरे रहते हैं। इसका फल छोटे हरे बेरकी तरह होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

इसके पत्ते सिरके भारीपन और सिर दर्दमें लगानेके काममें लिये जाते हैं। इसका काढ़ा पित्तनाशक और दमें में लाभदायक होता है। इसका फल वमन कारक होता है।

लॉरियूनियनमें इसके पत्ते ऋतुस्राव नियामक माने जाते हैं ये हिस्टेरिया और गुल्म वायुके उपयोगमें लिये जाते हैं।

ब्राज़ीलमें यह वनस्पति विसर्प रोग और प्रदाह युक्त चर्मरोगों पर पुल्टिसके रूपमें लगाई जाती है।

टेललेउसिरिका

नाम—

तेलगू—टेललेउ सिरेका। लेटिन—Sauropus Quadrangularis (सारोपस क्वाड्रेंगुलेरिस)।

वर्णन—

यह वनस्पति बिहार, छोटा नागपूर, बरमा और मद्रास में पैदा होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

इसके सूखे पत्ते गले की बीमारियों को दूर करने के काम में लिये जाते हैं। इनका धूम्र पान करने से गलग्रथि के प्रदाह और दूसरे गले के रोगों में फायदा होता है।

टोरकी

नाम—

हिन्दी—टोरकी, तोरकी। मराठी—भाँगरा, तोरकी, बुरबुर। बंगाली—भाँगरा। बम्बई—बुरबुरा गुजराती—कीगकीगली, नानीगली। लेटिन–Indigoafera Linifolia (इण्डिगोफेरा लिनिफोलिया)।

वर्णन—

यह नीलकी एक जाति है। नील की जातिकी करीब ४० प्रकार की वनस्पतियाँ होती हैं। उसमें यह सबसे छोटी होती है। इसका पौधा १ फुटके करीब लम्बा होता है। इसकी डालियाँ बहुत पतली होती हैं। पत्ते भी बहुत पतले और लम्बे होते हैं। फूल बहुत सुन्दर, छोटे, लाल रंगके, पतंग की तरह होते हैं। इसके पापड़े में एक बीज रहता है।

गुण दोष और प्रभाव—

हानिग्बरगरके मतानुसार यह वनस्पति विस्फोटक ज्वरमें लाभ दायक है। संथाल जातिके लोग इसको छोटी दूधीके साथ मिलाकर नष्टार्तव की बीमारी में देते हैं।

डाया

नाम—

हिन्दी—डाया। बंगाल—मथरा, मथरंजा। चिनाव—सुभाली। देहराडून—दाया। गढ़वाल दाया। कुमाऊ—दाया, शियाली। लेटिन—Callicarpa Macrophylla(केली कार्पा मेक्रोफिला)

वर्णन—

यह वनस्पति उत्तरी गंगाके मैदान, बंगालके मैदान और पूर्वी हिमालयमें पैदा होती है। यह एक सीधी झाड़ी होती है। इसके पत्ते १२ से लेकर २३ सेंटिमीटर तक लम्बे होते हैं। इसका फल सफेद होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

इसकी जड़से प्राप्त किया हुआ तेल पेटके विकारोंमें लाभदायक है। इसके पत्तोंको गरम करके सन्धि वात पर बांधनेसे वेदना दूर होती है।

डिकामारी

नाम—

संस्कृत—नाड़ीहिंगू, पलाशाख्य, जंतुका, वेणुपत्री, हिंगुनाडिका, पिंडा, शिवाटिका, सुवीर्या। हिन्दी—डिकामारी, डीकामारी। बंबई—डेकामारी। मध्यप्रदेश—कोरिता, केरनगा रुरू। गुजराती—डेकामारी, डिकामाली। बंगाल—हिंगुविशेष। काठियावाड़—मलन, मालान। कच्छ—मालदी, मालन। तेलगू—चिट्टी, गेरी दिक्की। तामील—कुम्बे। लेटिन—Gardenia Gummifera (गारडेनिया गुमिफेरा) G. Lucida (गारडेनिया लुसिडा)।

वर्णन—

यह एक बड़ी जातिका वृक्ष होता है। जो पहाड़ी प्रदेशोंमें पैदा होता है। इसका वृक्ष अमरूदके वृक्षकी तरह दिखाई देता है। इसके पत्ते अमरूदके पत्तोंके समान होते हैं। इसके फल भी अमरूदके समान ही दिखलाई देते हैं। इसके बीजके पेटमें बहुत बीज होते हैं। इसका [illegible] एक प्रकारका गोंद जमता है। इसी गोंदको डिकामारी कहते हैं। इस गोंदका रंग कुछ [illegible] पीला होता है। इसमें पेशाबके समान दुर्गन्ध आती है। इस औषधिमें मिलावट भी होती है। असली डीकामारी बहुत कठिनतासे मिली जाती है। औषधि प्रयोगमें शुद्ध डीकामारी को ही लेना चाहिये।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे डिकामारी चरपरी, कड़वी, उष्ण, अग्निदीपक, [illegible] और [illegible], [illegible], कृमि, वात, वमन और वायुनलियोंके रोगमें लाभदायक है।

इसका गोंद ऐसे अग्निमांद्यमें जिसके साथ कब्जियत भी हो अन्तः प्रयोगमें लिया जाता है। इस गोंदका उपयोग आम तौरसे चर्मरोगोंके ऊपर किया जाता हैं। इसको घावके ऊपर लगानेसे उस घावमें कीड़े नहीं पड़ते और मक्खियाँ वगैरह भी नहीं बैठतीं। यह वनस्पति आक्षेप निवारक और पेटके आफरेको दूर करनेवाली है। बाह्य प्रयोगमें लिये जानेपर यह अपना उत्तेजक और कृमिनाशक असर बतलाती है। यह गोल कृमियोंको नष्ट करनेके लिये बहुत सफल औषधि मानी जाती हैं।

इसका पिसा हुआ गोंद कफ निःसारक और पसीना लानेवाला होता है। इसको उचित मात्रामें खिलानेसे नारूकी बीमारीमें बहुत लाभ होता है।

दुष्ट व्रणों को दूर करनेके लिए इसे सकोचक औषधि की तरह काममें लेते हैं। इससे मसूड़ों की जलन भी मिटती है। बच्चों को दांत निकलनेके समयमें जो दस्त लगते हैं उनमें भी यह औषधि लाभ पहुंचाती है।

डाक्टर देसाई के मतानुसार डिकामारी संकोच विकास प्रतिबन्धक, कोष्ट वायुशामक, कृमिघ्न मलेरिया ज्वरनाशक, पसीना लानेवाली, कफ निस्सारक और चर्मरोग नाशक है।

आँतोंके रोगोंके ऊपर डिकामारी की क्रिया बहुत उत्तम होती है। आँतोंमें घुसीहुई वायु को यह निकाल देती है। पेटमें पड़नेवाले गोल जंतुओं को नष्ट करनेके लिए यह एक उत्तम औषधि है। अजीर्ण और पेटके फुलाव पर यह कड़वे और सुगन्धित पदार्थोंके साथमें दी जाती है। बच्चोंके दांत निकलनेके समय में ज्वर, दस्त, वमन, इत्यादि जितने भी उपद्रव होते हैं उन सबमें डिकामारी बहुत गुणकारी वस्तु है। बच्चों के ब्रोंकोनिमोनियां अथवा डिब्बे की बीमारी में डिकामारी और एलुए का लेप किया जाता है और इसको पेटमें भी खिलाई जाती है। इससे पेट का फुलाव तुरन्त उतर जाता है।

प्राचीन चर्मरोगोंमें भी डिकामारी को देने से अच्छा लाभ होता है। नारू की बीमारीमें इसको ५ रत्ती की मात्रामें देनेसे नारू गल जाता है।

मात्रा— इसकी साधारण मात्रा एक रत्ती से २ रत्ती तक होती है। खजाइनुल अदविया के मतसे इसकी मात्रा एक माशेसे ३ माशे तक है।

कर्नल चोपरा के मतानुसार यह ज्वर, अग्निमांद्य और कृमि रोग में लाभदायक है।

सूक्ष्म मात्रामें लेने से यह शांतिदायक, हृदयको बल देने वाला, और रक्तस्राव रोधक होता है। जलोदर में यह विशेष लाभदायक नहीं है फिर भी एक मूत्रल औषधि होने की वजहसे यह उसमें लाभ पहुंचाता है।

हृदय की ऐसी बीमारियोंमें जब हृदय की गति जल्दी और बेकायदा होती है यह सब हृदयको ताकत देकर उसकी गति को व्यवस्थित कर देता है। जब दिल पतला होकर फैल जाता है तब यह उसको ताकत पहुँचाता है। लेकिन दिलकी शिरायें जब चर्बी में बदल जाँय अथवा हृदय मोटा होजाय और हृदयके छिद्र संकुचित होजाँय तब, इस दवा के प्रयोगसे उल्टी हानि होती है।

ज्वर, नकसीर, फेफड़े और गर्भाशय से खून जाने की बीमारियों में भी यह एक उत्तम औषधि है।

इसकी मात्रा आधी ग्रेन से डेढ़ ग्रेन तक और इसके टिंचर की मात्रा १० बूंद से ३० तक है।

डौड़ी

नाम—

हिन्दी—डौडी, डोरी। संस्कृत—तिक्तजीवन्ती। बम्बई—दौड़ी, पनडुड़ा, राय दौड़ी, खिंगुटी। कच्छ–खड़ खोटो, डूडीवल। गुजरात–नानी डोडी। लेटिन—Leptadenia Reticulata (लेप्टाडेनिया रेटिक्यूलेटा)।

वर्णन—

यह एक वर्ष जीवी लता होती है। इसकी टहनियाँ सफेद और भूरे रंगकी छाल होती है। इसके पत्ते चौड़े, अणीदार, मोटे और चमकीले होते हैं। इसके फूल छोटे, [illegible] जैसे हरे हरे रंगके होते हैं जो गुच्छों में लगते हैं। इसका पत्ता ऊपर से चिकना होता है। इसमें [illegible] होते हैं।

गुण दोष और प्रभाव,—

यह वनस्पति रोचक, ग्राही, कफ नाशक और सूजनको दूर करने वाली होती है। [illegible] और दमें के अन्दर भी यह उपयोगी है। इसकी कच्ची कलियोंका साग बनाया जाता है।

ढाका (पलाश)

नाम—

संस्कृत—पलाश, किंशुक, पर्ण, याज्ञिक, रक्तपुष्प, क्षार श्रेष्ठ, ब्रह्मवृक्ष, कमलासन, कृमिघ्न, वक्रपुष्पक, सुपर्णा। हिन्दी—ढाक, टेसू, केसू, खाकरा, पलाश। बंगाल—पलाश गाछ। मराठी—पलास। गुजराती—खाकरा। तामील—पलासु, कटुमुरुक, किंजुग, किरमिस्तरु, पुंगु, इत्यादि। तेलगू—किंशुक, मोडुगा पलाश, मातुकाचेट्टु, तेल मोदुग, इत्यादि। उर्दू—पलासपापड़ा। लेटिन—Butea Frondosa ब्यूटिया फ्रोंडोसा, B, Monosperma (ब्यूटिया मोनोस्परमा)।

वर्णन—

ढाक या पलाश भारतवर्षमें बहुत प्राचीन कालसे एक दिव्य औषधि की तरह काममें लिया जाता है। इसके झाड़ ५ से लेकर १५।२० फुट तक ऊंचे होते हैं। इसके पत्ते तीन २ के थोक में लगते हैं। इसके फूल की फली तोते की चोंच की तरह निकलती है और खिलनेपर लाल केसरिया रंग के सुन्दर पतंग की तरह दिखलाई देती है। इसकी छाल आधेसे १ इंच मोटी और खुरदरी होती है। इस वृक्ष के ऊपर एक प्रकार का गोंद लगता है। जिसको कमर कस, चूनियां गोंद या पलाश का गोंद कहते हैं। इसके फूलोंमें से पीला रंग निकाला जाता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत से ढाक अग्निदीपक, वीर्यवर्द्धक, सारक, गरम, कसेला, चरपरा, कड़वा, स्निग्ध टूटी हड्डीको जोड़नेवाला तथा संग्रहणी, बवासीर, कृमि, व्रण और गुल्म को हरनेवाला है। इसके फूल स्वादुपाकी, कटु, तिक्त, कसेले, वातवर्द्धक, शीतल, मल रोधक और कफ, रक्तपित्त, मूत्रकृच्छ्र, वातरक्त, कुष्ट, तृषा और दाह को दूर करनेवाले होते हैं। पलाश की जड़ का स्वरस नेत्ररोग, रतौंधी और नेत्र की फूली को नष्ट करता है, यह नेत्र की ज्योति को बढाता है। ढाकका गोंद संग्रहणी, मुखरोग खांसी और पसीने को दूर करता है। यह मलरोधक है।

चरक और सुश्रुतके मतानुसार इसके बीज सर्पदंशके काममें उपयोगी हैं। इसकी कोमल शाखाओं की राख दूसरी वस्तुओंके साथमें बिच्छू के विष को दूर करती है।

एन्सलीके मतानुसार तामीलके वैद्य इसके बीजोंको कृमिनाशक वस्तुकी तौरपर काममें लेते है। वे इनको १॥ चम्मचकी मात्रामें दिनमें दोबार देते हैं।

के० एल० डे के मतानुसार इसके बीज विरेचक और कृमिनाशक हैं। इसका गोंद एक तेज़ संकोचक पदार्थ है। इसे पुराने रक्तातिसारमें देनेके काममें लेते हैं। इसकी मात्रा ५ से लेकर २० ग्रेन तककी है।

कर उस चीनीके प्याले में टपकेगा। यही पलाश का अर्क कहलाता है। इसको छानकर शीशी में भर लेना चाहिये। इस अर्क की एक दो बूंद आँखों में डालते रहने से आंखकी झाँक, खील, फूली, मोतियाबिन्दु, रतौंधी इत्यादि सब प्रकारके नेत्र रोग नष्ट होते हैं। इसी अर्क की ४।५ बून्दे नागर वेलके पत्ते में रखकर खानेसे भूख बढ़ती है, अनैच्छिक वीर्यश्राव रुकता है और काम शक्ति प्रबल होती है।

ढाका और कृमि रोग—

ऊपर लिख आये हैं कि पलाशके बीज कृमि रोगके लिये महौषधि है। इनके बीजों को निसोत, किरमानी अजवायन, कपिला बाय बिडंग और गुड़के साथ देनेसे सब प्रकारके कृमि नष्ट होतेहैं।

जिस प्रकार इसके बीजों का अर्क पेटके अंदरके कृमियोंको नष्ट करता है उसी प्रकार इनका बाह्य प्रयोग बाहरी जंतुओंको नष्ट करनेकी अद्भुत शक्ति रखता हैं। यही कारण हैं कि नारूके रोगमे भी यह वनस्पति अच्छा लाभ बतलाती है। इसका उपयोग करनेकी विधि इस प्रकार हैं। पलाशके बीज, जहरी कुचलेके बीज, रसकपूर, सादा कपूर और गूगल इन सब औषधियोंको लेकर बारीक पीसकर पानीके साथ तरल करके फिर एक पीपलके पत्ते पर उनका लेप करके उस पीपलके पत्तेको नारूके फोलेके ऊपर बांध देना चाहिये। इस पट्टीको ३ दिनतक नहीं खोलना चाहिये। इस प्रयोग से नारुका कीड़ा बहुत शीघ्र मर जाता है।

ढाका और सर्पविष—

सर्प के विषके ऊपर भी यह वनस्पति एक उत्तम औषधि मानी जाती है। इसकी जड़की छालको पीसकर उसका ताजा रस निकालकर रोगीके बलाबल के अनुसार ४ से १० तोले तककी मात्रामें देनेसे बिना दस्त उल्टी हुए जहर उतर जाता है।

जंगलकी जड़ी बूटीके लेखक लिखते हैं कि एक मनुष्यको चित्रानामक सर्प (चितावला) ने [illegible] मारा था। जिसकी वजहसे उसके पैर पर सूजन हो गई था। दिन प्रतिदिन उसका विष वर्धित होता गया और उसके सारे शरीरमें बड़े २ फाले होने लगे। वे फाले भरते थे और फिर फूट जाते थे। इसप्रकार उसके शरीरमें विस्फोटककी तरह सब लक्षण नजर आने लगे। सारे शरीरमें असह्य जलन होती था और छाला हुई जगहका मांस गल २ करके टूटता जाता था। इस रोगीको शुरू २ में [illegible] तीन दिन [illegible] दिया गया और उसके पश्चात् नीचे लिखा औषधि [illegible] दिया गया।

[illegible] जड़, [illegible], फूल, छाल और बीज ये पांचों वस्तुएं दो २ मा० लेकर, पुरानी गुलाब [illegible]

एक रात भर पड़ा रहने देना चाहिये। फिर उस पानीको नितारकर चूल्हे पर चढ़ाकर उबालना चाहिये। जब दो सेर पानी रह जाय तब उसमें बकरीका मूत्र, भेड़का मूत्र, गायका मूत्र और मनुष्यका मूत्र दो २ सेर, आंकड़ेका दूध आठ तोला, काली सरसोंकी अन्तर छाल, सरसोंके फूल, स्वर्ण गेरू, हल्दी, दारु हल्दी, तुलसीकी मंजरी, कुलेठोंकी जड़, बेरकी लाख, सेंधा निमक, जटामाँसी, निर्गुण्डीके बीज, हींग, सूंठ, मिरच, पीपर, अमलतासका गूदा, बांझ ककोड़ेका सुखाया हुआ कंद, कूकड़बेलकी जड़, पीपलामूल, मालकांगनीकी जड़ और अनंत मूल ये सब चीजें आठ २ तोला लेकर कूट पीसकर उसमें डालकर तांबेके बरतनमें हल्की आंचसे उबालना चाहिये। जब गाढ़ा हो जाय तब उसको नीचे उतारकर थालियोंमें फैला देना चाहिये, ठंडा होनेपर उसकी डेढ़ २ माशेकी गोलियां बना लेना चाहिये।

इनमेंगोलियोंमें से एक २ गोली दो २ रुपये भर गायके घी के साथ मिलाकर उस रोगीको खिलाई जाती थी और ऊपरसे आधा पाव दूध गायका पिलाया जाता था। इसी प्रकार इसकी एक गोलीको काली मिरचीके काढ़ेमें मिलाकर सारे शरीर पर लगादी जाती थी। इस प्रकार १ महिने तक इसका प्रयोग करनेसे विषके सब उपद्रव नष्ट हो गये।

जंगलकी जड़ी बूटीके लेखक का कथन है कि इस प्रयोग को चित्रावर्प के विष पर कई बार अनुभवमें लिया गया है और हमेशा इसमें सफलता मिली है।

खजाइनुल अदवियाके लेखकके मतानुसार इसके पत्ते भूख पैदा करते हैं। फोड़े फुन्सी, बवासीर और पेटके कीड़ोंको नष्ट करते हैं। इसकी लकड़ी की राख पानीमें [illegible] दूर होती है। इसकी नरम छाल ७ तोला और पुराना गुड़ १ तोला। इन दोनोंको कूटकर १४ गोलियां बनाले। इनमें से रोजाना १ गोली खानेसे शीघ्र पतनका रोग दूर होता है। इसकी जड़को कुचलकर, पीसकर उसका घन सत्व निकाल कर पानमें देनेसे मनुष्यकी कामशक्ति बढ़ती है। इसकी जड़का रस निकालकर उसमें ३ दिन तक गेहूंको भिगोवें। उसके बाद उन गेहुओं को सुखाकर [illegible]। इनका हलवा बनाकर खानेसे प्रमेह, शीघ्र पतन और काम शक्तिकी कमजोरी दूर होती है। इसकी जड़को पानीमें घिसकर नाकमें टपकाने से मृगीका दौरा बन्द हो जाता है। [illegible] पिलानेसे सांप का जहर दूर होता है। इसके पत्तों को गरम करके बांधने से फोड़े फुन्सी मिट जाते हैं। इसके पत्तों को औटाकर पिलाने से पेट का आफरा और दर्द दूर होता है। इसके बीज और इन बीजों का तेल कृमिनाशक है। [illegible] बीज, [illegible] के बीज, काली मिर्चें और हींग इन [illegible] खिलानेसे पेटके कीड़े मर जाते हैं। [illegible] होने नहीं पाता।

कुष्टरोगमें पलाश के बीजों का तेल, चालमोगरा के तेलके समान ही गुणकारी सिद्ध हुआ है। इसका विधिवत् इंजेक्शन कुष्ट रोगमें चालमोगरा से अधिक लाभदायक सिद्ध हुआ है।

इसके बीजोंको जलाकर उनमे आधी हींग मिलाकर पीसकर रखलें। इसको १॥ माशे से ३ माशे तक की मात्रामें मासिकधर्म के बाद ३ दिन तक देने से स्त्री की गर्भाधारण की शक्ति नष्ट हो जाती है। मगर इस प्रयोग को ३ महीने तक हर मासिक धर्म पर करना चाहिये। इसकी जड का स्वरस अथवा इसकी जड़ों का भपके द्वारा निकाला हुआ अर्क आखों मे डालने से आँख की फूली, रतौंधी, पानी का बहना, आखों की लाली और प्रारम्भिक अवस्था का मोतियाविन्द भी आराम हो जाता है। शोढ़ल निघंटु में भी चक्षुरोगों की उपयोगिता में इस वस्तु की बहुत प्रशंसा की गई है।

इसके पचांग की राख १ तोला, २॥ तोले कुनकुने घीके साथ पिलाने से खूनी बवासीरमें बहुत लाभ होता है। इसके कुछ दिन तक लगातार सेवन करनेसे मस्से सूख जाते हैं। इसके पचाग की राख ५ तोला लेकर पावभर पानीमें मिलाकर रात में रख दें। सवेरे भुने हुए चने छीलकर एक मुट्ठी खिलाने के बाद उसका नितरा हुआ जल ऊपर से पिला दें। इस प्रकार कुछ दिनों तक करने से यकृतके विकार शान्त होते है। इस रोग की यह एक सिद्ध औषधि है। पलाश की जड़के रसमें एक प्रकार की तांबे की भस्म तैयार की जाती है जो नेत्ररोग के लिए बहुत उपयोगी है। उसकी विधि इस प्रकार है।

ताँबेके पत्रे लेकर उनके बराबर वजन की सोना मक्खी नामक उपधातुको लेकर ढाककी जड़के रसमें घोट लें। उस घुटी हुई सोना मक्खीको ताम्बेके पतरोंके दोनों तरफ लेप कर दें और छायामें सुखा लें। सूख जानेपर ढाककी एक बड़ी जड़को लेकर उसमें ऐसा खड्डा करें कि जिसमें ये सब पतरे समा जाय उस खड्डेमें इन पतरोंको रखकर उस खड्डे का मुंह उसीके बुरादे से दबा दबा २ कर भर देना चाहिये। उसके बाद उसपर कपड़ मिट्टी करके ५ सेर ऊपले कंडोंकी आँचमें फूक देना चाहिये। इस प्रयोगसे एक ही आँचमें ताम्बेकी भस्म हो जाती है। इस भस्मको आँखोमे आँजनेसे आँखोंके कई कठिन रोग आराम हो जाते हैं।

ढाककी एक जाति और होती है जो सफेद ढाक कहलाती है। इसके फूल सफेद आते है। ऐसा कहा जाता है कि इसके संसर्ग से सोना बनाने की रासायनिक क्रिया होती है। इसके योग से बनाई हुई हरताल, शिंगरफ और पारदकी भस्मे विशेष उपयोगी होती हैं। ऐसा कहा जाता है कि इसके सफेद फूलों का कल्प साधु सन्त सेवन करते हैं। इसके प्रभाव से उनका हृदय खुल जाता है और वे त्रिकाल दर्शी हो जाते हैं। गर्भावस्थामें यदि स्त्री को इसका सेवन कराया जाय तो उसकी संतान बड़ी प्रभाव शाली और बुद्धिमान होती है। इन सब बातोंमें सचाई का कितना अंश है यह कहा नहीं जा सकता।

उपयोग—

मूत्रावरोध—पलाश के फूलों को उबालकर गरम २ पेड़ूपर बाँधने से रुका हुआ पेशाब, गुर्दे का शूल और सूजन दूर होती है।

रक्तस्राव—इसके फूलों को रात भर ठंडे पानी में भिगोकर सुबह थोडी मिश्री मिलाकर पिलानेसे नकसीर, गुर्दे का दर्द और पेशाब के साथ खून आना बन्द होता है।

अतिसार—ढाक का गोंद ५ रत्ती से १५ रत्ती तक कुछ दालचीनी और अफीम मिलाकर खिलाने से अतिसार तुरन्त बन्द होता है।

फोड़ेफुन्सी—फोडे फुन्सी पर इसका ताजारस लगाने से लाभ होता है।

आंतोंकेकृमि—इसके बीजोंको पानीमें भिगोकर छिलका उतारकर उनके मगजको सुखाकर, पीसकर १। माशेकी मात्रामें सुबह शाम और दुपहर ३ दिन तक देना चाहिये और चौथे दिन अरंडीका तेल पिलादेना चाहिये। इस प्रयोगमें आँतोंके लम्बे कीड़े निकल जाते हैं।

दाद और खुजली—ढाकके बीजों को नींबू के रसके साथ पीसकर लगानेसे दाद और खुजली में लाभ होता है।

सूजन—इसके फूलों का पुल्टिस बनाकर बाँधने से सूजन बिखर जाती है।

सर्पविष—इसकी छाल और सोंठको औटाकर छान कर पिलानेसे से सर्पके विषमें लाभ होता है।

बदगाँठ—इसके पत्तों का पुल्टिस बाँधनेसे बदगाँठमें लाभ होता है।

पित्त की सूजन—इसके गोंद को पानीमें गलाकर लेप करनेसे कष्ट साध्य पित्त की सूजन भी मिटती है।

वाजिकरण—इसकी जड़की अतर छाल को दूधके साथ पीने से पुरुषार्थ बढ़ता है।

मूत्राशय के रोग—इसके फूलों का पुल्टिस बनाकर बाँधने से मूत्राशय के रोग मिटते हैं। और अंडकोष की सूजन भी बिखर जाती है।

मिरगी—इसकी जड़ को पानीमें घिसकर नाकमें टपकानेसे मिरगी का वेग मिटता है।

मूत्रकृच्छ्र—ढाककी सूखी हुई कोंपलें, ढाकका गोंद, ढाककी छाल और ढाक के फूलों को मिलाकर चूर्ण बना लेना चाहिये। जितना इस चूर्ण का वजन हो उतनीही मिश्री इसमें मिला देना चाहिये। इसमेंसे ६माशे चूर्ण दूधके साथ रोज लेनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है।

अंडवृद्धि—इसकी छालको पीसकर उसको ७ माशे की मात्रामें जलके साथ देनेसे अंडवृद्धि मिटती है।

ढ़ोल समुद्र

नाम—

संस्कृत—ढोलसमुद्रिका, समुद्रक हिन्दी—ढोलसमुद्र। मराठी—डिंडा बंबई—डिंडा। संथाल—हतकन लेटिन—Leea macrophylla (लीआ मेक्रोफिला)

वर्णन—

यह एक झाड़ीनुमा वृक्ष होता है। इसकी पैदायश कुमाऊसे बंगाल और आसाम तक तथा हिन्दुस्तानके गरम भागोंमें होती है। इसके पत्ते कटी हुई किनारोंके, डालियां हरी, फूल सफेद और जड़ें कंदमय होती हैं। इसकी जड़ें रंगाईके काममें और पत्ते शाग बनानेके काममें आते हैं। औषधि प्रयोगमें इसकी जड़ें काममें आती हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे इसकी जड़ ग्राही, व्रणरोपक, वेदनानाशक और रक्तश्राव रोधक होती है। इसकी जड़को पीसकर लेप करनेसे दाद मिटता है नारूकी सूजन उतारनेके लिये इसकी जड़को पीसकर गरम करके लेप करते हैं। इसके रसमें बत्ती बनाकर नासूरमें भरनेसे नासूर भर जाता है। शरीरके किसी अंगके दर्द को मिटानेके लिये इसकी जड़को पीसकर गरम करके लेप करते हैं। इसकी जडका लेप करनेसे घावमेंसे बहताहुआ खून बंद हो जाता है।

तगर

नाम—
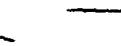
संस्कृत—कालानुसार्य, तगर, कुटिल, लघुष, नत, चक्र, शठ, दीपन, इत्यादि हिन्दी—तगर। बंगाल—तगर पादुका। मराठी—तगर। गुजराती—तगर गठोड़ा करनाटकी—तगर। तेलगू-गन्धि तरग कुचेट्ट। नेपाल—चम्पा। उडीसा—पाणी फलरा। अरबी—असारून। लेटिन—Valeriana wallichii (व्हेलिरियना वेलिची)।

वर्णन—

तगरके वृक्ष हिमालयमें काश्मीरसे भूटानतक और खासिया पहाडियों पैदा होते हैं। इसके पत्ते ५

से लेकर १० सेंटिमीटर तक लंबे होते हैं। इसके फूल सफेद होते हैं। इसकी लकड़ीमें एक प्रकारकी गंध आती है। इसकी २ जातियां होती हैं। दूसरी जातिके संस्कृतमें पिंडीतगर, दंडहस्ती, लघुहर्षण, इत्यादि नाम हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे दोनों प्रकार के तगर गरम, स्वादिष्ट, हलके तथा विष, अपस्मार, सिर दर्द, नेत्र रोग और त्रिदोष को दूर करते हैं।

भाव प्रकाश में जहाँ इस वस्तुको गरम लिखा गया है वहाँ निघण्टु रत्नाकर और राजनिघण्टु के कर्ता इसको शीतल मानते हैं। निघण्टुरत्नाकरके मतानुसार तगर शीतल, पथ्य, कडवी, मधुर, हलकी, स्निग्ध, पाकमें चरपरी, कसेली, विष विकारको दूर करने वाली तथा नेत्ररोग, रुधिरविकार, त्रिदोष, भूतोन्माद और मृगीको दूर करती है।

यूनानीमत—यूनानीमत से यह कडवी, दुर्गन्धयुक्त, सकोचक, मृदुविरेचक, शांतिदायक, पेटके आफरेको दूर करनेवाली, पार्याविक ज्वरको नष्ट करनेवाली, ऋतुस्राव नियामक, और निद्राकारक है। यह आँखों और बालोंकी विकृति, जोड़ों के दर्द, यकृत, तिल्ली और गुर्दे के रोगों पर लाभ दायक है। पुरातन प्रमेहमें भी यह मुफीद है।

डाक्टर देसाई के मतानुसार तगर वायुनाशक, संकोच-विकास प्रतिबन्धक, रक्ताभिसरण और मज्जातन्तु समूह को उत्तेजना देनेवाला, पौष्टिक, चेतनाकारक और बाह्य प्रयोगमें वेदना नाशक और व्रणरोपक होता है। इसको अधिक मात्रामें खानेसे चक्कर आते हैं, हिचकी चलने लगती है और वमन होने लगते हैं। थोड़ी मात्रा में इसको देनेसे यह रक्ताभिसरण क्रिया को उत्तेजन देती है। इसकी फाँट बनाकर देने से हृदयकी शक्ति और नाड़ीकी गति बढ़ती है। मगर यह भी अधिक मात्रा में देनेपर नाड़ीकी गति कम हो जाती है और रक्त वाहिनियों का जोर भी घट जाता है।

तगर का रक्ताभिसरण क्रिया को उत्तेजन देने का धर्म बहुत महत्व पूर्ण है। इससे सारे शरीरमें गर्मी पैदा होने लगती है और फिर पसीना छूटता है। रक्ताभिसरण के ऊपर इसकी क्रिया जितनी महत्वपूर्ण है उतनी ही महत्वपूर्ण क्रिया इसकी मज्जा तन्तुओं के ऊपर होती है। दोनों प्रकारके मज्जाओंमें से ज्ञान तन्तुओं के ऊपर इसकी मुख्य क्रिया होती है।

इसके लेने से ज्ञान तन्तुओंकी ग्रहणशक्ति कम होकर उनमें अवसन्नता पैदा हो जाती है जिससे शरीरके अन्दर होनेवाली किसी भी वेदनाका कष्ट मनुष्यको अनुभव नहीं होता। इसी लिये इसका वेदना नाशक गुण महत्वपूर्ण माना जाता है।

सब प्रकारके मज्जा तन्तु और मस्तिष्क सम्बन्धी रोगोंमें तगरको अकेले अथवा अन्य नरम के साथ

ढोल समुद्र

नाम—

संस्कृत—ढोलसमुद्रिका, समुद्रक हिन्दी—ढोलसमुद्र। मराठी—डिंडा बम्बई—डिंडा। सथाल—हतफन लेटिन—Leea macrophylla (लीआ मेक्रोफिला)

वर्णन—

यह एक झाड़ीनुमा वृक्ष होता है। इसकी पैदायश कुमाऊंसे बंगाल और आसाम तक तथा हिन्दुस्तानके गरम भागोंमें होती है। इसके पत्ते कटी हुई किनारोंके, डालियां हरी, फूल सफेद और जड़ें कंदमय होती हैं। इसकी जड़े रंगाईके काममें और पत्ते शाग बनानेके काममें आते हैं। औषधि प्रयोगमें इसकी जड़ें काममें आती हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे इसकी जड़ ग्राही, व्रणरोपक, वेदनानाशक और रक्तस्राव रोधक होती है। इसकी जड़को पीसकर लेप करनेसे दाद मिटता है नारूकी सूजन उतारनेके लिये इसकी जडको पीसकर गरम करके लेप करते हैं। इसके रसमें बत्ती बनाकर नासूरमें भरनेसे नासूर भर जाताहै। शरीरके किसी अंगके दर्द को मिटानेके लिये इसकी जड़को पीसकर गरम करके लेप करते हैं। इसकी जडका लेप करनेसे घावमेंसे बहताहुआ खून बंद हो जाता है।

तगर

नाम—

संस्कृत—कालानुसार्य, तगर, कुटिल, लघुप, नत, चक्र, शठ, दीपन, इत्यादि हिन्दी—तगर। बंगाल—तगर पादुका। मराठी—तगर। गुजराती—तगर गठोड़ा करनाटकी—तगर। तेलगू - गन्धि तरग कुचेट्ट। नेपाल—चम्मा। उडीसा—पाणी फलरा। अरबी—असारून। लेटिन—Valeriana wallichii (व्हेलिरिएना वेलिची)।

वर्णन—

तगरके वृक्ष हिमालयमें काश्मीरसे भूटानतक और खासिया पहाड़ियों पैदा होते हैं। इसके पत्ते ५

से लेकर १० सेंटिमीटर तक लंबे होते हैं। इसके फूल सफेद होते हैं। इसकी लकड़ीमें एक प्रकारकी गंध आती है। इसकी २ जातियां होती हैं। दूसरी जातिके संस्कृतमें पिंडीतगर, दंडहस्ती, लघुदर्पण, इत्यादि नाम हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वैदिक मतसे दोनों प्रकार के तगर गरम, स्वादिष्ट, हलके तथा विष, अपस्मार, शिर दर्द, नेत्र रोग और त्रिदोष को दूर करते हैं।

भाव प्रकाश में जहाँ इस वस्तुको गरम लिखा गया है वहाँ निघण्टु रत्नाकर और राजनिघण्टु के कर्ता इसको शीतल मानते हैं। निघण्टुरत्नाकरके मतानुसार तगर शीतल, पथ्य, कडवी, मधुर, हलकी, स्निग्ध, पाकमें चरपरी, कसैली, विष विकारको दूर करने वाली तथा नेत्ररोग, रुधिरविकार, त्रिदोष, भूतोन्माद और मृगीको दूर करती है।

यूनानीमत—यूनानीमत से यह कडवी, दुर्गन्धयुक्त, संकोचक, मृदुविरेचक, शांतिदायक, पेटके आफरेको दूर करनेवाली, पार्यायिक ज्वरको नष्ट करनेवाली, ऋतुस्राव नियामक, और निद्राकारक है। यह आँखों और बालोंकी विकृति, जोड़ों के दर्द, यकृत, तिल्ली और गुर्दे के रोगों पर लाभ दायक है। पुरातन प्रमेहमें भी यह मुफीद है।

डाक्टर देसाई के मतानुसार तगर वायुनाशक, संकोच विकास प्रतिबन्धक, रक्ताभिसरण और मज्जातन्तु समूह को उत्तेजना देनेवाला, पौष्टिक, चेतनाकारक और वायु दर्द नसें वेदना नाशक और ज्वरशोधक होता है। इसको अधिक मात्रामें खानेसे चक्कर आते हैं, [illegible] आती है और वमन होने लगते हैं। थोड़ी मात्रा में इसको देनेसे यह रक्ताभिसरण क्रिया को उत्तेजना देती है। इसकी फाँट बनाकर देने से हृदयकी शक्ति और नाड़ीकी गति बढ़ती है। मगर यह [illegible] अधिक मात्रा में देनेपर नाड़ीकी गति कम हो जाती है और [illegible] है।

तगर का रक्ताभिसरण क्रिया को उत्तेजना देने का धर्म बहुत महत्व पूर्ण है। [illegible] गर्मी पैदा होने लगती है और [illegible] पसीना छूटता है। रक्ताभिसरण के ऊपर इसकी क्रिया जितनी महत्वपूर्ण है उतनी ही महत्वपूर्ण क्रिया इसकी [illegible] के ऊपर [illegible] है। [illegible] से ज्ञान तन्तुओं के ऊपर इसकी [illegible] क्रिया होती है।

इसके [illegible] तन्तुओं [illegible] [illegible] [illegible] शरीरके अन्दर होनेवाली [illegible] की वेदना [illegible] अनुभव [illegible] इसका वेदना नाशक गुण महत्वपूर्ण माना जाता है।

सब प्रकारके [illegible] और [illegible]

देना चाहिये। इसको देनेसे कभी २ आलस्य और जंभाइयां आने लगती हैं। मगर उनसे नहीं डरना चाहिये। कंपरोगमें भी इसका कभी कभी २ उपयोग किया जाता है।

बहुत दिनोंतक शरीरमें ज्वर रहनेसे जब सारे शरीरमें शिथिलता पैदा हो जाती है और वात, पित्त और कफ तीनों दोष प्रबल हो जाते हैं ऐसे समयमें तगर उत्तेजक और चेतनाकारक पदार्थ की तरह दिया जाता है। इससे रोगकी प्रबलता कम होकर नाड़ी स्वभाविक चलने लगती है। विषम ज्वरके अन्दर इस औषधि को देने से ज्वरके विषसे पैदा हुई मानसिक और शारीरिक थकावट कम हो जाती है। ऐसे ज्वर में तगरको जस्तभस्म, मेन्सिलभस्म अथवा अफ़ीमके साथ नागरवेलके पानके रसमें घोंटकर गोली बनाकर देते हैं।

सूखी खांसी और श्वास नालिका के संकोच विकास की वजह से पैदा हुए श्वासमें तगर का उपयोग बहुत लाभप्रद होता है।

मस्तक और मज्जा जतुओं की खराबी से पैदा हुए मधुमेह और बहुमूत्रमें तगर को अफ़ीम की थोड़ी मात्राके साथ देनेसे लाभ होता है।

जखम, दुखदाई व्रण, हड्डी का टूटना, और तीव्र आमवातमें वेदना को कम करनेके लिए तगर की फांट बहुत उपयोगी होती है। इसका यह वेदनानाशक धर्म वास्तवमे बहुत महत्वपूर्ण और ध्यान में रखने योग्य है।

वृन्द माधव, रस रत्नाकर और वापट के मतानुसार इसकी जड़ को ठंडे पानीमें पीसकर सांपके जहरमें उपयोग में लेते हैं।

कर्नल चोपरा का मत— कर्नल चोपराके मत से तगर यह एक पुरानी औषधि है। यूनानी हकीम डिओसकोरिडस ने इसका वर्णन "फू" के नाम से किया है। मध्ययुगमें यह औषधि जर्मनी, एशिया, यूनान और एशिया मायनर में सुगन्धित मसालोंके काममें ली जाती थी।

आधुनिक समयमें संसार के अन्दर इस औषधि की मांग बहुत अधिक बढ़ गई है। सन् १९१८ के महायुद्ध के बादमें इसकी कीमत करीब २ तिगुनी होगई है। कुछ समय पहिले यह औषधि सिर्फ गुल्म वायु और स्त्रियोंके स्नायुमण्डलके विकारों पर ही काममें ली जाती थी। पर अभीके अनुसंधानों से यह पता चला है कि मृगी और स्नायुशूल के ऊपर भी इस औषधि की उपयोगिता बहुत है। इसी कारण से इस औषधि का पूर्ण अध्ययन किया गया है।

इस औषधि की तारीफ इसमें पाये जाने वाले उड़नशील तेलकी वजहसे ही है। इसकी साधारण नस्लके द्रव्य में .५ से लेकर .८ प्रतिशत तक उड़नशील तेल पाया जाता है। किन्तु तेल की यह मात्रा

स्थान और उसको इकट्ठा करने की मौसिम पर भी निर्भर है। वसन्त ऋतुमें यदि इसकी ताजा जड़ें इकट्ठी की जाय तो इनमें २ १२ प्रतिशत उडनशील तेल पाया जाता है।

भारतवर्ष में तगर की जो गठाने काममें ली जातीहैं वे प्रायः अफगानिस्तान से आती हैं मगर भारतवर्ष में हिमालय के पहाडों पर भी इसकी दोनों जातियां पैदा होती हैं और परीक्षणसे साबित हो चुका है कि उनमें भी बाहर से आने वाली तगरके बराबर ही तेल उत्पन्न होता है।

के० एल० दे के मतानुसार यह वनस्पति मूत्र की रुकावट, मृगी, सिरदर्द, मूर्छा, आक्षेप, हिस्टीरिया, स्नायुमंडल के विकार और विष के उपद्रवों र लाभदायक है।

रासायनिक विश्लेषण— सन्याल और घोषके मतानुसार इस औषधि के मुख्य गुण इसमें पाये जाने वाले उडनशील तेलपर ही निर्भर हैं। इसके अतिरिक्त इसमें व्हेलेरिक एसिड, साइट्रिक, टारटेरिक ग्लूकोज, एलब्यूमेनाइटस, स्टार्च और सेल्यूलेन भी रहते हैं।

उपयोग—

वातपीड़ा— तगर को जस्त भस्म के साथ देने से गठिया, पक्षाघात, गलेके रोग, संधिवात, इत्यादि रोग दूर होते हैं।

विषविकार— तगर को ६ रत्ती से १।। माशे की मात्रामें लेने से विष, रक्तविकार, त्रिदोष, भूतोन्माद, अपस्मार और नेत्र तथा मस्तक के रोग मिटते हैं।

नेत्ररोग— इसके पत्तों का आंख पर लेप करनेसे नेत्ररोग मिटते हैं।

मात्रा— इसकी मात्रा ६ रत्तीसे २ माशे तक की है। अधिक मात्रा में लेने में यह नुकसान करता है। इसलिए इसको अधिक मात्रा में नहीं लेना चाहिये।

तगर (२)

नाम—

हिन्दी—तगर, सुमियो, अमरन। लेटिन— Valeriana Hardwickii (वेलेरियाना हार्डवीकी)।

वर्णन और गुण दोष तथा प्रभाव—

यह औषधि तगर की ही एक दूसरी जाति है। इसके गुणदोष तगरके ही समान हैं।

कर्नल चोपराके मतसे तज असली दालचीनीमें मिलावट करनेके काममें आती है। इसमें भी दालचीनी की तरह "साइनेमिक एल्डेहाइट" पाया जाता है। किन्तु "टरपेन्स" की मात्रा अधिक होनेकी वजहसे इसकी गन्ध कुछ अप्रिय हो जाती है। दालचीनीके अन्दर यह बात नहीं है। इसके पत्तोंको तेजपान कहते हैं।

तन्दुलिया

नाम—

संस्कृत—तंदुलिया, विषघ्न। गुजराती—ढीमडो। मराठी—लहानमाट। कच्छी—अडबाड राजगरो। लेटिन—Amaranthus Viridis (एमेरेंथस वेरिडिस)

वर्णन—

इस वनस्पतिके पौधे १ हाथसे २ हाथ तक ऊंचे होते हैं। इसके पत्ते लम्बे और [illegible]में चौड़े होते हैं। इसके फूल कुछ पीलापन लिये हुए हरे रंगके और बीज काले रंगके होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके कई लेखकोंने इस वनस्पतिको सांप और बिच्छूके काटनेपर बहुत उपयोगी बतलाया है। मगर केस और महस्करके मतानुसार यह वनस्पति सर्प और बिच्छूके विष पर निरुपयोगी है। इसका पौधा मूत्रल होता है और इसके पत्तोंका लेप फोड़े फुन्सियों पर किया जाता है।

तपनी वेल

हिन्दी—रान घेवड़ा, तपनीवेल। गुजराती—[illegible] वमनवेल, [illegible], [illegible], धानवेल, हाथ पे [illegible]नी वेल। लेटिन—Rhynchosia Minima (रिंकोसिया [illegible])।

वर्णन—

यह एक लता होती है। इसकी बेलें बहुत पतली होती हैं। यह [illegible] दिखाई [illegible] जाती है। इसके [illegible] [illegible] है। इसके [illegible] (सेम) के पत्तोंकी तरह तीन २ के [illegible] रहते हैं। इसके फूल [illegible] [illegible]

पीले रंगके, छोटे सुन्दर पतगियेकी तरह होते हैं। इसकी फली बहुत छोटी होती है जिसमें दो २ बीज रहते हैं। ये बीज चपटे, चमकीले और भूरे तथा काले रगके होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

इसकी जड़ें बहुत ग्राही होती हैं और ये मरोड़ीके दस्त, आमके दस्त और संग्रहणीके ऊपर बहुत अच्छा लाभ बतलाती हैं।

—

तपसी

नामः—

यूनानी—तपसी।

वर्णन—

यह एक बेल होती है जो बहुत बढ़कर झाडोंपर फैल जाती है। इसके फूल अबाडेके फूलकी तरह और फल आकारमें जामुनके बराबर, पीले और मीठे होते हैं। इसकी डालीको तोडनेसे दूध निकलता है।

गुणदोष और प्रभाव—

यूनानीमत—यूनानीमत से तपसी तीसरे दर्जे में गरम और खुश्क है। यह कफ और पित्तको नष्ट करती है तथा लकवा, फालिज और कंपवात में मुफीद है।

—

तबर्रक

नाम—

यूनानी—तबर्रक।

वर्णन—

यह एक वृक्ष होता है। इसके फल और पत्ते गुलाबके फल और पत्तो की तरह होते हैं। यह अरब में पैदा होता है।

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह गरम, पचने में कड़वा, कफ नाशक, खूनके जोशको मिटाने वाला और प्रमेह में लाभदायक है।

तम्बाकू

नाम—

संस्कृत—धूम्रपत्रिका, कलंजा, कृमिघ्नि, क्षारपत्रा, तमाखू, वक्रभृङ्गी, ताम्रकुटिका। हिन्दी—तम्बाकू, तुम्बक, तुर्कर भग। बंगाल—तमाकू। मराठी—तम्बाखू। गुजराती—तमाखू। फारसी—तम्बाकू वेहारे भग। तामील—पुगई इलई। तेलगू—धूम्रपत्रम्। लेटिन—Nicotiana Tabacum (निकोटिएना टेवेकम)। अंग्रेजी—Indian tobacco (इंडियन टोवेको)।

वर्णन—

तम्बाकूका मूल उत्पत्तिस्थान अमेरिका है। मगर अब यह प्रायः भारतवर्षके सब हिस्सोंमें बोई जाती है इस वस्तुसे प्रायः सब लोग परिचित हैं इसलिये इसके विशेष वर्णन की आवश्यकता नहीं। इसके बीजोंमें से ३६ प्रतिशत तेल निकलता है जिसका रंग कुछ हरापन लिये हुए पीला होता है। यह तेल बहुत विषैला होता है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतानुसार इसके पत्ते तीखे, स्वादमें कड़वे, गरम, मृदुविरेचक, पौष्टिक, वमनकारक, पेटके आफरेको दूर करनेवाले और कृमिनाशक होते हैं। दांतोंकी सड़ान, चर्मरोग, बिच्छूके विष और मदाइके ऊपर ये लाभदायक हैं। ये आंखोंकी ज्योतिको खराब करते हैं।

यूनानीमत—यूनानीमतसे इसके पत्ते तेज और कड़वे होते हैं। ये दांतोंकी सड़ानको दूर करते हैं। खांसी, नाकसे मवादका बहना, फोडे-फुन्सी खुजली और घावमें ये उपयोगी होते हैं। गलेपर होनेवाली सूजनजनित व्याधियों पर ये लाभ पहुँचाते हैं। इनका धुआँ कृमिनाशक, कब्जियतको दूर करनेवाला और मस्तिष्कको उत्तेजना पहुँचानेवाला होता है। हुक्केका पानी मूत्रल होता है। हुक्केमें का कालाकीट और हुक्केका गुल नासूर या घावपर लगानेसे उसको दूर देता है। इसको आंखमें आंजनेसे रतौंधी और दूसरे चक्षुरोग मिटते हैं। इसके पत्ते निद्रालाने वाले, और वमनकारक होते हैं। इसके पत्तोंसे एक प्रकारका मरहम तैयार किया जाता है। इस मरहमको पुराने व्रण और उपदंशिक फोड़ोंपर लगानेसे लाभ होता है।

गायनामें इसके पत्तोंको गरम करके तेलमें भिगाकर ताजा घावपर लगाते हैं। इसके शीत निर्यास का एनिमा भी लगाया जाता है इसका धुआँ हर्नियाँ की बीमारीमें लाभदायक माना जाता है।

गोल्ड कोस्ट में इसके पत्तों को आग पर तपाकर ग्रेसलाइन या मक्खन में मिलाकर गठानों पर लगानेके काम में लेते हैं। यह मरहम सीने की तकलीफों में भी खास कर श्वास लेने में जो कठिनाई होती है उसमें लाभ पहुँचाता है।

यूरोप और दक्षिण अफ्रिका में तम्बाखू के सूखे पत्ते रक्तआवरोधक वस्तु की तौर पर काम में लिये जाते हैं।

भारतवर्ष में तम्बाकू का पत्ता बिच्छू के काटने की एक उत्तम दवा मानी गई है। सर्प और अन्य विष के कृमियों पर भी इसको लगाने के काम में लेते हैं।

हूपिंग कफ और तम्बाखू—

आजकल के नवीन अनुभव में यह बात मालूम हुई है कि बालकों को होने वाले हूपिंगकफ या कुक्कुर खांसी अथवा उटाटिया की भयंकर बीमारी में तम्बाकू से बहुत लाभ होता है। इसका प्रयोग करने का तरीका इस प्रकार है:—

काली तम्बाकू के पत्तों के बीच के डंखल १ सेर लेकर उनके छोटे २ टुकड़े कर लेना चाहिये। और उतना ही सेंधा निमक लेकर उसको पीस लेना चाहिये। फिर मिट्टी की एक हाडी में नीचे थोड़े से डंखल के टुकडे बिछा कर उन पर सेंधा निमक बिछा देना चाहिये। उसके ऊपर फिर डंखल बिछाकर फिर डंखलों पर सेंधा निमक बिछा देना चाहिये। इस प्रकार एक दूसरे के ऊपर थर पर थर जमा देना चाहिये। जब दोनों चीजें खतम हो जाय तब उस हाँडी को चूल्हे पर चढा देना चाहिये। जब तम्बाकू के सब डखल जलकर कोयले के समान हो जाय तब उस हाँडी को उतार कर उसमें की सब सामग्री को शामिल पीस लेना चाहिये और कपड़े में छान कर बोतल में भर देना चाहिये। यह खयाल रखना चाहिये कि तम्बाखू के डंखलों की एक दम राख न हो जाय, वे कोयलेकी ही हालत में रहना चाहिये।

बालक की आयु के अनुसार इस चूर्ण को १।। रत्ती से ३ रत्ती तक की मात्रा में लेकर, नागर वेल के पके हुए पत्ते के रस में मिलाकर, उसमें दो इलायची का चूर्ण मिलाकर पिला देना चाहिये। इस प्रकार दिन में २।३ बार यह दवा देना चाहिये। अगर किसी बच्चे को इससे एकाध उल्टी हो जाय तो उससे घबराना नहीं चाहिये। क्योंकि उससे छातीमें का जमा हुआ कफ निकलकर आराम मिलता है।

हूपिंग कफ के सिवाय दूसरी सादी खाँसी में भी यह दवा अच्छा फायदा पहुचाती है। बड़े आदमियों की खाँसी में इस औषधि को ३ से ४ रत्ती तक की मात्रा में देना चाहिये।

पागल कुत्ते के विष में भी तम्बाकू अच्छा लाभ पहुँचाती है।

मुज़िर—यह वनस्पति मनुष्य शरीर के लिये लाभ दायक की अपेक्षा हानिकारक अधिक है। इसको अधिक खाने या पीनेसे स्नायुजालकी शक्ति निर्बल हो जाती है। यह अग्निको बिगाड़ती है, यकृत की क्रिया को शिथिल करती है और अर्द्धाङ्गिका पूर्व रूप पैदा करती है। इसके अधिक सूँघने से एक प्रकार की असाध्य मन्दाग्नि हो जाती है। इससे हृदय की क्रिया भी बिगड़ती है और भी कई प्रकारके शारिरिक उपद्रव इससे होते हैं।

उपयोग—

अण्डवृद्धि—तम्बाकू, चूना और पुन्नाग की छालका लेप करनेसे अण्डवृद्धि मिटती है।

धनुस्तंभ—धनुस्तंभ रोग में रीढ़की हड्डीपर तम्बाकू के पत्तों का पुल्टिस बाँधना चाहिये। धनुस्तंभ में पट्ठोंका खिचाव और वायँठों के लिये तम्बाकूके पत्तो को सोलहगुने जल में औटाकर उस क्वाथ का बफारा देना चाहिये।

कुचले का विष—कुचला या कुचलेके सत का विष उतारने के लिये इसके पत्तों का हिम या फाँट बनाकर पिलाना चाहिये अथवा तम्बाकू का सत खिलाना चाहिये। कुचले के दर्प को नष्ट करने के लिये इसके बराबर दूसरी औषधि नहीं है।

पाण्डुरोग—पाण्डुरोग वालेको तम्बाकू का धूम्रपान कराने से लाभ होता है।

मसूड़े का रोग—फूले हुए मसूड़ों के ऊपर इसके पत्तों का चूर्ण मलने से उनका [illegible] बन्द हो जाता है और पीड़ा मिट जाती है।

दन्तरोग—दो भाग तम्बाकू और एक भाग काली मिरच को पीस कर मंजन करने से दन्त पीड़ा मिटती है।

सफेद दाग—तम्बाकू के बीजोंका कोल्हू से निकाला हुआ तेल लगाने से सफेद दाग मिटते हैं।

सिरकीगंज—हुक्के के गुलको कड़वे तेल में पीसकर लेप करने से गंज मिटता है।

जोड़ों का दर्द—आधा सेर तम्बाकू को, आधा सेर पानी में [illegible] उसको मल-छानकर [illegible] लेना चाहिये। फिर उस [illegible] तेल डालकर औटाना चाहिये। जब पानी जलकर तेल रह जाय तब उसे छान लेना चाहिये। इस तेलका मालिश करने से जोड़ों का दर्द मिटता है।

श्वास और खाँसी—तम्बाकू का रस [illegible] निकालकर उस [illegible] से श्वास और खाँसी मिटती है।

२—इसके हरे पत्तों के रसमें बराबर गुड मिलाकर शर्बत बनाकर १ तोले से २ तोले तक की मात्रा मे देने से श्वास मिटता है।

नासूर—हुक्के के गुल का पानीमें पीसकर लगाने से सब प्रकार के नासूर और फोडे अच्छे होते हैं।

कर्नल चोपराके मतानुसार तम्बाकू कृमि नाशक है। यह संधि वातकी सूजनमें, चर्मरोग में और बिच्छू के विष पर लाभ दायक है।

तम्बाकू कलकतिया

वर्णन—

बिहार—कलकतिया तम्बाकू। बंगाल—विलायती तम्बाकू। पंजाब—कक्कर तम्बाकू। लेटिन—Nicotiana Rustica (निकोटियना रस्टिका)।

गुण, दोष और प्रभाव—

इस वनस्पति के गुणदोष साधारण तम्बाकू के गुणदोषों से मिलते जुलते होते हैं।

तरबूज

नाम—

संस्कृत—कालिंग, दीर्घवृन्त, वर्तुल फल, चित्रफलका, चित्रवल्लिका इत्यादि। हिन्दी—तरबूज, हदवाना, हिंदवाना। बंगला—तरमूज, तरबूज। मराठी—कलिंगड। गुजराती—कालिंगडु। पंजाब—हिंदवाना, मतीरा, तरबूज। फारसी—हिंदवानह, हिंदवाना। अरबी—बत्तिखे हिन्दी। उर्दू—तरबूज। लेटिन—Citrullus Vulgaris (सिट्रुलस वल्गेरिस)।

वर्णन—

तरबूज का फल सारे हिन्दुस्तान में प्रसिद्ध वस्तु है। गर्मी के दिनों में यह हिन्दुस्तान के प्रत्येक स्थान पर प्रायः खाया जाता है। इस कारण इसके विशेष वर्णन की आवश्यकता नहीं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे कच्चा तरबूज मलरोधक,शीतल,भारी और दृष्टि,पित्त और वीर्यको नष्ट करनेवाला होता है। यह पीलियेमें फायदा पहुँचाता है। पका हुआ तरबूज पित्तकारक,क्षार युक्त, गरम और वातकफ नाशक होता है। तरबूजकी मगज मधुर, बलकारक, रुचिवर्धक, और धातुवर्धक होती हैं। इसके पत्ते कड़वे और रक्त वर्धक होते है। ये खूनकी उल्टीको बंद करते हैं।

यूनानी मत—यूनानीमतसे इसका पका हुआ फल शीतल, कफ निस्सारक, मूत्रल, अग्निवर्द्धक और रक्तशोधक होता है, यह प्यासको बुझाता है और पित्तको दुरुस्त करता है। आँखोंकी तकलीफ, दाज और खुजलीमें यह लाभदायक है। इसके बीज मस्तकके लिये पौष्टिक वस्तु है।

इसके बीज मूत्रल और पौष्टिक माने जाते हैं। टायफस ज्वरमें ये कृमिनाशक वस्तुकी तौरपर काममें लिये जाते हैं। इसका फल सिंधमें विरेचक वस्तुकी तौरपर काममें लिया जाता है।

केपकालोनीके पश्चिमी प्रांतमें इसके फलका गूदा जलोदर और पेटकी अन्य शिकायतोंमें विरेचक वस्तुकी तौरपर काममें लिया जाता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार इसके बीज मूत्रल होते हैं। इनमें साइट्रोलिन नामक पदार्थ पाया जाता है।

तरली

नाम—

हिन्दी—तरली। बंगाल—कुद्री। पंजाब—बनककड़ी। कनाड़ी—सिदोडे। तेलगू—निद्रासड्ड। तामील—कर थोए। मराठी—गोमेटो। लेटिन—Zehneria Umbellata (झेहनेरिया अम्बेलेटा)।

वर्णन—

यह एक लता होती है। इसका फल ककोड़ेके फलकी तरह होता है इस फलकी तरकारी बनाई जाती है। औषधि में इसका पचांग काममें लिया जाता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यह वनस्पति पौष्टिक, स्नेहन और उत्तेजक है। इसकी जड़को दूध और शक्करके साथ देनेसे धातु पुष्ट होती है।

तरमीम

नाम—

यूनानी—तरमीस ।

वर्णन—

यह एक साग है । इसका स्वाद खट्टा होता है । इसकी बस्तानी और जंगली २ जातियाँ होती हैं । दोनों के पौधे बाकला के पौधों की तरह होते हैं। इसके बीजों में बाकलाके बीजों से ज्यादा गोलाई और ज्यादा चपटापन होता है । इसके दाने पीलापन लिये हुए सफेद रंग के और बाकला के दानों से कुछ छोटे आकार के होते हैं । इनका स्वाद कड़वा और गन्ध तेज होती है। पानी में निमक मिलाकर इनको धोने से इनका कड़वापन दूर हो जाता है ।

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह पहले दर्जे में गरम और दूसरे दर्जे में खुश्क है । यह त्रिदोष को दूर करती है । शरीर में गरमी और खुश्की पैदा करती है । इसका कड़वापन दूर करने से इसकी गरमी और खुश्की कम हो जाती है । मगर इसके साथ ही कड़वेपन के निकल जाने से इसकी त्रिदोष को दूर करने की शक्ति भी कम हो जाती है ।

तरमीस और चने के काढ़े में शहद मिलाकर देने से तिल्ली में लाभ होता है । इसका काढ़ा बन्द हुए ऋतुस्राव को जारी करता है और जहरबाज की सूजनको मिटाता है । इसको पानी में भिगोकर उस पानी में स्नान करनेसे खुजलीमें लाभ होता है । इसके आटे को पानीमें घून्द कर उसका प्लास्टर पेट पर चढ़ाने से पेट के सब कीड़े निकल जाते हैं। अगर शरीर में कहीं खून जम गया हो तो वहां भी इसका लेप करने से खून बिखर जाता है । इसके आटे का उबटन बनाकर चेहरे पर मलने से चेहरे की कान्ति बढ़ती है ।

इसके काढ़ेसे श्वेत कुष्टके दागोंको धोनेसे फायदा होता है । चोट लगनेसे अगर कहीं नीला दाग पड़ जायतो वह भी इसके लेपसे आराम हो जाता है । इसको सिरकेमें मिलाकर सरदीकी सूजन और जोड़ोंके दर्दपर लगानेसे लाभ होता है । गर्मीके घाव, सिर की गंज और खराब जख्मोंको इसके काढ़ेसे धोना लाभदायक है । किसी जहरीले जन्तुके काटे हुए स्थानपर इसको शहदमें मिलाकर लगाना चाहिये । सवेरेके नाश्तेके समय इसको १० माशेकी मात्रामे रोज खानेसे पुराना सिर दर्द मिट जाता है और आंखोंमें नजलेका पानी नहीं उतरने पाता ।

इसको पीसकर शहदमें मिलाकर चाटनेसे पुरानी खांसी, जलोदर और पथरीमें लाभ होता है ।

तिल्ली और मसानोंको ताकत पहुँचती है। जिस तरमीसमें कड़वापन न हो उसको बारीक पीसकर सिरके के साथ खानेसे मतली और वमन बंद होकर भूख बढती है। कड़वी तरमीसके लेनेसे मेदे और आँतोंकी सफाई होती है, जिगर और तिल्लीके सुद्दे खुलते हैं। पेशाब साफ़ होता है और इसको पीसकर नाभिपर लगानेसे पेटके कीड़े निकल जाते हैं।

एक मुट्ठी तरमीसको कुचलकर छिलके दूर करके एक ताँबेके बरतनमें डालदें और उस बरतनमें इतना दूध डालें कि वह औषधि डूब जाय। फिर हलकी आँचपर उसको पकावें। जब सब दूध जल जावे तब गायका घी डालकर फिर पकावें। जब गाढ़ा हो जाय तो उतार लें। इस औषधिको गरम २ कपड़े पर लगाकर प्लास्टरकी तरह पेटपर चढ़ावें तो त्रिदोषनाशक दस्त होते हैं। अगर इसी प्लास्टरको जाँघकी जडमें लगावें तो पित्तका विकार दस्तोंकी राह निकल जाताहै, अगर इस प्लास्टरको बैठककी जगह लगा दिया जाय तो कफका विकार दस्तोंकी राह निकल जाता है और अगर इसको पेटके ऊपरी हिस्सेपर लगाया जाय तो वातका विकार दस्तकी राह निकल जाता है (यूसुफ़ बगदादी)

यूनानीके अन्दर इस लेपकी बड़ी तारीफ है बच्चों और बूढोंको भी इससे दस्त दिलाये जाते हैं।

इसकी जडका काढ़ा नूतल है। अगर कोइ स्त्री सुदाब और काली मिरचके साथ इसका काढ़ा बनाकर पीवे और इन तीनोंके चूर्णका गर्भाशय पर लेप करे तो उसका रुका हुआ मासिक धर्म जारी हो जाता है मगर यदि स्त्री गर्भ वती हो तो उसका गर्भपात हो जाता है। यदि किसी स्त्रीके पेटमें बच्चा मर जाय तो यह प्रयोग करनेसे बच्चा निकल कर स्त्री की जान बच जाती है।

मुजिर—इसका अधिक प्रयोग मेदे को खराब करता है।

दर्प नाशक—इसको घीके साथ पकाकर खानेसे इसके अवगुण नष्ट हो जाते हैं। नमक, पोदीना और गरम मसाला भी इसके दोषों को नष्ट करता है।

मात्रा—इसकी मात्रा १० माशेसे २ तोला तक है।

तराबुलसीदा

नाम—

यूनानी—तराबुलसींदा।

वर्णन—

यह एक जाति की मिट्टी है। जो समुद्र के पहाड़ों में पैदा होती है।

तरमीस

नाम—

यूनानी—तरमीस ।

वर्णन—

यह एक साग है । इसका स्वाद खट्टा होता है । इसकी बस्तानी और जंगली २ जातियाँ होती हैं । दोनों के पौधे बाकला के पौधों की तरह होते हैं। इसके बीजों में बाकलाके बीजों से ज्यादा गोलाई और ज्यादा चपटापन होता है । इसके दाने पीलापन लिये हुए सफेद रंग के और बाकला के दानों से कुछ छोटे आकार के होते हैं । इनका स्वाद कड़वा और गन्ध तेज होती है । पानी में निमक मिलाकर इनको धोने से इनका कड़वापन दूर हो जाता है ।

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह पहले दर्जे में गरम और दूसरे दर्जे में खुश्क है । यह त्रिदोष को दूर करती है । शरीर में गरमी और खुश्की पैदा करती है । इसका कड़वापन दूर करने से इसकी गरमी और खुश्की कम हो जाती है । मगर इसके साथ ही कड़वेपन के निकल जाने से इसकी त्रिदोष को दूर करने की शक्ति भी कम हो जाती है ।

तरमीस और चने के काढ़े में शहद मिलाकर देने से तिल्ली में लाभ होता है । इसका काढा बन्द हुए ऋतुश्राव को जारी करता है और जहरबाज की सूजनको मिटाता है । इसको पानी में भिगोकर उस पानी में स्नान करनेसे खुजलीमें लाभ होता है । इसके आटे को पानीमें घून्द कर उसका प्लास्टर पेट पर चढ़ाने से पेट के सब कीड़े निकल जाते हैं । अगर शरीर में कहीं खून जम गया हो तो वहां भी इसका लेप करने से खून बिखर जाता है । इसके आटे का उबटन बनाकर चेहरे पर मलने से चेहरे की कान्ति बढती है ।

इसके काढ़ेसे श्वेत कुष्टके दागोंको धोनेसे फायदा होता है । चोट लगनेसे अगर कहीं नीला दाग पड़ जायतो वह भी इसके लेपसे आराम हो जाता है । इसको सिरकेमें मिलाकर सरदीकी सूजन और जोड़ोंके दर्दपर लगानेसे लाभ होता है । गर्मीके घाव, सिर की गंज और खराब जख्मोंको इसके काढ़ेसे धोना लाभदायक है । किसी जहरीले जन्तुके काटे हुए स्थानपर इसको शहदमें मिलाकर लगाना चाहिये । सवेरेके नाश्तेके समय इसको १० माशेकी मात्रामें रोज खानेसे पुराना सिर दर्द मिट जाता है और आंखोंमें नजलेका पानी नहीं उतरने पाता ।

इसको पीसकर शहदमें मिलाकर चाटनेसे पुरानी खांसी, जलोदर और पथरीमें लाभ होता है ।

तिल्ली और मसानोंको ताकत पहुँचती है। जिस तरमीसमें कड़वापन न हो उसको बारीक पीसकर सिरके के साथ खानेसे मतली और वमन बंद होकर भूख बढ़ती है। कड़वी तरमीसके लेनेसे मेदे और आँतोंकी सफाई होती है, जिगर और तिल्लीके सुद्दे खुलते हैं। पेशाब साफ होता है और इसको पीसकर नाभिपर लगानेसे पेटके कीड़े निकल जाते हैं।

एक मुट्ठी तरमीसको कुचलकर छिलके दूर करके एक ताँबेके बरतनमें डालदें और उस बरतनमें इतना दूध डालें कि वह औषधि डूब जाय। फिर हलकी आँचपर उसको पकावें। जब सब दूध जल जावे तब गायका घी डालकर फिर पकावें। जब गाढ़ा हो जाय तो उतार लें। इस औषधिको गरम २ कपड़े पर लगाकर प्लास्टरकी तरह पेटपर चढ़ावे तो त्रिदोषनाशक दस्त होते हैं। अगर इसी प्लास्टरको जाँघकी जड़में लगावें तो पित्तका विकार दस्तोंकी राह निकल जाताहै, अगर इस प्लास्टरको बैठककी जगह लगा दिया जाय तो कफका विकार दस्तोंकी राह निकल जाता है और अगर इसको पेटके ऊपरी हिस्सेपर लगाया जाय तो वातका विकार दस्तकी राह निकल जाता है (यूसुफ़ बगदादी)

यूनानीके अन्दर इस लेपकी बड़ी तारीफ है बच्चों और बूढ़ोंको भी इससे दस्त दिलाये जाते हैं।

इसकी जड़का काढ़ा मूत्रल है। अगर कोई स्त्री सुहाग और काली मिरचके साथ इसका काढ़ा बनाकर पीवे और इन तीनोंके चूर्णका गर्भाशय पर लेप करे तो उसका रुका हुआ मासिक धर्म जारी हो जाता है मगर यदि स्त्री गर्भ वती हो तो उसका गर्भपात हो जाता है। यदि किसी स्त्रीके पेटमें बच्चा मर जाय तो यह प्रयोग करनेसे बच्चा निकल कर स्त्री की जान बच जाती है।

मुजिर—इसका अधिक प्रयोग मेदे को खराब करता है।

दर्प नाशक—इसको घीके साथ पकाकर खानेसे इसके अवगुण नष्ट हो जाते हैं। नमक, पोदीना और गरम मसाला भी इसके दोषों को नष्ट करता है।

मात्रा—इसकी मात्रा १० माशेसे २ तोला तक है।

तराबुलसीदा

नाम—

यूनानी—तराबुलसीदा।

वर्णन—

यह एक जाति की मिट्टी है। जो स्याम के पहाड़ों में पैदा होती है।

तरमीस

नाम—

यूनानी—तरमीस।

वर्णन—

यह एक साग है। इसका स्वाद खट्टा होता है। इसकी बस्तानी और जंगली २ जातियाँ होती हैं। दोनों के पौधे बाकला के पौधों की तरह होते हैं। इसके बीजों में बाकलाके बीजों से ज्यादा गोलाई और ज्यादा चपटापन होता है। इसके दाने पीलापन लिये हुए सफेद रंग के और बाकला के दानों से कुछ छोटे आकार के होते हैं। इनका स्वाद कड़वा और गन्ध तेज होती है। पानी में निमक मिलाकर इनको धोने से इनका कड़वापन दूर हो जाता है।

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह पहले दर्जे में गरम और दूसरे दर्जे में खुश्क है। यह त्रिदोष को दूर करती है। शरीर में गरमी और खुश्की पैदा करती है। इसका कड़वापन दूर करने से इसकी गरमी और खुश्की कम हो जाती है। मगर इसके साथ ही कड़वेपन के निकल जाने से इसकी त्रिदोष को दूर करने की शक्ति भी कम हो जाती है।

तरमीस और चने के काढ़े में शहद मिलाकर देने से तिल्ली में लाभ होता है। इसका काढा बन्द हुए ऋतुश्राव को जारी करता है और जहरबाज की सूजनको मिटाता है। इसको पानी मे भिगोकर उस पानी में स्नान करनेसे खुजलीमें लाभ होता है। इसके आटे को पानीमें घून्द कर उसका प्लास्टर पेट पर चढ़ाने से पेट के सब कीड़े निकल जाते हैं। अगर शरीर में कहीं खून जम गया हो तो वहां भी इसका लेप करने से खून बिखर जाता है। इसके आटे का उबटन बनाकर चेहरे पर मलने से चेहरे की कान्ति बढती है।

इसके काढ़ेसे श्वेत कुष्टके दागोंको धोनेसे फायदा होता है। चोट लगनेसे अगर कहीं नीला दाग पड़ जायतो वह भी इसके लेपसे आराम हो जाता है। इसको सिरकेमें मिलाकर सरदीकी सूजन और जोड़ोंके दर्दपर लगानेसे लाभ होता है। गर्मीके घाव, सिर की गंज और खराब जख्मोंको इसके काढ़ेसे धोना लाभदायक है। किसी जहरीले जन्तुके काटे हुए स्थानपर इसको शहदमें मिलाकर लगाना चाहिये। सवेरेके नाश्तेके समय इसको १० माशेकी मात्रामे रोज खानेसे पुराना सिर दर्द मिट जाता है और आंखोंमें नजलेका पानी नहीं उतरने पाता।

इसको पीसकर शहदमें मिलाकर चाटनेसे पुरानी खांसी, जलोदर और पथरीमें लाभ होता है।

तिल्ली और मसानोंको ताक़त पहुँचती है। जिस तरमीसमें कड़वापन न हो उसको बारीक पीसकर सिरके के साथ खानेसे मतली और वमन बंद होकर भूख बढती है। कड़वी तरमीसके लेनेसे मेदे और आँतोंकी सफाई होती है, जिगर और तिल्लीके सुद्दे खुलते हैं। पेशाब साफ होता है और इसको पीसकर नाभिपर लगानेसे पेटके कीड़े निकल जाते हैं।

एक मुट्ठी तरमीसको कुचलकर छिलके दूर करके एक ताँबेके बरतनमें डालदें और उस बरतनमें इतना दूध डालें कि वह औषधि डूब जाय। फिर हलकी आँचपर उसको पकावें। जब सब दूध जल जावे तब गायका घी डालकर फिर पकावें। जब गाढ़ा हो जाय तो उतार लें। इस औषधिको गरम २ कपडे पर लगाकर प्लास्टरकी तरह पेटपर चढावे तो त्रिदोषनाशक दस्त होते हैं। अगर इसी प्लास्टरको जाँघकी जडमें लगावें तो पित्तका विकार दस्तोंकी राह निकल जाताहै, अगर इस प्लास्टरको बैठककी जगह लगा दिया जाय तो कफका विकार दस्तोंकी राह निकल जाता है और अगर इसको पेटके ऊपरी हिस्सेपर लगाया जाय तो वातका विकार दस्तकी राह निकल जाता है (यूसूफ़ बगदादी)

यूनानीके अन्दर इस लेपकी बड़ी तारीफ है बच्चों और बूढ़ोंको भी इससे दस्त दिलाये जाते हैं।

इसकी जड़का काढ़ा मूत्रल है। अगर कोइ स्त्री सुदाब और काली मिरचके साथ इसका काढ़ा बनाकर पीवे और इन तीनोंके चूर्णका गर्भाशय पर लेप करे तो उसका रुका हुआ मासिक धर्म जारी हो जाता है मगर यदि स्त्री गर्भ वती हो तो उसका गर्भपात हो जाता है। यदि किसी स्त्रीके पेटमें बच्चा मर जाय तो यह प्रयोग करनेसे बच्चा निकल कर स्त्री की जान बच जाती है।

मुजिर—इसका अधिक प्रयोग मेदे को खराब करता है।

दर्प नाशक—इसको घीके साथ पकाकर खानेसे इसके अवगुण नष्ट हो जाते हैं। नमक, पोदीना और गरम मसाला भी इसके दोषों को नष्ट करता है।

मात्रा—इसकी मात्रा १० माशेसे २ तोला तक है।

तराबुलसीदा

नाम—

यूनानी—तराबुलसीदा।

वर्णन—

यह एक जाति की मिट्टी है। जो स्पान के पहाड़ों में पैदा होती है।

तरमीस

नाम—

यूनानी—तरमीस ।

वर्णन—

यह एक साग है। इसका स्वाद खट्टा होता है। इसकी बस्तानी और जंगली २ जातियाँ होती हैं। दोनों के पौधे बाकला के पौधों की तरह होते हैं। इसके बीजों में बाकलाके बीजों से ज्यादा गोलाई और ज्यादा चपटापन होता है। इसके दाने पीलापन लिये हुए सफेद रंग के और बाकला के दानों से कुछ छोटे आकार के होते हैं। इनका स्वाद कड़वा और गन्ध तेज होती है। पानी में निमक मिलाकर इनको धोने से इनका कड़वापन दूर हो जाता है।

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह पहले दर्जे में गरम और दूसरे दर्जे में खुश्क है। यह त्रिदोष को दूर करती है। शरीर में गरमी और खुश्की पैदा करती है। इसका कड़वापन दूर करने से इसकी गरमी और खुश्की कम हो जाती है। मगर इसके साथ ही कड़वेपन के निकल जाने से इसकी त्रिदोष को दूर करने की शक्ति भी कम हो जाती है।

तरमीस और चने के काढ़े में शहद मिलाकर देने से तिल्ली में लाभ होता है। इसका काढ़ा बन्द हुए ऋतुश्राव को जारी करता है और जहरबाज की सूजनको मिटाता है। इसको पानी मे भिगोकर उस पानी में स्नान करनेसे खुजलीमें लाभ होता है। इसके आटे को पानीमें घून्द कर उसका प्लास्टर पेट पर चढ़ाने से पेट के सब कीडे निकल जाते हैं। अगर शरीर मे कहीं खून जम गया हो तो वहां भी इसका लेप करने से खून बिखर जाता है। इसके आटे का उबटन बनाकर चेहरे पर मलने से चेहरे की कान्ति बढती है।

इसके काढ़ेसे श्वेत कुष्टके दागोंको धोनेसे फायदा होता है। चोट लगनेसे अगर कहीं नीला दाग पड़ जायतो वह भी इसके लेपसे आराम हो जाता है। इसको सिरकेमें मिलाकर सरदीकी सूजन और जोड़ोंके दर्दपर लगानेसे लाभ होता है। गर्मीके घाव, सिर की गंज और खराब जखमोंको इसके काढ़ेसे धोना लाभदायक है। किसी जहरीले जन्तुके काटे हुए स्थानपर इसको शहदमें मिलाकर लगाना चाहिये। सवेरेके नाश्तेके समय इसको १० माशेकी मात्रामे रोज खानेसे पुराना सिर दर्द मिट जाता है और आंखोंमें नजलेका पानी नहीं उतरने पाता।

इसको पीसकर शहदमें मिलाकर चाटनेसे पुरानी खांसी, जलोदर और पथरीमें लाभ होता है।

वर्णन—

यह वनस्पति भी तरवा की ही एक जाति है।

गुणदोष और प्रभाव—

कर्नल चोपरा के मतानुसार यह वनस्पति फेफड़ों की शिकायतों में उपयोगी है।

तरवड़

नाम—

संस्कृत—आवर्तकी, चरमरंगा, मायाहारी, पीतकिलका, तिमिरहारी। हिन्दी—तरवल, तरवड तरोंदा। बंगाल–बर्वर, बरातरोदा, मराठी—तरवड़, चमार आँवली। गुजरात—आवड। कच्छ–आवर। तामील—अवरई, सुमई। तेलगू—तगेदू, तंगेरा। कनाड़ी—सकोसिना, तगदी। मारवाडी—आलूण। लेटिन—Cassia Auriculata (केसिया ओरीक्यूलेटा)

वर्णन—

तरवड़के झाड़ २ से लेकर १२ फीटतक ऊंचे होते हैं। इसमें बहुत डालिया होती हैं। इसके पत्ते इमलीके पत्तों की तरह होते है। जो एक डखल पर ८ से लेकर १२ जोडी तक लगते हैं। इसके फूल अत्यन्त सुन्दर, पीले रंगके, उड़ती हुई मधुमक्खी के आकारके होते हैं। फली चपटी, लम्बी, पतली, तीखी नोक वाली और भूरे रंग की होती है। यह ४ से ६ इंच तक लंबी और आधे से पौन इञ्च तक चौड़ी होती है। इसमें ५ से लेकर १० तक चपटे बीज रहते हैं। यह वनस्पति मारवाड़, काठियावाड़ कच्छ और मध्य प्रदेशके शुष्क भागोमें पैदा होती है। इसकी छालका मुख्य उपयोग चमड़ा रंगनेके काममें होता है।

गुण दोष और प्रभाव—

इसकी जड़ विषनाशक होती है। यह प्यास, मूत्रविकार, अर्बुद, चर्मरोग, दमा और वात रोगोंमें फायदा पहुँचाती है। इसके पत्ते कृमिनाशक होते हैं। ये व्रण, कुष्ट और चर्म रोगोंमें लाभदायक हैं। इसके फूल मूत्र सम्बन्धी रोगोंमें, मधुमेहमें और गलेकी बीमारियोंमें लाभदायक है। इसका फल कृमि-नाशक है। यह वमन प्यास और मूत्र सम्बन्धी विकारोंमें फायदा पहुंचाता है। इसके बीज मधुमेह, नेत्र रोग और पेचिशमें फायदा पहुँचाते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

अगर शरीर में कहीं की हड्डी टूट जाय या उखड़ जाय तो इस मिट्टी को ४ माशे की मात्रा में आधे भुने हुए अण्डे की जर्दी में मिलाकर खिलाने से और इसको पानी में गलाकर पट्टा चढ़ाने से अच्छा लाभ होता है। मृगी और दिमाग की बीमारी में भी यह फायदेमन्द है। (ख० अ०)

तरवा

नाम—

संयुक्त प्रदेश—तरवा, चूमा, दर्चक। भूतान—तरवा। पंजाब—अम्ब, बोटफुट, कलाविसा, कण्डो, माइलस, रुल, सिरमा, सरमंग, चक, इत्यादि। लेटिन—Hippophae Rhamnoides हिपोफेइ ह्रेमनोइदस)।

वर्णन—

यह वनस्पति उत्तरी पश्चिमी हिमालयमें ७ हजार फीट से १५ हजार फीट की ऊँचाई तक पैदा होती है। यह एक शाखादार झाड़ी है। इसकी छाल चिकनी, खुरदरी और खाकी तथा बादामी रंगकी रहती है। इसके पत्ते दोनों तरफ से रुएंदार रहते हैं। इसका फल गोल होता है।

गुण दोष और प्रभाव—

तिब्बत के निवासी इसके फल को फेफड़ों के रोग दूर करने के लिये बहुत उपयोग में लेते हैं। इस प्रकार के रोगों के लिये यह उनकी एक विश्वसनीय औषधि है।

फ्रान्स के अन्दर इसके फल का काढ़ा चर्म रोगों में उपयोग में लिया जाता है।

तरवा चूक

नाम—

पंजाब—तरवाचूक, धरचूक, काला विस, सूरच। अल्मोड़ा—चूक। भूतान—लहाला। नेपाल—अशुक। लेटिन—Hippophae Salicifolia (हिपोफेइ सेलिसिफोलिया)।

मधुमेहके अन्दर इसके फूलोंका अथवा पञ्चांगका चूर्ण २० रत्तीकी मात्रामें दिया जाता है। इससे पेशाबका परिमाण कम होता है और शक्करकी मात्रा भी घटती है। इसके साथ अगर शक्कर मिलानेमें विशेष फायदा होता है। पेशाब अगर गाढ़ा और गदला आता हो तो उसमें भी यह फायदा पहुँचाती है। पेशाबके साथ वीर्य जानेकी बीमारीमें भी इसके फूल दिये जाते हैं। मासिकधर्मकी अधिकतामें इसके पंचांग का काढ़ा बहुत गुणदायक है। पुराने अतिसारमें इसकी छालका काढ़ा दिया जाता है। जीर्ण ज्वरमें इसके पत्तोंकी फांट बनाकर दी जाती है।

मैसूरमें इस वनस्पतिकी छाल संकोचक मानी जाती है इसके बीजोंका चूर्ण पुरानी नेत्र पीड़ामें आँजनेके काममें लिया जाता है। सीलोनमें इसकी जड़ और इसकी छाल संकोचक और धातु परिवर्तक मानी जाती है।

डायमाकके मतानुसार इसके फूलोंसे एक प्रकारकी चाय तैयार की जाती है। जोकि मधुमेह रोगमें उपयोगी होती है। इसके पंचांगको पीसकर मधुमेह रोगमें देते हैं। इसको तामीलमें अवेरी पञ्चागम कहते हैं। इसे शहदके साथ उपयोगमें लेते हैं। इसके फूलोंको मोचरस और इंडियन सारसपरिलाके साथ मिला कर एक पदार्थ तैयार किया जाता है। जो कि रातको पेशाब आने और अनैच्छिक वीर्यस्रावमें लाभ पहुँचाता है। यह रातको पसीना आनेमें भी लाभदायक है।

कोमानके मतानुसार इन सारी वनस्पतिका काढ़ा एक औंसकी मात्रामें दिनमें तीन चार मधुमेह की बीमारीमें दिया गया। किन्तु इससे कुछ भी लाभ नहीं हुआ।

संन्याल और घोषके मतानुसार इसके बीजोंका काढ़ा पुराने नेत्र रोगोंकी एक उपयोगी दवा है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति आंखोंकी बीमारीमें लाभदायक है। मधुमेह और मूत्ररोगों में भी यह लाभदायक मानीजाती है।

तरोई

नाम—

संस्कृत—कोषातकी, धाराफला, दीर्घफला, पीत पुष्पा, कृत वेधना, जालिनी, राजाकोषातकी। हिन्दी तोरई, तरोई। बंगाल—घोषालता। मराठी—शिराली, दोडकी। गुजराती—तुरियां। पंजाब—तोरि। तेलगू—बीर, गुरकई। उर्दू—तोरई। बम्बई—गोंसली, जिंगा, सिरोला, तुरई। लेटिन—Luffa Aoutangula (लूफा एक्यूटेंगला)।

वर्णन—

तुरोई की शाग सारे भारतबर्ष में प्रसिद्ध है। इसकी बेल बहुत ऊंचाई तक चढ़नेवाली होती है।

इसके पत्ते ५ कोने वाले कटे हुए होते हैं। इनका रंग फीका हरा होता है। इसके फूल हलके पीले रंगके होते हैं। ये नर और मादा दो जातियोंके होते हैं। इसका फल लंबा, मुलायम और ऊंची धारियों वाला होता है।

गुण दोष और प्रभाव,—

आयुर्वेदके मत से इसका फल मधुर, स्निग्ध, शीतल, कृमिनाशक, अग्निदीपक और ज्वरघ्न होता है। पित्त, श्वास और वायुनलियों के प्रदाह में यह मुफीद है। इसके पत्ते अग्निदीपक, पित्तकारक और ज्वरघ्न होते हैं। ये वायुनलियों के प्रदाह को दूर करते हैं।

यूनानी मत— यूनानी मत से यह सर्द, तर, पित्त की गर्मी को मिटाने वाली और हलकी दस्तावर है। रूखी प्रकृति वालों के लिए यह विशेष लाभदायक है। रक्त और कफ के उपद्रवों को यह दूर करती है। ज्वरके रोगी के लिए इसकी शाग एक उत्तम पथ्य है।

इसके बीज विरेचक और वामक होते हैं। इन बीजों को पीसकर कुष्ट रोग पर लगानेके काममें लिये जाते हैं। यकृत की सूजन और खूनी बवासीर पर भी इनको लगाने के काममें लिए जा रहे हैं। बच्चोंके ऐसे नेत्ररोग में जिनमें दाने भी पड़ गये हों इसके ताजे पत्तों का रस डालने से फायदा होता है। इसको डालने से रातके समय आंखें नहीं चिपकतीं। कम्बोडिया में इसके पत्तों को पीसकर दादके ऊपर लगाने के काममें लिये जाते हैं।

कर्नल चोपराके मतानुसार इसके बीज वमनकारक, विरेचक, कटु पौष्टिक और मूत्रल होते हैं। इनमें लूफिन नामक कटुतत्व पाया जाता है। इनको ५ से लेकर १० ग्रेन तक की मात्रामें कफ निःसारक वस्तु की तौर पर दिया जाता है।

डाक्टर मुहीनशरीफ के मतानुसार इसके बीज पेचिश की बीमारी में इपिकेकाके बदले में दिये जा सकते हैं। इनबीजों का मगज निकालकर पानी में मिलाकर दिया जाता है।

डाक्टर देसाई के मतानुसार तरोई के पत्तों का मरहम बनाकर व्रणपर लगानेसे व्रण अच्छा हो जाते हैं। तरोईकी जड़को एरंडी के तेलमें उबालकर बगल और गर्दन की जड़में होने वाली बदगांठ पर लगानेसे लाभ होता है। इसके पत्तों को पीसकर बवासीर पर भी लगाये जाते हैं।

उपयोग—

तिल्ली की सूजन— इसके बीजों को पीस कर गरम कर लेप करने से तिल्ली की सूजन मिटती है।

रक्तार्श और कोढ़— इनका ठंडा लेप करनेसे रक्तार्श और कोढ में लाभ होता है।

पलकों की फुन्सियां— इसके ताजे पत्तों का स्वरस पलकों की आंखोंमें डालने से पपोटों की फुन्सियां मिटती हैं और रातके समय आंखों में कीचड़ आना बन्द हो जाता है। जिससे आँखें नहीं चिपकती है।

तवाखीर

नाम—

संस्कृत—तवक्षीर, पयः क्षीर, यावज, गवयोद्भव, गोधूमज, पिष्टिका, तन्दुलोद्भव, ताल सम्भूत, तालक्षीर। हिन्दी—तवाखीर, बंगाल—तवक्षीर। मराठी—तवखीर। तामील—कुके। कनाड़ी—कुवे। लेटिन—Curcuma Angustifolia (करक्यूमा अगुस्टिफोलिया)।

वर्णन—

तवाखीर हलदी की जातिके एक झाड़से निकाली जाती है। यह झाड़ मध्य हिमालयके बाहरी हिस्सोंमें तथा पश्चिमी बिहार, उत्तर बंगाल, बंबई और दक्षिणी भारतमें होता है। इसके पत्ते ३० से लेकर ४५ सेंटि मीटर तक लम्बे बरछी आकारके और तीखी नोकवाले रहते हैं। इसके फूल पीले और फल गोल होते है। फलमें बहुतसे छोटे २ बीज रहते हैं। जिस प्रकार गिलोयके डखलोंसे गिलोयका सत्व निकाला जाता है उसी प्रकार इसके डखलों में से तवाखीर निकाला जाता है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतानुसार तवाखीर मीठी, सुगन्धित, शीतल, स्निग्ध, पौष्टिक और कामोद्दीपक होती है, यह क्षय, पित्त, कुष्ट, जलन, अरुचि, अग्निमांद्य, खांसी, दमा, ज्वर, प्यास, कामला, पाण्डु और धवल रोगमें उपयोगी है। गुर्देकी पथरी, रक्त विकार, व्रण, प्रमेह और मूत्र सम्बन्धी तकलीफोंमें भी यह लाभदायक है।

यह एक उत्तम शांति दायक और पौष्टिक पथ्य है। यह बच्चोंके लिये और किसी भी रोगके बादकी कमजोरीमें देनेके लिये उत्तम पथ्य है।

ताड़

नाम—

संस्कृत—भूमिपिशाच, चिरायु, ध्वजाद्रुम, दीर्घदारू, दीर्घस्कंध, दीर्घतरु, गुच्छपत्र, मधुरसा, शतपर्व, तरराज, तृणगर्भा, हिन्दी—ताड़। बंगाल—तल, तलगाच्छ। मराठी—ताड़, तामाड। कोकण—ताड़मद। गुजराती—ताड़। तामील—करदलम्, नीलम्, तालि। तेलगू—करतलम्, नमताघ, पोतातागु उर्दू—ताड। लेटिन—Borassus Flabellifer (बोरेसस फ्लेबिलीफर)।

वर्णन—

ताड़के वृक्ष बहुत ऊँचे और सीधे बढ़ते हैं। इनके पत्ते बहुत बड़े और खूबसूरत होते हैं। इसके पत्तोंमें ६० से लेकर ८० तक हिस्से होते हैं। इसके फूल कोमल, गुलाबी और पीले रंगके होते हैं। इसका फल कुछ दबा हुआ, चिकना और चमकदार होता है। उसका छिलका कुछ पीलापन लिये हुए भूरे रंगका होता है। उसमें कड़ी, चूनेदार पीले रंगकी गिरी बीजोंसे लिपटी हुई रहती है। इस वृक्षसे एक प्रकारका सफेद, झागदार, नशीला और मीठा रस निकाला जाता है। जिसको ताड़ी बोलते हैं। इससे ताडी नामक शराब तैयार की जाती है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदिक मतसे ताड़का फल मीठा, शीतल, नशीला, मज्जावर्धक, कामोद्दीपक, कृमिनाशक, पौष्टिक, मृदु विरेचक और विषनाशक होता है। यह पित्त, जलन, प्यास, थकावट, वातरोग और रक्त रोगोंमें लाभदायक है। इसके बीज मूत्रल, मृदु विरेचक, नुकीले और पित्त नाशक होते हैं। इसकी जड़ सुगन्धित, कुष्टरोगमें उपयोगी और प्रसवकालमें लाभदायक है। इसके फूल तिल्लीके बढ़नेपर फायदा पहुँचाते हैं।

इसका कच्चा फल स्निग्ध, स्वादिष्ट, भारी, मलरोधक, बलकारक, शीतल, धातुवर्धक, तृप्तिकारक, मान्स वर्धक, कफ कारक तथा वात, श्वास, रक्त पित्त, तृषा, दाह, क्षत, पित, क्षय और बधिरके दोषोंको दूर करने वाला है।

इसका पका हुआ फल रक्त पित कारक, कफ पैदा करने वाला, दुष्पच्य, बहु मूत्र जनक, तंद्राको उत्पन्न करने वाला और वीर्य वर्धक है।

इसके कच्चे फलके बीज मूत्रल, शीतल, रस और पाकमें मधुर, कफ कारक और वात पित्तको नष्ट करने वाले हैं।

इसके फलकी मगज किंचित् मदकारक, हलकी, कफकारक, वातपित्त नाशक, तेल युक्त, मधुर और सारक है।

ताड़

नाम—

संस्कृत—भूमिपिशाच, चिरायु, ध्वजाद्रुम, दीर्घदारु, दीर्घस्कंध, दीर्घतरु, गुच्छपत्र, मधुरसा, शतपर्व, तरुराज, तनुगर्भा, हिन्दी—ताड । बंगाल—तल, तलगाच्छ । मराठी—ताड़, तामाड । कोकण—ताड़मद । गुजराती—ताड़ । तामील—करदलम्, नीलम्, तालि । तेलगू—करतलम्, नमताप, पोतावागु उर्दू—ताड । लेटिन—Borassus Flabellifer (बोरेसस फ्लेबिलीफर) ।

वर्णन—

ताडके वृक्ष बहुत ऊँचे और सीधे बढ़ते हैं । इनके पत्ते बहुत बडे और खूबसूरत होते हैं । इसके पत्तोंमें ६० से लेकर ८० तक हिस्से होते हैं । इसके फूल कोमल, गुलाबी और पीले रंगके होते हैं । इसका फल कुछ दबा हुआ, चिकना और चमकदार होता है । उसका छिलका कुछ पीलापन लिये हुए भूरे रंगका होता है । उसमें कड़ी, चूनेदार पीले रंगकी गिरी बीजोंमें लिपटी हुई रहती है । इस वृक्षसे एक प्रकारका सफेद, झागदार, नशीला और मीठा रस निकाला जाता है । जिसको ताड़ी बोलते हैं । इससे ताड़ी नामक शराब तैयार की जाती है ।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदिक मतसे ताड़का फल मोटा [illegible], नशीला, [illegible], कामोद्दीपक, कृमिनाशक, पौष्टिक, मृदु विरेचक और विषनाशक होता है। [illegible], [illegible], [illegible], थकावट, वातरोग और रक्त रोगोंमें लाभदायक है । इसके बीज मूत्रल, मृदु विरेचक, [illegible] और [illegible] नाशक होते हैं । इसकी जड़ सुगन्धित, [illegible] और [illegible] है । इसके फूल तिल्लीके बढ़नेपर फायदा पहुँचाते हैं ।

इसका कच्चा फल स्निग्ध, स्वादिष्ट, भारी [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], तृप्तिकारक, मांस वर्धक, कफ कारक तथा वात, [illegible], रक्त पित्त, [illegible], दाह, [illegible], [illegible], क्षय और रुधिरके दोषोंको दूर करने वाला है ।

इसका पका हुआ फल रक्त पित्त कारक, कफ पैदा करने वाला, दुर्जर, बहु मूत्र जनक, तन्द्रा उत्पन्न करने वाला और वीर्य वर्धक है ।

इसके कच्चे फलके बीज मूत्रल, शीतल, [illegible] और [illegible], कफ कारक और [illegible] नष्ट करने वाले हैं ।

[illegible]
और [illegible] है

इसके फलका जल पित्तनाशक, शुक्रवर्धक, भारी और स्तनोंमें दूध पैदा करनेवाला है।

ताडी कफकारक, वीर्यवर्धक तथा खासी और उबकाईको दूर करनेवाली होती है। ताड़के मस्तकका पंजर धातुवर्धक, वात पित्तनाशक और वस्तिशोधक होता है।

यूनानीमत—

यूनानी मतसे इसकाफल अग्निवर्धक, कामोद्दीपक और पित्तनाशक होता है। यह स्वादको सुधारने वाला और प्यासको बुझानेवाला है। इसका जोश देकर निकाला हुआ रस पौष्टिक, मज्जावर्धक, कामोद्दीपक, मादक और कफ निस्सारक होता है। यह प्यास और मूत्रकी जलनको मिटाता है और रक्त को शुद्ध करता है।

इस वनस्पतिका रस उत्तेजक और कफ नाशक होता है। अगर इसे प्रतिदिन प्रातःकाल लगातार लिया जाय तो यह मृदुविरेचकका काम करता है। ताजा हालतमें यह प्रदाह और जलोदरमें फायदा पहुँचाता है। अगर इसको थोडा जोश देकर उपयोगमें लिया जाय तो यह मधुमेहमें उपयोगी होता है। मूत्रल होनेकी वजहसे यह पुरानी सुजाककी बीमारीमें भी फायदा पहुँचाता है।

बाह्य प्रयोगमें इसके ताजा रसमें चावलके आँटेको मिलाकर गरम करके कपडे पर फैलाकर पुल्टिसके बतौर लगानेसे कारबंकल और दूसरे आघातिक फोडोंपर लाभ पहुँचाता है। इसके पत्तोंके डंठल का ताजा रस और इसकी जडका रस पाकस्थलीके विकारोंको दूर करता है नजला और कुकुर खाँसीमें भी यह लाभदायक है। इसके ताजे पत्तोंका रस गर्मीकी बीमारीमें भी दिया जाता है। इसकी राख अम्लपित्त, पित्तप्रकोप, विषमज्वर और हृदयकी जलनमें लाभ पहुँचाती है।

इसकी राखको अगर दूसरी शांतिदायक औषधियोंके साथमें तिल्ली और यकृतके बढ़नेपर लगाया जाय तो बहुत लाभ होता है। इसकी राख जिस जगह लगाई जाती है वहाँपर छाला उठ जाता है। इसके फलका गूदा चर्म रोगोंमें लगानेके काममें लिया जाता है। ताड़की शक्कर पित्तनाशक और धातु परिवर्तक होती है। यह दाह और प्रमेहमें लाभदायक है।

इसके पिंडमेंसे एक प्रकारका हल्का, बादामी रंगका कपासके समान पदार्थ प्राप्त किया जाता है। डॉक्टर लोग इसको घावों का रक्तश्राव बन्द करने के काममें लेते हैं।

कम्बोड़िया में इसकी जड मूत्रल और कृमिनाशक मानी जाती है। यह सुजाक में लाभ पहुँचाती है। यह पित्त को नाश करने वाली और पेचिश को मिटाने वाली मानी जाती है। इसकी शक्कर में विष नाशक गुण माना जाता है।

रस रत्नाकर नामक ग्रन्थ के कर्ता स्वामी नित्यनाथ लिखते हैं कि ताड़ के सूखे फूलों को जलाकर उस राख में से क्षार निकाल कर उस क्षार को गुड के साथ देने से तिल्ली का रोग दूर होता है।

ताड की जटा को लाकर उसके टुकडे करके एक मिट्टी की हांडी में भर कर उस हांडी के ऊपर ढक्कन लगाकर कपड मिट्टी करके सुखा लेना चाहिये। फिर उस हांडी को एक खड्डे में रखकर उस खड्डे में घास, कण्डे,कूडा कचरा, वगैरह भर करके आग लगा देना चाहिये। जब अग्नि शान्त हो जाय तब उस हंडी को निकाल कर उसके अन्दर की राख को पतले कपडे में छानकर शीशोमें भर लेना चाहिये। प्रति दिन सवेरे शाम इस भस्म में से २ से लेकर ६ रत्ती तक की मात्रा मुह मे डालकर ऊपर से बासी जल पी लेना चाहिये। इस प्रयोग से अजीर्ण दोष, अम्लपित्त, आमाशय में खट्टा रस पैदा होने की वजह से आने वाली खट्टी डकारें, खट्टी उल्टियाँ, छाती की जलन, भोजन के पीछे होने वाला उदर शूल, ग्रहणी, मन्दाग्नि वगैरह अनेक प्रकार के जठर सम्बन्धी रोग नष्ट हो जाते हैं।

उपयोग—

हृदय की जलन—इसके सूखे हुए फूलों के गुच्छे की राख को खिलाने से हृदय की जलन मिटती है।

चर्मरोग—इसके पके हुए फलके गूदे का लेप करने से चर्म रोग मिटते हैं।

मूत्रातिसार—इसके रस में थोडा खमीर उठा कर पिलाने से मूत्रातिसार मिटता है।

पित्त के रोग—इसके फूलों के गुच्छे की राख खिलाने से पित्त के रोग मिटते हैं।

मूत्रकृच्छ्र—इसके ताजा रस में मिश्री मिलाकर पीने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है।

हिचकी—ताड़ के कच्चे फलों में जो दूधिया रस निकलता है उसके पिलाने से हिचकी और उत्क्लेद मिटता है।

उपदंश—उपदंश से जब अण्डकोष और इन्द्रिय पर सूजन हो जाता है और टांकियाँ बहुत पड जाती हैं तब इसके हरे पत्तों का रस पिलाने से लाभ होता है।

जलोदर—इसके फूलों के गुच्छे को काटने से जो ताजा रस निकलता है उसको पिलाने से मूत्र वृद्धि होकर जलोदर मिटता है।

मेद वृद्धि—ताड के पत्तों का क्षार और हींग को चावल के मांड के साथ खाने से मेद वृद्धि मिटती है।

उन्माद—इसकी शाखा का रस पिलाने से उन्माद में लाभ होता है।

—

तान्दुलजा

नाम—

संस्कृत—अल्पमारिश, वर्षाभूः, तदुलीय। हिन्दी—वननतिया, वन चौलाई। गुजराती—तांदुलजा, अड़लाउ तान्दुलजा। कच्छी—मीजी भाजी, उखेड़ी भाजी। मराठी—रान तान्दुलजा। लेटिन— Amaranthus Blitum (एमेरेन्थस ब्लिटम)।

वर्णन—

यह चौलाई की जाति की एक तरकारी है। इसका पौधा फुट भर से लेकर हाथ भर तक ऊंचा होता है। इसके पत्ते छोटे और फूल गुच्छों में लगते है।

गुणदोष और प्रभाव—

इस वनस्पति की तरकारी आमाशय की गरमी को कम करती है और एक उत्तम पथ्य है। आगसे जले हुए स्थानपर इसके पत्तों को और दुर्वा को पीसकर लेप किया जाता है।

तापमारी

नाम—

मराठी—तापमारी। लेटिन—Aralia Pseudoginsong (अरेलिया स्यूडोजिनसेंग)।

वर्णन—

यह वनस्पति नेपाल, सिकिम और भूटानमें ६ हजार फीटसे १२ हजार फीटकी ऊँचाई तक पैदा होती है। इसके पत्ते बड़े और कटी हुई किनारोंके होते हैं। इनमें मेथीके समान गंध और मुलहटीके समान स्वाद रहता है इसकी जड़ गंठीली होती है। इसके फल कालापन लिये हुए लालरगके होते है।

गुणदोष और प्रभावः—

इस वनस्पतिकी विशेष प्रशसा इसके कामोद्दीपक गुणोंकी वजहसे है। इसके अतिरिक्त यह अग्निमान्द्य, वमन और स्नायुमडलके रोगोंमें भी लाभदायक है। इसमें कफ निस्सारक और ज्वरनाशक गुण भी पाये जाते हैं। इस वनस्पतिको अक्सर चीनी लोग हिन्दुस्तानमें लाते हैं।

तान्दुलजा

नाम—

संस्कृत—अल्पमारिश, वर्षाभूः, तदुलीय। हिन्दी—बननतिया, बन चौलाई। गुजराती—तांदुलजा, अड़खाउ तान्दुलजा। कच्छी—मीजी भाजी, उखेड़ी भाजी। मराठी—रान तान्दुलजा। लेटिन— Amaranthus Blitum (एमेरेन्थस ब्लिटम)।

वर्णन—

यह चौलाइ की जाति की एक तरकारी है। इसका पौधा फुट भर से लेकर हाथ भर तक ऊंचा होता है। इसके पत्ते छोटे और फूल गुच्छों में लगते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

इस वनस्पति की तरकारी आमाशय की गरमी को कम करती है और एक उत्तम पथ्य है। आगसे जले हुए स्थानपर इसके पतों को और दुर्वा को पीसकर लेप किया जाता है।

तापमारी

नाम—

मराठी—तापमारी। लेटिन—Aralia Pseudoginseng (अरेलिया स्यूडोजिनसेंग)।

वर्णन—

यह वनस्पति नेपाल, सिकिम और भूटानमें ६ हजार फीटसे १२ हजार फीटकी ऊँचाई तक पैदा होती है। इसके पत्ते बडे और कटी हुई किनारोंके होते हैं। इनमे मेथीके समान गंध और मुलहटीके समान स्वाद रहता है इसकी जड़ गठीली होती है। इसके फल कालापन लिये हुए लालरगके होते हैं।

गुणदोष और प्रभावः—

इस वनस्पतिकी विशेष प्रशसा इसके कामोद्दीपक गुणोंकी वजहसे है। इसके अतिरिक्त यह अग्निमान्द्य, वमन और स्नायुमडलके रोगोंमें भी लाभदायक है। इसमें कफ निस्सारक और ज्वरनाशक गुण भी पाये जाते हैं। इस वनस्पतिको अक्सर चीनी लोग हिन्दुस्तानमें लाते हैं।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति कामोद्दीपक और उत्तेजक है इसे अग्निमान्द्य और वमन के अन्दर भी काममें लेते हैं।

तांबा

नाम—

संस्कृत—ताम्र, म्लेच्छमुख, द्विष्ट, वरिष्ठ, औदुम्बर, रविसंज्ञक, रविप्रिय, रक्तधातु, इत्यादि। हिन्दी—तांबा। बंगाल—तामा। मराठी—तांबें। गुजराती—तांबो। कनाड़ी—ताम्र। तेलगू—रागी। तामील—ताम्रम, शेंपु। अंग्रेजी—Copper। फारसी—मिस। अरबी—नुहास। लेटिन—Cuprum क्यूप्रम।

वर्णन—

ताम्बेकी धातु सर्वत्र प्रसिद्ध है। यह सब तरह बरतन बनानेके काममें ली जाती है। पैसे और पाईके सिक्के भी इसीसे बनाये जाते हैं। इसलिये इसके विशेष वर्णन की आवश्यकता नहीं।

उत्तम तांबेके लक्षण—जो तांबा जपाके फूलके समान रंग वाला, स्निग्ध, गरम, घनकी चोटको सहन करने वाला और लोहे तथा शीशे के मेलसे रहित होता है वह उत्तम है। जो तांबा काला, रूखा, अत्यन्त कठोर, सफेद, घनकी चोट को न सहने वाला और लोहे तथा शीशे के मेलवाला होता है वह तांबा दुष्ट है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदिकमत से तांबा कसैला, मधुर, कड़वा, अम्ल, [illegible], पित्त नाशक, कफ-नाशक, शीतल, हलका तथा पाण्डु रोग, उदररोग, बवासीर, ज्वर, कोढ़, खाँसी, श्वास, क्षय, पीनस, अम्लपित्त, सूजन, कृमि, और शूल को नष्ट करता है।

तांबा—गुल्म कोढ़, गुदारोग, शूल, सूजन, उदर रोग, पाण्डु रोग, मेद, भ्रम और दाह को नष्ट करने वाला है।

कुविधि से मारे हुए तांबे के दोष—गलत विधि से मारे हुए तांबे के सेवन से [illegible], [illegible], अरुचि, मूर्छा, दस्त, उल्टी, भ्रम इत्यादि कई उपद्रव हो जाते हैं। यह विष से भी अधिक भयंकर है।

तांबे को शुद्ध करने की विधि—

तांबे का भस्म बनाने के लिये उत्तम लाल रंग का नेपाली ताम्र लेना चाहिये अथवा दूसरा

हो तो मोर के पंख और केंचुओ में से निकाला हुआ तांबा काम में लेना चाहिये। वह सब से उत्तम होता है।

तूतिया में से तांबा निकालने की विधि—

ढाई सेर तूतिया को पीसकर १ साफ लोहे की कढ़ाही में बिछा दें और उस लोहे की कढ़ाही को एक बड़े लोहे की कढ़ाइमें रख दें और उस कढ़ाही में पड़े हुए तूतियाके चूर्ण को ढक दें। उसके बाद उस बड़े कड़ाह में १० सेर पक्का बिना कुटा हुआ त्रिफला भर दें। फिर उस कढ़ाहमें १ मन पक्का मीठा पानी भर दें और उस कढ़ाह को ऐसी खुली जगह में रक्खा जाय जहां हवा, सूरज की धूप और चन्द्रमा की चादनी उस पर बराबर पड़ती रहे। इस प्रकार एक महीना बीतने पर उस पानीको छान लें यह पानी स्याही बनाने के काममें आयगा और उस छोटी कढ़ाई को बाहर निकालकर उसके पेंदे जमेहुए विशुद्ध ताम्बे के बुरादे को चाकू से खुरच २ कर निकाल ले। करीब आध सेर विशुद्ध तांबा उसमें मिलेगा। यह तांबा नेपाली ताँबे से अधिक गुणकारी होता है।

तूतिया से निकाले हुए उस तांबे को अग्नि में खूब लाल करके आकके पत्तों के स्वरस में ७ बार बुझावें। फिर २ सेर इमलीके पत्तों को १० सेर पानी मे डालकर कढ़ाही में काढ़ा बनावें। जब ५ सेर पानी रह जाय तब उसमें आध सेर सेंधा नोन और आधा सेर तूतियासे निकाला हुआ तांबा भी डाल दें और ४ प्रहर तक आंच दें। अगर इस बीच में वह पानी जल जाय तो उसमें और पानी या गौमूत्र डाल देना चाहिये। इस क्रिया से वह ताम्बा शुद्ध हो जाता है।

अगर तूतिये का तांबा न मिले तो नेपाली तांबे को तेल, मट्ठा, गौमूत्र, कांजी कुलथी के बीजों का काढ़ा, इमलीके पत्तों का काढा, नीबू का रस, घीग्वार का रस, सूरण का रस, गाय का दूध, नारियल का पानी और शहद। इन १२ चीजों में प्रत्येक के अन्दर सात २ बार गरम करके बुझाना चाहिये। इस प्रकार ८४ बार बुझाने से ताँबा शुद्ध हो जाता है यह तांबा प्रत्येक भस्म बनाने के काममें लाया जा सकता है।

ताँबेका यंत्र और हैजेका रोगः—

तांबेकी धातुके पतरेका यंत्र बनाकर शरीरपर धारण करनेसे हैजेमे मनुष्यका अद्‌भुत तरीकेसे बचाव होता है यह बात धीरे धीरे आजकलके वैज्ञानिक मानने लगे हैं। सन् १८८२ के थिआसोफिस्ट नामक पत्रके दिसम्बरके अंकमें डॉक्टर ग्रेडफोर्न नामक विद्वानने लिखा था कि:—

"हिन्दुस्तानमें शरीरके रोगी अवयवोंको दुरुस्त करनेके लिये धातुओंके यंत्र बनाकर पहिनाने की प्रथा प्रचलित है और उससे अच्छा फायदा होता हुआ भी देखा जाता है। ऐसे यंत्रोंसे रोग नष्ट करने

तावीज, इत्यादि सब तांबेके ही रखनेका आदेश किया गया है। जैन कार्योंमें भी तांबेको उत्तम माना गया है। ये सब इस बातके प्रमाण हैं कि हमारे पूर्वजोंको तांबेकी कीटाणु नाशक शक्तिका पूरा परिचय था।

तांबे की भस्म बनाने की विधियां—

पहिली विधि—शुद्ध तूतिया का तांबा अथवा नेपाली तांबा आधा सेर और शुद्ध आँवलासार गन्धक आधा सेर लें। गन्धक को खूब पीसकर तीन कपड़ मिट्टी की हुई चिकनी हांडी में नीचे पाव भर गन्धक का चूर्ण बिछाकर उसके ऊपर आधा सेर ताम्रपत्र रखकर उन ताम्रपत्रों पर बचा हुआ पाव भर गन्धक का चूर्ण ढंक दें। तत्पश्चात् उस हाँडी के मुख पर एक ऐसा सरावला ढंके जिसके मध्य में धुंआ निकलने के लिये छोटा सा छेद हो। फिर उस सरावले और हाँडी की दरजों को कपड मिट्टी से अच्छी तरह बन्द कर दे। जब कपड मिट्टी सूख जाय तब उस हांडी को चूल्हे पर चढाकर ४ घण्टा मन्द आँच, ४ घण्टा मध्यम आँच और ४ घण्टा तीव्र आंच दे। आंच के समय मे सरावले के छिद्र से बराबर धुआ निकलता रहेगा। अगर ४ प्रहर आच देने के पश्चात् भी धुआ निकलना बन्द न हो तो एक प्रहर की तीव्र आच और दे। जब अग्नि शीतल हो जाय और हण्डिया ठडी पड़ जाय तब कपड़ मिट्टी को खोलकर हंडिया के पेंदे मे जमी हुई ताम्र भस्म को निकाल लें। यह भस्म विशुद्ध होती है। इसमें वान्ति, भ्रान्ति, इत्यादि कोई दोष नहीं होता। जिस योग में ताम्र भस्म डालना लिखा हो उसमें इसका प्रयोग निःशंक होकर करसकते हैं।

दूसरी विधि—तूतिये का तांबा अथवा नेपाली शुद्ध किया हुआ तांबा ३ सेर लें। १॥ सेर शुद्ध पारा और ३ सेर शुद्ध गन्धक की कजली बनालें। फिर मिट्टी की २ नांदे लेकर उन पर सात २ कपड मिट्टी करलें। उसके बाद दोनों नादों का मुह मिलाकर इस बात को देख लें कि उनके बीच मे कोई दरज न रह जाय। फिर ऊपर वाली नांद के पेंदे में एक ऊंगली जा सके इतना बड़ा छेद करलें। उस छेद में एक बालिश्त लम्बी एक लोहे की नली लगादें जो नॉद के अन्दर लटकती रहे। इस नली के लगाने का उद्देश्य यह है कि नाद के पेंदे में किये हुए छिद्र के द्वारा पारा बाहर न निकल जाय किन्तु सिंदूर रस बनकर नली के चारो तरफ नाद के पेंदे में जा लगे। फिर नीचे वाली नाद में पारद और गन्धक की थोडी सी कजली बिछाकर उस पर थोड़े से ताम्र पत्र रख दे। फिर उस पर कजली का थर लगावें और फिर ताम्र पत्र रखें। इस प्रकार क्रम से ४॥ सेर कजली और ३ सेर ताम्र पत्रों को रख दें और कजली को हाथों से खूब दबा दे। उसके बाद नीचे की नांद के ऊपर नली लगाई हुई दूसरी नाद को रखकर उनकी दरजों पर वज्र मुद्रा* करदें। ऊपर की नांद में जिस जगह नली लगी हुई रहती है उस जगह की दर्जों को भी वज्र मुद्रा से बन्द कर दें और वज्र मुद्रा के ऊपर ७ कपड़ मिट्टी करके

---

*नोट— पीपल का गोंद, रुई, जला हुआ लोह और चिकनी मिट्टी। इन चारों चीजों को पानी के साथ २ दिन तक हथौड़े से कूट २ कर खूब चिकना करके लुगदी बना ले। इसी लुगदीसे बंद करने को वज्रमुद्रा कहते हैं।

खूब सुखालें। पश्चात् इस नलिका डमरू यन्त्र को सर्वार्थ करी भट्टी के मुख पर बड़ा लोहे का चूल्हा रखकर रख दे और लोह जाली के ऊपर १० सेर पत्थर के कोयले भर कर भट्टी के नीचे लकड़ी की आंच दें। पहले ३ घण्टे हलकी आच, फिर ४ घण्टे तक मध्यम आच और फिर ५ घण्टे तक तीव्र आंच दें। जब आंच कम करना हो तब धधकते हुए कोयलों के ऊपर २।३ नम्बरी ईंटे रख देना चाहिये। जब मध्यम आच देना हो तब ईंटों को हटाकर लोहे का तवा रख देना चाहिये और तीव्र आच देना हो तब तवे को भी हटा देना चाहिये अथवा मन्द आच और मध्यम आच के समय लोह जाली पर कोयला न रखकर सिर्फ भट्टी के नीचे लकड़ी की ही आंच देना चाहिये और तीव्र आच के समय पत्थर के कोयले भर देना चाहिये। इस प्रकार दो दिन तक आंच देना चाहिये। यह खयाल रखना चाहिये कि यह यन्त्र पत्थरके कोयलोंसे हमेशा एक बालिश्त ऊंचा रहना चाहिये अन्यथा तीव्र अग्नि उसको फोड़ देगी।

अगर किसी को सर्वार्थकरी भट्टीका ज्ञान न हो तो हलवाइयों की भट्टी पर ही इस यन्त्र को रखकर बबूल की सूखी लकड़ियों की आंच देना चाहिये परन्तु ऐसा करने से ४ दिन रात की अग्नि देना पड़ेगी।

अग्नि बुझ जानेपर और यन्त्रके ठंडा हो जाने पर उसको होशियारी से खोलें। ऊपरवाली नाँद की नली के पास वाले पैंदेमें जमाहुआ सिन्दूर रस मिलेगा और नीचे वाली नाद के पैंदेमें विशुद्ध ताम्र भस्म मिलेगी। यह खयाल रखना चाहिये कि यह यन्त्र जब आग पर चढ़ा हो तब ऊपर की नांद पर नली को बचाकर आठ तह किया हुआ गीला कपड़ा हमेशा रक्खा रहे। जब एक कपड़ा गरम हो जाय तब उसको बदलकर दूसरा कपड़ा रख देना चाहिये, नहीं तो पारा उड़ जाने का डर रहता है।

ताम्रभस्म की यह विधि काशी के प्रसिद्ध रसायन शास्त्री स्वर्गीय श्यामसुन्दराचार्य की ईजाद की हुई है। उनका कथन है कि इस विधिसे बहुत उत्तम ताम्र भस्म तैयार होती है।

अत्यन्त चमत्कारिक सफेद ताम्रभस्म की विधि—

शुद्ध किये हुए १ तोला बढ़िया तांबे का मोटा पतरा करके उस पतरेके वजनके बराबर ही शुद्ध सोना मुखी नामक उपधातु को लेकर उसे बारीक पीसकर एक मिट्टी के सरावले में उसको आधी बिछाकर उस पर तांबे का पतरा रखकर शेष आधी सोनामुखी को उस पतरे पर बिछा देना चाहिये। फिर उस सरावलेपर एक दूसरा सरावला ढककर कपड़ मिट्टी करके गजपुटमें रखकर फूंक देना चाहिये। जिससे काले रंग की भस्म तैयार होगी। इस भस्म को कलिहारी की जड़ के रसमें खरल करके टिकड़ी बनाकर सराव सम्पुट में रखकर गजपुटमें फूंक देना चाहिये। इस प्रकार ७ बार करना चाहिये। उसके पश्चात् नागफनी थूहर के लम्बे डंडे के रसमें उसको घोट कर टिकड़ी बनाकर सुखा देना चाहिये। उसके पश्चात् आंकड़े के दूधमें सफेद कनेरके फूलों को खरल करके उसकी लुगदी में उस टिकड़ी को रखकर

सराब संपुट में कपड़ मिट्टी करके गजपुट में फूकना चाहिये। इस प्रकार इसके ३१ पुट देना चाहिये। जिससे सुन्दर सफेद रंग की ताम्रभस्म तैयार हो जायगी।

जन साधारणमे ताँबे की सफेद भस्मके अलौकिक गुणोंके सम्बन्धमे अत्यत अतिशयोक्ति भरी हुई किवदन्तियां प्रचलित हैं। वास्तवमे यह भस्म अत्यन्त प्रभावशाली, चमत्कार पूर्ण और महा उग्र होती है। इस लिये इसका उपयोग अत्यन्त अनुभवी वैद्योंको, राजा महाराजाओं या श्रीमंत लोगोंके बीच ही करना चाहिये। इसकी मात्रा एकसे २ चांवल तक की है। जिसको १० तोला घी के साथ देना चाहिये। इतने पर भी यदि गर्मी ज्यादा मालूम पडे तो दूध और घी को मिलाकर पीना चाहिये। इसका प्रयोग ७ दिनसे अधिक नहीं करना चाहिये। यह भस्म नपुंसकता, कुष्ट, पक्षाघात, उदर रोग, बात रक्त, इत्यादि रोगोंकी दूर करती है। इसको लेते समय तेल, गुड, खटाई, दही, लाल मिरची, इत्यादि चीजें नहीं खाना चाहिये। (जंगल की जडी बूटी)

सफेद ताम्र भस्मकी दूसरी विधिः—

शुद्ध तांबेका १ तोला पतरा लेकर उसके ऊपर शुद्ध रांगे का १ तोला पतरा लपेट देना चाहिये। इसके पश्चात् लगभग मनुष्यकी जंघाके समान मोटा और एक हाथ लंबा अकोलकी जडका हरा टुकड़ा लाकर उसके ऊपरके हिस्सेमें बीचो बीच १ बालिश्त गहरा खड्डा खोदकर उसमें दूसरी अकोलकी जड़की सूखी छालको आधे खड्डे तक भर कर उसके ऊपर रांगा लिपटा हुआ तांबेका टुकड़ा रख देना चाहिये और फिर बाकी का खड्डा भी अंकोलकी छालके सूखे बुरादेसे दबा २ कर भर देना चाहिये। उसके बाद उसपर कपड़ मिट्टी करके गजपुटमें आधे गजपुट तक बकरीकी मेंगनी भर कर उस पर उस जड़को रखकर उसके ऊपर फिर पूरी बकरीकी मेंगनियाँ भर कर आग लगा देना चाहिये। ठंडी होने पर उस जड़को आहिस्ते से निकालकर उसके ऊपरकी कपड़ मिट्टीको दूर कर ताम्बेकी भस्मको सावधानीसे निकाल लेना चाहिये। पतासेके समान सफेद रंग की भस्म मिलेगी। अगर कुछ कसर मालूम पडे तो इसी प्रकारसे १ आंच और दे देना चाहिये। यह भस्म बहुत उत्तम बनती है। जलोदर, कुष्ट, कृमि, अतिसार, खांसी, दमा, शूल, इत्यादि रोगोंमें योग्य अनुपान के साथ देनेसे तत्काल असर बतलाती है। इस भस्मको आधी रत्तीसे अधिक मात्रामें नहीं देना चाहिये। लगातार १० दिनसे अधिक दिनों तक चालू नहीं रखना चाहिये। भूखे पेट भी इसको नहीं लेना चाहिये।

सफेद ताम्र भस्मकी तीसरी विधी—

शुद्ध किया हुआ जमाल गोटा २ तोला, मिलामा ४ तोला और अजवायन एक तोला लेकर इनको पानीमें पीसकर लुगदी बनाना चाहिये। इस लुगदीमें शुद्ध किया हुआ ताम्बेका १ टुकड़ा पैसा रख देना चाहिये। फिर रांगेकी २ कटोरियाँ लाकर १ कटोरी मे उस लुगदीको रखकर दूसरी कटोरी उसके ऊपर ढँककर खूब कपड़ मिट्टी कर देना चाहिये। फिर एक गड्डेमें उसको रखकर उसके

ऊपर कोयले भर कर आग लगा देना चाहिये, उस वस्तु के ऊपर १ छेद वाली मिट्टी की नाँद ढक देना चाहिये। जब आग शिथिल होजाय तब उसको निकालने पर वह पैसा फूल कर सफेद भस्मके रूपमें मिलेगा। यह भस्म खानेके काममें १ चांवल की मात्रामें लेना चाहिये। इस भस्मके योगसे रासायनिक काम भी होता है ऐसा कहा जाता है।

सफेद ताम्र भस्मकी चौथी विधीः—

शुद्ध किये हुए टन्‍नू पैसे को आगमें गरम कर २ के १०० दफे बेलके पत्तोंके रसमें बुझाना चाहिये। फिर बेलके पत्तोंकी लुगदी बनाकर उस लुगदी में उस पैसेको रखकर उस पर कपड़ मिट्टी करके गजपुटमें फूँक देनेसे सफेद रंगकी उत्तम ताम्र भस्म तैयार होती है।

ताम्र कल्पः—

सचर निमक, शुद्ध पारा और गंधक ये तीनों चीजें दो २ तोला। तांबेकी लाल भस्म ६ तोला। इन सब चीजोंको लेकर जम्भीरी नींबूके रस, सूरजमुखीके रस, लीडीपीपलके क्वाथ और सेमर के गूंदके क्वाथ में एक २ दिन तक खरल करके सूरज की धूपमें सुखा लेना चाहिये। उसके पश्चात् फिरसे उसको जम्भीरी नींबूके रसमें खरल करके सुखाकर बोतलमें भर देना चाहिये। इस औषधिको पहले दिन २ रत्ती, दूसरे दिन ४ रत्ती, तीसरे दिन ६ रत्ती इस प्रकार बढ़ाते २ आठवें दिन १६ रत्ती तक बढा देना चाहिये। फिर प्रतिदिन २ रत्ती घटाते २ पन्द्रहवे दिन २ रत्तीपर लाकर दवा बंद कर देना चाहिये। दवा जबतक चालू रहे तबतक भोजनमें सिर्फ सांठी चांवलका भात, दूध, और घी ही खाना चाहिये। इस औषधिके सेवनसे अम्लपित्त, संग्रहणी, यकृत और तिल्लीकी वृद्धि, मंदाग्नि, गुल्म, शूल, वगैरह अनेकों उदर रोग नष्ट होते हैं।

ज्वर नाशक ताम्र भस्मः—

शुद्ध किये हुए तांबेके पतले २ पतरोंको अग्नि में गरम कर २ के हुलहुलके रसमें १०० बार बुझाना चाहिये। फिर हुलहुल के रसमें उनको ७ दिन तक भिगोना चाहिये। उसके पश्चात् हुलहुलके पत्तोंकी लुगदी बनाकर उस लुगदी में उन पतरों को रखकर उस लुगदी को सराव-सम्पुटमें रखकर कपड़ मिट्टी करके गजपुटमें फूंक देना चाहिये। दो एक गजपुट देनेपर जब वे पतरे पिसने काबिल हो जाय तब उनको हुलहुलके रसमें खरल करके टिकड़ी बांधकर सराव सम्पुट में ५।७ गज पुटकी आंच देना चाहिये। तब उत्तम नीले रंगकी ताम्र भस्म तैय्यार होगी। इस भस्मको १ रत्ती की मात्रामें सोंठ, मिरच और पीपरके ३ रत्ती चूर्णमें मिलाकर नागरबेलके पानमें रखकर चबा जाना चाहिये और रजाई ओढकर सो जाना चाहिये। इस प्रयोगसे मलेरिया ज्वरका प्रबल वेग भी आवे तो लेकर १ घण्टेमें शान्त हो जाता है। इस औषधिको भूखे पेट लेना चाहिये और इसको खाकर ऊपरसे

पानी नहीं पीना चाहिये। नागर बेलके पत्तोंकी जगह तुलसीके पत्तों के साथ भी यह दी जा सकती है।

—(जंगलकी जड़ी बूटी)

ताम्र भस्मके गुणः—

विधि पूर्वक बनाई हुई ताम्र भस्मको उचित अनुपानके साथ सेवन करनेसे गुल्म रोग, बवासीर, क्षयरोग, पाण्डुरोग, सूजन, वमन, यकृत और तिल्लीके रोग, ज्वर, श्वास रोग, कृमि रोग, कोढ़, मंदाग्नि, चक्कर आना, हिचकी, खाँसी, प्रमेह, नपुंसकता, अतिसार, इत्यादि रोग नष्ट होजाते हैं।

ताँबे के विकार की शान्तिः—

अशुद्ध ताम्बे की अपरिपक्व भस्मके सेवन करनेसे वमन, भ्रान्ति, जड़ता, कुष्ट, फोडे, इत्यादि अनेक उपद्रव शरीरमें पैदा हो जाते हैं। इन उपद्रवोंको दूर करनेका तरीका रसायन सारके स्तान इस प्रकार लिखा है—

श्लोक—श्यामकाऽन्नं सिता युक्तं, सिता युक्त च धान्यकम्।
पीत दिन त्रयं दोषान्, दुष्ट ताम्र भवाञ्जयेत् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यने "न विषं विषमित्याहु स्ताम्रं तु विष मुच्यते। एको दोषो विष सम्यक् ताम्रे त्वष्टौ प्रकीर्तिताः" इस वचनपर ध्यान न देकर अपनी बेवकूफीसे ताम्रका पूर्ण शोधन नहीं करके भस्म बनाडाली हो तो उसके सेवन करनेसे कुष्ठ, जड़ता, फोडे आदि अनेक व्याधियाँ शरीरमें उत्पन्न हो जाती हैं। उनको नष्ट करनेके लिये तीन दिन तक मिश्रीके साथ सावा अन्नका पतला भात बनाकर देना चाहिये और जब प्यास लगे तब धनिये के पानीमें मिश्री डाल कर पिलावे। इसके अतिरिक्त दूसरा खान पान कुछ सेवन नहीं करे। ऐसा करनेसे सर्व विकार शान्त हो जायँगे। चंद्रोदयको सेवन करनेसे भी २।३ दिनमें सर्व विकार शान्त हो जाते हैं।

उपयोग—

हिचकी— नींबू के रस और नीबू के बीजों के साथ ताम्रभस्म खाने से हिचकी मिटती है।

बवासीर—बनगोभी और मिरचों के साथ ताम्रभस्म खाने से खूनी और बादी बवासीर में लाभ होता है।

अतिसार— कच्चे बेल को भूनकर निकाले हुए रस के साथ ताम्रभस्म खाने से अतिसार में लाभ होता है।

संग्रहणी— सोंठ के चूर्ण और घीके साथ ताम्रभस्म खानेसे संग्रहणी में लाभ होता है।

नामर्दी— मिश्री २ तोले, खोआ ५ तोले, छोटी इलायची २ माशे और ताम्रभस्म १ रत्ती।

इन सब चीजों को मिलाकर प्रतिदिन गायके धारोष्ण दूध के साथ खाने से २।३ महीने में नामर्दी मिट जाती है।

प्रमेह— गूलरके फल के चूर्ण के साथ ताम्रभस्म खाने से सब प्रकार के प्रमेहोंमें लाभ होता है।

कलेजे की जलन— अनार के रसके साथ ताम्रभस्मके खानेसे कलेजे की जलन में शान्ति होती है।

पित्त ज्वर— बताशेके साथ ताम्रभस्म खानेसे पित्तज्वरमें लाभ होता है।

वात और कफज्वर— पीपल के चूर्ण के साथ ताम्रभस्म खानेसे वात और कफ ज्वर शान्त होता है।

सन्निपात— अदरकके रस और काली मिरचों के साथ ताम्रभस्म खाने से १२ प्रकार के सन्निपातों में लाभ होता है।

तांवट

नामः—

गुजराती—तांवट, रुंछाली धामणी, चोधारी धामणी। कच्छी—चोधारी गांगणो, रूछडगागो। मराठी—खटखटी। लेटिन— Grewia Pilosa (ग्रेविया पिलोसा)।

वर्णन

इस वनस्पतिके पौधे ३ से लेकर १० फीट तक ऊंचे होते हैं। इसके पिंड में से बहुत सी शाखायें निकल कर फैल जाती हैं। ये शाखाएं प्रायः चौधारी होती हैं। इन शाखाओंके ऊपर बहुत रुए रहते हैं। इसके पत्ते दूर २ पर लगते हैं। ये लम्बगोल तथा २ से ४ इंच तक लंबे और १ से १॥ इंच तक चौड़े होते हैं। इसके फूल पीले रंगके और फल ललाई लिए हुए भूरे रंग के, स्वादमें खटमीठे और ऊपर बारीक रुओं से भरे हुए रहते हैं।

गुण दोष और प्रभाव,—

इसकी जड का काढ़ा और फांट शक्करके साथ प्रमेह और पेशाब की जलन पर दी जाती है।

पानी नहीं पीना चाहिये। नागर बेलके पत्तोंकी जगह तुलसीके पत्तों के साथ भी यह दी जा सकती है।

—(जगलनी जड़ी बूटी)

ताम्र भस्मके गुणः—

विधि पूर्वक बनाई हुई ताम्र भस्मको उचित अनुपानके साथ सेवन करनेसे गुल्म रोग, बवासीर, क्षयरोग, पाण्डुरोग, सूजन, वमन, यकृत और तिल्लीके रोग, ज्वर, श्वास रोग, कृमि रोग, कोढ़, मंदाग्नि, चक्कर आना, हिचकी, खांसी, प्रमेह, नपुंसकता, अतिसार, इत्यादि रोग नष्ट होजाते हैं।

ताँबे के विकार की शान्ति·—

अशुद्ध ताम्बे की अपरिपक्व भस्मके सेवन करनेसे वमन, भ्रान्ति, जड़ता, कुष्ट, फोडे, इत्यादि अनेक उपद्रव शरीरमें पैदा हो जाते हैं। इन उपद्रवोंको दूर करनेका तरीका रसायन सारके कर्ताने इस प्रकार लिखा है—

श्लोक—श्यामकाऽन्नं सिता युक्तं, सिता युक्त च धान्यकम्।
पीतं दिन त्रयं दोषान्, दुष्ट ताम्र भवाञ्जयेत्॥ १॥

जिस मनुष्यने "न विषं विषमित्याहु स्ताम्रं तु विष मुच्यते। एको दोषो विष सम्यक् ताम्रे त्वष्टौ प्रकीर्तिता." इस वचनपर ध्यान न देकर अपनी बेवकूफीसे ताम्रका पूर्ण शोधन नहीं करके भस्म बनाडाली हो तो उसके सेवन करनेसे कुष्ठ, जड़ता, फोडे आदि अनेक व्याधियाँ शरीरमें उत्पन्न हो जाती हैं। उनको नष्ट करनेके लिये तीन दिन तक मिश्रीके साथ सावा अन्नका पतला भात बनाकर देना चाहिये और जब प्यास लगे तब धनिये के पानीमें मिश्री डाल कर पिलावे। इसके अतिरिक्त दूसरा खान पान कुछ सेवन नहीं करे। ऐसा करनेसे सर्व विकार शान्त हो जायँगे। चन्द्रोदयको सेवन करनेसे भी २।३ दिनमें सर्व विकार शान्त हो जाते हैं।

उपयोग—

हिचकी— नींबू के रस और नीबू के बीजों के साथ ताम्रभस्म खाने से हिचकी मिटती है।

बवासीर—बनगोभी और मिरचों के साथ ताम्रभस्म खाने से खूनी और बादी बवासीर मे लाभ होता है।

अतिसार— कच्चे बेल को भूंजकर निकाले हुए रस के साथ ताम्रभस्म खाने से अतिसार में लाभ होता है।

संग्रहणी— सोंठ के चूर्ण और घीके साथ ताम्रभस्म खानेसे संग्रहणी में लाभ होता है।

नामर्दी— मिश्री २ तोले, खोआ ५ तोले, छोटी इलायची २ माशे और ताम्रभस्म १ रत्ती।

इन सब चीजों को मिलाकर प्रतिदिन गायके धारोष्ण दूध के साथ खाने से २।३ महीने में नामर्दी मिट जाती है।

प्रमेह— गूलरके फल के चूर्ण के साथ ताम्रभस्म खाने से सब प्रकार के प्रमेहोंमें लाभ होता है।

कलेजे की जलन— अनार के रसके साथ ताम्रभस्मके खानेसे कलेजे की जलन में शान्ति होती है।

पित्त ज्वर— बताशेके साथ ताम्रभस्म खानेसे पित्तज्वरमें लाभ होता है।

वात और कफज्वर— पीपल के चूर्ण के साथ ताम्रभस्म खानेसे वात और कफ ज्वर शान्त होता है।

सन्निपात— अदरकके रस और काली मिरचों के साथ ताम्रभस्म खाने से १३ प्रकार के सन्निपातों में लाभ होता है।

तांबट

नामः—

गुजराती—तांबट, रुंछाली धामणी, चोधारी धामणी। कच्छी—चोधारी गांगणी, रुछुडगांगो। मराठी—खटखटी। लेटिन— Grewia Pilosa (ग्रेविया पिलोसा)।

वर्णन

इस वनस्पतिके पौधे ३ से लेकर १० फीट तक ऊंचे होते हैं। इसके सिर में से बहुत सी शाखायें निकल कर फैल जाती हैं। ये शाखाएं प्रायः चौधारी होती हैं। इन शाखाओं के ऊपर बहुत रुए रहते हैं।। इसके पत्ते दूर २ पर लगते हैं। ये लम्बगोल तथा २ से ४ इंच तक लंबे और १ से १॥ इंच तक चौड़े होते हैं। इसके फूल पीले रंगके और फल ललाई लिए हुए भूरे रंग के, स्वादमें खटमीठे और ऊपर बारीक रुओं से भरे हुए रहते हैं।

गुण दोष और प्रभाव,—

इसकी जड़ का काढ़ा और [illegible] प्रमेह और [illegible] है।

पानी नहीं पीना चाहिये। नागर बेलके पत्तों की जगह तुलसी के पत्तों के साथ भी गई दी जा सकती है।

—(जगलनी जड़ी बूटी)

ताम्र भस्मके गुणः—

विधि पूर्वक बनाई हुई ताम्र भस्मको उचित अनुपानके साथ सेवन करनेसे गुल्म रोग, बवासीर, क्षयरोग, पाण्डुरोग, सूजन, वमन, यकृत और तिल्लीके रोग, ज्वर, श्वास रोग, कृमि रोग, कोढ़, मंदाग्नि, चक्कर आना, हिचकी, खाँसी, प्रमेह, नपुंसकता, अतिसार, इत्यादि रोग नष्ट होजाते हैं।

ताँबे के विकार की शान्ति—

अशुद्ध ताम्बे की अपरिपक्व भस्मके सेवन करनेसे वमन, भ्रान्ति, जड़ता, कुष्ट, फोड़े, इत्यादि अनेक वपद्रव शरीरमें पैदा हो जाते हैं। इन उपद्रवोंको दूर करनेका तरीका रसायन सारके कर्ताने इस प्रकार लिखा है—

श्लोक—श्यामकाऽन्नं सिता युक्तं, सिता युक्त च धान्यकम्।
पीत दिन त्रयं दोषान्, दुष्ट ताम्र भवान्जयेत्॥ १॥

जिस मनुष्यने "न विषं विषमित्याहु स्ताम्र तु विष मुच्यते। एको दोषो विष सम्यक् ताम्रे त्वष्टौ प्रकीर्तिता." इस वचनपर ध्यान न देकर अपनी बेवकूफीसे ताम्रका पूर्ण शोधन नहीं करके भस्म बनाडाली हो तो उसके सेवन करनेसे कुष्ठ, जड़ता, फोडे आदि अनेक व्याधियाँ शरीरमें उत्पन्न हो जाती हैं। उनको नष्ट करनेके लिये तीन दिन तक मिश्रीके साथ सावा अन्नका पतला भात बनाकर देना चाहिये और जब प्यास लगे तब धनिये के पानीमें मिश्री डाल कर पिलावे। इसके अतिरिक्त दूसरा खान पान कुछ सेवन नहीं करे। ऐसा करनेसे सर्व विकार शान्त हो जायँगे। चन्द्रोदयको सेवन करनेसे भी २।३ दिनमें सर्व विकार शान्त हो जाते हैं।

उपयोग—

हिचकी— नींबू के रस और नींबू के बीजों के साथ ताम्रभस्म खाने से हिचकी मिटती है।

बवासीर—बनगोभी और मिरचों के साथ ताम्रभस्म खाने से खूनी और बादी बवासीर मे लाभ होता है।

अतिसार— कच्चे बेल को भूजकर निकाले हुए रस के साथ ताम्रभस्म खाने से अतिसार में लाभ होता है।

संग्रहणी— सोंठ के चूर्ण और घीके साथ ताम्रभस्म खानेसे संग्रहणी में लाभ होता है।

नामर्दी— मिश्री २ तोले, खोआ ५ तोले, छोटी इलायची २ माशे और ताम्रभस्म १ रत्ती।

इन सब चीजों को मिलाकर प्रतिदिन गायके धारोष्ण दूध के साथ खाने से २।३ महीने में नामर्दी मिट जाती है।

प्रमेह— गूलरके फल के चूर्ण के साथ ताम्रभस्म खाने से सब प्रकार के प्रमेहोंमें लाभ होता है।

कलेजे की जलन— अनार के रसके साथ ताम्रभस्मके खानेसे कलेजे की जलन में शान्ति होती है।

पित्त ज्वर— बताशेके साथ ताम्रभस्म खानेसे पित्तज्वरमे लाभ होता है।

वात और कफज्वर— पीपल के चूर्ण के साथ ताम्रभस्म खानेसे वात और कफ ज्वर शान्त होता है ।

सन्निपात— अदरकके रस और काली मिरचों के साथ ताम्रभस्म खाने से १३ प्रकार के सन्निपातों में लाभ होता है।

तांवट

नामः—

गुजराती—तांवट, हंछाली धामणी, चोधारी [illegible]। कच्छी—चोधारी [illegible], [illegible]। मराठी—खटखटी। लेटिन— *Grewia Pilosa* (ग्रेविया पिलोसा)।

वर्णन

इस वनस्पतिके पौधे ३ से लेकर १० फीट तक ऊँचे होते हैं। इसके [illegible] बहुत सी शाखायें निकलकर फैल जाती हैं। ये शाखाएं प्रायः चौकोर होती हैं। इन शाखाओंके ऊपर बहुत रुए रहते हैं। । इसके पत्ते दूर २ पर लगते हैं। ये लम्बोतरे तथा २ से ४ इन्च तक लम्बे और १ से १॥ इन्च तक चौड़े होते हैं। इसके फूल पीले रंगके और फल [illegible] के, स्वादमें खटमीठे और ऊपर बारीक रुओं से भरे हुए रहते हैं।

गुण दोष और प्रभाव,—

इसकी जड़ का काढ़ा और सफेद शक्करके साथ प्रमेह और [illegible] दूर करती है

वर्णन—

ताम्बूल या नागरबेलका पान सारे भारत वर्षमें भोजनके पश्चात् खानेके काममें लिया जाता है। इसको सब कोई जानते हैं। इसलिये इसके विशेष वर्णनकी आवश्यकता नहीं। इसकी खेती मद्रास, बंगाल, बनारस, महोबा, साँची, लंका और मालवेके रामपुरा भानपुरा जिलेमें बहुत होती है। इन सब पानोंमें बनारसका पान सर्वोत्तम माना जाता है।

गुण दोष और प्रभाव—

श्लोक—ताम्बूल कटु तिक्त मुष्ण मधुरं क्षार कषायान्वितम्।
वातघ्नं कृमिनाशनं कफहरं दु:खस्य विच्छेदनम्॥
स्त्री संभाषण भूषणं धृतिकर कामाग्नि संदीपनम्।
ताम्बूले ।निहिता स्त्रयोदशगुणाः स्वर्गेऽपि ते दुर्लभः॥

अर्थात—पान चरपरा, कड़वा, गरम, मधुर, क्षारगुण युक्त, कसेला तथा वात, कृमि कफ और दु:खको हरने वाला है। स्त्री समाषणके विषयमे यह अलंकारके समान है तथा धारणा शक्ति और काम शक्तिको यह बढ़ाता है। पानमें यह जो तेरह गुण विद्यमान है वह स्वर्गमें भी दुर्लभ है।

राजनिघंटुके मतानुसार पान चरपरा, तीक्ष्ण, कडवा और पीनस, वात, कफ तथा खाँसीमें लाभ दायक है। यह रुचिकारक, दाह जनक और अग्निदीपक है।

भाव प्रकाशके मतानुसार पान विषघ्न, रुचिकारी, तीक्ष्ण, गरम, कसेला, सारक, वशीकरण, चरपरा, रक्त पित्त कारक, हलका, वाजिकरण तथा कफ, मुंहकी दुर्गन्ध, मल, वात और श्रमको दूर करता है।

पुराना पान—पुराना पान अत्यन्त रसभरा, रुचिकारक, सुगन्धित, तीक्ष्ण, मधुर, हृदय को हितकारी, जठराग्नि को दीप्त करने वाला, कामोद्दीपक, बलकारक, दस्तावर और मुख को शुद्ध करने वाला है।

नवीन पान—नवीन पान त्रिदोष कारक, दाह जनक, अरुचिकारक, रक्त को दूषित करने वाला, विरेचक और वमन कारक है। वही पान अगर बहुत दिनों तक जल से सींचा हुआ हो तो श्रेष्ठ होता है। रुचि को उत्पन्न करता है शरीर के वर्ण को सुन्दर करता है और त्रिदोष नाशक है।

मालवे का पान—मालवी पान पाचक, तीक्ष्ण, मधुर, रुचि कारक, दाह नाशक, पित्त नाशक, अग्नि दीपक, मादक, काम शक्ति को बढ़ाने वाला, मुख में सुगन्ध पैदा करने वाला, स्त्रियों के सौभाग्य को बढ़ाने वाला और उदर शूल को नष्ट करने वाला होता है।

पान का उपयोग कफ प्रधान रोगों में विशेष रूप से होता है। खास करके दमा, फुफ्फुसनलिका की सूजन और श्वास मार्ग की सूजन में इसका रस पिलाया जाता है और इसके पत्तों को गरम करके छाती पर बांधते हैं। बच्चों की सरदी में भी पानों के ऊपर अरंडी का तेल लगाकर, उनको जरा गरम करके छातीपर बाँध देते हैं जिससे बच्चोंकी घबराहट कम हो जाती है और सर्दी का जोर मिटा जाता है।

डिप्थीरिया रोग—इस में गले के अन्दर एक विशिष्ट जन्तु का पड़दा पैदा होकर श्वासावरोध हो जाता है और अत्यन्त कष्ट के साथ रोगी की मृत्यु होती है। इसमें भी पान का रस सेवन करने से उस जन्तु का नाश हो जाता है, गले की सूजन कम हो जाती है और कफ छूटने लगता है। इस रोगमें ४।५ पत्तों का रस थोड़े कुनकुने पानी में मिलाकर कुल्ले करने से भी फायदा होता है।

गठानों की सूजन पर पान को गरम करके बांधने से सूजन और पीड़ा की कमी होकर गठान बैठ जाती है। व्रणों के ऊपर पान को बाँधने से व्रण सुधर जाते हैं और जल्दी भर जाते हैं। पान का रस एक प्रभावशाली पीब नाशक वस्तु है। कारबोलिक एसिड की अपेक्षा इसका रस पांच गुना अधिक जन्तुनाशक है। जिन स्त्रियों का बच्चा मर गया हो और स्तनोंमें दुध भरकर सूजन आगई हो उन स्त्रियों के स्तनों पर पान को गरम करके बाँधनेसे सूजन कम हो जाती है और दूध उड़ जाता है।

रतौंधा और नेत्राभिष्यंद रोगमें भी पान का रस आंखमें डालनेसे लाभ होता है।

रासायनिक विश्लेषण—कॅप ने सन् १८६० में पान के अन्दर पाये जाने वाले उड़नशील तेलों का परीक्षण किया। इसके पश्चात् भी इस वनस्पति के रासायनिक तत्वों का परिक्षण हुआ। इन परीक्षणोंसे यह मालूम होता है कि इसमें स्टार्च, शक्कर, टेनिन और डिआस्टोसिस ·८ से १·८ प्रतिशत तक रहता है। इसमें उड़नशील तेल भी रहता है। जो कुछ पानों में ४·२ प्रतिशत तक पाया जाता है। इसमें पाया जानेवाला उड़नशील तेल एक पीले रंग का द्रव पदार्थ होता है। यह गन्ध में उत्तम और स्वादमें तेज होता है। जावा और मनिला में पैदा हुए पानोंमें फेनोल नामकी वस्तु ५५ प्रतिशत तक पाई जाती है।

इसमें रहनेवाला उड़नशील तेल गर्मी का आवेश बतलाता है। यह मुहमें और पेटमें अच्छा मालूम पड़ता है। इससे केंद्रीय स्नायुमंडल के ऊपर कुछ उत्तेजना मालूम पड़ती है। अगर इसे अधिक खुराकमें लिया जाय तो कुछ नशे का अनुभव भी होता है।

इसके पत्तों से प्राप्त किया हुआ यह तेल नजलेमें और कृमिनाशक वस्तु की तौर काममें लिया जा चुका है। यह मस्तिष्क के विकारों को दूर करता है।

कम्बोडियामें इसके भिगे हुए पत्तों का पानी माता और ज्वरके बीमारों को स्नान करानेके काममें लिया जाता है।

मन्याल और मोषके मतानुसार पान सुगन्धित होता है। इसमें उड़नशील तेल पाया जाता है। इस तेलमे से कास्टिक पोटासकी मददसे चेवीपोल नामका फेनाल प्राप्त किया जाता है। जो कि कारबोलिक एसिड से पाँचगुना और यूजेनाल से दो गुना अधिक ते। होता है। इसी चेटन फिनाल ही के कारण इस मे इतनी सुगन्ध पाई जाती है। इसके पत्तों का डंठल तेलमें तर करके गुदा में रखने से बच्चों को साफ दस्त हो जाता है और उनके पेट का फुलाव मिट जाता है।

डाक्टर फ्लेटनस्टकका कहना है कि इसका उड़नशील तेल जुकाम, गलेका प्रदाह, श्वासनालीका भंग, रोहिणी रोग (डिप्थीरियो) और खांसीमें लाभदायक है। यह कृमिनाशक होता है। डिप्थीरियामें इस तेलकी १ बून्द सौ ग्रेन पानीमें डालकर उससे कुल्ले करनेसे और इसका धुआं सूंघनेमे लाभ होता है। भारत वर्षमें ४ पानोंका रस १ बून्द तेलकी बजाय काममें लिया जा सकता है।

खूनके जमाव, यकृतके रोग और बच्चोंके फेफड़ोंकी तकलीफमें पानको गरम करके उन पर तेल लगाकर बान्धनेसे अच्छा लाभ होता है।

मिस्टर जे वुड़का कथन है कि इसके पानोंको अगर आग पर गरम करके स्तनों पर बान्धे जाय तो दूधका बहाव अवश्य बन्द होजाता है और ग्रन्थियोंकी सूजन मिट जाती है।

डाक्टर थाम्सन वाटस् डिक्शनेरीमें लिखते हैं कि इसके पत्तोंका रस आँखोंकी बीमारीमें आँखोंमें डालनेसे फायदा पहुँचाता है। इससे मस्तिष्कके अन्दर होने वाले खूनके जमाव पर भी लाभ पहुँचता है।

बी० डी० बसुके मतानुसार इसके पत्तोंका रस आँखमें डालने से रतौंधी की बीमारी में लाभ होता है।

बगसेनके मतानुसार टाँगोंके श्लीपदमें ७ पानोंको लेकर उनमें सेंधा निमक डालकर गरम पानी के साथ छानकर प्रातःकाल पीनेसे कुछ दिनोंमें अच्छा लाभ होता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार पान सुगन्धित, पेटके आफरेको दूर करने वाला, उत्तेजक और संकोचक होता है। सर्पविषमें इसे अन्तः प्रयोगके काममें लेते हैं। इसमें उड़नशील तेल और चेवी कोल रहता है।

पुराने हिन्दू लेखकों का लिखना है कि पानको सुबह खाना खानेके बाद और सोते समय खाना चाहिये। सुश्रुतके मतानुसार यह सुगन्धित, शान्तिदायक, पेटके आफरेको दूर करने वाला, उत्तेजक और संकोचक होता है। यह श्वासमें मधुरता लाता है, स्वरको सुधारता है। मुँहकी दुर्गन्धको मिटाता है। अन्य लेखकों के मतानुसार यह कामोद्दीपक है। उपचार में इसे कफ की खराबियों से जो बीमारियां पैदा होती हैं उनमें काम में लेते हैं। इसका रस इन बीमारियों में दी जाने

वाली औषधियों में विशेष लाभदायक है। कोंकण में इसके फल को शहदके साथ खांसी की बीमारीमें देते हैं। उड़ीसामें गर्भ न रहने देनेके लिये इसकी जड़को उपयोगमें लेते हैं। यह वनस्पति इंडियन फरमा कोपियाके अन्दर भी सम्मत मानी गई है। मगर इसकी उपचारिक उपयोगिताके विषयमें कुछ भी नहीं लिखा गया है।

पान खानेकी आदत—दूसरी नशीली वस्तुओंकी तरह पानको भी लगातार खाते रहनेसे इसके खानेकी आदत पड़ जाती है। जो लोग पहली बार पान खाते हैं उनके मस्तिष्क पर कुछ खास प्रभाव दृष्टि गोचर होते हैं। कुछ बेचैनी, मूर्च्छा, उत्तेजना, पसीनेका बहना, इत्यादि स्वाभाविक लक्षण उनके अन्दर दिखलाई देने लगते हैं। परन्तु ये सब बातें शुरूमें ही दिखाई देती हैं। कुछ अभ्यास हो जानेके बाद इस किस्मकी अलामात नहीं दिखाई देतीं।

पान खानेवालोंको पान खानेके बाद कुछ ताजगी मालूम होती है। वे खुश तबियत होजाते हैं, प्रफुल्लित मालूम पड़ने लगते हैं, उनकी थकान दूर हो जाती है, प्यास जाती रहती है, भूख शांत हो जाती है और कामेच्छाकी प्रवृत्तिमें कुछ स्थायित्व आ जाता है। कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि इसका नशीला असर होता है किन्तु यह बात ठीक नहीं जचती। सम्पूर्ण दृष्टिसे विचार करनेपर पान खानेके दुष्परिणाम नहींके बराबर ही मालूम होने लगते हैं।

पान खानेकी आदत उन जातियोंमें अधिक होती है जिनके भोजनमें खारी द्रव्योंकी मात्रा विशेष होता है अर्थात् जो चाँवल इत्यादि पदार्थ विशेष मात्रामें खाया करते हैं। [illegible] चूनेसे खार की मात्रा अधिक निकलती है जिससे पाचन क्रिया [illegible] मदद मिलती है। ऐसे लोगोंके अन्नके पचावमें पाकाशयका रस अधिक प्रभाव नहीं दिखलाता है। ऐसे लोग जब [illegible] पदार्थ खाना छोड़ देते हैं तभी इन्हें अपचनकी शिकायत शुरू हो जाती है।

यूनानी मत—यूनानी मत से पान गरम, [illegible] और [illegible] है। [illegible], मेदा, दिमाग और स्मरण शक्ति को ताकत देता है, [illegible] देता है, शरीर के रोम छिद्रों को खोल देता है, [illegible] की सूजन मिट जाती है। [illegible] से पैदा हुआ दमा [illegible] है। गला और आवाज साफ होती है। यह विशेष नाशक और [illegible] है। [illegible] जख्मों को भर देता है। अगर किसी के [illegible] में [illegible] बांध देने से [illegible] बहुत फायदा होता है। [illegible] है। अगर [illegible] मालूम पड़े तो [illegible] देकर [illegible] चाहिये।

पान के अधिक खाने से [illegible]

वाली औषधियों में विशेष लाभदायक है। कोंकण में इसके फल को शहदके साथ खांसी की बीमारीमें देते हैं। उड़ीसामें गर्भ न रहने देनेके लिये इसकी जड़को उपयोगमें लेते हैं। यह वनस्पति इण्डियन फरमा कोपियाके अन्दर भी सम्मत मानी गई है। मगर इसकी उपचारिक उपयोगिताके विषयमें कुछ भी नहीं लिखा गया है।

पान खानेकी आदत—दूसरी नशीली वस्तुओंकी तरह पानको भी लगातार खाते रहनेसे इसके खानेकी आदत पड़ जाती है। जो लोग पहली बार पान खाते हैं उनके मस्तिष्क पर कुछ खास प्रभाव दृष्टिगोचर होते हैं। कुछ बेचैनी, मूर्छा, उत्तेजना, पसीनेका बहना, इत्यादि स्वाभाविक लक्षण उनके अन्दर दिखलाई देने लगते हैं। परन्तु ये सब बातें शुरूमें ही दिखाई देती हैं। कुछ अभ्यास हो जानेके बाद इस किस्मकी अलामात नहीं दिखाई देती।

पान खानेवालोंको पान खानेके बाद कुछ ताजगी मालूम होती है। वे खुश तबियत होजाते हैं, प्रफुल्लित मालूम पड़ने लगते हैं, उनकी थकान दूर हो जाती है, प्यास कम रहती है, भूख शांत हो जाती है और कर्मेन्द्रियकी प्रवृत्तिमें कुछ स्थायित्व आ जाता है। कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि इसका नशीला असर होता है किन्तु यह बात ठीक नहीं जचती। सम्पूर्ण दृष्टिसे विचार करनेपर पान खानेके दुष्परिणाम नशेके बराबर ही मालूम होने लगते हैं।

पान खानेकी आदत उन आदमियोंमें अधिक होती है जिनके भोजनमें चावलों इत्यादिका ज्यादा हिस्सा होता है अर्थात् जो चावल इत्यादि पदार्थ विशेष मात्रामें खाया करते हैं। [illegible] की मात्रा अधिक निकलती है जितने पाचन क्रिया [illegible] पचावमें सहायक रस अधिक मात्रामें नहीं निकलता है। [illegible] पदार्थ खाना छोड़ देते हैं तभी इसे [illegible] है।

यूनानी मत—यूनानी मतसे [illegible] मेदा, दिमाग और [illegible] [illegible] है।

[illegible]

वाली औषधियों मे विशेष लाभदायक है। कोंकण में इसके फल को शहदके साथ खांसी की बीमारीमें देते हैं। उडीसामें गर्भ न रहने देनेके लिये इसकी जडको उपयोगमें लेते हैं। यह वनस्पति इंडियन फरमा कोपियाके अन्दर भी सम्मत मानी गई है। मगर इसकी उपचारिक उपयोगिताके विषयमे कुछ भी नहीं लिखा गया है।

पान खानेकी आदत—दूसरी नशीली वस्तुओंकी तरह पानको भी लगातार खाते रहनेसे इसके खानेकी आदत पड़ जाती है। जो लोग पहली वार पान खाते हैं उनके मस्तिष्क पर कुछ खास प्रभाव दृष्टि गोचर होते हैं। कुछ बेचैनी, मूर्छा, उत्तेजना, पसीनेका बहना, इत्यादि स्वाभाविक लक्षण उनके अन्दर दिखलाई देने लगते हैं। परन्तु ये सब बातें शुरूमें ही दिखाई देती हैं। कुछ अभ्यास हो जानेके बाद इस किस्मकी अलामात नहीं दिखाई देतीं।

पान खानेवालोंको पान खानेके बाद कुछ ताजगी मालूम होती है। वे खुश तबियत होजाते हैं, प्रफुल्लित मालूम पड़ने लगते हैं, उनकी थकान दूर हो जाती है, प्यास जाती रहती है, भूख शांत हो जाती है और कामेच्छाकी प्रवृत्तिमें कुछ स्थायित्व आ जाता है। कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि इसका नशीला असर होता है किन्तु यह बात ठीक नहीं जचती। सम्पूर्ण दृष्टिसे विचार करनेपर पान खानेके दुष्परिणाम नहींके बराबर ही मालूम होने लगते हैं।

पान खानेकी आदत उन जातियोंमें अधिक होती है जिनके भोजनमें कारबोहाइड्रेटकी मात्रा विशेष होता है अर्थात् जो चाँवल इत्यादि पदार्थ विशेष मात्रामें खाया करते हैं। [illegible] क्षार की मात्रा अधिक निकलती है जिससे पाचन क्रिया [illegible] मदद मिलती है। ऐसे लोगोंके अन्नके पचावमें पाकाशयका रस अधिक प्रभाव नहीं दिखलाता है। ऐसे लोग जब [illegible] कारबोहाइड्रेटक पदार्थ खाना छोड़ देते हैं तभी इनमें अपचनकी शिकायत शुरू हो जाती है।

यूनानी मत—यूनानी मत से पान गरम, रुचिकर और [illegible] है। यह [illegible], मेदा, दिमाग और स्मरण शक्ति को ताकत देता है, [illegible] पैदा करता है, [illegible] देता है, शरीर के रोम छिद्रों को खोल देता है, इसके [illegible] दाँत और मसूड़े मजबूत होते हैं और मसूड़ों की सूजन मिट जाती है। [illegible] है। [illegible] और [illegible] है। यह विशेष पाचक और कामशक्ति वर्द्धक है। [illegible] जख्मों को भर देता है। अगर किसी के [illegible] देने से [illegible] बहुत फायदा होता है। [illegible] है। [illegible] मालूम [illegible] देकर रखना चाहिये।

पान के अधिक खाने से [illegible]

सन्याल और घोषके मतानुसार पान सुगन्धित होता है। इसमें उडनशील तेल पाया जाता है। इस तेलमें से कास्टिक पोटासकी मददसे चेवीपोल नामका फेनाल प्राप्त किया जाता है। जोकि कारबोलिक एसिड से पाँचगुना और यूवेनाल से दो गुना अधिक तेज होता है। इसी चेटल फिनाल ही के कारण इस में इतनी सुगन्ध पाई जाती है। इसके पत्तों का डंठल तेलमें तर करके गुदा में रखने से बच्चों को साफ दस्त हो जाता है और उनके पेट का फुलाव मिट जाता है।

डाक्टर क्लेइनस्टकका कहना है कि इसका उडनशील तेल जुकाम, गलेका प्रदाह, स्वरनालीका भंग, रोहिणी रोग (डिप्‌थीरियो) और खांसीमें लाभदायक है। यह कृमिनाशक होता है। डिप्थीरियामें इस तेलकी १ बून्द सौ ग्रेन पानीमें डालकर उससे कुल्ले करनेमे और इसका धुआं सूंघनेमे लाभ होता है। भारत वर्षमें ४ पानोंका रस १ बून्द तेलकी बजाय काममें लिया जा सकता है।

खूनके जमाव, यकृतके रोग और बच्चोंके फेफड़ोंकी तकलीफमें पानको गरम करके उन पर तेल लगाकर बान्धनेसे अच्छा लाभ होता है।

मिस्टर जे बुडका कथन है कि इसके पानोंको अगर आग पर गरम करके स्तनों पर बान्धे जाय तो दूधका बहाव अवश्य बन्द होजाता है और ग्रन्थियोंकी सूजन मिट जाती है।

डाक्टर थामसन बाटस् डिक्शनेरीमें लिखते हैं कि इसके पत्तोंका रस आँखोंकी बीमारीमें आँखोंमें डालनेसे फायदा पहुँचाता है। इससे मस्तिष्कके अन्दर होने वाले खूनके जमाव पर भी लाभ पहुँचता है।

बी० डी० बसुके मतानुसार इसके पत्तोंका रस आँखमें डालने से रतौंधी की बीमारी में लाभ होता है।

वगसेनके मतानुसार टाँगोंके श्लीपदमें ७ पानोंको लेकर उनमें सेंधा निमक डालकर गरम पानी के साथ छानकर प्रातःकाल पीनेसे कुछ दिनोंमें अच्छा लाभ होता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार पान सुगन्धित, पेटके आफरेको दूर करने वाला, उत्तेजक और सकोचक होता है। सर्पविषमें इसे अन्तः प्रयोगके काममें लेते हैं। इसमें उडनशील तेल और चेवीकोल रहता है।

पुराने हिन्दू लेखकों का लिखना है कि पानको सुबह खाना खानेके बाद और सोते समय खाना चाहिये। सुश्रुतके मतानुसार यह सुगन्धित, शान्तिदायक, पेटके आफरेको दूर करने वाला, उत्तेजक और संकोचक होता है। यह श्वासमें मधुरता लाता है, स्वरको सुधारता है। मुँहकी दुर्गन्धको मिटाता है। अन्य लेखकों के मतानुसार यह कामोद्दीपक है। उपचार में इसे कफ की खराबियों से जो बीमारियां पैदा होती हैं उनमे काम में लेते हैं। इसका रस इन बीमारियों में दी जाने

वाली औषधियों में विशेष लाभदायक है। कोंकण में इसके फल को शहदके साथ खांसी की बीमारीमें देते हैं। उड़ीसामें गर्भ न रहने देनेके लिये इसकी जड़को उपयोगमें लेते हैं। यह वनस्पति इण्डियन फारमा कोपियाके अन्दर भी सम्मत मानी गई है। मगर इसकी उपचारिक उपयोगिताके विषयमें कुछ भी नहीं लिखा गया है।

पान खानेकी आदत—दूसरी नशीली वस्तुओंकी तरह पानको भी लगातार खाते रहनेसे इसके खानेकी आदत पड़ जाती है। जो लोग पहली बार पान खाते हैं उनके मस्तिष्क पर कुछ खास प्रभाव दृष्टि गोचर होते हैं। कुछ बेचैनी, मूर्च्छा, उत्तेजना, पसीनेका बहना, इत्यादि स्वाभाविक लक्षण उनके अन्दर दिखलाई देने लगते हैं। परन्तु ये सब बातें शुरूमें ही दिखाई देती हैं। कुछ अभ्यास हो जानेके बाद इस किस्मकी अलामात नहीं दिखाई देतीं।

पान खानेवालोंको पान खानेके बाद कुछ ताजगी मालूम होती है। वे खुश तबियत होजाते हैं, प्रफुल्लित मालूम पड़ने लगते हैं, उनकी थकान दूर हो जाती है, प्यास ज्यादा रहती है, भूख शांत हो जाती है और कामेच्छाकी प्रवृत्तिमें कुछ स्थायित्व आ जाता है। कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि इसका नशीला असर होता है किन्तु यह बात ठीक नहीं जचती। सम्पूर्ण दृष्टिसे विचार करने पर पान खानेके दुष्परिणाम नहींके बराबर ही मालूम होने लगते हैं।

पान खानेकी आदत उन जातियोंमें अधिक होती है जिनके [illegible] मात्रा विशेष होती है अर्थात् जो चाँवल इत्यादि पदार्थ विशेष मात्रामें खाया करते हैं। [illegible] की मात्रा अधिक निकलती है जिसमें [illegible] है। [illegible] पचावने पाकाशयका रस अधिक [illegible] नहीं दिखलाता है। [illegible] पदार्थ खाना छोड़ देते हैं तभी इन्हें आदतकी [illegible] हो जाती है।

यूनानी मत—यूनानी मत से पान [illegible], [illegible], मेदा, दिमाग और स्मरण शक्ति को ताकत देता है, [illegible] देता है, शरीर के रोम छिद्रों को खोल देता है, [illegible] की सूजन मिट जाती है। [illegible] पैदा हुआ [illegible] है। [illegible] और आवाज [illegible] देता है। [illegible] जख्मों को भर देता है। [illegible] देने से [illegible] है। [illegible] देकर [illegible] देवे।

[illegible]

मन्याल और घोषके मतानुसार पान सुगन्धित होता है। इसमें उड़नशील तेल पाया जाता है। इस तेलमें से कास्टिक पोटासकी मददसे चेवीपोल नामका फेनाल प्राप्त किया जाता है। जोकि कारबोलिक एसिड से पाँचगुना और यूवेनाल से दो गुना अधिक तेज होता है। इसी चेवल फिनाल ही के कारण इस में इतनी सुगन्ध पाई जाती है। इसके पत्तों का डंठल तेलमें तर करके गुदा में रखने से बच्चों को साफ दस्त हो जाता है और उनके पेट का फुलाव मिट जाता है।

डाक्टर क्लेइनस्टकका कहना है कि इसका उड़नशील तेल जुकाम, गलेका प्रदाह, स्वरनालीका भंग, रोहिणी रोग (डिप्थीरियो) और खांसीमें लाभदायक है। यह कृमिनाशक होता है। डिप्थीरियामें इस तेलकी १ बून्द सौ ग्रेन पानीमें डालकर उससे कुल्ले करनेसे और इसका धुआ सूंघनेसे लाभ होता है। भारत वर्षमें ४ पानोंका रस १ बून्द तेलकी बजाय काममें लिया जा सकता है।

खूनके जमाव, यकृतके रोग और बच्चोंके फेफड़ोंकी तकलीफमें पानको गरम करके उन पर तेल लगाकर बान्धनेसे अच्छा लाभ होता है।

मिस्टर जे बुडका कथन है कि इसके पानोंको अगर आग पर गरम करके स्तनों पर बान्धे जाय तो दूधका बहाव अवश्य बन्द होजाता है और ग्रन्थियोंकी सूजन मिट जाती है।

डाक्टर थामसन बाटस् डिक्शनेरीमें लिखते हैं कि इसके पत्तोंका रस आँखोंकी बीमारीमें आँखोंमें डालनेसे फायदा पहुँचाता है। इससे मस्तिष्कके अन्दर होने वाले खूनके जमाव पर भी लाभ पहुँचता है।

बी० डो० बसुके मतानुसार इसके पत्तोंका रस आँखमें डालने से रतौंधी की बीमारी में लाभ होता है।

बंगसेनके मतानुसार टाँगोंके श्लीपदमें ७ पानोंको लेकर उनमें सेंधा निमक डालकर गरम पानी के साथ छानकर प्रातःकाल पीनेसे कुछ दिनोंमें अच्छा लाभ होता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार पान सुगन्धित, पेटके आफरेको दूर करने वाला, उत्तेजक और सकोचक होता है। सर्पविषमें इसे अन्तः प्रयोगके काममें लेते हैं। इसमें उड़नशील तेल और चेवीकोल रहता है।

पुराने हिन्दू लेखकों का लिखना है कि पानको सुबह खाना खानेके बाद और सोते समय खाना चाहिये। सुश्रुतके मतानुसार यह सुगन्धित, शान्तिदायक, पेटके आफरेको दूर करने वाला, उत्तेजक और संकोचक होता है। यह श्वासमें मधुरता लाता है, स्वरको सुधारता है। मुँहकी दुर्गन्धको मिटाता है। अन्य लेखकों के मतानुसार यह कामोद्दीपक है। उपचार में इसे कफ की खराबियों से जो बीमारिया पैदा होती हैं उनमें काम में लेते हैं। इसका रस इन बीमारियों में दी जाने

वाली औषधियों में विशेष लाभदायक है। कोंकण में इसके फल को शहदके साथ खांसी की बीमारीमें देते हैं। उडीसामें गर्भ न रहने देनेके लिये इसकी जड़को उपयोगमें लेते हैं। यह वनस्पति इंडियन फरमा कोपियाके अन्दर भी सम्मत मानी गई है। मगर इसकी उपचारिक उपयोगिताके विषयमें कुछ भी नहीं लिखा गया है।

पान खानेकी आदत—दूसरी नशीली वस्तुओंकी तरह पानको भी लगातार खाते रहनेसे इसके खानेकी आदत पड़ जाती है। जो लोग पहली बार पान खाते हैं उनके मस्तिष्क पर कुछ खास प्रभाव दृष्टि गोचर होते हैं। कुछ बेचैनी, मूर्च्छा, उत्तेजना, पसीनेका बहना, इत्यादि स्वाभाविक लक्षण उनके अन्दर दिखलाई देने लगते हैं। परन्तु ये सब बातें शुरूमें ही दिखाई देती हैं। कुछ अभ्यास हो जानेके बाद इस किस्मकी अलामात नहीं दिखाई देतीं।

पान खानेवालोंको पान खानेके बाद कुछ ताजगी मालूम होती है। वे खुश तबियत होजाते हैं, प्रफुल्लित मालूम पड़ने लगते हैं, उनकी थकान दूर हो जाती है, प्यास [illegible] रहता है, [illegible] शांत हो जाती है और कामेच्छाकी प्रवृत्तिमें कुछ स्थायित्व आ जाता है। कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि इसका नशीला असर होता है किन्तु यह बात ठीक नहीं जचती। सम्पूर्ण दृष्टिसे विचार करनेपर पान खानेके दुष्परिणाम नहींके बराबर ही मालूम होने लगते हैं।

पान खानेकी आदत उन जातियोंमें अधिक होती है जिनके भोजनमें [illegible] की मात्रा विशेष होती है अर्थात् जो चावल इत्यादि पदार्थ विशेष [illegible] करते हैं। [illegible] की मात्रा अधिक निकलती है जिससे पाचन [illegible] है। [illegible] इनके पचावमें पाकाशयका रस अधिक प्रभाव नहीं दिखलाता है। [illegible] पदार्थ खाना छोड़ देते हैं तभी इनके पाचनको [illegible] हो सकता है।

यूनानी मत—यूनानी मतसे [illegible], मेदा, दिमाग और स्मरण शक्तिको [illegible] है, [illegible] देता है, शरीरके रोम छिद्रोंको खोल देता है, [illegible] की सुस्ती मिट जाती है। [illegible] है। [illegible] और [illegible] है। [illegible] जख्मोंको [illegible] देता है। [illegible] है। [illegible] है।

[illegible]

इसको हमेशा नियमित मात्रा में लाना चाहिये। इसमें हेपिरसाइन नामक जहरीला पदार्थ रहता है। पान के साथ सुपारी भी बहुत कम लेना चाहिये क्योंकि सुपारी में अर्कोडाइन नामक विषैला पदार्थ रहता है और यह सीने में खुजली पैदा करता है। पान के अन्दर कत्था ज्यादा लगाने से फेफड़े में खराश पैदा हो जाती है। चूने का अधिक उपयोग दाँतों को खराब कर देता है। इसलिये पान में कत्था चूना और सुपारी नियमित मात्रा में डालना चाहिये।

उपयोग—

बच्चों की कब्जियत—पान के डंठल पर तेल चुपड़ कर बच्चों की गुदा में रखने से बच्चों की कब्ज और बादी के रोग मिटते हैं।

सूजन—पान पर तेल चुपड़ कर गरम करके बाँधने से सूजन का दर्द मिट जाता है।

गर्भनिरोध—पान की जड़ों को काली मिर्च के साथ पीसकर लेनेसे गर्भ रहना बंद हो जाता है।

(२) पानके रसमें कबूतरकी बीठ मिलाकरके पिलानेसे गर्भ रहना बन्द हो जाता है।

ज्वर—३॥ माशे पानके अर्कको गरम करके दिनमें २।३ बार पिलानेसे ज्वर आना बंद हो जाता है।

जुकाम और सीनेका दर्द—पान पर तेल चुपड़कर आग पर गरम करके सीनेपर बाँधनेसे जुकाम और सीनेका दर्द मिट जाता है। इसी प्रयोगसे दिल और जिगरमें जमा हुआ खून भी बिखर जाता है। इसको पेटपर बाँधनेसे पेटकी हवा निकल जाती है और पेट हलका हो जाता है।

नेत्ररोग—पानके अर्ककी बूंदे आँखोंमें डालनेसे आँखोंमें होने वाला बादीका दर्द मिट जाता है।

रतौंधी—पानका रस आँखोंमें लगानेसे रतौंधी जाती रहती है।

बच्चोंकी सूखी खाँसी—पानके रसको शहदके साथ चटानेसे बच्चोंकी सूखी खाँसी मिटती है।

पानका क्षार

और वस्तुओं की तरह पान के अन्दर से भी एक प्रकार का क्षार निकाला जाता है। इस क्षारके सेवन से दिल की धड़कन कम होती है, दस्त साफ होता है और यह कफ और वायुके दोषको दूर करता है।

—

तारक

नाम—

संस्कृत—तारक। बंगाल—तारो, तारुको। मलयालम—मलइजिकुश्रा। लेटिन—Alpinia Allhugas (अलपीनिया अलहूगस)।

वर्णन—

यह वनस्पति कुलिंजन ही की एक जाति है। इसकी जड़ गठानदार और सुगन्धित होती है। इसके फूल हलके गुलाबी रंग के और गन्धहीन होते हैं। इसका फल काला, पतला और गोल होता है। इसके बीज छोटे और काले होते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

इस वनस्पति के गुणधर्म और उपयोग कुलिंजन के ही समान हैं।

तालमखाना

नाम—

संस्कृत—कोकिलाक्ष, इक्षुरक, [illegible]। हिन्दी—तालमखाना, [illegible]। बंगाल—[illegible]। गुजराती—एखरो, तालम खानू। मराठी—विखरा, [illegible]। लेटिन—Asteracantha Longifolia (एस्टेरेकेंथा [illegible]) Hygrophila [illegible] (हायग्रोफिला स्पिनोसा)।

वर्णन—

[illegible]

गुण, दोष और प्रभाव—

[illegible]

कोमानके मतानुसार यह एक उत्तम मूत्रल पदार्थ है। इसकी जड का काढ़ा एक औंसकी मात्रामें जलोदर और पुरानी ब्राइट्सडिसीजमें मूत्रल वस्तुकी बतौर दिया गया और उसका प्रभाव सतोष जनक रहा। मद्रासमें डाक्टर फिटस पैट्रिक और डाक्टर गिब्सन का कथन है कि अशक्त, रक्तहीन और कष्टसाध्य जलोदरके रोगियोके ऊपर इस वनस्पति के क्वाथ का प्रयोग करके उत्तम सफलता प्राप्त की गई है। दूसरा मूत्रल औषधियों के साथमें इसकी जड़को मिलाकर देने से एक सप्ताहके अन्दर ही पेशाब की मात्रा तीन चार गुनी बढ़ जाती है जिससे जलोदर और चमडी की सूजन दूर होकर रोगी को आराम हो जाता है।

एन्सलीके मतानुसार इसके पंचाग की राख करके उस राख को कपड़ेमें छानकर बोतलमें भरकर रखना चाहिये और जलोदर वगैरह रोगोंमें जब इसकी ताजी जड़ें न मिल सके तब उस राख को एक चम्मच भर लेकर १० तोले पानीमें डालकर अच्छी तरह हिला देना चाहिये। इस पानी को ढाई २ तोले की मात्रामे दो २ घण्टेके अन्तर से देने पर जलोदरमें बहुत लाभ होता है।

डाक्टर नॉडकरनी का कथन है कि इसकी जड़ शीतल, कटुपौष्टिक और स्निग्ध होती है। इसकी जड को १ औंस की मात्रामें ५० तोले पानीके साथ १० मिनट औटाकर नीचे उतार कर छान लेना चाहिये। यह क्वाथ जलोदर, मूत्रमार्ग और जननेन्द्रिय के रोगोंमें लाभदायक है। इसके पत्ते और बीज भी स्निग्ध और मूत्रल होते हैं और वे भी सूजनके साथ वाले जलोदर में लाभदायक होते हैं।

कर्नल चोपराके मतानुसार औषधि प्रयोगमें इसकी जड़ें और इसके पत्ते ज्यादा काममें आते हैं। इसकी जड़ का काढ़ा यकृत सम्बन्धी विकारोंमें लाभदायक है। जननेन्द्रिय और मूत्राशय के विकारोंमें भी यह लाभदायक है। इसकी जड़ का काढ़ा अपने मूत्रल गुण की वजहसे जलोदर, गठिया और मूत्र सम्बन्धी विकारोंमें लाभ बतलाता है।

वाग्भट्ट के मतानुसार तालमखाने के पौधे का रस निकालकर पीनेसे और पत्तों का शाग खाते रहने से वातरक्त नामक कुष्ट का रोग दूर होता है।

वंगसेन का मत है कि इसकी जड़ और शक्कर को समान भाग लेकर दूधमें पकानेसे जो रस पैदा होता है उस रसको प्रसव कष्टसे पीड़ाता हुई स्त्रीके कानमें डालनेसे उसको तत्काल प्रसव हो जाता है।

हारीत का कथन है कि इसकी जड़ो को उबालकर पीने से बहुत दिनों की उचटी हुई निद्रा फिर गहरे रूपमें आने लगती है।

चरक का मत है कि गोखरू, तालमखाना और एरण्ड की जड़ को दूधमें सिद्धकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात और पथरी रोग दूर होते हैं।

बनावटें—

कामशक्तिवर्द्धक चूर्ण— तालमखाने के बीज, कौंचके दाने, गोखरू, [illegible], [illegible],

शतावरी, सालमपंजा, चोवचीनी, बादाम, चिरोंजी, पिस्ता, खस २, इलायची, केशर, लौंग, जायफल जावित्री, तज, गिलोयका सत्व। इन सब औषधियोंको समान भाग लेकर चूर्ण कर लेना चाहिये। इस चूर्णको आधे तोलेकी मात्रामें दिनमें दो बार घी और शक्करके साथ चाटकर ऊपरसे गायका धारोष्ण दूध पी लेना चाहिये। यह चूर्ण अत्यन्त कामशक्ति वर्द्धक, वाजिकरण और नपुंसकता को दूर करने वाला है।

इसके अतिरिक्त और भी सब प्रकारके कामशक्ति वर्द्धक चूर्णों, अवलेहों और पाकों में तालमखाना एक प्रधान द्रव्य की तरह डाला जाता है जिसका वर्णन चिकित्सा ग्रन्थोंमें देखना चाहिये।

तालीस पत्र

नाम—

संस्कृत—तालीसपत्र, तालीस, धात्रीपत्र, शुकोदर, ग्रथिकापत्र, पत्राढ्य, मुखरोगहर, इत्यादि। हिन्दी—तालीसपत्र, थूनो, बिरमी। बंगाल—तालीसपत्र, बिरमी। काश्मीर—थुनि, बर्मी,भृंगी। बम्बई—बरमी। गुजराती—तालीसपत्र। फारसी—जरनब। अरबी—तालीसफर। लेटिन—Taxas Baccata (टेक्सस बेकेटा)।

वर्णन—

तालीसपत्रके वृक्ष बहुत ऊंचे होते हैं। इसकी डालियां जमीनकी तरफ बहुत झुकी हुई रहती हैं। इसके छोटे वृक्षोंकी छाल रेशम जैसी चिकनी और सफेद होती है। इसकी छोटी डालियोंका एक २ पत्ता चक्कर खाता हुआ निकलता है। इसके पत्ते चपटे और बहुत कम चौड़े अर्थात् ⅛ इञ्च चौड़े और १ से ३ इंचतक लंबे होते हैं। इनके ऊपरका भाग गहरा हरा और चमकदार होता है। यह वृक्ष हमेशा हरा बना रहता है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदिक मतसे तालीसपत्र मधुर, कड़वा, गरम, हलका, तीक्ष्ण, स्वरको सुधारनेवाला, हृदयको हितकारी, अग्निदीपक, और श्वास, खांसी, कफ, वात, क्षय, गुल्म अरुचि, रुधिर विकार, वमन, अग्नि-मांद्य, मुखरोग और पित्तको नष्ट करता है।

बम्बईके अन्दर यह वस्तु दमा, श्वास नलियोंका प्रदाह और कुक्कुर खांसीको दूर करनेके काममें ली जाती है। इसके पत्ते और फल ऋतुस्राव नियामक, शांतिदायक और आक्षेप निवारक माने जाते हैं।

उत्तरी हिन्दुस्तान में इसके पत्ते ब्राम्ही या बिर्मी के नाम से अजीर्ण, और मृगी को दूर करने तथा कामोद्दीपक वस्तु की तौरपर उपयोगमें लिये जाते हैं।

इग्लैंडमें इसके पौधोंका सत निकाला जाता है। यह सत अतिसार, पित्त, नाड़ीकी कमजोरी, दुर्बलता और ऐसा सिर दर्द जिसमें भारीपन हो उपयोगमें लिया जाता है। इसके फलोंका लुआब वायुनलियोंके पुराने प्रदाहमें और इसके पत्ते मृगीरोगमें उपयोगमें लिये जाते हैं।

त्रायमाण *

नाम—

संस्कृत—सुभद्राणी, त्रायंती, बलभद्रिका, देवबला, पालिनी त्रायमाण, भयनाशिनी। हिन्दी—त्रायमाण। यूनानी—गुलजलील। पंजाब—गाफिक। ईरान—फलील अस्फर। अरबी—फलील। लेटिन—Delphinium Zalil (डेलफिनियम फलील)

वर्णन—

यह वनस्पति ईरान के पहाड़ों में विशेष कर पैदा होती है। इसके फूल पीले होते हैं और उन पर कुछ मुलायम कांटे होते हैं। इसके पत्ते छुटे और जड़ें लंबी होती हैं। बजार में इस वनस्पतिके पंचांगके टुकडे मिलते है। इनका रग फीका, हरा और पीला होता है। ताजी हालतमें इनमें शहदके समान गध आती है। इनको पानीमें डालनेके साथ ही पानी पीला और कडवा होजाता है। यह वनस्पति रेशम रंगने के काममें भी आती है।

त्रायमाणके सम्बन्धमें वैद्योंके अन्दर बहुत मतभेद है। भावनगर नरेशने अपने ग्रन्थके पृष्ठ ४६३ मे लिखा है कि यह क्षुद्र वनस्पति पथरीली जमीनमे अपने आप पैदा होती है और इसका आकार भोरींगणीके आकारकी तरह होता है मगर इस बातको माननेके लिये कोई पुष्ट आधार नहीं है। शहरामें गन्धियोंके यहाँ त्रायमाणके नामसे जो जड़ें मिलती हैं उनका आकार वैसा नहीं होता।

डॉक्टर वॉटने कामर्शल प्राडक्टस आफ इंडियामें मखजनुल अदवियाके आधार पर जिस त्रायमाणका वर्णन किया है उसे हिन्दीमें असर्क, संस्कृतमें स्पृक्का और फारसीमें फार कहते है। यह एक सुगन्धित द्रव्य होता है और हिन्दुस्तानमें इसका शाग बनाया जाता है मगर संस्कृत ग्रंथोंमें त्रायमाण के जो गुण बतलाये जाते हैं। वे इसमें नहीं पाये जाते।

जूनागढ़ निवासी वैद्य रघुनाथ इन्द्रजीने अपने निघंटु संग्रह नामक ग्रथमें त्रायमाणका वर्णन करते हुए लिखा है कि इसके पौधे भूपांथरीके पौधोंकी तरह जमीन पर फैले हुए रहते हैं। इन पौधोंके बीचमें से एक खडी शाखा निकलती है। उसीको त्रायमाण कहते हैं। पर यह भी बहुत संशयास्पद है। संस्कृतके अन्दर त्रायमाणके जो नाम दिये गये हैं, जैसे—मार्कव सन्दला (भांगरेके समान पत्तों वाली), अवनी

* नोट :— इस वनस्पति का थोडा परिचय गुलजलील के नामसे इस ग्रन्थके तीसरे भाग में दिया गया है। मगर कुछ विशेष परिचय मिलने की वजह से इसकी यहाँ पर पुनरावृत्ति की जा रही है।

त्रायमाण *

नाम —

संस्कृत—सुभद्राणी, त्रायंती, बलभद्रिका, देवबला, पालिनी त्रायमाण, भयनाशिनी। हिन्दी—त्रायमाण। यूनानी—गुलजलील। पंजाब—गाफिस्स। ईरान—कजील अस्कक। अरबी—कलीज। लेटिन—Delphinium Zalil (डेलफिनियम झलाल)

वर्णन—

यह वनस्पति ईरान के पहाड़ों में विशेष कर पैदा होती है। इसके फूल पीले होते हैं और उन पर कुछ मुलायम कांटे होते हैं। इसके पत्ते छोटे और जड़ें लम्बी होती हैं। बजार में इस वनस्पतिके पंचांगके टुकड़े मिलते है। इनका रंग फीका, हरा और पीला होता है। ताजी हालतमें इनमें शहदके समान गंध आती है। इनको पानीमें डालनेके साथ ही पानी पीला और कड़वा होजाता है। यह वनस्पति रेशम रंगने के काममें भी आती है।

त्रायमाणके सम्बन्धमें वैद्योंके अन्दर बहुत मतभेद है। भावनगर नरेशने अपने ग्रन्थके पृष्ठ ४६३ मे लिखा है कि यह क्षुद्र वनस्पति पथरीली जमीनमें अपने आप पैदा होती है और इसका आकार भोरींगणीके आकारकी तरह होता है मगर इस बातको माननेके लिये कोई पुष्ट आधार नहीं है। शहरोंमें गन्धियोंके यहाँ त्रायमाणके नामसे जो जड़ें मिलती हैं उनका आकार वैसा नहीं होता।

डॉक्टर वॉटने कामर्शल प्राडक्टस आफ इंडियामें मखजनुल अदवियाके आधार पर जिस त्रायमाणका वर्णन किया है उसे हिन्दीमें असर्क, संस्कृतमें स्पृक्का और फारसीमें स्पोर कहते है। यह एक सुगन्धित द्रव्य होता है और हिन्दुस्तानमें इसका शाग बनाया जाता है मगर संस्कृत ग्रंथोंमें त्रायमाण के जो गुण बतलाये जाते हैं। वे इसमे नहीं पाये जाते।

जूनागढ निवासी वैद्य रघुनाथ इन्द्रजीने अपने निघंटु संग्रह नामक ग्रथमें त्रायमाणका वर्णन करते हुए लिखा है कि इसके पौधे भूआंवलीके पौधोंकी तरह जमीन पर फैले हुए रहते हैं। इन पौधोंके बीचमें से एक खडी शाखा निकलती है। उसीको त्रायमाण कहते हैं। पर यह भी बहुत संशयास्पद है। संस्कृतके अन्दर त्रायमाणके जो नाम दिये गये हैं, जैसे—मार्कव सन्दला (भांगरेके समान पत्तों वाली), अवनी

* नोट :— इस वनस्पति का थोड़ा परिचय गुलजलील के नामसे इस ग्रन्थके तीसरे भाग में दिया गया है। मगर कुछ विशेष परिचय मिलने की वजह से इसकी यहाँ पर पुनरावृत्ति की जा रही है।

त्रायमाण ❀

नाम —

संस्कृत—सुभद्राणी, त्रायंती, बलभद्रिका, देवबला, पालिनी त्रायमाण, भयनाशिनी। हिन्दी—त्रायमाण। यूनानी—गुलजलील। पंजाब—गाफिस। ईरान—फलील अस्फक। अरबी—फलील। लेटिन—Delphinium Zalil (डेलफिनियम फलील)

वर्णन—

यह वनस्पति ईरान के पहाड़ों में विशेष कर पैदा होती है। इसके फूल पीले होते हैं और उन पर कुछ मुलायम कांटे होते हैं। इसके पत्ते छोटे और जड़ें लम्बी होती हैं। बजार में इस वनस्पतिके पंचांगके टुकड़े मिलते है। इनका रंग फीका, हरा और पीला होता है। ताजी हालतमें इनमें शहदके समान गंध आती है। इनको पानीमें डालनेके साथ ही पानी पीला और कड़वा होजाता है। यह वनस्पति रेशम रंगने के काममे भी आती है।

त्रायमाणके सम्बन्धमें वैद्योंके अन्दर बहुत मतभेद है। भावनगर नरेशने अपने ग्रन्थके पृष्ठ ४६३ मे लिखा है कि यह क्षुद्र वनस्पति पथरीली जमीनमे अपने आप पैदा होती है और इसका आकार भोरींगणीके आकारकी तरह होता है मगर इस बातको माननेके लिये कोई पुष्ट आधार नहीं है। शहरोंमें गन्धियोंके यहाँ त्रायमाणके नामसे जो जड़ें मिलती हैं उनका आकार वैसा नहीं होता।

डॉक्टर वॉटने कामर्शल प्राडक्टस आफ इंडियामें मखजनुल अदवियाके आधार पर जिस त्रायमाणका वर्णन किया है उसे हिन्दीमें अस्तर्क, संस्कृतमें स्पृक्का और फारसीमे म्होर कहते है। यह एक सुगन्धित द्रव्य होता है और हिन्दुस्तानमे इसका शाग बनाया जाता है मगर संस्कृत ग्रंथोंमें त्रायमाण के जो गुण बतलाये जाते हैं। वे इसमें नहीं पाये जाते।

जूनागढ निवासी वैद्य रघुनाथ इन्द्रजीने अपने निघंटु संग्रह नामक ग्रंथमें त्रायमाणका वर्णन करते हुए लिखा है कि इसके पौधे भूयांवलीके पौधोंकी तरह जमीन पर फैले हुए रहते हैं। इन पौधोंके बीचमें से एक खड़ी शाखा निकलती है। उसीको त्रायमाण कहते हैं। पर यह भी बहुत संशयास्पद है। संस्कृतके अन्दर त्रायमाणके जो नाम दिये गये है, जैसे—मार्कव सन्दला (भांगरेके समान पत्तों वाली), अवनी

❀ नोट:— इस वनस्पति का थोड़ा परिचय गुलजलील के नामसे इस ग्रन्थके तीसरे भाग में दिया गया है। मगर कुछ विशेष परिचय मिलने की वजहसे इसकी यहाँ पर पुनरावृत्ति की जा रही है।

रक्षण (अपने नीचेकी जमीनको ढककर रखने वाली चाहे जैसी बरसात पड़ने पर भी त्रायमाण के पौधेको उखाड़ा जाय तो उसके नीचे की जमीन सूखी निकलती है) इत्यादि लक्षणोंके साथ उसके लक्षण नहीं मिलते।

बंगालके अन्दर बला लताको त्रायमाण माना जाता है। चक्रदत्तकी टीकामें भी शिवदासने बला लताको त्रायमाण लिखा है। मगर यह भी गलती है। आजकल जिसको बला कहते हैं वह त्रायमाण नहीं है क्योंकि त्रायमाण हिमालय पर्वतमें होती है और बला पानी वाली जमीनमें होती है। त्रायमाण वर्षजीवी पौधा होता है और बला बहुवर्ष जीवी पौधा है।

सुप्रसिद्ध वनस्पति शास्त्री स्व० जयकृष्ण इन्द्रजीने इसके सम्बन्ध में लिखा है कि त्रायमाण, बच्छनाग के वर्ग की वनस्पति है इसका नेचरल आर्डर रेनक्यूलस है। यह वनस्पति बबई के बाजार में मिलती है। इसके पत्ते, फूल फल, डंखल, इत्यादि का मिला हुआ पीले रङ्ग का भूकसा ईरान से आता है। बम्बईके अन्दर यह रंगने के काममें लिया जाता है। यह वनस्पति कच्छ, काठियावाड़, गुजरात कोंकण और बंगालकी तरफ पैदा नहीं होती। यह ईरानसे आती है।

इसी मत को स्वीकार करके डाक्टर देसाई ने अपने औषधि संग्रह नामक ग्रन्थ मे इसको रेनक्यूलस नामक वर्ग की औषधियों के अन्दर लिखा है और इसका लेटिन नाम "डेलफिनियम फ़जोज़" और फारसी नाम "अस्पक" और उर्दू नाम "गुल जलील" लिखा है। हमभी इसी मतको मानकर इसका वर्णन दे रहे हैं।

गुणदोष और प्रभावः—

आयुर्वेदके मतसे त्रायमाण कसैली, शीतल, मधुर, दस्तावर, कड़वी तथा पित्तरोग, वमन, ज्वर, गुल्म, कफ, विष, शूल, भ्रम, रक्तरोग, क्षय, ग्लानि, तृषा, हृदयरोग, रक्त पित्त, बवासीर और त्रिदोष का नाश करने वाली है।

इसकी रुचि कड़वी होती है, इसके सेवनसे भूख लगती है, पाचन रस बढ़ता है, अन्न पचता है, पित्त स्राव होता है और दस्त तथा पेशाब साफ होता है। यह पेटकी वायुको नष्ट करती है जिससे उदर शूल और आफरेमें लाभ होता है। इसके पचांगकी राख शामक और कृमिनाशक होती है यह वनस्पति बहुत प्राचीन कालसे आर्य चिकित्साके अन्दर उपयोगमें ली जाती है। मुसलमान चिकित्सक भी इसे बहुत समय से उपयोगमें लेते हैं। कड़वी होनेकी वजहसे यह अजीर्ण रोग और अग्निमांद्यकी वजहसे होनेवाली शरीरकी शिथिलतामें पौष्टिक वस्तुकी तरहसे दी जाती है। मृदुविरेचक और पीड़ाशामक होनेकी वजहसे यह बवासीरमें भी उपयोगी सिद्ध होती है। इसके [illegible] होनेकी वजहसे प्लीहोदर, यकृतोदर, जलोदर और हृदयोदरमें भी [illegible] और

त्रायमाण *

नाम —

संस्कृत—सुभद्राणी, त्रायंती, वलभद्रिका, देवबला, पालिनी त्रायमाण, भयनाशिनी। हिन्दी—त्रायमाण। यूनानी—गुलजलील। पंजाब—गाफिस। ईरान—जलील अस्फक। अरबी—जलीज। लेटिन—Delphinium Zalil (डेलफिनियम झलील)

वर्णन—

यह वनस्पति ईरान के पहाड़ों में विशेष कर पैदा होती है। इसके फूल पीले होते हैं और उन पर कुछ मुलायम कांटे होते हैं। इसके पत्ते छोटे और जड़ें लम्बी होती हैं। बजार में इस वनस्पतिके पंचांगके टुकडे मिलते है। इनका रंग फीका, हरा और पीला होता है। ताजी हालतमें इनमें शहदके समान गंध आती है। इनको पानीमें डालनेके साथ ही पानी पीला और कडवा होजाता है। यह वनस्पति रेशम रंगने के काममें भी आती है।

त्रायमाणके सम्बन्धमें वैद्योंके अन्दर बहुत मतभेद है। भावनगर नरेशने अपने ग्रन्थके पृष्ठ ४६३ मे लिखा है कि यह क्षुद्र वनस्पति पथरीली जमीनमे अपने आप पैदा होती है और इसका आकार भोरींगणीके आकारकी तरह होता है मगर इस बातको माननेके लिये कोई पुष्ट आधार नहीं है। शहरोंमें गन्धियोंके यहाँ त्रायमाणके नामसे जो जड़ें मिलती हैं उनका आकार वैसा नहीं होता।

डॉक्टर वॉटने कामर्शल प्राडक्टस आफ इंडियामें मखजनुल अदवियाके आधार पर जिस त्रायमाणका वर्णन किया है उसे हिन्दीमें असर्क, संस्कृतमें स्पृक्का और फारसीमें फ्रोर कहते है। यह एक सुगन्धित द्रव्य होता है और हिन्दुस्तानमें इसका शाग बनाया जाता है मगर संस्कृत ग्रंथोंमें त्रायमाण के जो गुण बतलाये जाते हैं। वे इसमे नहीं पाये जाते।

जूनागढ़ निवासी वैद्य रघुनाथ इन्द्रजीने अपने निघंटु संग्रह नामक ग्रंथमें त्रायमाणका वर्णन करते हुए लिखा है कि इसके पौधे भूपाथरीके पौधोंकी तरह जमीन पर फैले हुए रहते हैं। इन पौधोंके बीचमें से एक खडी शाखा निकलती है। उसीको त्रायमाण कहते हैं। पर यह भी बहुत संशयास्पद है। संस्कृतके अन्दर त्रायमाणके जो नाम दिये गये हैं, जैसे—मार्कव सन्दला (भांगरेके समान पत्तों वाली), अवनी

* नोट:— इस वनस्पति का थोड़ा परिचय गुलजलील के नामसे इस ग्रन्थके तीसरे भाग में दिया गया है। मगर कुछ विशेष परिचय मिलने की वजहसे इसकी यहाँ पर पुनरावृत्ति की जा रही है।

मृदुविरेचक गुणोंकी वजहसे यह जीर्ण ज्वर और पित्त ज्वरमें भी लाभ पहुँचाती है। इन सब रोगोंमें इस औषधिको दूसरी उपयोगी औषधियोंके साथ दिया जाता है। इसकी राखको नीमके रसमें अथवा घीमें मिलाकर खुजली वगैरह चर्म रोगों पर लगानेसे अच्छा लाभ होता है।

मात्रा—इसकी साधारण मात्रा ३ माशे तक है जो काढ़ा बनाकर दी जाती है। यूनानी हकीम इसको प्रतिदिन १। तोलेकी मात्रामें देते हैं मगर इसकी इतनी बड़ी मात्रासे हृदयको नुक-सान पहुँचने का डर रहता है।

तिड़ी (तिरियो)

नाम—

छोटा नागपुर—मरचइया, तिरियो। सी० पी०—तिरी। लेटिन—Pimpinella Heyneana पिम्पीनेला हाइनियेना।

व० विवरण—

यह एक वार्षिक वनस्पति है। इसका तना सीधा होता है। इसके पत्ते तीन पत्तियों वाले रहते हैं। ये गोल और बरछी आकार के होते हैं। इनका आकार २.२ सें० मीटर लंबा और १.२ सें० मीटर चौड़ा होता है। इनकी नोक बहुत तीखी रहती है इसका फल लंब गोल होता है।

उत्पत्ति स्थान—यह कोकन,दक्षिण उत्तरी कानड़ा,डेकन,सिलोन और चितगाँव में होती पैदा है।

गुण दोष और प्रभाव—

वुडके मतानुसार इसकी जड़ ज्वर में उपयोगी होती है।

क० चोपरा के मतानुसार इसकी जड ज्वरमे उपयोगमें ली जाती है।

तितबेगुम

नाम—

बंगाल—तितबेगुम। आसाम—हाथीभेकुटी। तेलगू—कोंदउस्ती। तामील—कोट्टकटरई। लेटिन—Solanum Torvum (सोलेनम टॉरवम)।

वर्णन—

यह एक झाड़ होता है। इसकी शाखायें आड़ी टेढ़ी होती हैं। इसका पौधा मोटा रींगणी के पौधे से मिलता हुआ होता है।

गुण दोष और प्रभाव—

इस औषधि के सेवन से बढ़ा हुआ यकृत ठीक हो जाता है।

तिंदू

नाम—

संस्कृत—तिंदुक, अनिलसार, असितुस्कक, दतशठ, कालस्कंध, स्फूर्जक, स्फुट, स्पंदन, रावण, कृष्णसार, केंदू, तिंदू, इत्यादि। हिन्दी—तेंदू, तिंदू। बंगाल—गाब, मुकुरकेंडी, तेंदू। बम्बई—गाब, तेंदू, टुंबी, टिम्बारी। बुन्देलखंड—टुंबी। गुजराती—टमरू, टिम्बरवो, क्राविरवो। मराठी—टेम्बुरणी, टिम्बुरी। फारसी—आबनूस हिन्दी। तामील—कट्टाती, तुम्बिक, पनिचाइ, तुवराइ। तेलगू—इलेतु, तनिकि, गाडु, तिन्दुकि। उर्दू—तिंदू। इंग्लिश—Riber Ebony (रायबर इबोनी)। लेटिन—Dios pyros Embryopteris (डिओस्पायरस एम्ब्रायप्टेरिस)।

वर्णन—

तिंदूके वृक्ष हिन्दुस्तानमें पंजाब और सिंधको छोड़कर प्रायः सब दूर होते हैं। इसके वृक्षकी ऊंचाई २५ से लेकर ४० फीटतक होती है। इसके पत्ते भारतवर्षमें सब दूर बीड़ियां बनानेके काममें लिये जाते हैं। इसके फूल सुगंधित और सफेद होते हैं। इनके फल ललाई लिये हुए पीले रंगके होते हैं। इन फलोंके मुँहपर एक पाँच कोने वाला ढक्कन लगा रहता है। इन फलोंके अन्दर चीकूके समान स्वादिष्ट गूदा भरा रहता है जो खानेके काममें आता है। इस गूदेके अन्दर ३। ४ काले रंगकी चमकीली गुठलियां दबी रहती हैं। इस झाड़के एक प्रकारका गोंद लगता है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदिक मतसे तिंदू कसैला, कड़वा, स्निग्ध, गरम, मलनाशक, वातको दूर करने वाला, मलरोधक और दुष्कर होता है। इसका कच्चा फल स्निग्ध, कसैला, हलका, मलरोधक, शीतल, रूखा और वात पैदा करनेवाला होताहै। इसका पका हुआ फल पित्त प्रमेह, रुधिर विकार और पथरीको नष्ट करता है। यह स्वादिष्ट, स्निग्ध, दुर्जर और कफ नाशक होता है। तेंदूका लकड़ी का सार पित्त रोगों को नष्ट करता है।

तिन्दूका गूदा एक प्रभावशाली और उत्तम संकोचक पदार्थ है। श्लेष्म त्वचाके ऊपर इसकी प्रत्यक्ष क्रिया होती है। पुराना आँव और अतिसारमें इसका गूदा बहुत लाभदायक होता है।

यूनानी मत—यूनानी मतसे इसका कच्चा फल पहले दर्जेमें सर्द और खुश्क और पका हुआ फल पहले दर्जेमें गरम और खुश्क होता है। इसका कच्चा फल कब्जियत करने वाला और वात वर्धक है। यह श्वेत प्रदर और सुजाकमें लाभ पहुँचाता है, अनैच्छिक वीर्यस्रावको रोकता है, काम शक्ति वर्धक है। इसका पका हुआ फल वायु, पित्त और खूनके उपद्रवको दूर करता है।

इसके कच्चे फलका अर्क पीनेसे अतिसारमें बहुत लाभ होता है। यह अर्क स्तम्भक भी है। अगर भिलावेंके धुएंसे किसीके शरीर पर सूजन आ जाय तो तिंदूकी लकड़ीको घिसकर लगानेसे फायदा होता है। तिन्दूकी लकड़ी का कालासार हैजा और पित्तके फोड़े फुन्सियोंमें लाभ पहुँचाता है। इसकी छालके काढ़ेमें तिलका तेल मिलाकर आगसे जले हुए स्थान पर लगानेसे शांति मिलती हैं।

हानिग्बरगरके मतानुसार इसके फल और छालमें उत्तम संकोचक तत्व रहता है। इसके फलोंका रस ताजे जख्मों पर लगानेके लिये उत्तम वस्तु है। इसमें टेनिनका बहुत अंश रहता है। इस लिये यह एक ऐसी उपयोगी और घरेलू संकोचक औषधि है जो गरीब से गरीब मनुष्यको भी बहुत आसानी से मिल सकती है। इसके बीजोंसे निकाला हुआ तेल भी यहाँ पर रक्तातिसार और दूसरे पतले दस्तोंमें सफलता पूर्वक उपयोगमें लिया जाता है। इसकी छाल पार्यायिक ज्वरोंमें लाभदायक मानी जाती है। इसके फलोंका रस मुंहके छालो और गलेकी सूजनको दूर करनेके लिये कुल्ले करनेके काममें लिया जाता है। यह रक्तातिसार और उदरामयमे भी बहुत सफलता पूर्वक दिया जाता है।

चरकके मतानुसार इसके पत्ती और छालका रस दूसरी औषधियोंके साथमें सर्प विषको दूर करनेके लिये दिया जाता है।

इसके रसकी कुछ बूंदे आँखमें अञ्जनकी तरह आंजनेसे आँखें साफ होती हैं।

उपयोग—

अतिसार— इसके फलों को जलमें औटाने से जो तेल निकलता है उस तेल की बूंदें सोंठ के जलमे डालकर पिलानेसे अतिसार मिटता है।

(२) इसके बीजोंके चूर्ण की फक्की लेने से अतिसार मिटता है।

मुंह के छाले— इसके फल की फांट बनाकर उससे कुल्ले करने से मुंहके छाले और गलेके छाले मिटते हैं।

ताजे घाव— इसके कच्चे फलमें छेद करने से एक प्रकार का गाढा, कसैला और शोषक रस निकलता है। उस रस को ताजे घावों पर लगाने से बड़ा लाभ होता है।

वर्णन—

तिनिशके वृक्ष हिमालय, मध्य हिन्दुस्तान, अवध, गोरखपुर और गोदावरीके किनारोंपर होते हैं। इसके वृक्षकी ऊंचाई २० से ४० फुटतककी होती है। इसके पिंडकी गोलाई ५ से लेकर ८ फुटतककी होती है। इसकी छाल गहरे भूरे रंगकी होती है। इसके पत्ते चौड़े, अण्डाकृति और २ से ६ इञ्चतक लंबे होते हैं। इसके लाल रंगका गोंद लगता है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदिकमत से तिनिश कसेला, गरम, संकोचक, कफ वातनाशक और रक्तातिसार, कोढ़, प्रमेह, मेद, व्रण, रुधिर विकार, पित्त, श्वेत कुष्ट, कृमि, दाह और पांडुरोगका नाशकरता है। इसके गोंदकी फक्की देनेसे अतिसार मिटता है। तिनिशका गोंद, सौंफ और मिश्री तीनों बराबर लेकर घी में मिलाकर चटानेसे आमातिसार मिटता है। इसकी छालका क्वाथ पिलानेसे ज्वर छूटता है।

छोटा नागपुरके अन्दरके पहाड़ी लोग जब पेशाब बहुत गहरा पीला आता है तब इसका काढ़ा बना कर देते हैं। मध्य प्रान्तके लोग इसकी छालको ज्वरनाशक वस्तुकी तौर पर काममें लेते हैं।

तिपानी

नाम—

मराठी—तिपानी। तामील—अमलई। तैलगू—इरवालू, गुआगुरि, अतिका। उड़िया—सोलोनिया लेटिन—Allophylus serratus (एलोफिलस सेरेटस)।

वर्णन—

यह वनस्पति आसाम, सिलहट, बरमा, सीलोन और भारतवर्षके दक्षिणी हिस्सेमे पैदा होती है। यह एक छोटी पराश्रयी भाड़ी होती है। इसके पत्ते अण्डाकार और दंदार, फूल छोटे और सफेद, तथा फल गोल, फिसलना और पकनेपर लाल होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

बेलफोरके मतानुसार इसकी जड़े सकोचक होती हैं और हिन्दुस्तानके कई भागोंमें अतिसारकी बीमारीको रोकनेके काममें ली जाती है।

तिपानी (२)

नाम—

संस्कृत—ग्राम्यवल्लि, कंदबहुला, कदालु, त्रिपर्णिका। मराठी—पीतमारि, पित्तपापड़ा, पितवेल, तिपानी। उरिया—पित्तमारि। मलयालम—नीलीनरकम। अंग्रेजी Goanese Ipecacuanha गोवानीज इपिकेकुना। लेटिन—Naregamia Alata नरेगेमिया एलेटा।

वि०—यह एक छोटी शाखादार झाड़ी है। इसके पत्ते तीनर के गुच्छोंमें होते हैं। इसके फूलमें ५ पंखड़ियां रहती हैं। इसका फल लंबगोल होता है और इसके बीज दोनों नोकोंपर मुडे हुवे होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

इसकी जड़ मीठी और शीतल होती है। यह विष नाशक और घावको पूरनेवाली है। यह दमा, वायुनलियों का प्रदाह, पित्त और व्रण को मिटाती है।

कोकण में इसके पत्ते और लकड़ी को काढ़ेके रूपमें कड़वे और सुगन्धित पदार्थों के साथमें पित्त नाशक औषधि की तरह देते हैं। इसकी जड़ एक उत्तम वमन कारक और पित्त निस्सारक पदार्थ है। इसे त्रिदोष ज्वर में उपयोग में लाते हैं।

दक्षिणी भारतवर्ष में यह वनस्पति [illegible] और [illegible] उपयोग में लायी जाती है।

कर्नल चोपराके मतानुसार—यह वमन कारक और कफनिस्सारक है। इसे तेज [illegible] में देते हैं। इसमें नरेगेमिन नामका उपक्षार रहता है।

तिमूर

नाम —

नेपाली—तिमूर, टेइरा तिमूर। लेटिन—Zanth[illegible] Oxy[illegible] (जे[illegible] [illegible] ऑक्सिफिलम)।

वर्णन

[illegible]

होती है। इसके पत्ते ३ से लगाकर ९ सेन्टिमीटर तक लम्बे और १.५ से लेकर ४ सेन्टिमीटर तक चौडे होते हैं। इसके फूल गहरे बैंगनी और लाल रंग के होते हैं। इसका फल तिंदू के फल की तरह होता है और उसमें तिंदू की तरह चमकीले, काले बीज होते हैं।

गुण दोष और प्रभाव,—

हिन्दुस्तान में इस वनस्पति की उपयोगिता तिन्दू की उपयोगिता की तरह ही मानी जाती है।

फिलिपाइन द्वीप में इसकी छाल उत्तेजक, अग्नि वर्धक और पौष्टिक मानी जाती है। ज्वर के अन्दर इस वस्तु को पसीना लाने के लिये देते हैं।

तिमुकिंची

नाम—

मलयालम—तिमुकिंची। लेटिन—Gastrochilus Pandurata (ग्रेस्ट्रोचिलस पेण्ड्यूरेटा)

वर्णन—

यह वनस्पति कोकण, अडमान और मलाया प्रायद्वीप में पैदा होती है।

गुण दोष और प्रभाव—

रीड के मतानुसार इसकी जड़ें पेचिश के काम में ली जाती हैं।

तिरफल

नाम—

संस्कृत—तुम्बरू। मराठी—तिरफल, चिरफल, तिसड़। तेलगू—हेट्सा। तामील—रदेट-सामरम्। लेटिन—Zanthoxylum Rhetsa (झेन्थोक्सिलम रेटसा)।

वर्णन—

यह वृक्ष दक्षिणी हिन्दुस्तान और विशेषकर कोकणमें अधिक होता है। यह एक प्रकार की

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमतसे तिल चरपरे, कड़वे, मधुर, कसेले, भारी, कफ पित्तकारक, बलवर्द्धक, केशोंको हितकारी, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाले, व्रणरोपक, चर्मरोगोंमें हितकारी, दंतशूल नाशक, मलरोधक, वात विनाशक और बुद्धिवर्धक होते हैं। सब तिलोंमें कालेतिल उत्तम होते हैं। सफेद तिल मध्यम और वीर्य वर्धक होते हैं और दूसरे तिल हलके होते हैं।

तिल्लीकी खल, मधुर, रुचिकारक, तीक्ष्ण, नेत्रविकार करनेवाली, मलस्तम्भक, रूखी और कफ, वात तथा प्रमेहको नष्ट करनेवाली है।

अर्श रोगके अन्दर तिलको पीसकर गरम करके अर्शपर बांधते हैं और मक्खनके साथ खानेको देते हैं। अर्श रोग प्रायः कब्जियत होनेसे पैदा होता है और दस्त साफ होनेपर उत्तर गुदाके ऊपर दबावकी कमी होनेसे अर्श का जोर कम हो जाता है। इस रोगमें तिल्लीके तेलकी वस्ति या एनिमा देनेसे गुदाके अन्दर १-१॥ बालिश्त तक आतें स्निग्ध होकर मलके गुच्छे निकलजाते हैं जिससे बवासीरमें हलकापन मालूम होता है।

खाँसीके अन्दर तिलके बीजों का काढ़ा बनाकर उसमें मिश्री मिलाकर देते हैं। जिससे कफ निकलकर शांति मिलती है। गले की खराबीके वजह से पैदा हुई सूखी खांसीमें इसके ताजा पत्तों का हिम बनाकर देनेसे गलेमें चिकनाई पैदा होकर खाँसीमें आराम हो जाताहै। नवीन सुजाकमें इसके ताजे पत्तों को १२ घण्टे तक ठंडे पानीमें भिगोकर उस पानी को पिलानेसे अथवा तिल के क्षार को दूध या शहद के साथ देनेसे पेशाब की जलन कम होती है और पेशाब साफ होता है। मूत्राश्मरीके अन्दर भी इसका क्षार लाभ पहुँचाता है।

गर्भाशयके ऊपर तिलकी क्रिया बहुत प्रभावशाली होती है। इनको देनेसे गर्भाशय का संकोचन होता है और उसमें चिकनाई पैदा होनेसे पीडा कम हो जाती है। रक्तगुल्मके अन्दर इनके बीजों का काढ़ा पीपलामूल के साथ देते हैं। स्त्रियोंके अनार्तव में इसके बीजों का काढा बच, पीपलामूल और गुडके साथ दिया जाता है और तिलके पत्तों का काढा बनाकर उस काढ़ेमें रोगिणी को बिठाया जाता है।

तिल का तेल सब प्रकारके व्रण और जखमों के ऊपर लगानेके काममें लिया जाता है। गर्मी के दिनोंमें दूसरे व्रणरोपक या व्रणशोधक द्रव्यों की अपेक्षा यह तेल अधिक हितकारी होता है।

तिलका क्षार निकालने की विधि—

तिल के पंचाग को उखाडकर उसको जलाकर उसकी राख कर लेना चाहिये। उस राख को

डाक्टर ईवन्स का कथन है कि १० ग्रेनकी मात्रामें इसके बीजोंका चूर्ण ऋतुश्राव को नियमित करनेके लिये दिनमें ३।४ बार देकर उन्होंने सफलता प्राप्तकी है। इनका कथन है कि भारतके दक्षिणमें यह विश्वास किया जाता है कि इसके बीज गर्भवती स्त्रीको देनेसे गर्भपात हो जाता है किन्तु इस प्रकार का उदाहरण अभीतक देखनेमें नहीं आया।

वॉट्सका मत है कि उन्होंने इस वस्तुको सुज़ाककी बिमारीमें काममें लिया और यह उपयोगी सिद्ध हुई।

बोस और कीर्तिकरके मतानुसार इसके बीज एक शक्तिशाली ऋतुश्राव नियामक औषधि है। भारत और ब्रिटेनमें यह विश्वास किया जाता है कि अगर अधिक मात्रामें इसके बीजोंको लिया जाय तो ये गर्भपात कर देते हैं।

शारङ्गधरके मतानुसार इसके बीजोंको पानीके साथ पीसकर लेनेसे रक्तार्शमें लाभ होता है।

सुश्रुतके मतानुसार इसके पत्ते सांप और बिच्छूके विषमें लाभदायक है।

रासायनिक विश्लेषण—तिलके अन्दर लोहा, केलशियम, और फास्फोरस की मात्रा काफी पाई जाती है। पौने दो छटाक तिलमें १०.५ मिलिग्राम लोहा,१.४५ग्राम केलशियम और. ५७ ग्राम फास्फोरस पाया जाता है। मनुष्य शरीरके पोषणके लिये जितने केलशियमकी आवश्यकता होती है। उतना केलशियम २। छटाक तिलमें प्रतिदिन मिल सकता है। उसके साथ ही उससे लोहा और फासफोरसकी मात्रा भी प्राप्त हो जाती है। अगर तिलको गुडमें मिलाकर उनके लड्डु बनाकर खाये जायँ तो और भी अधिक लाभदायक होता है क्योंकि पौने दो छटाक गुड़में ११.४ मिलिग्राम लोहा और .०४ ग्राम फास्फोरस अलग मिल जाता है। इसलिये मनुष्य शरीरके दैनिक भोजनमें तिलका होना बहुत जरूरी है।

उपयोग—

खूनी बवासीर—तिलोंको जलके साथ पीसकर मक्खनमें मिलाकर चाटनेसे खूनी बवासीरका खून बंद हो जाता है।

मासिक धर्मकी रुकावट—तिलके काढ़ेमें सोंठ, मिर्च और पीपरका चूर्ण डालकर पिलानेसे मासिक धर्मकी रुकावट मिटती है।

सूखी खांसी—तिल और मिश्रीको औटाकर पिलानेसे सूखी खाँसी मिटती है।

अग्नि से जलना—तिलों को पीसकर अग्निसे जले हुए स्थान पर लेप करनेसे शांति मिलती है।

मोच—तिल और महुओं को पीसकर मोच के ऊपर चाँपने से हड्डी में आई हुई मोच मिट जाती है।

नेत्ररोग—तिलके फूलोंके ऊपर सरदीके दिनोंमें जो ओस पड़ती है उनको एक मलमलके कपड़े से एकत्रित करके शीशीमें भर रखना चाहिये। इस जलको नेत्रोंमें टपकानेसे सब प्रकारके नेत्र रोग मिटते हैं।

अतिसार—तिलके पत्तोंका लुआब पानीमें निकालकर पिलानेसे अतिसार, आमातिसार, विसूचिका और मूत्रनाली के रोगोंमें लाभ होता है। इस लुआबमें अफीम मिला देनेसे यह आमातिसार के लिये और भी प्रभावशाली हो जाता है।

गर्भाशय सम्बन्धी रोग—गर्भाशयमें रुधिरके जमावको बिखेरनेके लिये पाव २ रत्ती तिलोंका चूर्ण दिनमें ३।४ बार देनेसे और इस रोग वाली स्त्री को कमर तक उष्ण जलमें बिठानेसे लाभ होता है।

नागफनी थूहरका कांटा—जब नागफनी थूहरका कांटा किसीको लगजावे और वह चिमटे या और किसी यन्त्रसे न निकाला जावे तो उस जगह तिल्लीका तेल बार बार लगानेसे कुछ समयमें वह कांटा बिना परिश्रमके निकलजाता है।

मस्तक पीड़ा—तिलके पत्तोंको सिरके या पानीमें पीसकर मस्तक पर लेप करनेसे मस्तक पीड़ा मिट जाती है।

पथरी—तिलकी कोंपलोंको छायामें सुखाकर उनको राख करके ४ मासे से १० मासे तक रोज लेनेसे पथरी गलजाती है।

गर्भाशयकी पीड़ा—तिलों को तेलमें पीसकर गरम करके नाभिके नीचे लेप करनेसे सर्दीसे हुई गर्भाशयकी पीड़ा मिटती है।

मुहांसे—तिलोंको सिरस की छाल और सिरके के साथ मलने से मुहांसे मिटते हैं।

विषम ज्वर—तिल्लीकी लुगदीको घीके साथ लेनेसे विषमज्वरमें लाभ होता है।

मकड़ीका विष—तिलकी खल और हल्दीको पानीके साथ पीस कर लेप करनेसे मकड़ी का विष उतरता है।

मिलानेकी सूजन—तिल और मक्खनको पीस कर लेप करनेसे मिलाने से पैदा हुई सूजन मिटती है।

बालोंकी सफेदी—तेलकी जड़ और तिलके पत्तोंके क्वाथसे [illegible] [illegible] [illegible] रंग पैदा होता है।

रसायन—काले तिल और जल भांगरेके पत्तोंका लगातार एक मास तक सेवन करने से और पथ्यमें सिर्फ दूधका आहार करनेसे कई प्रकारके रोग मिटते हैं और रसायन का प्रभाव हो जाता है।

तिलक

नाम—

संस्कृत— तिलक, क्षुरक, श्रीमान्, द्विज पुष्पक, पुण्ड्र पुंड्रक, वासन्त सुन्दर, मुखमण्डन, पुन्नाग, इत्यादि। हिन्दी—तिलक पुष्प। गुजराती—तिलक वृक्ष। मराठी— तिलपुष्पक।

वर्णन—

तिलक वृक्ष का फूल तिलके फूल के समान होता है। इस फूलमें सुगन्धि आती है। इसका फल पीपलके समान और मधुर होता है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मत से तिलक मधुर, स्निग्ध; पौष्टिक, बलवर्धक, मेदजनक, हृदय को हितकारी, हलका, रसमें अत्यन्त उष्ण, पचनेमें चरपरा, रसायन, तीक्ष्ण, रूखा तथा दंतरोग, कृमि, कुष्ट, वात पित्त, कफ, विष, कंडु, व्रण, रुधिर विकार, मुख रोग और वस्ति रोग का नाश करता है। इसको किसी भी क्षारमें मिलाकर देनेसे यह गुल्म, शूल और उदररोग को दूर करता है। इसकी छाल कसैली, गरम, पुरुषार्थनाशक और दन्तरोग, रुधिर विकार, कृमि, व्रण और सूजन को दूर करनेवाली है।

तिलफाडा

नाम—

सीमान्त प्रदेश— तिलफाड़ा। लेटिन— Cocculus Laurifolius (कोक्यूलस लोरिफोलिअस)।

वर्णन—

यह वनस्पति नेपालसे लेकर जम्मू तक ५ हजार फीट की ऊँचाई तक पैदा होती है। मद्रास

गुण दोष और प्रभाव—

इसकी जड़को पत्थर पर पीसकर पानीके साथ मिलाकर जहरीले सर्पोंके काटनेपर पिलाते हैं ऐसा रॉक्स वर्गका कहना है।

महस्कर और केसके मतानुसार इसकी जड़ सर्पके काटनेपर निरुपयोगी है।

क० चोपराके मतानुसार यह सर्प विषको निवारण करनेवाली मानी जाती है। इसमें तिलियाकोराइन नामका उपक्षार रहता है।

त्रिनपालि

नाम—

हिन्दी—त्रिनपालि, कगनी। राजपुताना—धतूरोघास है। अजमेर—कगनी। बरार—रतोप। गुजराती—कासियन, कसियनघास। लेटिन—Manisuris Granularis मेनीसुरीस ग्रेनुलेरिस।

वर्णन—

यह एक प्रकार का घास होता है जो हिन्दुस्तानके गरम भागोंमें पैदा होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

एन्सलीके मतानुसार विहारके अन्दर प्लीहा और यकृतके बढ़ने पर यह औषधि मीठे तेलके साथ मिलाकर खिलाई जाती है।

त्रिपत्र

नामः—

पंजाब—त्रिपत्र। लेटिन— Tripolium Pratense त्रिपोलियम प्रेटेन्स।

गुणदोष और प्रभाव—

क० चोपराके मतानुसार—इसमें ग्लूकोसाइड, त्रिपोलिम और आइसो त्रिपोलिक नामक पदार्थ रहते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

इस औषधिके गुण धर्म अडूसेके गुण धर्मसे मिलते जुलते हैं।

तुइया

नाम—

तेगेलाग—तुइया। लेटिन—Pouzolzia Indica (पाउझोलझिया इंडिका)।

वर्णन—

यह वनस्पति सारे भारतवर्षमें पैदा होती है। इसका तना सीधा रहता है। इसकी वाली लंबगोल और चमकीली होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति उपदंश, सुजाक, और सर्प विषमें उपयोगी है।

तुक्किर (असरून)

नाम—

संस्कृत—कुपन। हिन्दी-बंगाल—तुक्किर,तगर। तामील—मूत्रीकु जेवेई। तेलगु—चेप्पुतुतकू। लेटिन—Asarum Europoeum (असारूम यूरोपियम)।

वर्णन—

यह बहुवर्षायु क्षुद्र वनस्पति हिमालय, काश्मीर वगैरह ठंडे प्रान्तोंमें पैदा होती है। इसके पत्ते मूत्रपिंडके आकारके अखंड और रुएंदार होते हैं। पत्तेका डंठल तीन इंचके करीब लंबा होता है। इसकी जड़ गठानदार, चौकोर और जमीनमें बहुत गहरी घुसी हुई होती है। इस जड़में मिरचके समान गंध आती है।

गुणदोष और प्रभाव—

असरूनके अन्दर गर्मीसे उड़नेवाला एक उड़नशील तेल एक पीले रंगका पदार्थ, और एक

दाह जनक और तेज बौके समान पदार्थ पाया जाता है। इस वनस्पतिके धर्म इपिकेकोना के समान होते हैं। इसके पंचांगके चूर्णको २० से ३० रत्ती तक की मात्रा देनेसे वमन होती है और ३० रत्तीसे अधिक मात्रा देनेसे बहुत जोरका जुलाब होता है। इसके चूर्णको सूंघनेसे नाकसे बहुत कफ गिरकर शिरो विरेचन होजाता है। यह वनस्पति स्वेद जनन, कफ नाशक, वामक, शोथघ्न और शिरो विरेचक है। आखोंकी कैसी ही सूजन में इसको पीसकर पट्टी चढ़ानेसे और पेटमें खिलाने से लाभ होता है। शरीरके अन्दर अगर कफ जड जमावे तो इसके पंचांगकी फांट देनेसे वह बिखर जाता है।

मात्रा—इसकी साधारण मात्रा ३ से ६ रत्ती तक है।

तुख्म हमाज

नाम—

यूनानी—तुख्म हमाज।

वर्णन—

यह एक काले रंगका चमकदार बीज होता है। जो छिलके के अन्दर रहता है। इसके छिलके का रंग लाल होता है।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह प्रथम दर्जेमें सर्द और दूसरे दर्जेमें खुश्क है। यह कब्जियत पैदा करता है। हृदय, आमाशय और यकृत की बीमारियोंमें लाभ दायक है। सीना, [illegible] और तिल्लीकी [illegible] खूनकी दस्तोंको बन्द करता है। रक्त रोधक है, पित्तके जोशको शान्त करता है, [illegible] मुफीद है, आँतोंको साफ करती है, [illegible] शमन और [illegible] है। इसको आगपर भूनकर देनेसे दस्त बन्द होते हैं और बिना भुने हुए देनेसे दस्त खुलकर आता है। यह बिच्छूके विषमें लाभ दायक है। ऐसा कहा जाता है कि जो मनुष्य तुख्म हमाज खाते हैं उनपर बिच्छूका जहर असर नहीं करता। यह [illegible] अन्दर [illegible] पहुँचता है।

हानिकर—इसका अधिक सेवन तिल्ली और गुर्देको नुकसान पहुँचाता है।

दर्पनाशक—इसका दर्प नाशक सौंफ है।

प्रतिनिधि—इसका प्रतिनिधि तुख्म बारतंग है।

मात्रा—इसकी मात्रा ७ माशे से १० माशे तक है।

तुख्म आशिस्त

नाम—

यूनानी— तुख्म आशिस्त।

वर्णन—

ये आशिस्तके बीज हैं। जो पीले रंगके होते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव—

यूनानी मत से ये पहले दर्जे में गरम और तर है। इनका खास उपयोग कामशक्ति को बढ़ाने के लिए किया जाता है। इनके सेवनसे पुरुषों में वीर्य और स्त्रियों में दूध बढ़ता है, मासिक धर्म साफ होता है, सीने की खुजली और खांसी मिटती है, उत्तम रक्त पैदा होता है, इनको पानीसे और लगाने से लकवा, फालिज और कंप वातमें लाभ पहुँचाता है।

मात्रा— इनकी मात्रा ७ माशे से १७ माशे तक है।

तुख्म शरबती

नाम—

यूनानी—तुख्म शरबती।

गुण दोष और प्रभाव

ये शरीरमें प्रसन्नता पैदा करते है। पेट की वायु और अफारा को दूर करते है। [illegible] है। इनको पानीमें पीसकर स्तनों पर लेप करनेसे दूध बढ़ता है।

मात्रा—इनकी मात्रा ६ माशे से १ तोला तक है।

तुख्म फरंज मुश्क

नाम—

यूनानी व हिन्दी—तुख्म फरंज मिश्क। अरबी—[illegible]। लेटिन [illegible] moldavicum (ड्रेकोसेफेलम मोल्डेविकम)।

वर्णन—

यह वनस्पति काश्मीरमें ७ हजार फीटसे ८ हजार फीटकी ऊंचाई तक पैदा होती है। यह एक वर्ष जीवी वनस्पति है। इसकी डालियाँ जड़से ही फूट जाती है। इसके पत्ते २·५ से लेकर ५ सेंटिमीटर तक लंबे होते हैं। इसके बीज लंबगोल होते हैं। कुछ लोगों के मतानुसार तुख्म फेरंज मुश्क माल तुलसीके बीज हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानीमतके अनुसार इसके बीज कड़वे, संकोचक, पौष्टिक और शांतिदायक होते हैं। ये मस्तिष्क की बीमारियोंके लिये लाभदायक हैं।

इरविनके मतानुसार इसके बीज ज्वरमें शांतिदायक पदर्थ की बतौर लिये जाते हैं।

युरोपमें यह वनस्पति पौष्टिक, संकोचक और घाव पूरक मानी जाती है।

कर्नल चोपराके मतानुसार इसके बीज शांतिदायक है और इनमें एक प्रकारका उड़न शील तेल पाया जाता है।

तुख्म बलंगू

नाम—

पंजाब—तुख्म बलगा। लेटिन—Salvia Egyptiaca (सेलविय इजिप्टिका)।

वर्णन—

यह वनस्पति पंजाबके मैदान, सिंध और बलूचिस्तानमें पैदा होती है। यह एक छोटी बहुशाखी झाड़ी है। इसके पत्ते बरछी आकारके और तीखी नोक वाले होते हैं। इसके फूल मंजरीके रूपमें लगते हैं। इसका बीज लंबगोल, चमकीला और काले रंगका होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

इसके बीज हृदय शक्ति वर्धक तथा पागलपन, कम्पन और मरोड़ युक्त पेचिश, में लाभ दायक है इनको ६ माशे की मात्रा में खांडके साथ गायके दूधमें के साथ लेनेसे प्रमेह नाश होता है।

स्टैवर्टके मतानुसार इसके बीज अतिसार, सुजाक और खूनी बवासीरमें लाभदायक है।

हकीम बूलरके मतानुसार यह वनस्पति नेत्ररोगोंमें काममें ली जाता है।

तुख्म मलंगा

नाम—

पंजाब—तुख्म मलंगा। लेटिन—Nepeta Elliptica (नेपेटा इलिप्टिका)।

वर्णन—

यह वनस्पति पश्चिमी हिमालयमें कश्मीरसे कुमाऊं तक ५ हजार फीटसे ८ हजार फीटकी ऊंचाई तक पैदा होती है। इसका तना रुएंदार पत्ते लम्बे गोल और फूल फीके रंगके होते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

इसके बीजोंको ठण्डे पानीमें गलाकर इनका शीत निर्यास पेचिशकी बीमारीमें दिया जाता है।

तुतुम्बड़ी जटा

नाम—

यूनानी—तुतुम्बड़ी जटा।

वर्णन—

यह एक बेल होती है। इसका तना पतला और मजबूत, पत्ते सफेदी माइल, बीज राईके समान और रस कड़वा होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

इसके पत्ते और बीज शक्तिवर्धक है। इनके [illegible] है।

तुम्बरू (नेपाली धनियां)

नाम—

[illegible]—[illegible], तुम्बरू, [illegible]

तुम्बरू, नेपाली धनिया, दरमार, तेजपाल, तेजफल । बंगाल—नेपालीधने, तुन । मराठी–चिरफल, नेपाली धनिया । नेपाल—बलेतिमूर । पंजाब–कबश्रा,तेजबल,तुम्बर, तीमरू । यूनानी—फागीरेह । उर्दू—कबाबेह । लेटिन—Zanthox,lum Alatum (झेंथोक्झिलम एलेटम ।

वर्णन—

यह वनस्पति हिमालयमें सिंधसे कुमाऊतक ५ हजार फीट से ७ हजार फीटतककी उंचाई पर पैदा होती है । नेपालमें भी यह बहुत पैदा होती है । इसके बीज बिलकुल धनियेंकी तरह होते हैं । इनकी गंध और रुचि भी धनियेंके समान ही होती है । इसी लिये इसको नेपाली धनियाँ कहते हैं । यह एक हमेशा हरी रहनेवाली वनस्पति है । इसकी शाखाएं चिकनी और हरी होती हैं । इसका छिलका फीके बादामी रंगका और इसका फल लाल और लंबगोल होता है । इस फलके अन्दर बीज रहते है जो धनियेके समान होते हैं ।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे इसका फल मीठा, कड़वा, गरम, दीपन, पाचन, ग्राही, वायुनाशक, क्षुधावर्धक, कृमिनाशक और उत्तेजक होता है । यह कफ, वात, अर्बुद, शूल, उदर रोग, आंख और कानके रोग, होंठके रोग, सिरका भारीपन, धवल रोग, दमा और तिल्ली तथा पेशाबके रोगोंमें लाभदायक है ।

नेपाली धनियेंके तेलकी क्रिया शरीर पर गंधाबिरोजा और युकलिप्टस ऑइलकी तरह होती है । इसकी छालकी क्रिया दारू हल्दीके समान होती है ।

यह वस्तु उत्तरी हिन्दुस्तानके अन्दर बहुत काममें ली जाती है । वहां इसके बीजोंको हुक्केमें रखकर उनका धूम्रपान दमेको दूर करनेके लिये करते हैं । अजीर्ण और अतिसारको दूर करनेके लिये इसके फलोंका उपयोग किया जाता है । इस वनस्पतिका उत्तेजक धर्म बहुत उत्तम है । इसमें पाया जानेवाला उत्तेजक तत्व इसके ताजे पत्तों और सूखी जड़ोंकी छालमे दिखलाई देता है । इसकी छालका क्वाथ या इसके पत्तोंका रस पीनेसे यह उत्तेजक द्रव्य त्वचाके रास्ते पसीनेके साथ बाहर निकलता है । जिसकी वजहसे श्लेष्मत्वचा और व्रणोंकी शुद्धि हो जाती है और शरीरमे यदि ज्वर हो तो पसीनेकी राहसे हलका पड जाता है । इसके ताजे पत्तोंको पीसकर चांवलके आटेके साथ गरम करके गलेपर बाँधनेसे गलेकी सूजन मिट जाती है । व्रणरोगमें इसके फलोंको खिलानेसे और इसके चूर्णको व्रणपर भुर भरानेसे और इसकी छालके काढ़ेसे व्रणको धोनेसे बड़ा लाभ होता है ।

रसायनिक विश्लेषण— इसकी छालके अन्दर एक उडनशील तेल, राल और एक प्रकार का कडवा रवेदार सत्व पाया जाता है । यह सत्व और दारुहल्दी में पाया जाने वाला सत्व करीब २

समान होते हैं। इसके फलोंमें एक प्रकारका स्थिर और सुगन्धित तेल रहता है। यह तेल और गन्धाबिरोजा का तेल करीब २ समान होता है। इस तेलमें रंग नहीं होता। किन्तु युकलिप्टस ऑइल की तरह एक मनोहर सुगन्ध होती है।

यूनानी मत— यूनानी मतसे इसके बीज सुगन्धित, तीक्ष्ण और पौष्टिक होते हैं। अपने संकोचक गुण की वजह से ये अतिसार में बहुत लाभ पहुँचाते हैं। पेट का आफरा, छाती के रोग, मस्तिष्क की बीमारियाँ, पागलपन और रक्तविकारमें भी यह बहुत लाभदायक है। इसके सेवनसे यकृत मजबूत होता है, जठराग्नि प्रबल होती है और मुँह की सूजन मिटती है।

ज्वरमें यह औषधि एक सुगन्धित और पौष्टिक पदार्थ की तरह काममें ली जाती है। हैजे और मन्दाग्निमें भी यह मुफीद है।

निघण्टु रत्नाकर और योग रत्नाकर के मतानुसार इसके फूल दूसरी औषधियों के साथमें सर्पविष को दूर करने के लिए देते हैं।

कर्नल चोपरा के मतानुसार यह औषधि सुगन्धित, पौष्टिक, ज्वरमें लाभदायक और अग्निवर्धक तथा हैजेमें फायदा पहुँचानेवाली होती है।

मात्रा— इसके फल की मात्रा २ रत्तीसे ५ रत्ती तक है और छाल की मात्रा १ तोलेसे २ तोले तक है जो क्वाथ बनाकर दी जाती है।

उपयोग—

पित्त की मंदाग्नि— मिश्रीके साथ इसके बीजों की फक्की देनेसे पित्त की मन्दाग्नि मिटती है।

पित्तातिसार—बेलके शरबत के साथ इसकी फक्की देनेसे पित्तातिसार मिटता है।

पठिया—इसकी छाल को औटाकर पीनेसे पठिया मिटती है।

दांतकी पीड़ा— इसकी शाखा और कांटों को औटाकर कुल्ले करनेसे दांत की पीड़ा मिटती है। इसकी शाखासे दाँतुन करनेसे दांत निर्मल हो जाते हैं।

बिच्छूविष— इसकी जड़ की छाल का क्वाथ पिलानेसे बिच्छूविष में लाभ होता है।

जहरीली सूजन— इसका तेल लगानेसे जहर की सूजन मिटती है

तुम्भुल

नाम—

बिहार— तुम्भुल। नेपाल—डरीलो। लेटिन—Hyperoum patulum (हायपेरिकम पेटुलम)।

वर्णन—

यह वनस्पति खासिया पहाड़ियों में और हिमालयके समशीतोष्ण प्रान्तमें पैदा होती है। यह एक हमेशा हरी रहने वाली झाडी है। इसकी शाखायें नाजुक और लालरंग की होती हैं इसके पत्ते १५ से लेकर ४५ सेंटिमीटर तक लम्बे और ८ से लेकर २० सेंटिमीटर तक चौडे होते हैं।

गुण दोष और प्रभाव,—

पटनामें इस वनस्पति के सुगंधित बीज एक सुगन्धित और उत्तेजक पदार्थ के रूपमें काम में लेते हैं।

इंडोचायना में इसे कुत्ते के काटने पर या मधुमक्खीके काटने पर लगानेके काममें लेते हैं।

तुरंजबीन

नाम—

संस्कृत—यवास शर्करा। यूनानी—तुरंजबीन।

वर्णन—

यह एक प्रकारकी शक्कर होती है जो खुरासानमें जवासेके वृक्षों पर ओसके कण पडनेसे जम जाती है। ऐसा कहा जाता है कि जमनाके किनारेपर भी कुछ वृक्षोंपर यह जमती है। इसका स्वाद मीठा होता है।

गुण दोष और प्रभाव—

यूनानीमत—इसकी क्रिया शक्करकी तरहही होती है मगर इसमें शक्करसे तरी अधिक है। तुरंजबीन वात, पित्त और कफ तीनों ही प्रकृतियोंको लाभदायक है। यहप्यास बुझाती है। हलक और सीनेमें तरी पैदा करती है और उनको मुलायम रखती है। इससे दस्त साफ होता है। पित्तके विकारको यह दस्त की

राह निकाल देती है। खांसी, सीनेके दर्द और बुखारमें यह लाभ पहुँचाती है। इसको जीरेके पानीके साथ देनेसे हलकी बुखारमें लाभ होता है २-२॥ तोला तुरंजबीनको भैंसके दूधके साथ रोजाना लेनेसे कामशक्ति बढ़ती है और शरीर मोटा हो जाता है।

तेज बुखार, शीतला, खूनके दस्त, बवासीर और पेशाबके साथ खून जानेकी बीमारीमें यह औषधि बहुत नुकसान पहुँचाती है।

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदिक मतसे तुरंजबीन पौष्टिक, पित्तनाशक, ज्वरको दूर करनेवाली, अग्निदीपक, शीतल और पुरानी हालेपर दस्तावर है। गर्भवती स्त्री, दुर्बल बालक और वृद्ध मनुष्योंको इससे दस्त कराना चाहिये।

राज निघण्टुके मतसे यह शीतल, स्वादिष्ट, कसैली, वीर्य वर्धक, कड़वी, मधुर तथा भ्रम, पित्त और तृषा नाशक है।

यह ध्यानमें रखनेकी बात है कि यूनानी हकीम इसको पहले दर्जेमें गरम और तर बतलाते हैं।

नुकसान—इसका अधिक सेवन तिल्ली और मेदेको नुकसान पहुँचाता है। मतली पैदा करता है। गरम प्रकृतिवालोंके लिये यह विशेषरूपसे हानिकारक है।

दर्पनाशक—इसके दर्पको नाश करनेके लिये इमलीका काढ़ा और उन्नाव या आलू बुखारेका पानी देना चाहिये।

प्रतिनिधि—इसके प्रतिनिधि मिश्री, शकर और शीरेखिश्त (यावनाल शर्करा) हैं।

मात्रा—१ तोलेसे २ तोलेतक है।

—

तुलसी

नाम—

संस्कृत—तुलसी, वैष्णवी, वृन्दा, सुगन्धा, भूत द्रावणी, अमृता, बहुपत्रा, पवित्रा, सुरवल्ली, सुलभा, देवदुन्दुभी, ग्राम्या, विष्णुवल्लभा, माधवी तुलसी, देव दुन्दुभी, विष्णुपत्नी, कायस्था, श्यामा, लक्ष्मी, श्रीकृष्णवल्लभा। हिन्दी—तुलसी, रामतुलसी, काली तुलसी। बंगाल—तुलसी, काला तुलसी, कुरल। बम्बई—तुलस, तुलसा। गुजराती—तुलसी। मराठी—तुलस। तेलगू—तुलसि गंगेर, कृष्ण तुलसी। पंजाब—तुलसी। तामील—तुलसी। इंग्लिश—H... B... लेटिन—O... Sanct... आसिमम सेक्टम।

वर्णन—

तुलसी सारे हिन्दू समाजके अन्दर एक पूज्य निगाहसे देखी जाने वाली वनस्पति है। हिन्दुओं का बच्चा २ इस वनस्पतिसे परिचित है। इसलिये इसर विशेष वर्णनकी आवश्यकता नहीं। इसकी काली और सफेदके भेदसे दो जातियां होती हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदिक मतसे सफेद और काली तुलसी तीखी, गरम, दाह जनक, पित्त कारक, हृदयको लाभदायक, कसैली, अग्निदीपक, पचनेमें हलकी तथा वायु, कफ, श्वास, खांसी, हिचकी और कृमिको नष्ट करने वाली और वमन, दुर्गन्ध, कुष्ट, पार्श्वशूल, विष, मूत्रकृच्छ्र, रक्तदोष और भूतबाधा, धनुर्वात, हिस्टीरिया, शूल और ज्वरको नष्ट करने वाली है। सफेद और काली तुलसी एक समान गुणवाली है।

पद्मोत्तर पुराणमें लिखा है कि जिस घरके सामने तुलसीका बाग रहता है वह घर तीर्थके समान पवित्र रहता है और उसके सामने यमके दूत और दूसरी प्राणनाशक व्याधियां नहीं आने पाती। तुलसी की गन्धको ग्रहण किया हुआ वायु जहां २ जाता है वहां २ की हवा तत्क्षण शुद्ध हो जाती है।

मलेरिया ज्वर और तुलसी—

तुलसी के रसमे मलेरिया ज्वरके कीटाणुओं को नष्ट करने की अद्भुत शक्ति पाई जाती है। सर जार्ज वर्ड वुडने २६ अप्रेल सन् १६०७ के टाइम्स में लिखा था कि बम्बईमें जब विक्टोरिया गार्डन और अलबर्ट अजायब घर खोले गये तब जो आदमी वहां काम करनेके लिये लगाये गये वे मलेरिया ज्वरके मारे तंग आ गये। तब एक हिन्दू कर्मचारी की रायसे उस बगीचेके चारों ओर तुलसीके झाड़ लगा दिये गये जिसका परिणाम यह हुआ कि वहांसे मच्छर और मलेरिया ज्वर बहुत जल्दी बिदा हो गये।

ईसवी सन् १७०७ में इम्पिरियल मलेरिया कान्फ्रेंसने इस बातको जाहिर किया कि काली तुलसी से मलेरियाका बहुत कम उपद्रव हो जाता है।

लण्डनके इम्पीरियल इन्स्टीट्यूटके डाक्टर मोल्डिंग तथा डॉक्टर पेलोने यह बतलाया कि तुलसीके अन्दर एक ऐसा उड़न शील तेल रहता है जो हवामें मिलकर ज्वरको उत्पन्न करने वाले सब जन्तुओं को नष्ट कर देता है।

शार्ङ्गधर का मत है कि तुलसीके पत्तोंका रस १ से २ तोला लेकर उसमें १॥ माशेसे ३ माशे तक काली मिरचका चूर्ण मिलाकर पीनेसे विषम ज्वर नष्ट होता है।

डाक्टर देसाई का मत है कि तुलसी ज्वर नाशक, सर्दी को मिटाने वाली, वात हर, कफघ्न, उत्तेजक और वायुनाशक है। इसके बीज मूत्रल हैं।

तुलसी शीत प्रधान रोगोंमें विशेष रूपसे उपयोगमें ली जाती है। ज्वरके अन्दर इसके स्वरसको काली मिरचोंके साथ दिया जाता है और जोड़ोंके दर्द तथा सन्धियोंकी सूजनमें इसको अपामार्ग और निर्गुण्डीके साथ देते हैं। सरदीके बुखारमें यह बहुत उपयोगी वस्तु है। इसके सेवनसे सरदी छातीमें नहीं उतरने पाती। छातीमें उतरी हुई सरदी कफके मार्गसे बाहर निकल जाता है। जिससे छातीका दर्द भी कम हो जाता है। कफके रोगोंमें तुलसीका रस शहदके साथ दिया जाता है। जिस ज्वरके साथ सन्धियोंकी सूजन या जोड़ोंका दर्द रहता है उसमें तुलसीकी जड़ों को पौंट बनाकर दी जाती है। अधिक दिनों तक चलने वाले अविराम ज्वरमें तुलसीका रस सारे शरीर पर मसलनेसे रोगीको शांति मिलती है और दूसरे उपद्रव होनेका कोई डर नहीं रहता है। जिन स्थानों पर मलेरिया ज्वरका प्रकोप अधिक रहता है। वहाँ पर तुलसीके पौधे लगानेसे ज्वरका प्रकोप कम हो जाता है।

आंतोंके अन्दर तुलसी का प्रभाव कृमिनाशक और वातशामक होता है। यह आंतोंके अन्दर के कृमियों को नष्ट कर देती है। इसके स्वरस से वमन बंद होती है और दस्त साफ होता है। बच्चों की पाचन नलिकाके विकारमें और विशेष कर यकृत वृद्धिमें इसके पत्तों की पौंट लाभदायक होती है। दाद पर इसका रस चुपड़ने से दाद मिटता है। घावों को इसके स्वरस से धोनेसे उनमें कीड़े नहीं पड़ते और वे जल्दी भर जाते हैं। पीनस रोगमें इसके रस को सूंघने से लाभ होता है। इसके बीजों का हिम जीरा, खड़ी शक्कर, और दूधके साथ देनेसे सुजाक, बस्तिशोथ, मूत्रदाह और मूत्रपिंड की पथरीमें लाभ होता है।

एंसलीके मतानुसार तुलसी की जड़ का काढ़ा ज्वरमें लाभ पहुँचाता है। कोंकणमें इसके पत्तों का काढ़ा काली मिरच के साथ सार्वदेहिक ज्वरोंमें दिया जाता है। यह गठियाके उपयोगमें भी आती है। इसके पत्ते जुकाम को मिटानेवाले और कफ निस्सारक हैं। इसका रस काली मिरच के साथमें जुकामवाले ज्वरमें दिया जाता है।

तुलसी और चर्म रोग—

तुलसीके अन्दर थायमल नामक एक तत्व पाया जाता है। इसका उपयोग चर्मरोगों के ऊपर बहुत सफलतापूर्वक होता है। इसके पंचांग का चूर्ण करके उसको नींबूके रसके साथ लगाने से दाद, खुजली, इत्यादि चर्म रोग दूर होते हैं। जिन घावोंके अन्दर कीड़े पड़ गये हों उन घावों पर इसके चूर्ण को भुरभुराने से वे कीड़े मर जाते हैं। कुष्ट रोगके ऊपर भी यह औषधि अपना प्रभाव दिखलाती है। एक स्थानपर लिखा है कि—

"कुष्ट और वातरक्त के महारोग जो चमड़े को छेद करके मांस और हड्डियों में भी छिद्र पैदा

वर्णन—

तुलसी सारे हिन्दू समाजके अन्दर एक पूज्य निगाहसे देखी जाने वाली वनस्पति है। हिन्दुओं का बच्चा २ इस वनस्पतिसे परिचित है। इसलिये इसके विशेष वर्णनकी आवश्यकता नहीं। इसकी काली और सफेदके भेदसे दो जातियां होती हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदिक मतसे सफेद और काली तुलसी तीखी, गरम, दाह जनक, पित्त कारक, हृदयको लाभदायक, कसेली, अग्निदीपक, पचनेमें हलकी तथा वायु, कफ, श्वास, खांसी, हिचकी और कृमिको नष्ट करने वाली और वमन, दुर्गन्ध, कुष्ट, पार्श्वशूल, विष, मूत्रकृच्छ्र, रक्तदोष और भूतबाधा, धनुर्वात, हिस्टीरिया, शूल और ज्वरको नष्ट करने वाली है। सफेद और काली तुलसी एक समान गुणवाली है।

पद्मोत्तर पुराणमें लिखा है कि जिस घरके सामने तुलसीका बाग रहता है वह घर तीर्थके समान पवित्र रहता है और उसके सामने यमके दूत और दूसरी प्राणनाशक व्याधियां नहीं आने पातीं। तुलसी की गन्धको ग्रहण किया हुआ वायु जहां २ जाता है वहा २ की हवा तत्क्षण शुद्ध हो जाती है।

मलेरिया ज्वर और तुलसी—

तुलसी के रसमें मलेरिया ज्वरके कीटाणुओं को नष्ट करने की अद्भुत शक्ति पाई जाती है। सर जार्ज वर्ड वुडने २६ अप्रेल सन् १६०८ के टाइम्स मे लिखा था कि बम्बईमें जब विक्टोरिया गार्डन और अलबर्ट अजायब घर खोले गये तब जो आदमी वहां काम करनेके लिये लगाये गये वे मलेरिया ज्वरके मारे तग आ गये। तब एक हिन्दू कर्मचारी की रायसे उस बगीचेके चारों ओर तुलसीके झाड़ लगा दिये गये जिसका परिणाम यह हुआ कि वहांसे मच्छर और मलेरिया ज्वर बहुत जल्दी विदा हो गये।

ईसवी सन् १७०७ में इम्पिरियल मलेरिया कान्फ्रेंसने इस बातको जाहिर किया कि काली तुलसी से मलेरियाका बहुत कम उपद्रव हो जाता है।

लण्डनके इम्पीरियल इन्स्टीट्यूटके डाक्टर मोल्डिग तथा डॉक्टर पेलोने यह बतलाया कि तुलसीके अन्दर एक ऐसा उड़न शील तेल रहता है जो हवामें मिलकर ज्वरको उत्पन्न करने वाले सब जन्तुओं को नष्ट कर देता है।

शार्ङ्गधर का मत है कि तुलसीके पत्तोंका रस १ से २ तोला लेकर उसमें १॥ माशेसे ३ माशे तक काली मिरचका चूर्ण मिलाकर पीनेसे विषम ज्वर नष्ट होता है।

डाक्टर देसाई का मत है कि तुलसी ज्वर नाशक, सर्दी को मिटाने वाली, वात हर, कफघ्न, उत्तेजक और वायुनाशक है। इसके बीज मूत्रल हैं।

तुलसी शीत प्रधान रोगोंमें विशेष रूपसे उपयोगमें ली जाती है। ज्वरके अन्दर इसके स्वरसको काली मिरचोंके साथ दिया जाता है और जोड़ोंके दर्द तथा सन्धियोंकी सूजनमें इसको अपामार्ग और निर्गुण्डीके साथ देते हैं। सरदीके बुखारमें यह बहुत उपयोगी वस्तु है। इसके सेवनसे सरदी छातीमें नहीं उतरने पाती। छातीमें उतरी हुई सरदी कफके मार्गसे बाहर निकल जाता है। जिससे छातीका दर्द भी कम हो जाता है। कफके रोगोंमें तुलसीका रस शहदके साथ दिया जाता है। जिस ज्वरके साथ सन्धियोंकी सूजन या जोड़ोंका दर्द रहता है उसमें तुलसीकी जड़ों की फाँट बनाकर दी जाती है। अधिक दिनों तक चलने वाले अविराम ज्वरमें तुलसीका रस सारे शरीर पर मसलनेसे रोगीको शांति मिलती है और दूसरे उपद्रव होनेका कोई डर नहीं रहता है। जिन स्थानों पर मलेरिया ज्वरका प्रकोप अधिक रहता है। वहाँ पर तुलसीके पौधे लगानेसे ज्वरका प्रकोप कम हो जाता है।

आंतोंके अन्दर तुलसी का प्रभाव कृमिनाशक और वातशामक होता है। यह आंतोंके अन्दर के कृमियों को नष्ट कर देती है। इसके स्वरस से वमन बंद होती है और दस्त साफ होता है। बच्चों की पाचन नलिकाके विकारमें और विशेष कर यकृत वृद्धिमें इसके पत्तों की चाय लाभदायक होती है। दाद पर इसका रस चुपड़ने से दाद मिटता है। चूहों को इसके स्वरस [illegible] उनमें [illegible] नहीं रहते और वे जल्दी मर जाते हैं। [illegible] इसके रस का [illegible] से लाभ होता है। इसके [illegible] जीरा, खडी शक्कर, और दूधके साथ देने [illegible], [illegible], [illegible] और [illegible] को [illegible] लाभ होता है।

[illegible] के मतानुसार तुलसी की जड़ [illegible] है। [illegible] का काढ़ा [illegible] के साथ [illegible] [illegible] है। इसके पत्ते [illegible] और [illegible] है। [illegible] बुखारवाले ज्वरमें दिया जाता है।

तुलसी और चर्म रोग—

तुलसीके अन्दर [illegible] है। [illegible] ऊपर बहुत [illegible] होता है। [illegible] लगाने से दाद, [illegible] है। [illegible] घावों पर इसके पत्तों [illegible] है। [illegible] है [illegible]—

[illegible]

हों तो उनका भी राम तुलसीके प्रयोगसे नाश हो" जाता है। ऐसा कहा जाता है कि तुलसी के पौधोंमें नर और मादा दो जातियां होती हैं। इनमे से नर जाति पुरुषों के रोगोंके लिए और मादा जाति स्त्रियोंके रोगोंके ऊपर काम मे ली जाती है।

जंगलनी जडी बूटीके लेखक लिखते हैं कि वातरक्त नामक कुष्टके एक रोगी को जिसकी उंगलियाँ गल गई थी और चेहरा कुरूप हो गया था एक सन्यासी ने एक वर्ष तक तुलसी का रस पिलाकर रोग मुक्त कर दिया जिसको हमने स्वय देखा है।

शरीरके ऊपर सफेद दाग पड़ जाना, मुँह के ऊपर लीलें और झांई होकर चेहरे का कुरूप हो जाना इत्यादि रोगों पर भी तुलसी का रस बहुत काम करता है। कविराज रामचन्द्र विद्याविनोद का कथन है कि ताँबे के बरतन में एक दिन भर नींबू का रस भरकर रखना चाहिये। फिर उसमें समान भाग तुलसी का रस और काली कसोंदी का रस डालकर धूपमें रख देना चाहिये। जब वह रस कुछ गाढ़ा होजाय तब उसको चेहरे पर लगाने से चेहरे की झाई, कालेदाग, कीलें इत्यादि नष्ट होकर चेहरा सुन्दर हो जाता है। इस औषधि को निरतर लगाते रहने से शरीरके सफेद दाग भी मिट जाते हैं।

सांपका जहर और तुलसी—

चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट, इत्यादि प्राचीन आचार्य, भावप्रकाश, योगरत्नाकर, इत्यादिके कर्त्ता मध्यकालीन आचार्य और बापट, राबर्टस् इत्यादि आधुनिक चिकित्सकोंने तुलसीके प्रत्येक हिस्सेको सापके विषमें उपयोगी माना है और आधुनिक कई उदाहरणोंसे यह बात प्रत्यक्ष देखी जा चुकी है कि सापके काटे हुए व्यक्तिको अगर समयके ऊपर तुलसीका सेवन कराया जाय तो उसकी जान बच सकती है। साप काटनेके पश्चात् तुरंत १।२ मुट्ठी तुलसीके पत्ते खा जाना चाहिये और उसके साथ ही तुलसीकी जड़को मक्खनमे घिसकर जिस स्थानपर काटा हो उसपर लेप कर देना चाहिये। शुरूमें इस लेपका रंग सफेद होता है मगर ज्यों २ वह जहरको खींचता है त्यो २ उसका रंग काला पडता जाता है। इसलिये काला पड़ते ही उसको हटाकर उसकी जगह दूसरा लेप कर देना चाहिये। यह लेप तब तक बदलते रहना चाहिये जब तक कि वह काला पडना बंद न हो जाय। जब वह काला न पड़े तब समझना चाहिये कि अब जहरका प्रभाव नष्ट हो गया है।

बगालके प्रबुद्ध भारत पत्रके आधारसे कलकत्ताके माडर्नरीव्यू पत्रने अपने अक्टूबर सन् १९२६के अकमें एक घटना प्रकाशितकी थी। वह इस प्रकार है।

"प्रबुद्ध भारत पत्रने हालही में यह प्रकाशित किया है कि थोड़े समय पहिले हमारे आश्रममें यह खबर आई कि पास हीके एक गांवमें एक मनुष्यको सांपने काटा है। यह सुनते ही हमारे आश्रमके २ स्वामी उसकी चिकित्साके लिये वहांसे निकले। सौभाग्यसे ग्राम रिवाजके मुताबिक उस व्यक्तिको जिसस्थान

पर साँपने काटा था उस स्थानके कुछ ऊपर रस्सीका बंध लगा दिया था। मगर बंध कुछ देरीसे और कुछ ढीला लगनेकी वजहसे स्वामीजीके पहुँचनेके पहिले ही वह मनुष्य बेहोश हो गया था। स्वामीजीने वहाँ पहुँचते ही तुरत तुलसी मगाई और उसको कूटकर उसका रस निकाल लिया। साथ ही केलेके पिंड का थोड़ा सा रेशा मगाकर उसका भी रस निकाल लिया। तुलसीका रस रोगीके मस्तकपर, कपालपर और छातीपर खूब मालिश किया गया और केलेका रस आधा औंस पिलाया गया। यह प्रयोग प्रति ५ मिनट अथवा १० मिनटके अन्तरसे चालू रक्खा गया। इस प्रकार ६।७ घंटेके लगातार उपचारके पश्चात् रोगीको होश आने लगा। इतनी देर लगनेका कारण यह था कि रोगीको साँप काटे आठ घंटे हो चुके थे इसके पश्चात् इलाज शुरू किया गया था।

रोगीके होशमें आनेके पश्चात् दंश स्थानपर चाकूसे आड़े टेढ़े चरके लगाये गये और फिर मुर्गी का एक बच्चा लेकर उसकी गुदापरके पंख साफ करके उसपर भी आड़े टेढ़े कार लगाये गये और उसकी गुदा का स्थान साँप काटी हुई जगहपर जोर से चिपका दिया गया। ३।४ मिनिटमें मुर्गी का वह बच्चा सर्प विष के प्रभाव से मर गया। उसके पश्चात् क्रमशः ४ मुर्गी के बच्चे उसी प्रकार उस जगह पर चिपकाये गये और वे भागे थोड़ी थोड़ी देरमें मर गये। जब छठा मुर्गी का बच्चा उसको लगाया गया तब उस बच्चे पर जहर का असर नहीं हुआ। तब यह समझा गया कि उसका जहर नष्ट हो गया है। तब उसको एनेमा लगा कर दस्त करा दिया और २४ घण्टे में वह रोगी [illegible] की तरह स्वस्थ हो गई।

उपरोक्त पत्र लिखता है कि सर्पदंश के [illegible] [illegible] मगर [illegible] न हो सके और उसमें हिंसा की भावनाएं मालूम पड़े तो सिर्फ तुलसी का रस और केले के [illegible] का रस देते रहने से बहुत उत्तम परिणाम नजर आता है। [illegible] [illegible] दी गई हो, यह मेद शाह [illegible] [illegible] उसके बाद [illegible] तुलसी के रस [illegible] [illegible] रहने से [illegible] [illegible] [illegible] पत्ती के रस [illegible] लेकर [illegible] का जहर [illegible]

तुलसी और नपुंसकता—

[illegible]

गायके धारोष्ण दूधके साथ लिया करें तो ५।६ सप्ताह में ही उनकी सब शिकायतें दूर होकर उनका पुरुषार्थ असली अवस्थामें आजाता है और अकाल में आनेवाली वृद्धावस्था से वे बचे रह सकते हैं।

उपयोग—

खाँसी—तुलसी के पत्तों के रस को अडूसे के पत्तों के रस के साथ देने से खाँसी में बड़ा लाभ होता है।

बादी का दर्द—मेदे की खराबी से शरीर में जो बादी का दर्द हो जाता है। उसको मिटाने के लिये तुलसी के पत्तों का काढ़ा पिलाना चाहिये।

यकृत के रोग—तुलसी के पत्तों के काढे से बच्चों के यकृत की खराबी मिट जाती है।

कर्ण शूल—तुलसी के पत्तों का ताजा रस गरम करके कान मे टपकाने से कर्ण शूल फौरन बन्द होता है।

सूखी खांसी—तुलसी की मञ्जरी, सोंठ, प्याज का रस और शहद मिलाकर चटाने से सूखी खांसी और बच्चों के दमे में लाभ होता है।

मलेरिया ज्वर—तुलसी के पत्तों का काढा अथवा इनका स्वरस काली मिर्च के साथ देने से पसीना देकर ज्वर उतर जाता है और घबराहट भी दूर हो जाती है।

दन्त शूल—काली मिर्च और तुलसी के पत्तों को पीसकर उसकी गोली बनाकर दाँत के नीचे रखने से दन्तशूल दुर होता है।

गर्भ निरोध—तुलसी के पत्तो के काढ़े की १ प्याली प्रति मास रजोदर्शन के बाद ३ दिन तक अगर स्त्री पी लिया करे तो उसको गर्भ नहीं रहता है।

दाद—नीबू के रस के साथ तुलसी के पत्तों को पीसकर दाद पर लगाने से दाद अच्छा हो जाता है।

सर्प विष—साँप के जहर में तुलसी के पत्तों का स्वरस पिलाने से और इसकी मञ्जरी और जडों का लेप दशित स्थान पर बार २ करने से साँप का जहर नष्ट हो जाता हैं। अगर रोगी बेहोश होगया हो तो इसके रस को रोगी के कान और नाक मे टपकाते रहना चाहिये।

पीनस रोग—तुलसी के पत्ते या मञ्जरी के चूर्ण को नस्य रूप में सूंघते रहने से पीनस रोग में लाभ होता है। इससे मस्तक के कृमि नष्ट होकर नाक से बदबू का आना मिट जाता है।

पुरुषार्थ वृद्धि—तुलसीकी जड़को पानीमें घिसकर कामेन्द्रियपर लेप करनेसे और तुलसीके बीजोंके चूर्णको समान काली मूसलीके चूर्णमें मिलाकर गायके धारोष्ण दूधके साथ सेवन करनेसे काम शक्ति बहुत प्रबल होती है।

कांतिवर्धन—तुलसीके पत्तोंको पीसकर चेहरे पर उबटन करनेसे चेहरेकी कांति बढ़ती है।

कानके पीछेकी सूजन—तुलसीके पत्ते, अरंडीकी कोंपलें और थोड़े नमकको पीसकर उसका कुनकुना लेप करनेसे कान के पीछेकी सूजन नष्ट हो जाती है।

मूर्च्छा—तुलसीके पत्तोंके रसमें थोड़ा सेंधा नमक मिलाकर नाकमें टपकानेसे मूर्च्छा और बेहोशी तत्काल नष्ट हो जाती है।

रतौंधी—तुलसीके पत्तोंका स्वरस दिनमें कई बार आंखोंमें डालनेसे रतौंधी नष्ट हो जाती है।

बालरोग—तुलसीके पत्तोंके रसका शरबत बनाकर ३ माशेकी मात्रामें बच्चोंको देनेसे बच्चोंकी सर्दी, बुखार, खाँसी, उल्टी, दस्त, पेटका फूलना, इत्यादि रोग दूर होते हैं।

स्तम्भन—तुलसीकी जड़का चूर्ण और जमीकन्दका चूर्ण मिलाकर १ से २ मासेतककी मात्रामें पानमें रखकर खानेसे स्तम्भन होता है।

अतिसार—तुलसीकी सोंठ जायफलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे अतिसार अच्छा हो जाता है।

जखम—हर प्रकारके जखमपर तुलसीके पत्तोंको पीसकर लगानेसे जखम जल्दी भर जाते हैं।

विषके उपद्रव—सबप्रकार के विषोंको दूर करनेके लिये तुलसीका रस पेट भरके पिलाना चाहिये।

बनावटें—

वायुनाशक चूर्ण—काली तुलसी ६ भाग, निर्गुंडीकी जड़ ४ भाग, भांगरा ३ भाग, मालकांगनी की जड़ २ भाग, सोंठ १ भाग, मिरच १ भाग, [illegible] १ भाग, पीपल १ भाग। इन सब चीजोंको पीसकर चूर्ण कर लेना चाहिये। इस चूर्णमेंसे ३ माशा सवेरे शाम शहदके साथ चाटनेसे अनेक प्रकारके वायुके उपद्रव दूर होते हैं। धनुर्वातमें इस औषधिको [illegible] [illegible] तुलसी, लहसन और प्याजके रसके साथ देना चाहिये। साथ ही में बार बार तुलसीके रसका मालिश करना चाहिये।

कफनाशक चूर्ण—तुलसी की मंजरी १ तोला, मुलेठी १ तोला, [illegible] की जड़ १ तोला, अडूसे के पत्ते १ तोला, [illegible] १ तोला, [illegible] आधा तोला, [illegible] आधा तोला। इन सब चीजों को कूट, पीस, छानकर [illegible] ३ माशे तक की मात्रामें बड़े आदमी को और बच्चों को ३ रत्ती से ६ रत्ती तक की मात्रामें देनेसे सब प्रकार की खांसी और [illegible] [illegible] दूर होता है।

प्रनाममें इसका शीत निर्यास वमन और अतिसार को दूर करने के लिये दिया जाता है। इसे जोड़ोंके दर्द और कुष्ट की बदबू को दूर करने के काममें भी लेते हैं। इसके बीजों का शीत निर्यास ज्वरमें भी दिया जाता है। इसके बीज सांपके काटने पर चूसे जाते हैं इनका एक हिस्सा निगल लिया जाता है और दूसरा हिस्सा काटे हुए स्थानपर लगाया जाता है।

डाक्टर ड्रेगाईके मतानुसार इस वनस्पति का रस मज्जा तंतुओं को उत्तेजना देनेवाला कृमिघ्न वातनाशक और स्वेदजनन होता है। इसके बीज मधुर, मुलायम, स्निग्ध, शीतल, मूत्रल और स्तम्भक होते हैं। मज्जा तंतुओं की थकावट से होनेवाले रोगों में, जैसे भूतोन्माद, सन्यास, इत्यादिमें इसका स्वरस अपने उत्तेजक धर्म की वजहसे अच्छा लाभ दिखलाता है।

अधिक दिनों तक चालू रहनेवाले ज्वरमें और ऐसे ज्वर में जिसमें सारे शरीरमें दर्द होता रहता है, इसके स्वरस को पिलाने से और शरीर पर मलनेसे पसीना छूटकर रोगी को शान्ति मिलती है। खांसी के अन्दर भी इसके स्वरस का उपयोग बड़ा लाभदायक होता है। इससे कफ पड़ने की आंच की कमी होजाती है। पेट की वायु कम होकर श्वास लेनेमें सुविधा होती है। रक्ताभिसरण क्रिया को उत्तेजना मिलती है और मज्जातंतु और श्वासोच्छ्वास के केन्द्र स्थानमें जाम पैदा होता है। इसके बीजों की फांट कफ प्रधान रोगोंमें उपयोगी होती है। सूखी खांसीमें इसके स्वरस का शहद के साथ देने से कफ आसानी से निकल जाता है और रोगी को शांति मिलती है। अजीर्ण, उदरशूल और कृमि रोगमें इसके स्वरस को पिलानेसे बड़ा लाभ होता है। इसके बीजों का फांट बनाकर देने से पुरानी कब्जियत, अतिसार और भीतरी बवासीरमें लाभ होता है।

इस वनस्पति का स्वरस ४ से ५ तोले तक की मात्रा में चार २ घण्टेके अन्तरसे सर्पविष को दूर करनेके लिए दिया जाता है।

सर्पविष की यह चिकित्सा चरकके अन्दर पाई जाती है और मुसलमानी हकीमों ने भी इसको मान्य किया है।

इसके रस का बाह्यप्रयोग करनेसे यह फोड़े फुन्सियों को नष्ट करता है, पीव को दूर करता है, और कृमियों को नष्ट करता है। कर्णशूल, दन्तशूल, और दादके ऊपर भी इसका रस बड़ा लाभदायक है।

इसके बीजोंमें वाजिकरण धर्म भी विद्यमान है। इनको ३ माशे से ६ माशे तक की मात्रामें लेने से कामोद्दीपन होता है। सुजाक में इसके बीजों की फांट बनाकर दी जाती है। प्रसूतिकालके उदरशूल में इसका हिम बनाकर देते हैं।

ज्वर की चिकित्सामें तगरके चूर्ण के साथ इसकी फांट दी जाती है। गर्भाशय की शिथिलता से होनेवाले अत्यार्तवमें इसकी छाल और फूलों की फांट बनाकर देनेसे बड़ा लाभ होता है। व्रणों के ऊपर इसका चूर्ण भुरभुरानेसे अच्छा संकोचन होता है।

यूनानी मत— यूनानी मत से यह सर्द, खुश्क, काबिज और कामोत्तेजक है। फोड़े, फुन्सी और दिल की बीमारियोंमें यह बहुत मुफीद है।

तून और बवासीर—

आधासेर तूनके बीजों को लेकर सिलपर पत्थरसे रगड़ें। जब उनका छिलका दूर होजाय तब उनको ढाई पाव पानीमें जोश दे। जब १॥ पाव पानी रह जाय तब उतारकर छानलें और उसमेंसे आधा पाव पानी लेकर इसमें ७ तोला बुझा हुआ चूना घोलकर आगपर चढ़ादे ज्यों २ पानी जलता जाय त्यों २ ऊपर से तूनका बचा हुआ पानी धीरे २ उसमें डालकर पचाते जावें। जब सब पानी जलकर गाढ़ा अवलेह की तरह हो जाय तब उसको उतारकर बेरके बराबर गोलियाँ बाध लें। इन गोलियोंमेंसे एक गोली रोज खिलानेसे खूनीं और बादी दोनों प्रकारके बवासीर १ हफ्तेमें आराम हो जाते हैं। अगर ३।४ महीनेके बाद यह बीमारी फिर वापिस लौट जाय तो १ हफ्ते फिर यह गोलियाँ खिला देनेसे हमेशा के लिए आराम होजाता है।

उपयोग—

बुखार और दस्त—इसकी छालके चूर्ण की फक्की देनेसे बुखार व दस्त लगना मिट जाता है।

जीर्णज्वर— इसका काढ़ा पिलानेसे जीर्णज्वर जाता रहता है।

बच्चोंके आँव-दस्त— इसकी छाल के काढ़े से बच्चोंके आँव-दस्त मिट जाते हैं। छालके काढ़े का अवलेह बनाकर चटाने से बच्चोंके आँव दस्त बंद हो जावे है।

फोड़े-फुन्सी— इसकी छाल को घिसकर फोड़े फुन्सी पर लगानेसे आराम हो जाता है।

———